Grāmegeya-Gānam

ॐ

सामवेद कौथुमशाखीय

ग्रामेगेय (वेय, प्रकृति) गानम्

Grāmegeya (Veya, Prakṛti) Gānam

Edited by

Subramania Sarma, Chennai

Chennai 2006

Preface

This work is primarily based on the following work

- *Grāmegeya Gānām, Nārāyaṇasvāmi Dīkṣita, Svādhyāya Maṇḍalaṁ, 1942, Aundh*

This work will not exist except for the support provided by Mihail Bayaryn who tirelessly worked on providing me with support throughout the whole project.

As this is only a preliminary version there could be some errors. Users are requested to report any corrections or mistakes to srothriyan@yahoo.co.in.

I also thank the people at Omkarananda Ashram who have generously put their Itranslator software in the public domain thereby making this project feasible.

I conclude by thanking the various institutions and individuals who have lent, procured or presented to me various versions of the texts and also by once again thanking Mr. Ulrich Stiehl for having made this project possible.

Subramania Sarma

May 2, 2006

ॐ

॥ श्री सामवेदाय नमः॥

अथ प्रकृतिगानम्।

तत्र प्रथममाग्नेयं पर्व।

॥ गायत्रम्॥ (परमेष्ठी प्रजापतिः, गायत्री, सविता।)

ओऽ३म्। तत्सवितुर्वरेणियोम्॥ भर्गोदेवस्य धीमाहीऽ२।

धियो यो नः प्रचोऽ१२१२॥ हिम् स्थि आऽ२॥ दायो॥ आऽ३४५॥

(दीर्घाः ६। पर्वाणि ६। मात्राः २॥ का)

(इति प्रकृतिसप्तगानान्तर्भूतं गायत्राख्यं प्रथमं गानं सम्पूर्णम्॥)

(१।१) ॥ पर्कः। (गोतमो, गायत्री अग्निः)॥

ओं। ओऽग्नाइ॥ आयाहिऽ३वोइतोयाऽ२इ। तोयाऽ२इ। गृणानोह। व्यदातोयाऽ२इ।

तोयाऽ२इ॥ नाइहोतासाऽ२३॥ त्साऽ२इबाऽ२३४औहोवा॥ हीऽ२३४षी॥

(दी. ७। प. ९। मा. ९) (झो।१)

(१।२) ॥ बर्हिष्यम्। (कश्यपो, गायत्री, अग्निः)॥

अग्नआयाहिवीऽ॥ तयाइ। गृणानोहव्यदाताऽ२३याइ॥ निहोतासत्सिबर्हाऽ२३इषी॥

बर्हाऽ२इषाऽ२३४औहोवा॥ बर्हीऽ३षीऽ२३४५॥

(दी. ९। प. ६। मा. ६) (तू।२)

(१।३)   ॥ पर्कः। (गोतमो, गायत्री, अग्निः)॥

अग्नआयाहि। वाऽ५इतयाइ॥ गृणानोहव्यदाऽ१ताऽ३ये॥ निहोताऽ२३४सा॥

त्साऽ२३इबाऽ३। हाऽ२३४इषोऽ६हाइ।

(दी. ४। प. ६। मा. ६) (तू।३)

(२।१)   ॥ सौपर्णं सुपर्णो; (वैश्वमनसम्। विश्वमना, गायत्री, अग्निः।)॥

त्वमग्नेयज्ञानाम्। त्वमग्नाइ॥ यज्ञानाꣳहोता। विश्वेषाꣳहाऽ२३इताः॥ देवेभाऽ२३इर्मा॥

नुषेजना। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १२। प. ९। मा. ६) (झू।४)

(३।१)॥ बृहद्भारद्वाजम् (बृहद्वाग्नेयं, बृहद्वा सौरम्।) (भरद्वाजो, गायत्री, अग्निः।)॥

अग्निन्दूताम्॥ वृणीमहाइ। होताराऽ२३वी। श्ववेदसाम्॥ अस्ययाऽ२३ज्ञा। आ। औऽ३होवा॥

स्यासुक्रतुम्। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ५) (कु।५)

(४।१)   ॥ (श्रौतर्षाणि त्रीणि) श्रौतर्षम्॥ त्रयाणां श्रुतर्षिः, गायत्री, अग्निः॥

अग्निर्वृत्रा॥ णाऽ२इजाऽ२३४औहोवा। घाऽ२३४नात्। द्रविणस्युर्विपन्ययाऽ२॥

ओइसमिद्धाऽ२३श्रू॥ क्रायाहुतः। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ६) (धू।६)

(४।२)

अग्निरौहोवाहाइ। वृत्राणी॥ जाङ्घाऽ३नात्। औहोऽ३वाऽ३। द्रविणाऽ२३४स्यूः।

ओइवोइपन्ययाऽ२॥ समायेऽ३॥ धाऽ२श्नूऽ२३४औहोवा॥ ऋयाहुताऽ२३४५ः॥

(दी. ४। प. ९। मा. ७) (धे।७)

(४।३)

ओग्नीः॥ वृत्राणिजङ्घनात्। औहौहोऽ२३४वा। द्रविणस्युर्विपन्यया। औहौहोऽ२३४वा॥

समिद्धश्शुक्रया। औहौहोऽ२३४वा॥ होऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ८। मा. ३) (दि।८)

औशनसानि त्रीणि।

(५।१) ॥ औशनम्॥ (उशना, विराड्गायत्री, अग्निः।)

प्रेष्ठंवाः॥ अताऽ२३इथीम्। स्तौषेमित्रम्। इवप्राऽ२३याम्। अग्नाइराऽ३थाऽ३म्॥

नावाऽ२३हाऽ३४३इ॥ दाऽ२३४योऽ६हाइ।

(दी. २। प. ७। मा. ९) (छो।९)

(५।२) ॥ शैरीषम्॥ शिरीषो (उशना, गायत्री, अग्निः।)

प्रेष्ठंवः। ओहाइ॥ अताऽ२३इथीम्। स्तुषाइमित्राऽ३म्। इवाऽ२प्राऽ२३४याम्॥ औहोऽ१इ।

अग्नेराथाऽ२३म्॥ नाऽ२३ऽवेऽ३। दाऽ३४५योऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ९। मा. १०) (ढौ।१०)

(५।३) ॥ औशनम्॥ (उशना, विराड्गायत्री, अग्निः।)

प्रेष्ठंवोहाउ॥ अतिथाइम्। स्तुषेमित्रमिवप्राऽ२३याम्॥ अग्नायेऽ३॥ राऽ२ऽथाऽ२३४औहोवा॥
नवेदियाऽ२३४५म्।

(दी. ६। प. ६। मा. ६) (कू।११)

(६।१) ॥ सांवर्गम्। (संवर्गः) साकमश्वः, गायत्री, अग्निः॥

त्वन्नोया॥ ग्नेमहोभिः। पाहोइवीऽ३श्वा। स्याअरातेः॥ उताद्वाऽ१इषाऽ२ः॥ मर्त्यस्य।
इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ९। मा. ७) (झे।१२)

(६।२) ॥ वार्त्रघ्नम्। साकमश्वः, गायत्री, अग्निः॥

त्वांत्वन्नोअग्नेम। होऽ६भाइः॥ पाहिविश्वाऔऽ३हो। स्याऔऽ३हो। आरातेः॥
उताद्वाऽ१इषाऽ२ः॥ मर्ताऽ२याऽ२३४औहोवा॥ स्याऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ८। मा. ९) (गो।१३)

(७।१) ॥ शौनःशेपम्। वत्सः, गायत्री, अग्निः॥

एह्यूषूऽ३ब्रवाणाऽ६इताइ॥ अग्नइत्थेतरागाऽ२इराः। एभाऽ२इर्वद्धा॥ स्याऽ२३हाऽ३४३इ॥
दूऽ२३४भोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ५। मा. ८) (ङे।१४)

(७।२) ॥ शौनःशेपम्॥ शौनः शेपः, गायत्री, अग्निः॥

एह्यूषुब्रवोहोणाइताइ॥ अग्नइत्थेतराऽ१गीऽ३राः। एभिर्वाऽ२३४र्द्धा॥ सयाऽ२३ऽहाऽ३४३इ॥
दूऽ२३४भोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ५। मा. ६) (नू।१५)

(८।१) ॥ वात्से द्वे॥ वत्सो, गायत्री, अग्निः॥

आतेवत्साः॥ मनोयमत्। परमात्। चित्सधाऽ२३स्थात्॥ अग्नाइत्वाऽ३०काऽ३॥ मयोवा।
गाऽ५इरोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ७। मा. ७) (थे।१६)

(८।२)

आतेवत्सोमनोयमत्। ऐयाहाइ॥ परमाचित्सधस्थादेयाऽ२३होइया॥
अग्नेत्वांकामयऐयाऽ२३होइया॥ गिरा। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १२। प. ८। मा. ६) (जू।१७)

(९।१) ॥ अग्नेरार्षेयं। गायत्री, अग्निः॥

त्वामग्नेपूष्काऽ६रादधी॥ आथर्वा। नाइः। अमाऽ२न्थाऽ२३४ता॥ मूऽ२३४र्द्ध्नो।
वाऽ२३४इश्वा॥ स्यवोवा। घाऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ८। मा. ४) (बी।१८)

(१०।१) ॥ वाध्र्यश्वम्। (वध्र्यश्वोऽनूपो वा) गायत्री अग्निः॥

अग्नेविवस्वदाभरो। वाहाइ॥ अस्मभ्यमूतऽ३याइमहे। ओ। वाऽ३हाइ। ओ। वाऽ३हाइ॥
दाइवोऽ१हियाऽ२। ओ। वाऽ३हाइ। ओ। वाऽ३हाऽ३इ॥ साऽ२इनाऽ२३४औहोवा।
दृशेऽ१॥

(दी. ६। प. १४। मा. ९) (घो।१९)

एकोनविंशतिः। प्रथमः खण्डः॥१॥

(११।१) ॥ (सांवर्गम्) सांवर्गः। अग्निर्गायत्र्यग्निः॥

नमस्तौ। होग्नाइ॥ ओजसाऽ३इ। गृणाऽ२न्ताऽ२३४इदे। वाकृष्टयाऽ२ः॥ अमायेऽ३ः॥

आऽ२माऽ२३४औहोवा॥ त्रमर्दयाऽ२३४५॥

(दी. ३। प. ८। मा. ६) १ (डू।२०)

(१२।१) ॥ वैश्वमनसम्। विश्वमना गायत्र्यग्निः॥

दूताऽ३०वोऽ३विश्ववेदसाम्॥ हव्यवाहाम्। अमाऽ२र्त्ताऽ२३४याम्॥ याजिष्ठम्। ऋ।

जसेऽ३हाइ॥ गिरा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ६) २ (णू।२१)

(१३।१) ॥ श्नाभम्। श्नाभो गायत्र्यग्निः (इन्द्रः)॥

उपत्वाजा॥ मयोऽ२गि। रओइययूऽ२ः। दाइदिशतीर्हाविष्कृ। तओइययूऽ२ः॥

वायोराऽ२३नी॥ कयाऽ३स्थाऽ५इराऽ६५६न्॥ अश्वाऽ३गावाऽ२३४५ः॥

(दी. ६। प. ८। मा. १०) ३ (गो।२२)

(१३।२) ॥ श्नौष्टीयम्। (श्नौष्टम्) श्नुष्टो गायत्र्यग्निः॥

उपत्वाजामाऽ६योगिराः॥ दाइदिश। ताइः। हवीऽ२ष्काऽ२३४र्त्ताः॥ वायोरनाहाइकाया॥

स्थाइरा। औहोऽ२३४वा॥ ईडा॥

(दी. ८। प. ८। मा. ७) ४ (डे।२३)

(१४।१) ॥ वैश्वामित्रम्। विश्वामित्रो गायत्र्याग्निः॥

उपात्वाऽ२३ग्नेदिवेदिवाइ॥ दोषाऽ२वास्ताऽ२ः। धियावयम्॥ नामोऽ२भाराऽ२॥

तएमाऽ२३साऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ७। मा. ५) ५ (थु।२४)

(१५।१) ॥ जरावोधीये द्वे। द्वयोरग्निर्गायत्री रुद्रः॥

जारा॥ बोधाऽ२बोधाऽ२। तद्विविड्ढाइ॥ विशेवाइशेऽ२॥ यज्ञाऽ२३। यायाऽ३४औहोवा॥

स्तोमऽ०रुद्रायदृशीकाम्॥

(दी. ७। प. ७। मा. ४) ६ (छी।२५)

(१५।२)

जराबोधोवा॥ ताद्विविड्ढाइ। विशाइवाऽ२३इशे। यज्ञियाया। स्तोमाऽ०रुद्राऽ२३या। दृ।

शीकोऽ३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ८। मा. ४) ७ (बी।२६)

(१६।१) ॥ मारुतम्। मरुतो गायत्र्यग्निः॥

प्रतित्याऽ२३ञ्चारुमध्वराम्॥ गोपीथा। या। प्राहूयाऽ२३४साइ॥ मरुद्भिः। आ॥ ग्नाआगहा।

औऽ२होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ५) ८ (मु।२७)

(१७।१) ॥ वारवंतीयं। त्रयाणां भृगुः शुनःशेपो वा गायत्र्यग्निः॥

आश्वा। औहोऽ२३४वा। नात्वा। औहोऽ२३४वा॥ वारवन्तंवन्दध्या। आग्ना। औहोऽ२३४वा॥

नमोभिस्सम्राजन्ताम्॥ आध्वराणाम्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १२। मा. ३) ९ (छि।२८)

(१७।२)

अश्वन्नत्वावारवन्ताम्॥ वंदध्याअग्निन्नमोभाइः॥ सम्राज। तमाध्वराऽ३४। औहोवा॥

इहाऽ२३४हाइ। औहोऽ३१२। याऽ२३४औहोवा॥ णाऽ२३४५म्॥

(दी. १०। प. ९। मा. ७) १० (भे।२९)

(१७।३)

अश्वन्नत्वाऔहोहाइ॥ वारावाऽ२३४न्ताम्। वंदाध्याऽ२३४हाइ। अग्नाइन्नमाऽ३४। औहोवा।

इहाऽ२३४हाइ। उहुवाऽ२३४भीः। संम्राज। तामध्वराऽ३४। औहोवा॥ इहाऽ२३४हाइ।

औहोऽ१२३४। णाम्। एहियाऽ६हा। होऽ५इ। डा॥

(दी. ९। प. १६। मा. १०) ११ (तौ।३०)

(१८।१) ॥ समुद्रे द्वे। समुद्रस्य वासो वा। और्वः, द्वयोरग्निः। गायत्र्यग्निः॥

और्वभृगुवत्। ओहा-इ॥ शूऽ२३४चीम्। आप्नवान। वदाऽ२हुवाऽ२इ। हुवओइ॥

अग्नाऽ२इ३समूऽ२॥ समुओ॥ द्रवासमसाऽ३१उवा२३४५॥

(वैधार्य ऋषिर्वा) (दी. २। प. ९। मा. ९) १२ (झो।३१)

(१८।२)

और्वभृगुवच्छुचिम्। एऽ५। शुचीम्॥ आप्नवान। वदाऽ२३हुवाइ। हुवाऽ२३इ। हुवए॥

अग्नाइ३साऽ३मू॥ समूऽ२३। समुएऽ३। द्रांऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ ससाऽ३मेऽ२३४५॥

(दी. ४। प. १२। मा. ८) १३ (थे।३२)

(१९।१) ॥ असंगम्। (आसंगः)॥ अत्रिर्गायत्र्यग्निः॥

अग्निमिन्धानोमनसौ। हौहोवाहाइ॥ धियꣳसचेतमौ। होऽ३हाऽ३॥ होऽ२३४र्तियाः॥

अग्नायेऽ३म्। आऽ२इंधाऽ२३४औहोवा॥ विवस्वभीऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. ८। मा. ६) १४ (डू।३३)

(२०।१) ॥ निधनकामम्। प्रजापतिर्गायत्र्यग्निः॥

आदित्प्रत्नाऽ५स्यरेतसाः॥ ज्योतिःपश्यंतिवासाऽ२राम्॥ परोयाऽ२दिध्यताइ॥ दिवि। होइ।

होइ। औहोऔहोवाऽ२३४५हाउ॥ वा॥

(दी. ८। प. ८। मा. ७) १५ (डे।३४)

पञ्चदश। द्वितीयः खण्डः। इति ग्राम-गेयगाने प्रथमस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(२१।१) ॥ सैंधुक्षितानि त्रीणि। त्रयाणां सिंधुक्षिद्गायत्र्यग्निः। स्वारं सैन्धुक्षितम्॥

अग्निंवोवृधान्ताम्॥ आध्वराणाम्। पुरूतामौ। होवाऽ३हाइ॥ आंछाऽ२नाप्नेऽ२३॥

सहोऽ२३४वा। स्वाऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ७। मा. ४) १ (फी।३५)

(२१।२)

अग्निंवाऽ६ए। वृधन्ताम्। अध्वराणांपुरूतममच्छाऽ२होऽ१इ॥ नाऽ२३प्ने॥

सहास्वाऽ२३४५ताऽ६५६इ॥ ईऽ२३४ती॥

(दी. ३। प. ६। मा. ४) २ (टी।३६)

(२१।३) ॥ ऐडं सैंधुक्षितम्॥

अग्निंवः। ओहाइ॥ वृधाऽ२३न्ताम्। अध्वराणांपुरूऽ१ताऽ३माम्॥ अच्छानप्त्रोऽ२३४हाइ॥

साहाऽ३हा। स्त्रता। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ६) ३ (णु।३७)

(२२।१) ॥ हरसी द्वे। द्वयोरग्निर्गायत्री अग्निः॥

आग्नाओऽ२३४वा॥ तिग्मेनऽ३शो। चाइषाओऽ२३४वा॥ या२सा ओऽ२३४वा॥

वाइश्वान्निया। त्राइणाओऽ२३४वा॥ अग्निर्नोऽ२व२सतेरयीऽ१म्॥

(दी. ३। प. ७। मा. ८) ४ (ठै।३८)

(२२।२)

ओहा। ओग्नीः॥ ताऽ२३४इग्मे। नाशोचाऽ२३४इषा। य२साऽ२द्वाऽ२३४इश्वाम्॥

नियत्राऽ२३४इणाम्॥ अग्निर्नोऽ२। व२साऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ राऽ२३यीम्॥

(दी. ३। प. ९। मा. ९) ५ (ढो।३९)

(२२।३) ॥ इहवद्वामदेव्यम्। वामदेवो गायत्र्यग्निः॥

अग्निस्तिग्मेनशोचिषा। इहा॥ यऽ२सद्विश्वंन्यत्रिणाऽ२म्। इहा॥ अग्निर्नोव२सताऽ२इ।

इहाऽ३॥ राऽ२३४योऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ७। मा. ३) ६ (थि।४०)

(२३।१) ॥ यामम्। यमो गायत्र्यग्निः॥

अग्नाइमृडा२ऽ। महा२आऽ२३४सी। अयआदाऽ२इ। वयुआऽ२३४नाम्॥ इयेथवाऽ२३॥

हिराऽ३साऽ५दाऽ६५६म्॥

(दी. २। प. ६। मा. ६) ७ (चू।४१)

(२३।२) ॥ उत्तरयामम्। यमो गायत्र्यग्निः॥

अग्नेमृडमहाऽ०असि। ओहाऽ३ओहा॥ अयआदेवयु०जनम्। ओहाऽ३ओहा॥

इयेथाऽ२३ब॥ हिराऽ३साऽ५दाऽ६५६म्॥

(दी. ७। प. ६। मा. ६) ८ (चू।४२)

(२४।१) ॥ राक्षोघ्नम्। अग्निर्गायत्र्यग्निः॥

अग्नेराऽ३क्षाणोअ२ंहसाः। प्रतिस्मदेवरिषाऽ२३ताः॥ तपाइष्ठाऽ२३इरा॥

जरोदाऽ२३हाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ६। मा. ६) ९ (पू।४३)

(२५।१) ॥ राक्षोघ्नम्। अग्निर्गायत्र्यग्निः॥

अग्नेयूऽ३ङ्क्ष्वाहियेतवा॥ अश्वासोदेवसाधाऽ२३वाः॥ अरंवाऽ२३हा॥ तियाश्चाऽ२३वाऽ३४३ः।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ६। मा. ३) १० (टि।४४)

(२६।१) ॥ वैश्वमनसम्। विश्वमना गायत्र्यग्निः॥

निबा। होऽ३इ। न। क्षिया॥ वाइश्पताइ। द्युमन्तम्। धाइ। माहेवाऽ२३४याम्॥ सुवोहाइ॥

रामग्नाओऽ२३४वा। होऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ११। मा. ९) ११ (टो।४५)

(२७।१) ॥ आर्षेयम्। अग्निर्गायत्री अग्निः॥

अग्निर्मूर्द्धादीऽ६वः ककूत्। पातीऽ२पार्थीऽ२। वियाअयाम्॥ आपाऽ२१राइताऽ२॥
सिजिन्वाऽ२३ताऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ७। मा. ६) १२ (टू।४६)

(२८।१) ॥ सोमसाम। सोमो गायत्र्यग्निः॥

इममूषु॥ त्वमास्माऽ२३४काम्। सानीऽ२१होइ॥ गायाऽ२हो। त्रन्नव्याऽ२३१साम्॥
आग्नेऽ२होइ। दाइवाऽ२हो॥ षुप्रावोऽ२३चाऽ२३४ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १। प. १०। मा. ७) १३ (डे।४७)

(२९।१) ॥ गोपवनम्। गोपवनो गायत्र्यग्निः॥

तंत्वागोपा॥ वानोऽ२गाऽ२३४इरा। जनाइ४दा। ग्नयाऽ२०गाऽ२३४इराः॥
सपौवाओऽ२३४वा। कौवाओ।२३४वा॥ श्रुधीऽ५हवाम्। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. ९। मा. ८) १४ (झै।४८)

(३०।१) ॥ सौर्यम्। सूर्यवर्चा वा वसुरोचिर्वा गायत्र्यग्निः॥

पर्यो। होइवाजा॥ पताइः का१वीऽ२ः। अग्निर्हव्या। नायक्रमीऽ२त्॥ दधाऽ२३त्॥
राऽ२त्नाऽ२३४औहोवा॥ निदाशुषेऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ८। मा. ६) १५ (बू।४९)

(३१।१) ॥ सौर्यम्। सूर्यो गायत्री सूर्यः॥

उदुत्यम्। ओहाइ॥ जा। तवेऽ२दाऽ२३४साम्। देवंवहा। तीकेताऽ२३४वाः॥
दाऽ२३४र्शेहाइ॥ वाइश्वायसू। र्याम्। औऽ२३होवा॥ होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १२। मा. ८) १६ (थे।५०)

(३२।१) ॥ कावम्। कवि (र्वसुरोचि) र्गायत्र्यग्निः॥

कविमग्निम्॥ उपाऽ२३। स्तूऽ२हाऽ२३४औहोवा। सत्यधर्माणमध्वरे॥ देवाम्॥

अमीवचाताऽ२३नाऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ८। मा. ५) १७ (जु।५१)

(३३।१)॥ काशीतम् कापीतं वा समुन्दं वा। पारावतो (पारावतिर्वा) गायत्र्यग्निः॥

शंन्नोदेवीः॥ अभिष्टाऽ२३याऽ३४इ॥ शन्नोभवा॥ तुपीताऽ२३याऽ३४इ॥ शंयोरभी॥ स्रव।

तूऽ२। ना२३४। औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ३) १८ (श्वि।५२)

(३३।२) ॥ काशीत्तोत्तरम्। पारावतो गायत्र्यग्निः॥

हुवाऽ३होऽ२३४इ। शन्नोदेवीः। अभिष्टयाइ॥ हुवाऽ३होऽ२३४इ। शन्नोभव। तुपीतयाइ॥

हुवाऽ३होऽ२४४इ। शंयोरभि। स्रवन्तुनाः॥ हुवाऽ३होऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ८। प. १२। मा. ८) १९ (द्वे।५३)

(३४।१) ॥ मनाज्ये द्वे। द्वयोर्गोतमो (गोरांगिरसो वा) गायत्र्यग्निः॥

कस्यानूऽ१नाऽ२म्। परीणाऽ२३४सी॥ धियोजिन्वाऽ२। सिसत्पाऽ२३४ताइ॥

गोषाताऽयाऽ२३॥ स्याऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ उप्। गीऽ२३४राः॥

(दी. ५। प. ८। मा. ५) २० (बु।५४)

(३४।२) ॥ गौराङ्गिरसस्य साम, गौतमस्य मनाज्यं मनाज्योत्तरं वा॥

ओहोइहुऽ३वाऽ२३इ। हुवए। कस्यनूनाऽ३०पाऽ३रीणसि॥ ओहो-इहुऽ३वाऽ२३इ। हुवए।
धियोजिन्वाऽ३सीऽ३सत्पताइ॥ ओहोइहूऽ३वाऽ२३इ। हुवए। गोषाताय॥
स्यताऽ३इगाऽ५इराऽ६४६ः॥

(दी. १२। प. १०। मा. १३) २१ (त्रि।५५)

एकविंशतिः। तृतीयः खण्डः॥३॥

(३५।१) ॥ उपहवौ द्वौ। द्वयोर्भरद्वाजो बृहत्यग्निः॥

यज्ञायज्ञा॥ वोअग्नयाऽ३इ। गिराऽ२गिराऽ३४। हाहोऽ३इ। चादक्षाऽ२३४साइ।
प्रप्राऽ२वयममृतंजा। तावेऽ१दासाऽ२म्॥ प्रियम्मित्राम्। नशंसिषाम्। एहिया।
औहोहोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १२। मा. ८) २२ (ठे।५६)

(३५।२)

यज्ञायज्ञा। होइ। वोऽ३ग्नयएऽ३४। हिया॥ गिरागिरा। चाऽ२दक्षसाइ। प्रप्रावयाम्।
अमृतंजाऽ३। तवेऽ२दाऽ२३४साम्॥ प्रियम्मित्राम्। नशंसिषाम्॥ एहिया। औहोऽ२३४५इ॥
डा॥

(दी. ६। प. १४। मा. ८) २३ (घे।५७)

(३५।३) ॥ श्नौष्ठीगवम्॥ श्नुष्टीगुर्बृहत्यग्निः॥

याज्ञायाज्ञाऽ२। वोअग्नायाऽ२इ॥ गाइरागाइराऽ२। चादक्षसाऽ२इ। प्रप्रवायाऽ२म्।

अमृतंजाऽ३। तवेऽ२दाऽ२३४साम्॥ प्रायम्माइत्राऽ२म्॥ नाशꣳसाऽ२३इषाऽ३४३म्।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २। प. ११। मा. १२) २४ (चा।५८)

(३५।४) ॥ यज्ञायज्ञीयम्। (भरद्वाजः) अग्निर्वैश्वानरो बृहत्यग्निः॥

यज्ञाऽ५य। ज्ञाऽ३वोऽ३ग्नायाइ॥ गाइरागिरा। चाऽ३दाक्षाऽ३साइ। प्रप्राऽ२वयममृतम्।

जाताऽ२३वा। हिम्माइ॥ दाऽ३२साम्॥ प्रायम्मित्रन्नशाऽ२ꣳसिषाउ। वाऽ३४५॥

(दी. ६। प. १०। मा. ७) २५ (णे।५९)

(३६।१) ॥ कार्त्तयशम्। कृतयशा बृहत्यग्निः॥

पाहिनोऽ३अग्नएकया॥ पाहियुत। द्वितायाऽ१याऽ२॥ पाहिगीर्भिस्तिसृभिः।

ऊर्जाम्पाऽ१ताऽ२इ॥ पाहिचतौऽ३। होऽ३वा॥ सृभिर्वाऽ२३साऽ३४३उ। ओऽ२३४५इ॥

डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ६) २६ (नू।६०)

(३६।२) ॥ नार्मेधम्। नृमेधा, (भरद्वाजः) बृहत्यग्निः॥

पाहिनोअग्नएकयाऽ६ए॥ पा। होइ। उ। ता। द्वितायाऽ३या। पाहोऽ२इगाऽ२३४इर्भीः।

ताइसृभिः। ऊर्जाम्पाता। औहौहोऽ२३४वा। पाऽ२३४हिहाइ॥ चतासृभा।

औहौहोऽ२३४वा॥ वाऽ२३४साउ। एहियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १७। मा. १२) २७ (खा।६१)

(३६।३)   ॥ कार्त्तवेशम्। कृतवेशो, (भरद्वाजः) बृहत्यग्निः॥

पाहिनोअग्नए। कयाऽ३। पाऽ२३४। हियुतद्विती। याया॥ पाहिगीर्भिस्तिसृभिरूर्जाम्।

पाऽ३ताइ॥ पाहोइचाऽ३ताऽ३४। हाओवा॥ सृभिर्वसो॥ उपाऽ२३४५॥

(दी. ११। प. ११। मा. ६) २८ (कू।६२)

(३७।१)   ॥ पृश्निः। भरद्वाजो बृहत्यग्निः॥

बृहाद्भीऽ२३रग्नेअर्चिभिर्हाउ॥ शुक्राइणदेवशोचिषा। भराद्वाऽ१जेऽ२३। होवाऽ३हाइ।

समिधानः। याविष्ठियाऽ२३। होवाऽ३हाइ। रेवात्पाऽ१वाऽ२३। होवाऽ३हाइ॥ कादीदिहि।

इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १३। मा. ८) २९ (जे।६३)

(३७।२)   ॥ पृश्निः। भरद्वाजो बृहत्यग्निः॥

बृहद्भिरग्नेअर्चिभीऽ६रे॥ शुक्राइणदेवशोचिषा। भराद्वाऽ१जेऽ२३॥ ओऽ३वा। समिधानः।

याविष्ठियाऽ२३। ओऽ३वा॥ रेवात्पाऽ१वाऽ२३। ओऽ३वा॥ कादीदिहि। इडाऽ२३भाऽ३४३।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १३। मा. ४) ३० (जी।६४)

(३८।१)   ॥ उरोराङ्गिरस्य साम। उरुर्बृहत्यग्निः॥

त्वेआऽ२३ग्नेस्वाहुतहाउ॥ प्रियासस्सन्तुसूरयः। यन्तारोऽ१याऽ२३४इ। मघवानोजना।

नाऽ३म्॥ ऊर्वंदयाऽ२३हा। तगोनाऽ२म्। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १०। मा. ७) ३१ (मे।६५)

(३९।१)　　॥ पौरुमद्रे द्वे। द्वयोः गोतमो बृहत्यग्निः॥ (द्वे)

अग्नेजरितर्विश्पतिः। औहोवा। एहिया। हाउ॥ तपानादेऽ२वरक्षसः। अप्रोषाऽ१इवाऽन्।

गार्हपताऽ३इ। माहा२आऽ२३४सी॥ दिवाः। पयौवाओऽ२३४वा॥ हाऽ३हाइ। दुरोऽ५णयूः।

होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १४। मा. १२) ३२ (घा।६६)

(३९।२)

अग्नेजरितर्वि। श्पतीऽ३ः। ताऽ२३४। पानोदेवर। क्षसाः॥ तापानोदेवरक्षसो।

अप्रोषीऽ३वान्। गृहपताइ। माहा२आऽ२३४सी॥ ओऽ४हा। हहाइ। दिवस्पायूऽ२३४५ः॥

ओऽ४हा। हहाइ। दुरोणयूऽ२३४५ः। ओऽ४हा। हहाऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. १९। मा. ११) ३३ (धा।६७)

(४०।१)　　॥ माण्डवे द्वे। जमदग्निः; द्वयोर्मण्डुर्बृहत्यग्निः॥

अग्नेविवाहाउ॥ स्वाऽ३दूषाऽ३साः। चाइत्राऽ३२हाइ। राधोऽ३हाऽ३इ। अमाऽ२र्ताऽ२३४या।

आदाऽ१शुषेऽ२। जातवेदः। वहातूऽ१वाऽ२म्॥ अद्याहोइ। दाऽ२३इवा२॥ उषः।

बूऽ२धाऽ२३४औहोवा॥ हुवेवसूऽ२३४५॥

(दी. ७। प. १३। मा. ११) ३४ (जा।६८)

(४०।२)　　॥ विदावसुनिधनं माण्डवम्॥

अग्नेविवस्वदुषासाः॥ चित्र२राधोअमाऽ२र्तिय। आदाऽ१शुषेऽ२। जातवेदः। वहातूऽ१वाऽ२म्॥

अद्यादाऽ२३इवा२॥ उषः। बूऽ२धाऽ२३४औहोवा॥ विदावसूऽ२३४५॥

(दी. ९। प. ९। मा. ७) ३५ (धे।६९)

(४१।१) ॥ गाधम्। भरद्वाजो बृहत्यग्निः॥

त्वन्नाऽ२३श्चित्रऊत्या॥ वसोराधा। सिचोदाऽ१याऽ२३। आस्याराऽ२३४याः। त्वमग्ने।

रथाइरासाऽ३इ॥ वीदागाऽ२३४धाम्। तुचाऽ२३हाइ॥ तुना। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १२। मा. ७) ३६ (छे।७०)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥

(४२।१) उभयत स्तोभमं गौतमम्। गोतमो बृहत्यग्निः॥

हाउत्वमित्सप्रथाअसिहाउ॥ आग्नेत्रातः। ऋताःकवाऽ२३४इः। हाहोइ। त्वांविप्रासःसमिधा।

नादीदिवाऽ३४ः। हाहोइ॥ आविवासाऽ३४। हाहोऽ३॥ तिवोऽ२३४वा। धाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ११। प. ११। मा. १०) १ (कौ।७१)

(४२।२) ॥ गौतमम्। गोतमो बृहत्यग्निः॥

त्वंत्वाऽ६मे॥ इत्सप्राऽ३थायासाइ। आऽ२३४सी। आग्नेत्रातः। ऋताःकवाऽ२इः।

काऽ२३४वीः। त्वांविप्रासःसमिधा। नादीदिवो। दाऽ२३४वाः॥ आविवासाऽ२३हा॥

तिवेधाऽ२३साऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १३। मा. ९) २ (डो।७२)

(४३।१) ॥ आयुः साम। अग्निर्बृहत्यग्निः॥

आनोअग्नेवयोवृधम्। एऽ३४। रयाऽ३४५इम्॥ पावाऽ३काशꣳसाऽ२३याम्।

रास्वाचनउपमाते। पूरुस्पृहाऽ२म्॥ सुनाइताइसूऽ३हाइ। यशस्तराम्। औऽ२३होवा।

होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. ११। मा. १२) ३ (ता।७३)

(४४।१) ॥ हरसी द्वे। द्वयोरग्निर्बृहत्यग्निः॥

योविश्वाऽ३दायतेवसू॥ होताऽ२मान्द्रोऽ२। जनानाम्। माधोऽ२र्नापाऽ२। त्राप्रथमान्यस्मै॥

प्रास्तोऽ२मायाऽ२३॥ तुवोऽ२३४वा। ग्नाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. ८। मा. २) ४ (जा।७४)

(४४।२)

योविश्वादयतेवसुहाउ॥ होताऽ२मान्द्रोऽ२। जनानाम्। ओवा। ओवा। माधोऽ२र्नापाऽ२।

त्राप्रथमान्यस्मै। ओवा। ओवा॥ प्रास्तोऽ२मायाऽ२३॥ तुवोऽ२३४वा। ग्नाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. १२। मा. ३) ५ (ठि।७५)

(४४।३) ॥ दैर्घश्रवसे द्वे। द्वयोर्दीर्घश्रवा बृहत्यग्निः॥

योविश्वादयतेवस्वोहाओहाऽ६ए॥ होताऽ२मंद्रोजनाऽ२नाम्। ओऽइहा। ओऽइहाऽ३एऽ३४॥

मधोऽ३४र्नपा॥ त्राप्रथ। मानायस्माइ। ओऽइहा। ओऽइहाऽ३एऽ३४॥

प्रस्तोऽ३४मायाऽ३॥ तुवोऽ२३४वा। ग्नाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. १३। प. १२। मा. ७) ६ (ठे।७६)

(४४।४)

योविश्वादयतेवसूऽ६ए॥ होतामंद्रोजनानाम्॥ माधोऽ१र्नापौ। वाऽ३२॥ त्राप्रथमान्यस्मै॥

प्रास्तोऽ१मायौ। वाऽ३२॥ त्वग्नये। इडाऽ२३भाऽ३४३।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १२। प. ११। मा. ३) ७ (चि।७७)

॥ द्वाविंशतिः चतुर्थः खण्डः ॥४॥ दशति॥

(४५।१) ॥ आग्नेये द्वे। द्वयोरग्निर्बृहत्यग्निः॥

एनावोअग्निंनामसा॥ ऊर्जोनपा। तामाऽ१हुवेऽ२। प्रायंचेतिष्ठमरतिम्। सुवाध्वाऽ१राऽ२म्॥

विश्वास्याऽ१दूऽ॥ताममृतम्। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १०। मा. ५) ८ (ङु।७८)

(४५।२)

एनावोअग्निंन्नमसाहाउ॥ ऊर्जोनपा। तामाऽ१हुवेऽ२३। हाउ। प्रायंचेतिष्ठमरतिम्।
सुवाध्वाऽ१राऽ२३म्। हाउ॥ विश्वास्याऽ१दूऽ२३। हाउ॥ ताममृतम्। इडाऽ२३भाऽ३४३।
ओऽ२३४५इ। डा।

(दी. ७। प. १३। मा. ९) ९ (जो।७९)

(४५।३) ॥ मनाज्ये द्वे। द्वयोर्गोतमो बृहत्यग्निः॥

एनावोअग्निमेऽ५नमसा॥ ऊर्जोनपातमाहुवे। प्राऽ२३याम्। चाइतिष्ठम्। आरतिम्।
सुवाध्वाऽ१राऽ२म्॥ विश्वास्याऽ१दूऽ२॥ ताममृतम्। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४ऽइ॥
डा॥

(दी. ८। प. ११। मा. ८) १० (टै।८०)

(४५।४)

एनावोअग्निंन्नमसो। जोनपोवा॥ तामाहुवे। प्राऽ२३याम्। चाइतिष्ठम्। राऽ२३तीम्।
स्वध्वरम्॥ विश्वस्याऽ२३दू॥ ताममृतम्। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १२। मा. ७) ११ (छे।८१)

(४६।१) ॥ दैवराजम्। देवराड्, (गौतमः,) बृहत्यग्निः॥

शेषेवनाऽ५इषुमातृषू॥ सांत्वामर्तासः। इन्धाऽ२३ताइ। आतंद्रोहव्यंवह। साइ।
हवीऽ२ष्काऽ२३४र्त्ताः॥ आदिद्देवाइ॥ षुराजाऽ२३साऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १०। मा. ८) १२ (णै।८२)

(४७।१) ॥ गाथिनम्। कौशिको गाथिर्बृहत्यग्निः॥

अदर्शिगातुवित्तमाऽ६ए॥ यस्मिन्स्थिव्रतानियादधुः। ऊपोषुजाऽ३। हाऽ३हाइ।

तमारियस्यवर्द्धनम्॥ अग्नाइन्नक्षाऽ३। हाऽ३हा॥ तुनोगिरः। इडाऽ२३भाऽ३४३।

ओऽ२३४५इ। डा।

(दी. ६। प. ११। मा. ८) १३ (कै।८३)

(४८।१) ॥ बार्हदुक्थे द्वे। द्वयोर्बृहदुक्तो बृहत्यग्निः॥

अग्निरुक्थाइ॥ पुरोऽ३हाइताः। ग्रावाणोब। हिराऽ३ध्वाराइ।

ऋचायामिमरुतोब्रह्माणस्पाताऽ२इ॥ दाइवाऽ२आवाऽ२३ः॥ वरोऽ२३४वा॥ णाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ८। मा. ९) १४ (गो।८४)

(४८।२)

अग्निरुक्थाऔहोहोहाइ॥ पुरौवाओऽ२३४वा। हिताः। ग्रावाणोब। हिंरौवाओऽ२३४वा।

ध्वराइ। ऋचौऽ३हो। यामिमरुतोब्रह्माणस्पाताऽ२इ॥ दाइवाऽ२आवाऽ२३ः॥ वरोऽ२३४वा।

णाऽ५योऽ६हाइ।

(दी. ७। प. ११। मा. ११) १५ (चा।८५)

(४९।१) ॥ पौरुमीढम्। पुरुमीढो बृहत्यग्निः॥

अग्निमी। डिष्वा॒ऽ३४औहोवा॥ आवसे। गाथाभिः॒शी। रशोचाऽ२३इषाम्। अग्निः॒रायाइ।

पुरूमाऽ२३इढा। श्रुतन्नरो॥ अग्निःसूऽ२३दी॥ तयाइच्छाऽ२३४५। दीऽ६४६ः॥

दक्षाऽ३याऽ२३४५॥

(दी. ९। प. ११। मा. ७) १६ (ते।८६)

(५०।१) ॥ कार्णश्रवसम् प्रास्कण्वं वा। कर्णश्रवा बृहत्यग्निः॥

श्रुधीऽ२। श्रूऽ२३४। धिश्रुत्कर्णव। ह्निभाइः॥ देवैरग्नेसयावाऽ२३भीः।

आसीदतुर्बर्हिषिमित्रोअर्याऽ२३मा॥ प्रातर्याऽ२३वाऽ३॥ भाऽ२इराऽ२३४औहोवा॥ एऽ३।

ध्वरआ॥

(दी. १०। प. १०। मा. ७) १७ (मे।८७)

(५१।१) ॥ दैवोदासम्। दिवोदासो बृहत्यग्निः॥

प्रदैवोदासोग्नीः॥ देवइन्द्रोनमज्मना। अनुमाऽ२३ता। रंपृथिवींविवावृताइ॥ तस्थौनाऽ२३का॥

स्याशर्मणि। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ४) १८ (घी।८८)

(५२।१) ॥ सौक्रतवम्। सुक्रतुर्बृहत्यग्निः॥

अधज्माओवा॥ धवादाऽ१इवाऽ२ः। बृहतोरोचानाऽ१दाधीऽ२। आऽ। यौ। हौहोऽ३वा।

वार्द्धस्वतन्वा। गाइराऽ१ममाऽ२। आजातासौ। हौहोऽ३वाऽ३४॥ हा। हाउवाऽ३॥

क्रतोपृणाऽ२३४५॥

(दी. ९। प. १३। मा. ५) १९ (दु।८९)

(५३।१) ॥ काण्वे द्वे। द्वयोः कण्वो बृहत्यग्निः॥

कायमानोऽ५वनातुवाम्॥ यन्मातृरा। जागन्नाऽ२३४पाः। नतत्तेअग्नेऽ३। प्रमृषेऽ३हाऽ३इ।

निवाऽ२र्ताऽ२३४नाम्॥ यद्दूराऽ२३इसान्। इहाभुवा। औऽ३होवा। हो५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ११। मा. ८) २० (टै।९०)

(५३।२)

एकाया॥ मानो। वनातूऽ२३४वाम्। ओइ। तूऽ२३४वाम्। उहुवाहाइ। औऽ३होऽ३१इ।

यन्मातृरा। जागन्नाऽ२३४पाः। आऽ२३४पाः। उहुवाहाइ। औऽ३होऽ३१इ॥ नतत्तआ।

ग्राऽ३इप्रमृषाऽ३इ। निवाऽ२र्ताऽ२३४नाम्। ताऽ२३४नाम्। उहुवाहाइ। औऽ३होऽ३१इ॥

यद्दूरेसान्। इहाभूऽ२३४वाः। भूऽ२३४वाः। उहुवाहाइ। औऽ३होऽ३१२।

याऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ७। प. २४। मा. २१) २१ (श्वा।९१)

(५४।१) ॥ मानवाद्ये द्वे। द्वयोर्मनुर्बृहत्यग्निः॥

निःत्वामग्नाइ॥ मनुर्द्धाऽ२३४धाइ। ज्योतिर्जना। याशश्वाताऽ२इ। दी। दाइ। थक।

ण्वाऋतजाऽ३। तऊऽ२क्षाऽ२३४इताः॥ यन्नमस्याऽ२३॥ ताऽ२इकृऽ२३४औहोवा॥

ष्टाऽ२३४याः॥

(दी. ५। प. १२। मा. ११) २२ (फा।९२)

(५४।२)

होवाइ। निब्रामग्नेमनुर्दधे। होवाइ॥ ज्योतिर्जनायशश्वते। दाइदेऽ१थक। ण्वाऋतजाऽ३१।
तऊऽ२क्षाऽ२३४इताः॥ यन्नामाऽ२३स्याऽ३॥ ताऽ२इकृऽ२३४औहोवा॥ ष्टाऽ२३४याः॥

(दी. ८। प. १०। मा. १०) २३ (णो।९३)

पञ्चमी दशतिः ॥५॥

(५५।१) ॥ द्रविणम्। अग्निर्बृहत्यग्निः॥

देवोऽ३वोऽ३द्रविणोदाः॥ पूर्णाविवष्ट्वासिचम्। ऊद्वाऽ१सिञ्चाऽ२। ध्वमुपवापृणध्वम्॥
आदिद्वोदेऽ२॥ वओहते। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ९। मा. ५) २४ (दु।९४)

(५६।१) ॥ बार्हस्पत्यम्। बृहस्पतिर्बृहत्यग्निः (ब्राह्मणस्पतिर्वा)॥

प्रैतूऽ३ब्रह्मणस्पतीः॥ प्रदाइविये। तुसूनृताऽ३। अच्छाऽ२वाऽ२३४इराम्। नर्यंप।
ङ्क्तिराधाऽ१साऽ२३म्॥ देवाऽ२याऽ२३४ज्ञाम्॥ नाऽ२याऽ२३४औहोवा॥ तूऽ२३४नाः॥

(दी. ४। प. ९। मा. ८) २५ (धे।९५)

(५७।१) ॥ वीङ्कम्। वसिष्ठो बृहत्यग्निः (यूपो वा)॥

ऊर्ध्वऊषुणाऽ३ऊताऽ२३४याइ॥ तिष्ठादेवानसविता। ऊर्ध्वोवाऽ२३जा। स्यासनिता।
यादंजिभीऽ२ः॥ वाधाद्भीऽ२ः॥ वीवीऽ२। ह्वयामाऽ२३हाऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १०। मा. ७) २६ (मे।९६)

(५८।१) ॥ विष्पर्धसस्साम। विष्पर्धसो बृहत्यग्निः॥

प्रयोरायाऽ५इनिनीषताइ॥ मर्तोयस्तेवसोदाशत्। सवीराऽ२३न्धा। ताअग्नउ। क्थशꣳसिनम्॥

त्मनासाऽ२३हा॥ स्वपोषाऽ२३इणाऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. ९। मा. ९) २७ (धो।९७)

(५९।१) ॥ ऐतवाद्ध्यम्। ऐतवद्भिर्बृहत्यग्निः॥

प्रवाः॥ यह्वंपुरूऽ२३णाम्। विश्वांदेवयताऽ२३इनाम्। अग्निꣳसूक्तेभिर्वचोभिवृणीमाऽ२३हाइ॥

याꣳसाऽ२माइदाऽ२न्॥ यइंधते। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ९। मा. ९) २८ (झो।९८)

(६०।१) ॥ दोहः साम। दोहो बृहत्यग्निः॥

अयमग्निःसुवीर्यस्यहाउ॥ आइशेहिसौभगस्य। होवाऽ३हाइ। रायईशेस्वपत्य।

स्यागोऽ१माताऽ२३ः। होवाऽ३हाइ॥ ईशेहाऽ२३इवृऽ३। होवाऽ३हा॥ त्राहथानाम्।

इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १२। मा. ९) २९ (फो।९९)

(६१।१) ॥ समन्तम्। अग्निर्वसिष्ठो वा बृहत्यग्निः॥

त्वमग्नेगृहपताइः। त्वꣳहोतानोअध्वराइ। त्वंपोऽ२३ता। वाइश्ववा। रप्रचाइताः।

औहोऽ३४वाहाइ॥ य। क्षाइयाऽ२३सीऽ३। होवाऽ३हाइ॥ चवाराऽ२३याऽ३४३म्।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १२। मा. १२) ३० (ठा।१००)

(६१।२) ॥ समन्ते द्वे। द्वयोर्वरुणो बृहत्यग्निः॥

त्वमग्नेगृ। हाऽ५पतीः॥ त्वꣳहोऽ२३४ता। नोअध्वाऽ२३४राइ॥ त्वाऽ२०पोऽ२३४ता।

विश्वावाऽ२३४रा। प्रचेताऽ३ः॥ यक्षायेऽ३॥ याऽ२साऽ२३४औहोवा॥ चवारियाऽ२३४५म्॥

(दी. ५। प. १०। मा. ६) ३१ (मू।१०१)

(६१।३)

त्वमाऽ३ग्नेगृहापतीः॥ त्वꣳहोतानोअध्वरे। त्वाऽ२३०पोता॥ औहोऽ३४इ। औहो। वाहाइ।

वाइश्ववा। रप्रचाइताः। औहोऽ३४इ। औहो। वाहाइ॥ यक्षाइयासा। औहोऽ३४इ। औहो।

वाहाइ॥ चवाराऽ३४याऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २१। प. १८। मा. १४) ३२ (गी।१०२)

(६२।१) ॥ वाम्रम्। वाम्रो वैखानस आङ्गिग दानवो वा बृहत्यग्निः॥

सखायस्त्वाऔहोहोहाइ॥ ववृ। माऽ२३४हाइ। देवंमर्ताऽ३हाऽ३। सऊऽ२ताऽ२३४याइ।

अपान्नपाऽ३। तꣳसु। भगौ। वाऽ३हाऽ३इ। सूदꣳसाऽ२३४साम्॥ सुप्रतूऽ२३र्तीम्॥

अनेहाऽ२३साऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १४। मा. १०) ३३ (घो।१०३)

॥ षष्टी दशतिः ॥६॥

(६३।१) ॥ त्रिष्टुप् श्यावाश्वम्। स्यावाश्वस्त्रिष्टुबग्निः॥

आजुहोता॥ हविषामर्जयाऽ२ध्वाउवाऽ२। निहोतारंगृहपतिंदधाऽ२इध्वाउवाऽ२३४॥

इडाऽ३४स्पदाइ॥ नमसारातहाव्याऽ२म्। सापर्यता। याजतंपाऽ२३। स्तियोवा।

आऽ५नोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. ९। मा. ६) ३४ (झ्रू।१०४)

(६४।१) ॥ ऋतुसामणी द्वे। द्वयोर्ऋतुर्जगत्यग्निः॥

ओइ। चित्रेइच्छाइशोऽ१स्तरुणाऽ२३। स्याऽ३वक्षथः॥ ओइ। नयोमाताराऽ१वनुवाऽ२३इ।
तीऽ३धातवे॥ ओइ। अनूधायादजीजनाऽ२३त्। आऽ३धाचिदा॥ ओइ।
ववक्षत्साद्योऽ१महिदूऽ२३। तियाऽ३०चाऽ५राऽ६५६न्॥ दूत्यंचरन्महेऽ२३४५॥

(दी. १०। प. १३। मा. १०) ३५ (बो।१०५)

(६४।२)

चित्राऽ६ए॥ एऽ३१२३४। शिशोस्तरुणस्यवक्षथः। क्षथः। हिहिहियाऽ६हाउ। एऽ३१२३४।
नयोमातरावन्वेतिधातवे। तवे। हिहिहियाऽ६हाउ॥ एऽ३१२३४। अनूधायदजीजनदधाचिदा।
चिदा। हिहिहियाऽ६हाउ॥ एऽ३१२३४। ववक्षत्सद्योमहिदूतियंचरन्। चरन्।
हिहिहियाऽ६हाउ। वा॥ एऽ३। ऋतून्॥

(दी. १६। प. २०। मा. १०) ३६ (ङौ।१०६)

(६५।१) ॥ यामं कौत्सं वा। यमस्त्रिष्टुबग्निः (विश्वेदेवा वा)॥

ओऽ४हा। हहाइ। इदंतए। काऽ३०परः। ऊतएकाम्॥ तृतीयेना। ज्योतिषाऽ३।
संविशस्वा॥ संवेशनाः। तनुवे। चारुरेधी॥ ओऽ४हा। इहाइ। प्रियोदेवा। नाऽ३०पर।
माऽ३४३इ। जाऽ३नाऽ५इत्राऽ६५६इ॥

(दी. ७। प. १७। मा. १०) ३७ (छौ।१०७)

(६६।१) ॥ कौत्सम्। कुत्सो जगत्यग्निः।यज्ञसारथि॥

इमꣳस्तोऽ२३४माम्। अर्हातेऽ२३४जा। तावेदसेऽ३। होइ॥ रथामीऽ२३४वा।

संमाहेऽ२३४मा। मानीषयाऽ३। होइ॥ भद्राहीऽ२३४नाः। प्रमातीऽ२३४रा।

स्यासꣳसदेऽ३। होइ॥ अग्नाइसाऽ२३४ख्याइ। माराइषाऽ२३४मा। वायंतवाऽ३।

होऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १७। मा. ९) ३८ (छो।१०८)

(६७।१) ॥ अग्निर्वैश्वानरस्य सामनी द्वे। द्वयोरग्निर्वैश्वानरास्त्रिष्टुबग्निर्वैश्वानरः॥

मूर्द्धोहोहाइ॥ नंदाऽ२३४इवाः। अरताइम्। पृथीऽ३व्याः। वैश्वानराम्। ऋतआ।

जातमग्नीम्॥ कविꣳसम्राजमतिथाइम्। जनाऽ२३नाम्॥ आसन्नःपा। त्राऽ३०जन। याऽ३४३।

ताऽ३दाऽ५इवाऽ६४६ः॥

(दी. ६। प. १३। मा. १४) ३९ (गी।१०९)

(६७।२)

होवाइ। मूर्द्धोहाइ॥ नंदाइ। वाऽ३अर। तिंपृथिव्याः। इहोइयाऽ३। ईऽ३या। वैश्वानराम्।

ऋतआ। जातमग्नीम्। इहोइयाऽ३। ईऽ३या॥ कविꣳसंम्रा। जाऽ३मति। थिंजनानाम्।

इहोइयाऽ३। ईऽ३या॥ आसन्नःपा। त्राऽ३०जन। यंतदेवाः। इहोइयाऽ३। ईऽ२।

याऽ२३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १३। प. २५। मा. १४) ४० (र्णी।११०)

॥ इति ग्रामेगेयगाने द्वितीयस्यार्धः प्रपाठकः ॥२॥

(६८।१) ॥ आश्वे द्वे। द्वयोरश्वस्त्रिष्टुबग्निः॥

वित्वत्। ओहाइ॥ आपोनपर्वतस्यपाऽ२३ष्ठात्। उक्थेभिरग्नेजनयंतदाऽ२३इवाः॥

तंत्वागिरःसुष्टुतयोवाजयाऽ२३०ती॥ आजिन्नगाईववाऽ२३हाऽ३ः। जायेऽ३।

ग्यूऽ२राऽ२३४औहोवा॥ अश्वाऽ२३४५ः॥

(दी. १०। प. ९। मा. ९) १ (भो।१११)

(६८।२)

हा। ययाइदिवोहाइ। वित्वत्। आपो। नपर्व। तस्यपृष्ठात्॥ हा। ययाइदिवोहाइ। उक्थाइ।

भिरा। ग्नेऽ३जन। यंतदेवाः॥ हा। ययाइदिवोहाइ। तंत्वा। गिराः। सुष्टुतयः। वाजयंती॥ हा।

ययाइदिवोहाइ। आजीम्। नगाइर्ववाऽ२३हाऽ३ः। जायेऽ३। ग्यूऽ२राऽ२३४औहोवा॥

अश्वाऽ२३४५ः॥

(दी. ३। प. २५। मा. १९) २ (णो।११२)

(६९।१) ॥ वामदेव्यं रौद्रं वा। रुद्रस्त्रिष्टुबग्निः॥

आवोराजा॥ नमध्व। रस्यरुद्राम्। हो। ता। राम्। स। त्ययजाऽ३म्। रोदसीयोः॥ अग्निंपु।

रा। तनयि। त्वोरचित्तात्॥ हिरण्य। रू॥ पाऽ३मव। साऽ३४३इ। काऽ३र्णूऽ५ध्वाऽ६४६म्॥

(दी. ४। प. १८। मा. ७) ३ (दे।११३)

(७०।१) ॥ वैश्वज्योतिषे द्वे। द्वयोर्विश्वज्योतिस्त्रिष्टुबग्निः उषा वा॥

इन्धाऽ३१२३४इ। हाउहाउहाउ। राजासमर्योन। मोभीरोभीः। ओभीः॥ यस्याऽ३१२३४।

हाउहाउहाउ। प्रतीकमाहुतंघृ। ताइनाआइना। आइना॥ नराऽ३१२३४। हाउहाउहाउ।

हव्येभिरीडतेस। बाधाबाधाः। बाधाः॥ आग्नाऽ३१२३४इ। हाउहाउहाउ।

अग्रमुषसाऽ२३मश्नाउ। वाऽ३॥ चीऽ२३४५॥

(दी. २१। प. २०। मा. २४) ४ (डी।११४)

(७०।२)

हौहोऽ२। हौहोऽ२। हौहोइ। इंधेराजासमर्योनऽ३मोभीऽ२ः। ओभीऽ२ः। ओभीऽ२ः॥

यस्यप्रतीकमाहुतंघृऽ३ताइनाऽ२। आइनाऽ२। आइनाऽ२॥ नरोहव्येभिरीडतेसऽ३बाधाऽ२ः।

बाधाऽ२ः। बाधाऽ२ः॥ हौहोऽ२। हौहोऽ२। हौहोइ। आग्निरग्रमुषसाऽ२३मश्नाउ। वाऽ३॥

चीऽ२३४५॥

(दी. १३। प. १८। मा. १२) ५ (डा।११५)

(७१।१) ॥ यामे द्वे। द्वयोर्यमस्त्रिष्टुबग्निः॥

प्रकेतुना। बृहताया। तियग्नाइ। होइहोवाऽ३होइ॥ आरोदसाइ। वृषभोरो। रवीताइ।

होइहोवाऽ३होइ॥ दिवश्चिदा। तादुपमाम्। उदानाट्। होइहोवाऽ३होइ॥ अपामुपा।

स्थेमहिषो। ववर्द्धा। होइहोवाहाऽ३१उ। वाऽ२३॥ देऽ३। दिवाऽ२३४५म्॥

(दी. ११। प. १९। मा. १५) ६ (घु।११६)

(७१।२)

हा। हाऔहोइ। प्राऽ२३४के। तुना। बृहताऽ३। यातियग्नीः॥ हा। हाऔहोइ। आऽ२३४रो।

दसाइ। वृषभोऽ३। रोरवीती। हा। हाऔहोइ। दीऽ२३४वाः। चिदा। ताऽ३दुप।

मामुदानट्॥ हा। हाऔहोइ। आऽ२३४पाम्। उपा। स्थेऽ३महि। षोववर्द्धा। हा। हाऔहो।

वाऽ२३४औहोवा। एऽ३। दिवाऽऽ२३४५म्॥

(दी. ७। प. २९। मा. १६) ७ (झू।११७)

(७२।१) ॥ मराये द्वे। द्वयो राश्मिमरायोविराडग्निः॥

हाउहाउहाउ। आग्नीम्। नराः। नराः। नराः। दीऽ३धिति। भिररण्योः॥ हाउहाउहाउ।

हास्ता। च्युताम्। च्युताम्। च्युताम्। जनय। तप्रशस्तम्॥ हाउहाउहाउ। दूराइ। दृशाम्।

दृशाम्। दृशाम्। गृहप। तिमथव्युम्। हाउहाउहाउ। वा॥ ईऽ२३४५।

(दी. १०। प. २४। मा. २६) ८ (भ्रू।११८)

(७२।२)

हाउहाउहाउ। आग्नीम्। नराः। दीऽ३धिति। भिररण्यो। ण्यो। ण्योः॥ हाउहाउहाउ। हास्ता।

च्युताम्। जनय। तप्रशस्तम्। स्तम्। स्तम्॥ हाउहाउहाउ। दूराइ। दृशाम्। गृहप।

तिमथव्युम्। व्युम्। व्युम्। हाउहाउहाउ। वा। ईऽ२३४५॥

(दी. १२। प. २४। मा. १४) ९ (झ्रौ।११९)

षोडश सप्तमः। सप्तमः खण्डः ॥७॥ दशतिः॥

(७३।१) ॥ श्येनः प्रजापतिर्वा, दीर्घायुष्यं वा। प्रजापतिस्त्रिष्टुबग्निः; उषावा॥

अबोधिया। ग्नाइस्समिधाजनाऽ२नाम्। प्रताइधेऽ३नूम्। इवायतीमुषासम्। यह्वाईऽ३वा।

प्रवाऽ२यामुज्जिहानाः॥ प्रभानाऽ२३वाः॥ सस्रतेनाकमच्छ। इडाऽ२३भाऽ३३४।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १४। प. ११। मा. ९) १० (तो।१२०)

(७४।१) ॥ वासुक्रं शुक्रं वा वसुक्रस्त्रिष्टुबग्निः॥

प्रभूर्जयंताम्॥ महाऽ३४३०विपोधाम्। मूरेरमूरंपुरादर्माऽ२३णाम्॥ नयाऽ३४३०तंगीर्भिः। वनाऽ३४३धियंधाः॥ हरिश्मश्रुन्नवर्मणाऽ६॥ हाउवा॥ धनाऽ३र्चीऽ२३४५म्॥

(दी. ८। प. ८। मा. ७) ११ (डे।१२१)

(७५।१) ॥ पौषम्। पूषात्रिष्टुप्पूषा॥

शुक्रंतेअन्ययजतम्। तआऽ६न्यात्॥ विषुरूपेअहनीद्यौः। इवाऽ२३सी। वाइश्वाहिमायाअवसाइ। स्वधाऽ३वान्॥ भद्राते। पू॥ षाऽ३निह। रातिरस्तु। तिराऽ५स्तुहाउवा॥

(दी. ९। प. ११। मा. ११) १२ (त।१२२)

(७६।१) ॥ कौत्सम्। कुत्सस्त्रिष्टुबग्निः॥

इडामग्नाइ॥ पुरुदाऽ३। स२ंसनिंगोः। शश्वत्तम२ंहवमाना। यसाऽ२३४धा। स्यान्नस्सूनुस्तनयः। विजाऽ३वाऽ३॥ आग्नेसाताइ॥ सुमाऽ३४३। तीऽ३ः। भूतुहाउवा॥ स्माऽ२३४५इ॥

(दी. ६। प. १२। मा. ७) १३ (खे।१२३)

(७७।१) ॥ काश्यपे द्वे। द्वयोः कश्यपस्त्रिष्टुबग्निः॥

प्रहोताजाताः॥ महान्नभोविन्नृषद्माऽ२३सीदात्। अपांविवर्ताइ॥ दधद्योऽ२३धा। याइ। सुतेवया२ंसियन्ताउ। वा॥ वासूनिविध। ताऽ२। याऽ२३४औहोवा॥ तनूऽ३पाऽ२३४५ः॥

(दी. १२। प. ११। मा. ४) १४ (चे।१२४)

(७७।२)

प्रहोताजातः। उहुवाहाइ। माहाऽ२न्नाभोऽ२। वाइन्नृषद्मासीददपांविवाऽ२३र्ताइ।

आऔऽ३हो। इहा। दाधाऽ२द्योधाऽ२। याइसुतेवयाꣳसियंतावसूऽ२३नी। आऔऽ३हो।

इहा॥ विधतायेऽ३॥ तनूऽ२पाऽ२३४औहोवा॥ हविष्मतेऽ२३४५॥

(दी. १०। प. १३। मा. ८) १५ (वै।१२५)

(७८।१)　　॥ घृताचेराङ्गिरसस्य साम। घृताचिस्त्रिष्टुबग्निः; इन्द्रो वा॥

प्रसम्राजम्॥ असुराऽ३। स्याप्रशस्ताम्। पुꣳसःकृष्टाइ। नाऽ३मनु। मादियस्या।

इन्द्रस्येवाऽ३४३प्रतव॥ सस्कृतानी॥ वंदद्वारावंदमाना॥ विवाऽ२ष्टूऽ२३४औहोवा॥

वीऽ२३४शाः॥

(दी. ८। प. ११। मा. ५) १६ (टु।१२६)

(७९।१)　　॥ प्रासाहम्। भरद्वाजस्त्रिष्टुबग्निः॥

अरण्योः॥ निहितोजाऽ३४३तवेदाः। गर्भइवेत्सुभृतोग। र्भिणाऽ२३४इभीः॥

दिवेदिवईड्योजागृवाऽ२३द्भीः॥ हाऽ२३४वी। ष्माऽ२३४द्भीः। मनुष्येऽ५भिरग्निः।

एहियाऽ६हा॥ होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. ११। मा. १०) १७ (पौ।१२७)

(८०।१)　　॥अग्नेर्वैश्वानरस्यात्रेर्वा, राक्षोघ्नम्। अग्निस्त्रिष्टुबग्निः॥

अहा। वोऽ३हा। वोऽ३हा। सनादग्नाइ। मृणासि। यातुधानान्॥ नत्वारक्षा। सीऽ३पृत।
नासुजिग्यूः॥ अनुदहा॥ सहमू। रान्कयादाः॥ अहा। वोऽ३हा। वोऽ३हा। माताइहेत्याः।
मुक्षत। दाऽ३४३ ई । वीऽ३याऽ५याऽ६५६ः॥

(दी. ५। प. ११। मा. ८) १८ (भै।१२८)

अष्टमः खण्डः ॥८॥ दशतिः॥

(८१।१) ॥ पाथे द्वे। द्वयोः पथोऽनुष्टुबग्निः॥

आग्नाओऽ२३४वा॥ ओजिष्ठऽ३मा। भाराओऽ२३४वा। द्युम्नमस्मभ्यमध्रिगोऽ३॥ ओइ।
प्रानाओऽ२३४वा॥ रायेपनीऽ२यसेऽ३। ओइ। रात्साओऽ२३४वा॥ वाजायपन्थाऽ२३४५म्॥

(दी. ६। प. १०। मा. ७) १९ (ङे।१२९)

(८२।१)

अग्नेहाउ॥ ओजि। ष्ठामाऽ१भारा। औहोऽ२३४वा। द्युम्नमस्म। भ्यामध्रीगा। औहोऽ२३४वा॥
प्रनोराये। पानीऽ१यासा। औहोऽ२३४वा॥ रात्सीऽ२वाजाऽ२॥ यपोवाऽ३ओऽ२३४वा।
थाऽ५मोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. १३। मा. ३) २० (जि।१३०)

(८२।१) ॥ बृहदाग्नेयम्। अग्निरनुष्टुबग्निः॥

यदिवीरोअनुष्यात्। ऐयाऽ३४३ईऽ३४या॥ अग्निमिंधीतमौ। होऽ३हाऽ३। होऽ२३४र्तियाः।
आजूऽ२ह्वाह्वाऽ२३। व्यमाऽ२नूऽ२३४षाक्॥ शर्मभ। क्षाइ। तदाऽ३हाऽ३इ॥
वाऽ३ओऽ२३४वा॥ व्याऽ२३४५म्।

(दी. ६। प. १२। मा. ९) २१ (खो।१३१)

(८३।१) ॥ त्वेषस्ते यामम्। यमोऽनुष्टुबग्निः॥

त्वेषास्तेऽ२३धूमऋण्वतिहाउ॥ दिविसंछुक्रऽ३आताताऽ३ः। सूरोनहीहाउ॥ द्युतातूवाऽ३म्।

कृपापवाहाउ॥ करोचाऽ२३साऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ८। मा. ९) २२ (गो।१३२)

(८४।१) ॥ बृहदाग्नेयम्। अग्निरनुष्टुबग्निः॥

त्वꣳहिक्षैतवद्यशः। ईयइयाहाइ॥ अग्नाइमि। त्रो। नापत्याऽ२३४साइ। आऔऽ३४हो।

इयाहाइ। त्ववि। चा। षणेऽ२श्राऽ२३४वा:। आऔऽ३४हो। इयाहाइ॥ वासाऽ३उवा॥ पु।

ष्टाइम्। नापुष्याऽ२३४सी। आऔऽ३४हो। इयाहा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १। प. २०। मा. १५) २३ (ङु।१३३)

(८५।१) ॥ बृहतश्च कौमुदस्य साम। कुमुकुमुद्बृहदनुष्टुबग्निः॥

प्रातरग्नाइःपूऽ६रुप्रियाः॥ विशास्तवे। ताऽ२३। अतिथाइः। वाइश्वेयास्मीऽ३न्।

अमाऽ२र्त्ताऽ२४याइ॥ हव्याऽ२३ꣳहोइ। मर्त्ताऽ३हो॥ सइधाऽ२३ताऽ३४३इ।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ११) २४ (टा।१३४)

(८६।१) ॥ यद्वाहिष्ठीये द्वे। द्वयोरग्निरनुष्टुबग्निः॥

यद्वाहिष्ठंतदा॥ ग्नयाइ। बृहदर्चविभावाऽ२३साउ। माहीऽ२षाइवाऽ२। त्वद्रयिः॥ त्वद्वाऽ२३जाः॥

उदीराऽ२३ताऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ९। मा. ७) २५ (ढे।१३५)

(८६।२) यद्वाहिष्ठीयोत्तरम्।

यद्वाहिष्ठंतदग्नये। यद्वाहिष्ठोवा॥ तदग्नयाइ। बृहदाऽ२३र्चा। विभावसाउ। महिषाऽ२३इवा।

त्वद्रयिः॥ त्वद्वाऽ२३जाः॥ उदीराऽ२३ताऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ११। मा. ७) २६ (पे।१३६)

(८७।१) ॥ विशोविशीयं ऐडं वा। अग्निरनुष्टुबग्निः॥

विशोविशोहिम्स्थिवोऽ६अतिथाइम्॥ वाजयन्ताः। पूऽ३रूप्रीऽ३याम्। अग्निंवोऽ२।

दूराऽ२३याम्। हिंमाइ। वाऽ३चाऽ३ः। स्तूऽ२३४षेहाइ॥ ओ। हुवाइ। शूऽ२३४षा॥ हिंमा।

स्याऽ३माऽ३। न्माऽ२३४भाइ। एहियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १७। मा. १३) २७ (छि।१३७)

(८८।१) ॥ आत्रेये द्वे। द्वयोरत्रिरनुष्टुबग्निः॥

बृहद्वयाः॥ हिभानाऽ२३वाइ। आर्चादेवा। याअग्नाऽ२३याइ। यम्मित्रन्न। प्राशस्तायाऽ२इ॥

मर्तासोऽ३दाऽ३॥ धिरोवा। पूऽ५रोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ९। मा. ६) २८ (धू।१३८)

(८८।२)

बृहद्वयोहिभानाऽ६वाइ॥ आर्चादेवा। यअग्नाऽ२३याइ। यम्मित्रन्न। प्राशुस्ताऽयाऽ२इ॥

मर्तासोद॥ धाइरेऽ१पूरा। औहोवाहाऽ३४औहोवा। वाऽ३हाऽ२३४५ः॥

(दी. १२। प. ९। मा. ७) २९ (झे।१३९)

(८९।१) ॥ श्रौतर्वणम्। श्रुतर्वाऽनुष्टुबग्निः॥

अगन्मवृ॥ त्राऽ३हान्ताऽ३माम्। ज्याइ४म्। ग्निमानाऽ३वाम्। यस्माऽ२३होइ। श्रुतर्वन्नार्क्षाइ॥ बृहाऽ२३ह्वोइ॥ आनीकयाऽ३१उवायेऽ३॥ ध्याऽ२३४ते॥

(दी. २। प. ९। मा. ७) ३० (झे।१४०)

(९०।१) ॥ इन्द्रस्य प्रियम्। इन्द्रोऽनुष्टुबग्निः॥

जातःपरेणऽ३धा। इहा। मणा। इहा। योऽ२३४नीम्। योनिमिंद्रश्चगच्छथः।

यत्सवृद्भिःसऽ३हा। इहा। भुवाः। इहा। योऽ२३४नीम्। योनिमिंद्रश्चगच्छथः॥

पितायत्कश्यऽ३पा। इहा। स्याग्नाइ। इहा। योऽ२३४नीम्। योनिमिंद्रश्चगच्छथः॥

श्रद्धामातामऽ३नूः। इहा। कवाइ। इहा। योऽ२३४नीम्। योनिमिंद्रश्चगच्छथाऽ२३४५ः॥

(दी. ११। प. २४। मा. १२) ३१ (घा।१४१)

त्रयोदश नवमः। नवमः खण्डः॥९॥ दाशतिः॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने द्वितीयः प्रपाठकः॥

(९१।१) ॥ बार्हस्पत्यम्। बृहस्पतिरनुष्टुबग्निः॥ विश्वे देवा वा॥

साम॒राजानंवरुणाम्॥ अग्निमन्वारभामहेऽ३। होवाऽ३हाइ। आदित्यंविष्णु॒सूर्यम्। होवाऽ३हाइ॥ ब्रह्मणाऽ२३०चाऽ३। होवाऽ३हाइ॥ बृहाऽ३उवाऽ३॥ पाऽ२३४तीम्॥

(दी. ८। प. ९। मा. ७) १ (ढे।१४२)

(९२।१) ॥ आरूढवदाङ्गिरसं यामं वा। आरूढवदङ्गिरानुष्टुबग्निः॥

आरोऽ३हान्। आरोऽ३हान्। आरोऽ३हान्। इतएतउऽ३दारूऽ१हाऽ२न्॥

दिवःपृष्ठानीऽ३यारूऽहाऽ२न्॥ प्रभूर्जयोयऽ३थापाऽ१थाऽ२॥ उद्यामंगिरऽ३सोयाऽ१यूऽ२ः।

आरोऽ३हान्। आरोऽ३हान्। आऽ२३। रोऽ२। हाऽ२३४। औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १२। प. १४। मा. १०) २ (झ्रौ।१४३)

(९३।१) ॥ आसिते द्वे। द्वयोरसितोऽनुष्टुबग्निः॥

रायेअग्नेमहाइ॥ त्वा॥ दानायसमिधीमाऽ२३ही। आइडीऽ२ष्वाहीऽ२। महेवृषन्।

द्यावाऽ२होत्राऽ२॥ यपोऽवाऽ३ओऽ२३४वा। थाऽ५इवोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. ८। मा. ४) ३ (जे।१४४)

(९३।२)

रायायाऽ२३ग्नेमहेत्वाहाउ॥ दानायसमिधीमाऽ२३हाइ। आइडाष्वाऽ३हाऽ३इ।

माहेवाऽ२३४र्षान्॥ द्यावाहोऽ३त्राऽ३॥ यपोऽ२३४वा। थाऽ५इवोऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ७। मा. ८) ४ (ठै।१४५)

(९४।१) ॥ त्वाष्ट्रीसाम। त्वष्टानुष्टुबग्निः॥

दधन्वेवाऽ५यदीमनू॥ वोचद्ब्रह्मेतिवेरुतत्। पारिविश्वाऽ२। निकाव्या॥ नाइमिश्चक्रौवा॥

ईऽ२३४वा। भुवात्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १०। मा. ४) ५ (ङी।१४६)

(९५।१) ॥ राक्षोघ्नम्। अगस्त्योऽनुष्टुबग्निः॥

प्रत्यग्ने। होइ। हरसाहराऽ६ए॥ शृणाहिवाऽ२इ। श्वताऽ३४५ः। पाऽ३४री।

यातुधानस्यरक्षसोऽ३॥ बाऽ२३लाम्॥ नियुब्ज्वोऽ२३४वा॥ रीऽ२३४याम्

(दी. ६। प. १०। मा. ६) ६ (डू।१४७)

(९६।१) ॥ मानवम्। मनुरनुष्टुबग्निः विश्वेदेवा वा॥

त्वमग्ने। त्वमग्नाइ॥ वसूꣳरिहा। रुद्राꣳआऽ२३दी। तियाꣳउता। यजासूऽ२३वा। ध्वरंजनम्॥

मनुजाऽ२३ताम्॥ घृतप्रुषम्। इडाऽ२३भाऽ३४५। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १२। मा. ७) ७ (फे।१४८)

सप्त दशमः। दशमः खण्डः ॥१०॥ दशतिः।

(९७।१) ॥ (द्यौ तानि पञ्च,) तौदे द्वे। तोद उष्णिगग्निः॥

पुरू॥ त्वादाशिवाङ्वोचायेऽ३। आरीराग्नाइ। तावस्विदा। तोदस्येवशरणाआऽ२३होइ॥

महाऽ२३होयेऽ३॥ स्यो। याऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ९। प. ९। मा. ४) ८ (ध्री।१४९)

(९७।२)

पुरुत्वादाशिवाङ्वो। चे॥ आरीराआऽ२३४ग्नाइ। तावस्वाऽ२३४इदा॥ तोदस्येवशर।

णयोऽ२३४हाइ॥ माऽ३हाऽ३। हिंमायेऽ३। स्यो। याऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ११। मा. ४) ९ (ट्री।१५०)

(९७।३) ॥दैर्घतमसानि त्रीणि। त्रयाणां दीर्घतमा उष्णिगग्निः॥

पुरुत्वादाशिवाङ्वो। चे। चे॥ अराइराऽ२३४ग्नाइ। तावस्त्वाऽ२३४इदा॥ तोदास्याऽ२३४इवा॥
शाराणाऽ२३४या। माऽ३हाऽ५स्याऽ६५६॥ एऽ३१॥

(दी. ५। प. ९। मा. ४) १० (भी।१५१)

(९७।४)

पुरुत्वाऽ३दाशिवाङ्वोचे॥ अरिर। ग्नाइ। त्वाऽ२स्त्वाऽ२३४इदा॥ तोऽ२३४दा।
स्याऽ२३४इवा॥ शाराणाऽ२३४या। माऽ३हाऽ५स्याऽ६५६॥

(दी. ३। प. ८। मा. ३) ११ (डी।१५२)

(९७।५)

पुरुत्वाऽ२३दाशिवाङ्वोचेहाउ॥ हा। औहोऽ३हा। ओऽ२३४वा। अरिरग्नेतवस्विदा॥ हा।
औहोऽ३हा। ओऽ२३४वा। तोदस्येवशरणआ॥ हा। औहोऽ३हा। ओऽ२३४वा॥ एऽ३।
महस्याऽ२३४५॥

(दी. १२। प. १४। मा. २) १२ (झा।१५३)

(९८।१) ॥प्रहितो द्वौ। द्वयोः श्यावाश्व उष्णिगग्निः॥

प्रहोत्रेपू॥ वियंवचो। अग्नयाऽ२३इभा। रताबृहत्। विपांज्योऽ२३ती॥ षिबायेऽ३।
भ्राऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ नवेऽ२धसेऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ८। मा. ३) १३ (जि।१५४)

(९८।२)

प्रहोत्राऽ३इपूर्वियंवचाः॥ अग्नयेऽ२भरताऽ३बृ। हाऽ२३त्। विपांज्योताइ। षीऽ२३४बि।

भ्रताऽ३इ॥ नाऽ२३वेऽ३॥ धाऽ३४५सोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ८। मा. ६) १४ (गू।१५५)

(९९।१) ॥श्रुध्ये द्वे। द्वयोः प्रजापतिरुष्णिगग्निः॥

अग्नेवाजाऽ५स्य। गोमतोवा॥ ईशानःसा। हसोयहो॥ अस्माइदेहिजातवेदोम। हाऽ२३इ।

श्रवाउवा। श्रूधियाऽ२। एऽ२३हियाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. ११। मा. ४) १५ (की।१५६)

(९९।२)

अग्नेवाजस्यगोहिंस्थिमतोहोहाइ॥ ईशानःसा। हासोयाऽ२३४हो। आस्मेऽ१दाइहीऽ३। जात।

वेदाऽ३ः॥ माऽ२३हीऽ३॥ श्राऽ३४५वोऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ८। मा. ५) १६ (ङु।१५७)

(१००।१) ॥ सदः। प्रजापतिरुष्णिगग्निः॥

अग्नेयजिष्ठोअध्वराऽ६ए॥ देवान्देवयऽ३ताइयाऽ१जाऽ२। हुवाऽ३। होऽ३वा॥ होतामंद्रः।

विराजाऽ१सीऽ२॥ हुवाऽ३। होऽ३वा। अतिस्राऽ२३इधाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ७) १७ (के।१५८)

(१००।२) ॥ हविर्धाने द्वे। द्वयोः प्रजापत्युष्णिगग्निः॥

अग्ने। इयाऽ३४३ईऽ३४या॥ यजिष्ठोध्वराइ। देवान्देवयतेऽ२। हौहोऽ२। याजाऽ२।

होताऽ२मान्द्रोऽ२॥ विराजाऽ३सी॥ आऽ२। तियाऽ२४औहोवा॥ स्त्रीऽ२३४धाः॥

(दी. ७। प. ११। मा. ५) १८ (चु।१५९)

(१००।३)

अग्नइया। ओवा॥ यजिष्ठोध्वराइ। देवान्दाऽ२३इवा। यातेऽ१याजाऽ२। होताऽ३उवा॥

मन्द्रोविऽ३राऽ२३। जाऽ२साऽ२३४औहोवा॥ अतिस्त्रिधाऽ२३४५इः॥

(दी. ६। प. ९। मा. ७) १९ (घे।१६०)

(१०१।१) ॥आतिथ्यम्। त्वष्टोष्णिगग्निः अदितिः॥

जज्ञानःसा॥ प्तमातृभाइः। मेधामाऽ२३४शा। सतश्चायाइ। अयाऽ२०धूऽ२३४वाः।

रयाऽ२३इणाम्॥ चिकायेऽ३॥ ताऽ२दा२३४औहोवा॥ ऊऽ२४पा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ७) २० (ध्वे।१६१)

(१०२।१) ॥आदित्यम्। अदितिरुष्णिगग्निः अदितिर्वा॥

उतस्याऽ३नोदिवामतीः॥ आदितिरू। तियागाऽ१माऽ२त्॥ साशंताऽ३ताऽ३॥ मा। यः।

कराओऽ२३४वा। अपाऽ५स्त्रिधाः। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ६) २१ (नू।१६२)

(१०३।१) ॥ वार्कजम्भम्। वृकजम्भ उष्णिगग्निः॥

ईडाष्वाऽ२३हिप्रतीवियाम्॥ याजस्वजा। तवेदसाऽ२३म्॥ चरिष्णुधू॥ माऽ२३४म।

गृभाऽ३इ। ताऽ२श्नोऽ२३४औहोवा॥ चीऽ२३४षाम्॥

(दी. ५। प. ८। मा. ६) २२ (बू।१६३)

(१०४।१) ॥ राक्षोघ्नम्। अगस्त्य उष्णिगग्निः॥

नतोवा। स्याऽ२३४मा। ययाचाऽ२३ना। रिपुरीशीतमाऽ३१उवाऽ२३। तीऽ२३४याः।

योअग्नयेऽ२ददा। शहव्यदोऽ२३४वा॥ ताऽ२३४ये॥

(दी. ६। प. ८। मा. ३) २० (गि।१६४)

(१०५।१) ॥ सौमक्रतवं बृहदाग्नेयीयं वा। सोमक्रतुरुष्णिगग्निः॥

अपत्यंवृजिनम्। रिपूम्। स्तेनाऽ२३४५म्॥ अग्नाइ। दुराधाऽ२३याऽ३४म्। दविष्ठमस्यसत्।

पताऽ३इ॥ काऽ२३र्धीऽ३। सूऽ३४५गोऽ६हाइ॥

(झै।१३५) (दी. २। प. ९। मा. ८) २४

(१०६।१) ॥ राक्षोघ्नम्। आगस्त्य उष्णिगग्निः॥

हाउश्रुष्ट्यग्नेनवस्यमेहाउ॥ स्तोमास्यवाइ। रविश्पतायेऽ३४। ऐहीहाउहोवा। निमायिनाः।

तपसाराऽ२३४। ऐहीहाउहोवा॥ क्षासाऽ२३४ः। ऐहीहाउहोवा॥ दहएऽ३४। हियाऽ६हा।

होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १५। प. १३। मा. १०) २५ (बौ।१६६)

अष्टादश एकादशः। एकादशः खण्डः॥११॥ दशतिः॥

(१०७।१) ॥ प्रमꣳहिष्ठीये द्वे॥ द्वयोरिन्द्रः ककुबग्निः॥

प्रमꣳहाऽ३इष्ठायगायता॥ ऋतान्नेऽ२। बृहतेशूक्राऽ३शोऽ३। चाऽ२३४इषाइ॥ उपाऔऽ३हो॥

स्तोतासोऽ३आऽ३। ग्नाऽ३४५योऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ७। मा. ६) २६ (ठू।१६७)

(१०७।२)

प्रमꣳहिष्ठाय। गाऽ५यता॥ ऋताऽ२१। व्नेऽ२। बृहाताऽ१इशूऽ२। क्र। शोचाऽ२३इषाइ॥
उप। स्तुतौऽ२॥ हुवाइ। होऽ३वाऽ३। सओऽ२३४वा॥ ग्नाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. २। प. १३। मा. ६) २७ (जू।१६८)

(१०७।३) ॥ गायत्रीसामासितम्। आसितः ककुबग्निः॥

प्रमाꣳहिष्ठायगा। ईयाऽ३४३ईऽ३४या। यतऋताव्नेबृहतेशुक्रशौऽ२। हौऽ२। हुवाऽ२इ।
चाइषाऽ२इ॥ उपाऽ३होइ। स्तुताऽ३हो॥ सोअग्नाऽ२३याऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ९) २८ (को।१६९)

(१०७।४) ॥ प्रमꣳहिष्ठीयम्। इन्द्रः ककुबग्निः॥

प्रमꣳहिष्ठायगायत। प्रमꣳहिष्ठोवा॥ यागायत। ऋताऽ२३व्नाऽ३४इ। बृहतेशुक्रशो।
चाऽ३इषाइ॥ उपौहोवाऽ३हाइ। स्तुतौहोवाऽ३हाऽ३॥ सओऽ२३४वा। ग्नाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ९। प. १०। मा. ६) २९ (नू।१७०)

(१०८।१) ॥ वाजभृद्वाजाभृद्वाजाभर्मीयं वा। भरद्वाजज़् ककुबग्निः॥

प्रासोऽ३हाइ। आग्नेऽ३हाइ॥ तवाऽ३१उवाऽ२३। तीऽ२३४भीः।
सुवीराभिस्तरतिवाजाकर्मभिः॥ यास्याऽ३हाइ। त्वाꣳसाऽ२३॥ ख्यमोवा। वाऽ५इथोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ९। मा. ८) ३० (ढै।१७१)

(१०९।१) ॥ सौभराणि त्रीणि। त्रयाणां सुभरिः ककुबग्निः॥

तंगूऽ३र्धाऽ३यासुवर्णरोवा॥ देवासोदेवमराऽ२ताइंदधाऽ२३। हो। न्वाऽ२३४इराइ॥ देवत्राह।
व्यमूऽ३हाऽ३॥ हाऽ२इषाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ८। मा. ५) ३१ (ई्ु।१७२)

(१०९।२)

तंगूर्धयासुवर्णाराम्॥ देवासोदाइ। वमरताऽ२३इम्। दधन्विराउ। वाऽ३। देऽ२३४वा॥

त्राहाऽ२३॥ व्यमोवा। हाऽ५इषोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ९। मा. ७) ३२ (घे।१७३)

(१०९।३)

तंगूर्धयास्वौहोर्णाराम्॥ देवाऽ२सोऽ२३४दे। वसरताऽ२इम्। दाऽ२३४धा। न्वाऽ२३४इराइ।

हाहोऽ२३४हा॥ देवाऽ२त्राऽ२३४हा॥ व्यमूऽ३हाऽ५इ॥ षाऽ२३४५इ॥

(दी. ५। प. ९। मा. ७) ३३ (भे।१७४)

(११०।१) ॥पक्थस्य सौभरस्य सामनी द्वे। द्वयोः पक्थःककुबग्निः॥

मा। नाः॥ हणीऽ३थाअतिथीऽ३म्। वासूराऽ२३४ग्नीः॥ पुरौहोवाऽ३हाइ।

प्रश्नौहोवाऽ३हाऽ३॥ स्तओऽ२३४वा। आऽ५इषोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ८। मा. ८) ३४ (वै।१७५)

(११०।२)

मानोहाउ। हाऽ२३४। णीथाअतिथिम्। वासूराऽ२३४ग्नाइः॥ पुरौहहोइ। प्रश्नौहहो॥

स्ताऽ२३४एषाः। एहियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ९) ३५ (जो।१७६)

(१११।१) ॥ देवानीकं सफम्। देवानीकः ककुबग्निः॥

भद्रोऽ४नः। होइ। अग्निराहुताऽ६ए॥ भद्राराताइः। सुभगभाऽ३॥ द्रोऽ२ध्वाऽ२३४राः॥

भद्राऊऽ२३ताऽ३॥ प्राऽ२३शाऽ३। स्ताऽ३४५योऽ६हाइ॥

(धे।१७७) (दी. ४। प. ९। मा. ८) ३६

(११२।१) ॥ गौतमं साध्यं वा। साधिः ककुबग्निः॥

याऽ५जि। ष्ठंबाऽ३वाऽ३वृमहाइ॥ देवंदेवत्राहोताऽ२३राम्। आमर्तियम्॥ आस्ययाज्ञाऽ२३।

स्याऽ२३सूऽ३॥ क्राऽ३४५तोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ७। मा. ४) ३७ (थी।१७८)

(११३।१) ॥ संवर्गः। जमदग्न्युष्णिगग्निः॥

तदग्नेद्यूऽ५म्नम्। आभरोवा॥ यत्सासाऽ२३हा। सदाऽ२३नाइ। कंचिदत्राऽ२३इणाम्॥

मान्युंजनस्यदूऽ२३हो॥ ढाऽ२३४याम्। एहियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ६) ३८ (नू।१७९)

(११४।१) ॥ राक्षोघ्नम्। अगस्त्योष्णिगग्निः॥

यद्वाऊऽ२३विश्पतिःशिताः॥ सुप्रीतोमनुषोविशे॥ विश्वादाऽ२३ग्नीः॥ प्रतिरक्षा। सिसेधता।

औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ८। मा. ५) ३९ (जु।१८०)

चतुर्दशद्वादशः, द्वादशः खण्डः॥१२॥ दशतिः॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने तृतीयस्यार्धः प्रपाठकः॥ इति प्रकृतिगाने आग्नेयं पर्व समाप्तम्॥

॥ इति प्रथमोऽध्यायः॥१॥

अथैन्द्रं पर्व॥

(११५।१) ॥ मार्गीयवम्। मृगयुर्गायत्रीन्द्रः॥

तद्वोहोवा॥ गायाऽ२। सुताइसाऽ२३४चा। पुरुहूता। यसात्वाऽ१नाऽ२इ॥ शंयत्। हा।

औऽ३होइ। गाऽ२३४वाइ॥ नाऽ२श्वाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। किनेऽ२३४५॥

(दी. ५। प. १२। मा. ६) १ (फू।१८१)

(११५।२) ॥ रौद्रे द्वे। द्वयोरुद्रो गायत्रीन्द्रः॥

तद्वोगाया॥ सुताइसचाऽ३। पूरुऽ२३हूताऽ३४। हाहोऽ३। यासत्वाऽ२३४नाइ॥

शंयद्गाऽ२३वे॥ नश्वौऽ२। हौऽ२। हुवोऽ२३४। वा। काऽ५इनोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ११। मा. ४) २ (ती।१८२)

(११५।३)

तद्वोगायसुतेसचाऽ६ए॥ पुरुहूतायस्त्वने। पुरुहूता। यासत्वाऽ२३नाऽ३४इ॥ शंयत्।

गौवाओऽ२३४वा॥ नाऽ२३श्वाऽ३। काऽ३४५इनोऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ८। मा. ६) ३ (डू।१८३)

(११४।४) ॥ ईनिधनं मार्गीयवं। मार्गीयवो (मृगयुः) गायत्रीन्द्रः॥

तद्वोगायसुतेसचाऽ६ए॥ पुरुहूतायसत्वनाइ॥ शंयद्गाऽ२३वे॥ ऐऽ२होऽ१आऽ२३इही।

नश्वाऽ२३। काऽ२इनाऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ७। मा. ६) ४ (छू।१८४)

(११६।१) ॥ आश्वम्। आश्वो गायत्रीन्द्रः।

यस्तेनूनाऽ५ऱ्शतक्रताउ॥ इन्द्रद्युम्नितमोमाऽ२दाः॥ तेननूनाऽ२३०मा॥ दाइमाऽ३२उवाऽ३॥

देऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. ५। मा. ५) ५ (मु।१८५)

(११७।१)   ॥ ऐटते द्वे। द्वयोरिटन्वान् गायत्रीन्द्रः॥

गावः। एगावाः॥ उपव। दाऽ३। वाऽ२दाऽ२३४औहोवा। वाऽ२३४टे॥ महीयाऽ२३४ज्ञा॥

स्वराऽ३। स्याऽ२राऽ२३४औहोवा। प्सूऽ२३४दा॥ उभाकाऽ२३४र्णा॥ हिराऽ३।

हाऽ२इराऽ२३४औहोवा॥ ण्याऽ२३४या॥

(दी. ७। प. १४। मा. ६) ६ (झू।१८६)

(११७।२)

ओइगाऽ२३४वाः॥ उपवऽ३दा। वाटाओऽ२३४वा। महीयज्ञस्यरप्सुदाऽ३॥ ओऊऽ२३४भा॥

कार्णाओऽ२३४वा॥ हिरण्ययाऽ२३४५॥

(दी. १। प. ७। मा. ५) ७ (खु।१८७)

(११८।१)   ॥ श्रौतकक्षे द्वे। द्वयोश्रुतकक्षो गायत्रीन्द्रः॥

अराऽ३४म्। अश्वाय। गायाऽ६ता॥ श्रुतक। क्षारा०गावाइ। आऽ२३४राम्। हाऽ३हाइ॥ इ।

द्रास्याऽ२३धा॥ हिंमायेऽ३। म्नो। याऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४ती॥

(दी. ५। प. १३। मा. ५) ८ (बु।१८८)

(११८।२)

अरमश्वायगायता॥ रमश्वोवा॥ यागायत। श्रुतक। क्षाऽ२३। हाऽ३हाऽ३इ।

आराऽ२०गाऽ२३४वाइ॥ आरमिन्द्राऽ३। हाऽ३हा॥ स्याधाम्रा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १३। मा. ३) ९ (बि।१८९)

(११९।१) ॥ तन्वस्य साम। तन्वः पार्थोवा गायत्रीन्द्रः॥

तमिन्द्राऽ२३०वाजयामसी॥ माहेवृत्रा। यहान्ताऽ१वेऽ२॥ सवार्षाऽ१वाऽ२३॥ षभोऽ२३४वा।

भूऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ६। मा. १) १० (त।१९०)

(११९।२) ॥ दावसुनिधनम्। दावसुर्गाय्त्रीन्द्रः॥

तमिन्द्राऽ२३०वाजयामसिहाउ॥ माहेवृत्रा। यहान्ताऽ१वेऽ२३। होवाऽ३हाइ॥

सर्वाषाऽ१वाऽ२३। होवाऽ३हा॥ षभोऽ२३। भूऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३।

दावसूऽ२३४५॥

(दी. ७। प. १०। मा. ३) ११ (त्रि।१९१)

(११९।३) ॥ निवेष्टवः। वसिष्ठो गायत्रीन्द्रः॥

तमिन्द्रवाजयामसीऽ६ए॥ महाऽ३हाइ। वृत्राऽ३याहन्तवेऽ२। ओऽ२। ईऽ२ऽ३या। ओमोवा॥

सहेवार्षाऽ२। ओऽ२। ईऽ२ऽ३या। ओमोवा॥ वृष। भोऽ२। याऽ२३४औहोवा॥

भूऽ२३४वात्॥

(दी. ६। प. १४। मा. ४) १२ (घी।१९२)

(११९।४) ॥ इडानां संक्षारम्। इडा गायत्रीन्द्रः॥

औहोइहुवाऽ३होइ। तमिन्द्रंवाऽ३जाऽ३यामसि॥ औहोइहुवाऽ३होइ।

महेवृताऽ३याऽ३हन्तवे॥ औहोइहुवाऽ३होइ। सवार्षाऽ२३४वृ॥ षभोभुवत्।

इडाऽ२३भाऽ३। एहीडा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. ११। मा. ८) १३ (पै।१९३)

(१२०।१) ॥ शाय्यातानि त्रीणि। शय्यातिर्गायत्रीन्द्रः॥

हाउत्वमिन्द्रा॥ बलादधि। हाऽ३उहाउ। सहसोजा। ताओऽ१जसाऽ३ः। हाऽ३उहाउ॥

त्वꣳसन्वृषाऽ३न्। हाऽ२उहाउ॥ वृषायेऽ३त्। आऽ२साऽ२३४औहोवा॥ वृधेऽ१॥

(दी. ५। प. ११। मा. १२) १४ (पा।१९४)

(१२०।२)

त्वमिन्द्रबलादधीऽ६ए॥ सहसोजा। ताओऽ१जसः॥ इयाऽ३होइ। इयायोऽ२३४वा॥

त्वाꣳसन्वृषन्। इयाऽ३होइ। इयायोऽ२३४वा॥ वृषायेऽ३त्। आऽ२साऽ२३४औहोवा॥

महेऽ१॥

(दी. ५। प. ११। मा. ८) १४ (पै।१९५)

(१२०।३)

त्वमिन्द्रबलादधिसहसाः॥ जाताऽ२ः। ओजसाऽ२३४ः। इहोइहा॥ त्वाꣳसन्वृषाऽ३४न्।

इहोइहा॥ वृषायेऽ३त्। आऽ२साऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४हा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ८) १६ (घै।१९६)

(१२१।१) ॥ इन्द्राण्याः साम। इन्द्राणी गायत्रीन्द्रः॥

यज्ञेइन्द्रमवर्द्धाऽ६यात्॥ यद्भूमिम्। व्या। व्यवाऽ२र्त्ताऽ२३४यात्। चाऽ२३४क्रा। णाऽ२३४ओ।
पाश्चन्दिवि॥ चक्राणओऽ२३॥ पाऽ२श्चाऽ२३४औहोवा॥ दीऽ२३४वी॥

(दी. ४। प. १०। मा. ७) १७ (नो।१९७)

(१२२।१) ॥गौषूक्तम्। गौषूक्तिर्गायत्रीन्द्रः॥

यदिन्द्राहंयथौ। हौहोवाहाइ। तुवाम्॥ ईशीयवस्वओऽ२। हुवाइ। हुवाये। काईऽ२त्॥
स्तोतामेगोसखौऽ२। हुवाई। हुवाये॥ सायाऽ२३त्। होऽ२वाऽ२३४औहोवा॥
अग्निराहुताऽ२३४५ः॥

(दी. १२। प. १३। मा. १०) १८ (जौ।१९८)

(१२२।२) ॥ आश्वसूक्तम्। आश्वसूक्तिर्गायत्रीन्द्रः॥

आऔहोवाहाइ। यदिन्द्राहाम्॥ यथा। त्वम्। ऐहीयैहीऽ१। आइशीयवस्वआइकइत्॥
ऐहीयैहीऽ१॥ आऽ२इ। स्तोताऽ२माइऽगोर॥ सखाऽ२३। साऽ२याऽ२३४औहोवा॥
शुक्रआहुताऽ२३४५ः॥

(दी. १२। प. १२। मा. १४) १९ (छी।१९९)

(१२३।१) ॥ गौरीवितम्। गौरीवितिर्गायत्रीन्द्रः॥

पन्यंपन्यमित्। सोताऽ६राः॥ पन्यंपन्यमित्सोऽ१ताऽ३राः। आ। धावत। मदियाया॥ सोमंवी।
राऽ२३॥ यशूऽ३राऽ५याऽ६५६॥

(दी. ३। प. ९। मा. ३) २० (ढि।२००)

(१२४।१) ॥गाराणि त्रीणि। त्रयाणां गरो गायत्रीन्द्रः॥

इदंवसाउ॥ सुतमाऽ२३०धाः। पिबाऽ२सुपू। णमुदाऽ२३राऽ३४म्॥ अनाऽ३४भयाऽ३इन्॥

ररोवा। माऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ७। मा. ६) २१ (छू।२०१)

(१२४।२)

इदाऽ३०वसोसुतमन्धाः॥ पिबासूऽ२३पूऽ३। णमूऽ२दाऽ२३४राम्॥ आऽ२३ना॥

भाऽ२याइन्। रराऽ२३। हाउवाऽ३। मातेऽ२३४५॥

(दी. ३। प. ८। मा. ३) २२ (ड्डु।२०२)

(१२४।३)

इदंवसोसुतमन्धाऽ६ए॥ पिबासुपूऽ३र्णामुदरौ। होऽ३वा। पिबासुपूर्णामुदरौ। होऽ३वा॥

आनाभाऽ३यीन्॥ ररिमाता। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १०। मा. ३) २३ (णि।२०३)

त्रयोविंशतिः प्रथमः खण्डः॥१॥ दशतिः॥३॥

(१२५।१) ॥ ऐडसौपर्णं शरुप्रवेतसं वा। त्रयाणां सुपर्णो गायत्रीन्द्रः॥

उद्धेदभ्योवा॥ श्रूतामाऽ२३४घाम्। वृषाभन्ना। रियाऽ२पाऽ२३४साम्॥ आऽ२स्ता।

राऽ२३मे॥ षाइसूरिया। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १०। मा. ४) २४ (जी।२०४)

(१२५।२) ॥ स्वारसौपर्णं शरुप्रवेतसं वा॥

उद्धेदभिश्रुतामाऽ६घाम्॥ वृषभन्नर्या। हिम्। पाऽ२३४साम्॥ आस्ताऽ३उवा॥ रामाइ।

षिसूऽ२३४वा। राऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) २५ (दू।२०५)

(१२५।३) ॥ विलम्बसौपर्णं शरुप्रवेतसं वा॥

उद्धेदभिश्रुतामघम्। ईयइयाहाइ॥ वृषभन्नर्या। हाऽ३हाऽ३इ। पाऽ२३४साम्।

आस्ताऽ३उवाऽ३॥ राऽ२माऽ२३४औहोवा॥ षिसूरियाऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ८। मा. ७) २६ (गे।२०६)

(१२६।१) ॥ शाकलम्। शकलो गायत्री, इन्द्रसूर्यौ॥

यदद्यकाऽ५च्चवृत्रहान्॥ उदगाअभिसूराऽ२३या॥ सार्वाऽ२म्॥ तादिन्द्रतायेऽ३। हिम्।

वाऽ३४५शोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ६। मा. ५) २७ (चु।२०७)

(१२७।१) ॥ आभरद्वसवे द्वे। द्वयोराभरद्वसुर्गायत्रीन्द्रः॥

यआहाउ॥ आनायाऽ२त्। आनायाऽ२३त्। पाराऽ२वाऽ२३४ताः। सुनीतीतूऽ२।

सुनीतीतूऽ२३। वाशंयाऽ२३४दूम्॥ इन्द्रस्सानाऽ२ः। इन्द्रस्सानाऽ२३ः॥

यूऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ साऽ२३४खा॥

(दी. ४। प. ११। मा. ९) २८ (तो।२०८)

(१२७।२)

यआनयत्। परावाऽ६ताः॥ सुनीतीतुर्वश्नाऽ१०याऽ३दूम्। इन्द्रस्सनोयुवाऽ१साऽ३खा।

इन्द्रोऽ२३४ग्नाइ॥ इन्द्राऔऽ३होऽ२३४। ग्नाइ॥ आइन्द्रोआ। ग्नाऽ२। याऽ२३४औहोवा॥

ईऽ२३४०द्राः॥

(दी. ८। प. ११। मा. ११) २९ (ट।२०९)

(१२८।१) ॥ तान्वे द्वे। द्वयोस्तन्वो गायत्रीन्द्रः॥

मानइन्द्राभियादाइशाः॥ सूरोअक्तु। षुवायाऽ२३माऽ३४त्॥ तुवाऽ३४युजा॥

वनाइमाऽ२३ताऽ३४३त्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ७। मा. ८) ३० (फै।२१०)

(१२८।२)

मानाऽ३आऽ३इन्द्राभियादिशाः॥ सूरोआऽ२३४क्तू। षूआयाऽ२३४मात्॥ त्वायुजावनौऽ३हो॥

मतौऽ२। हुवाइ। औऽ३होऽ२३४५वाऽ६५६॥ एऽ३। ययूऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. ९। मा. ८) ३१ (भै।२११)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने तृतीयः प्रपाठकः॥

(१२९।१)   ॥ रोहितकूलीये द्वे। द्वयोरिन्द्रो विश्वामित्रो वा गायत्रीन्द्रः॥

एन्द्रसा॥ नसिंश्रयिम्। सजित्वानश्सदासाऽ२३हाम्॥ वाऽ२३र्षी॥ ष्ठामूतयाऽ३१उवायेऽ३।

भाऽ२३४रा॥

(दी. ४। प. ६। मा. ३) १ (ति।२१२)

(१२९।२)

एन्द्रसानसाइम्॥ रयाऽ२इम्। सजित्वानश्सदासाऽ२३हाम्॥ वार्षीऽ२ष्ठामूऽ२३॥

तयोऽ२३४वा। भाऽ५रोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ६। मा. ६) २ (तू।२१३)

(१४०।१)   ॥ इन्द्राण्याः सामनी द्वे। द्वयोरिन्द्राणी गायत्रीन्द्रः॥

इन्द्राम्। इन्द्रंवायाऽ२म्॥ महा। महाधानाऽ२इ॥ इन्द्राम्। इन्द्रमर्भाऽ२इ॥ हवा।

हवामाहाऽ२इ॥ युजाम्। युजंवृत्राऽ२इ॥ षुवा। षुवज्रिणाऽ२३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १४। मा. १०) ३ (झौ।२१४)

(१३०।२)

इन्द्रंवयाम्॥ महा। महाधानाऽ२३इ। आऔऽ३हो। इह। इहिवाला। ओऽ२३४वा॥

इन्द्रमर्भाइ॥ हवा। हवामाहाऽ२३इ। आऔऽ३हो। इह। इहिवाला। ओऽ२३४वा॥

युजंवृत्राइ॥ षुवा। षुवज्रिणाऽ२३म्। आऔऽ३हो। इह। इहिवाला। ओऽ२३४वा॥

ईऽ२३४हा॥

(दी. २। प. २२। मा. ९) ४ (छो।२१५)

(१३१।१) ॥ सहस्रवाहवीयम्। इन्द्रो गायत्रीन्द्रः॥

अपिबत्काद्रूऽ६वस्सुताम्॥ इन्द्राहोऽ२इ। सहाहोऽ२। स्राबाऽ१हुवेऽ२॥ तत्रादाऽ२३दी॥

ष्टपौऽ२। हौऽ२। हुवाऽ२इ। ईऽ३या। सियाम्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १३। मा. ५) ५ (जु।२१६)

(१३२।१) ॥ धृषतो मारुतस्य साम। मारुतो गायत्रीन्द्रः॥

वयमाऽ२३४इन्द्रा॥ त्वाऽ२३। याऽ२वाऽ२३४औहोवा। अभिप्रनोऽ२नुमोवृषन्॥

विद्धाइतुवाऽ३॥ स्याऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ वाऽ२३४सो॥

(दी. ६। प. ७। मा. ५) ६ (खु।२१७)

(१३२।२) ॥ अदारसृत् (द्वे)। भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः॥

हाउवयमिन्द्रा॥ त्वाऽ२यावाऽ२ः। अभिप्रनोनुमोऽ२वार्षाऽ२न्। विद्धाऽ२इतूवाऽ२॥ स्यनोऽ२३।

वाऽ२साऽ२३४औहोवा॥ अस्मभ्यंगातुवित्तमाऽ२३४५म्॥

(दी. ५। प. ७। मा. ६) ७ (फू।२१८)

(१३२।३) ॥ मारुतस्य साम। मारुतो गायत्रीन्द्रः॥

वयमिंद्रा॥ त्वायाऽ३वाः। अभिप्रनोनुमोऽ१वाऽ३र्षान्॥ विद्धीतूऽ२३४वा। ओऽ२३४हाइ॥

स्यनोवा। वाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ७। मा. ४) ८ (खी।२१९)

(१३२।४) ॥ अदारसृती द्वे। द्वयोर्भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः॥

वयामौहो। इन्द्रा॥ त्वायाऽ३वाः। अभिप्रनोनुमोऽ१वाऽ३र्षान्॥ विद्धीत्वोऽ२३४हाइ॥

स्यानोऽ३हाइ। वसा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ५) ९ (नु।२२०)

(१३२।५)

वयामौहोवाहाइ। इन्द्रा। त्वाऔहोवाहाइ। यावाः॥ आऽ२३भी। प्राऽ२३नो।

ओइनुमोवाऽ२३र्षान्॥ वाऽ२३इद्धी। तूऽ२३वाऽ३॥ स्याऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ वाऽ२३४सो॥

(दी. ५। प. ११। मा. ८) १० (पै।२२१)

(१३३।१) ॥ ऐध्मवाहानि-हाराणि वा त्रीणि। त्रयाणामिध्मवाहो गायत्रीन्द्रः॥

आघायेअग्निमिन्धाताइ॥ स्त्रिणन्तिबर्हिरानुषाक्॥ येषामिन्द्रोयुवाइहा॥ ऊऽवाइ॥ ऊवोऽ२३४।

वा। साऽ५खोऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ७। मा. ६) ११ (ठू।२२२)

(१३३।२) ॥ इहवदैध्मवाहम्॥

आघायइहा॥ ग्निमाइ। धाताओऽ२३४वा। ईऽ२३४हा। स्त्रिणन्तिबर्हिऽ३रा।

नूषाओऽ२३४वा। ईऽ२३४हा॥ येषाम्। आइन्द्राओऽ२३४वा॥ ईऽ२३४हा। युवा।

युवाऽ२साऽ२३४५खाऽ६५६॥ ईऽ२३४हा॥

(दी. ३। प. १३। मा. ७) १२ (डे।२२३)

(१३३।३)

औहोआघायाऽ६ए॥ ग्निमाइन्धाता। औहोऽ२३४वा। स्तृणंतिबर्हिऽ३रानूषा। औहोऽ२३४वा॥ येपामाइंद्रा। औहोऽ२३४वा॥ युवाऽ३। साऽ२३४खा। उहुवाऽ६हाउ॥ वा॥

(दी. ८। प. ११। मा. ५) १३ (टु।२२४)

(१३४।१) ॥ पैड्वस्य पैल्वस्य वा साम। पैल्वो गायत्रीन्द्रः॥

भि। ध्योहाइ॥ वाइश्वाअपा। द्वाइषाओऽ२३४वा॥ पाराओऽ२३४वा॥ बाधोजहाइ। मार्द्धाओऽ२३४वा॥ वसुस्पार्हतदाभराऽ२३४५॥

(दी. ४। प. ८। मा. ८) १४ (दै।२२५)

द्वाविंशतिर्द्वितीयः, द्वितीयः खण्डः॥२॥ दशतिः॥२॥

(१३५।१) ॥ ऐषम्। इषो गायत्रीन्द्रः॥

इहेवाऽ२३४श्रृण्वएषाम्॥ कशाहस्तेषुयाऽ१द्वाऽ३दान्। नियामंचीऽ३त्राऽ३मृञ्जताइ॥ नियामंचाइ। त्रमाऽ२र्ञाऽ२३४ताइ॥ एहियाऽ३४। औहोवा॥ एहियौहोइ। एहियौहोऽ२३इ। एऽ२३४ही॥

(दी. १३। प. १०। मा. ८) १५ (णे।२२६)

(१३६।१) ॥ पौषम्। पूषा गायत्रीन्द्रः॥

इमउत्वाविचक्षते। एऽ३। सखायाः॥ इन्द्रसोमाऽ२३इनाः॥ होइहोवा॥ पुष्टावाऽ२३०ताः। होइहोवाऽ३॥ यथोऽ२३४वा। पाऽ५शोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ९। मा. ८) १६ (धे।२२७)

(१३७।१) ॥ मरुतां संवेशीयम्, सिन्धुषाम वा। मरुतो गायत्रीन्द्रः॥

समस्यामाऽ२। न्यावेविशाः॥ विश्वानामाऽ२। ताकृष्टयाः॥ समुद्रायेऽ२॥ वसिंधाऽ२३वाऽ३४३ः।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ८। मा. ४) १७ (दी।२२८)

(१३८।१) ॥ हाविष्मते द्वे। द्वयोर्हविष्मान् गाय्त्रीन्द्रः (विश्वेदेवा वा)॥

देवा। नाम्। इदाओऽ२३४वा॥ ओवाओऽ२३४वा॥ माऽ२३४हात्। तदावृणाइ।

माहाओऽ२३४वा। वाऽ२३४याम्॥ वृष्णामस्मा॥ भ्यामाओऽ२३४वा॥ ताऽ२३४ये॥

(दी. ५। प. ११। मा. ८) १८ (पै।२२९)

(१३८।२)

हाउदेवानामिदवोमहद्धाउ॥ तदावृणाऽ३इ। माहेवाऽ२३४याम्। ऐऽ२होऽ१आऽ२३इही॥

वृष्णामाऽ३स्मा॥ भ्यमूऽ२३। ताऽ२याऽ२३४औहोवा॥ हविष्मतेऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ८। मा. ७) १९ (डे।२३०)

(१३८।३) ॥ हाविष्कृते द्वे। द्वयोर्विष्कृद्गायत्रीन्द्रः (विश्वेदेवा वा)॥

देवानामिदवोहाउमाहात्॥ तदावृणाइ। महाइवाऽ२३याम्॥ वृष्णाऽ२होऽ१इ।

आऽ२३स्मा॥ भ्यमूऽ२३। ताऽ२या२३४औहोवा॥ हविष्कृतेऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ८। मा. ७) २० (डे।२३१)

(१३८।४)

देवानामिदवोमाहात्॥ तादावृणी। महाइवाऽ२३याम्। वृष्णामाऽ२३स्माऽ३॥ भ्यमूऽ२३४वा।

ताऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. ६। मा. ४) २१ (ची।२३२)

(१३९।१) ॥ काक्षीवतम्। कक्षिवान् गायत्रीन्द्रः ब्रह्मणस्पतिर्वा॥

सोमाऽ३नाँ२स्वरणाम्॥ कृणूहिब्र। ह्मणस्पतायेऽ३। ओऽ३४। हाहोइ॥ कक्षाइवाऽ२३०ताम्॥

यऔहोइ। औहोऽ२३४वा। श्राऽ५इजोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ९। मा. ८) २२ (भै।२३३)

(१४०।१) ॥ औषसम्। उषो गायत्रीन्द्रः॥

बोधन्मनाः॥ इदाऽ२स्तूनाऽ२ः। वृत्रहाभू। रियाऽ२सूऽ२३४तीः॥ शृणाऽ३४औहो॥

तुश्रऋआ। श्रि। षाम्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. ११। मा. ७) २३ (चे।२३४)

(१४१।१) ॥ दक्षणिधनमौक्षं। भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः सविता वा॥

अद्यनोदेवसवितः। औहोवा॥ इहश्रुधाइ। प्रजावाऽ२३त्सा। वीःसौभगाम्॥

परादूऽ२३ष्वाऽ३। होवाऽ३हा॥ प्रियऽ२सूऽ२३४५वाऽ६५६॥ दक्षाऽ३याऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ९। मा. ३) २४ (ढि।२३५)

(१४१।२) ॥ मौक्षम्। भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः सविता वा॥

अद्याऽ३४। नोदेवसा। विताः॥ प्रजावत्सा। वीःसौभगाम्॥ पाराऽ३दूष्वा॥

प्रियऽ२सुवोवाऽ३। ओऽ२। वाऽ२३४। औहोवा॥ अस्मभ्यंगातुवित्तमाऽ२३४५म्॥

(दी. ९। प. ११। मा. ३) २५ (ति।२३६)

(१४२।१) ॥ भारद्वाजानि आर्षभाणि त्रीणि। त्रयाणां भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः॥

कूऽ२३४वस्यवाऽ५र्षभोयुवा॥ तुविग्रीवोऽ२। अनानताः॥ ब्रह्माकाऽ२३स्ताम्॥

ऐऽ२होऽ१आऽ२३इही। सपर्याऽ२३ताऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ८। मा. ६) २६ (डू।२३७)

(१४२।२)

कुवाकुवा॥ स्यवृषऽ३भोयुवाऽ३। ओऽ३४। हाहोइ। तुविग्रीवोअऽ३नानताऽ३ः।

ओऽ३४। हाहोइ॥ ब्रह्माऽ२३॥ काऽ२स्ताऽ२३४औहोवा। सपर्यतीऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १०। मा. ५) २७ (ङु।२३८)

(१४२।३)

ऐहीयैही। क्वस्यवृषभोयुवा॥ ऐहीयैही। तुविग्रीवोअनानताः॥ ऐहीयैही। ब्रह्माकस्त२सपर्यती॥

ऐहीयैही। आऽ२इ। हियाऽ३४औहोवा॥ आऽ२३४इही॥

(दी. २३। प. १०। मा. ५) २८ (णु।२३९)

(१४३।१) ॥ शाक्त्यसामनी द्वे। द्वयोः शाक्त्यो गायत्रीन्द्रः॥

उपह्वराइ। गिराऽ२इणाम्॥ संगामेचा। नदाऽ२इनाम्॥ धियाविप्रो। अजायता॥ अयाम्।

अयाऽ३१उ। वाऽ२३॥ ऊऽ३४पा॥

(दी. १। प. १०। मा. ७) २९ (ञो।२४०)

(१४३।२)

इदामीऽ२३४दाम्। इदामिदकम्। इदामीऽ२३४दाम्। उपह्वरेगिऽ३राइणाम्॥

इदामीऽ२३४दाम्। इदामिदकम्। इदामीऽ२३४दाम्। संगमेचनऽ३दाइनाम्॥

इदामीऽ२३४दाम्। इदामिदकम्। ईदामीऽ२३४दाम्। धियाविप्रोअऽ३जायाता॥

इदामीऽ२३४दाम्। इदामिदकम्। इदाऽ३माऽ५इदाऽ६५६म्॥ गोष्पदेपृट्॥

(दी. ६। प. १६। मा. १९) ३० (को।२४१)

(१४४।१) ॥ वार्षधरे द्वे। द्वयोर्वृषंधारो गायत्रीन्द्रः॥

प्रसंम्राजाम्॥ चार्षाऽ२णाइनाऽ२म्। आइन्द्राऽ२ऽस्तोताऽ२३। नव्याऽ२ऽगाऽ२३४इर्भीः॥

नाराऽ२न्नार्षाऽ२३॥ हम्मोवा। हाऽ५इष्ठोऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ७। मा. ८) ३१ (खै।२४२)

(१४४।२)

प्रसंम्राजोहाइ॥ चार्षाणीऽ३नाम्। आइन्द्राऽस्तोऽ३ताऽ३। नव्याऽ२ऽगाऽ२३४इर्भीः॥

नारमोइ। नृ। षाहमोऽ३इ॥ मऽहाऽ५इष्ठाम्। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १०। मा. १०) ३२ (जौ।२४३)

(१४४।३) ॥ कुत्सस्य प्रस्तोकौ द्वौ। द्वयोः कुत्सो गायत्रीन्द्रः॥

प्रसंम्राजंच। षणाऽ३२३४इनाम्॥ इन्द्राऽस्तोऽ३ताऽ३। नव्याऽ२ऽगाऽ२३४इर्भीः॥

नरंनृषाहंमाऽ५ऽहि। आऽ६हाउवा॥ ष्ठाऽ२३४५म्॥

(दी. २। प. ७। मा. ६) ३३ (छू।२४४)

(१४४।४)

प्रसंम्राजंचर्षणीनामिन्द्रऽस्तोतान। व्यंगाऽ६इर्भीः॥ इन्द्रऽस्तोतानव्यंगाऽ२३इर्भीऽ३४ः॥

नरंनृषाहम्। माऽ५ऽहिष्ठाम्॥ सहमैहेऽ३होऽ२। याऽ२३४औहोवा॥ मऽहिऽ३ष्ठाऽ२३४५म्॥

(दी. १२। प. ८। मा. ८) ३४ (जै।२४५)

विंशतिस्तृतीयः तृतीयः खण्डः॥३॥ दशतिः॥३॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने चतुर्थस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(१४५।१) ॥ औपगवे द्वे। द्वयोरुपगुर्गायत्रीन्द्रः॥

अपादुशी॥ प्रियंधसाः। सुदक्षाऽ२३स्या। प्रहोषिणः॥ इन्दोराऽ२३इन्द्राः॥ यवाशाऽ२३इराः।
ऐ। हियाऽ२इ। हियाऽ३४औहोवा॥ एऽ३। उपाऽ३१२३४५॥

(दी. ७। प. ११। मा. ८) १ (चै।२४६)

(१४५।२) ॥ औपगवोत्तरं सौश्रवसं वा॥

अपादूऽ३शिप्रियंधसाः॥ सुदक्षस्यप्रहोषिणाः। इन्द्रौऽ२। हौऽ२। हुवाऽ२३इ। आऽ३४इन्द्रो॥
यवाशाइराः। ऐ। हाऽ२एऽ२३। हियाऽ३४औहोवा॥ एऽ३। उपाऽ३१२३४५॥

(दी. ६। प. १२। मा. ८) २ (खै।२४७)

(१४६।१) ॥ त्वाष्ट्रीसाम। त्वष्टा गायत्रीन्द्रः॥

इमाउत्वा॥ पुरूऽ२वासाऽ२उ। अभिप्रनोनवूऽ२र्गाइराऽ२ः॥ औहोऽ१इ। गावोवात्साऽ२३म्।
नाऽ२३धेऽ३। नाऽ३४५वोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ७। मा. ७) ३ (फे।२४८)

(१४७।१) ॥ त्वष्टुरातिथ्ये द्वे। त्वष्टा गायत्रीन्द्रः (त्वष्टुचन्द्रमसौ वा)॥

आत्रा॥ हागोरमन्वताउवाऽ२३। होवाऽ२३होइ॥ नामत्वष्टुरपीचियाउवाऽ२३। होवाऽ२३होइ॥
इत्थाचन्द्रमसोगृहाउवाऽ२३। होवाऽ२३होऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ८। प. ९। मा. ६) ४ (द्वू।२४९)

(१४७।२)

हावात्रा॥ हागोरमन्वताउवाऽ२३। होइयाऽ२३। हाऽ२ऊवाइ॥

नामत्वष्टुरपीचियामियाउवाऽ२३। होवाऽ२३हाऽ२ईया॥ इत्थाचन्द्रमसोगृहाउवाऽ२३।

होइयाऽ२३। हाऽ२ऊवाऽ२। याऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ८। प. १०। मा. १०) ५ (ण्वौ।२५०)

(१४८।१) ॥ पौषे द्वे। द्वयोः पूषा गायत्रीन्द्रः पूषणौ॥

यदिन्द्रोया॥ नायाऽ२३त्। ओमोऽ३म्। ओवा। रितोमहीरापाऽ२३ः। ओमोऽ३म्। ओवा॥

वृषावृषाऽ२। तमाऽ३४औहोवा॥ तत्रपूषाभुवत्सचाऽ२३४५॥

(दी. ७। प. १०। मा. ५) ६ (जु।२५१)

(१४८।२)

यदिन्द्रोअन्यद्रिताऽ६ए॥ महीरापाऽ२ः। महीरापाऽ२३ः। वार्षताऽ२३४माः॥ तत्रापूषाऽ३॥

पूऽ२षाऽ२३४औहोवा॥ भुवत्सचाऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ७। मा. ६) ७ (फू।२५२)

(१४९।१) ॥ श्यावाश्वे द्वे। द्वयोः श्यावाश्वो गायत्रीन्द्रः (मरुतो वा)॥

गौर्द्धयाऽ६ए॥ तिमरुताऽ३म्। श्रवास्युर्माऽ३। तामघोऽ२३४नाम्॥ युक्तावह्वाइः॥ रथाऽ३।

नाऽ२माऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ३। प. ८। मा. ६) ८ (डू।२५३)

(१४९।२)

गौर्द्धयतिमरुताऽ६मे॥ श्रवास्युर्माऽ२तामघोनाऽ२म्। उहुवाऽ२३हाइ॥ युक्तावाऽ२३ह्णीः॥

उहुवाऽ२३हाइ। रथानाम्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ९। मा. ६) ९ (झ्रू।२५४)

(१५०।१) ॥ सुतंरयिष्ठीये द्वे। द्वयोः प्रजापतिर्गायत्रीन्द्रः॥

उपनोऽ२३हरिभिस्सुतोवा॥ याहिमदाऽ३ना०प। ताऽ२३इ॥ उपनोऽ३। हाऽ३ओऽ२३४वा॥

राऽ२३४ईभी। सुताम्। औऽ२३होवा। होऽ४इ॥ डा॥

(दी. २। प. १०। मा. ६) १० (ञ्रू।२५५)

(१५०।२)

उपनोहाहोहा। राइभीः॥ सूऽ२३ताम्। याहिमदा। नांपाऽ२३ताइ॥ उपानोऽ२३४हा॥

राऽ२इभाऽ२३४औहोवा॥ सुतꣳरयिष्ठाऽ२३४५ः॥

(दी. ६। प. ८। मा. ७) ११ (गे।२५६)

(१५१।१) ॥ इष्टाहोत्रीयं अप्सरसं वा अपांनिधिर्वा। इष्टाहोत्रा अप्सरसो वा गायत्रीन्द्रः॥

इष्टाहोत्राः॥ आसृक्षाऽ२३४ता। इन्द्रंवृधा। तोऽ२ध्वाऽ२३४राइ॥ आच्छाऽ३वोभृ॥

थमोऽ३जाऽ५साऽ६५६॥ एऽ३। उदधिर्न्निधीऽ१ः॥

(दी. १। प. ८। मा. ३) १२ (गि।२५७)

(१५२।१)॥ प्राजापतेर्निधनकामं सिन्धुषाम वा। प्राजापतिर्गायत्रीन्द्रः सूर्यो वा॥

अहमिद्धाऽ५इपितुःपराइ॥ मेधामृतस्यजग्रहा॥ अह२ंसूर्याः। इवाऽ२३४। हाहोइ॥ जनि।
होइ। होइ। औहोऔहोवाऽ२३४५हाउ॥ वा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ८) १३ (जै।२५८)

(१५३।१) ॥ रेवत्यः वाजदावर्यो वा। वाजदावर्यो गायत्रीन्द्रः॥

रेवतीर्नाः॥ सधाऽ२माऽ२३४दाइ। इन्द्राऽ२इसाऽ२३४०तू। तुविवाऽ२जाः॥ क्षूऽ२३मा॥
तोऽ२या। भिर्मोऽ२३४वा। दाऽ५इमोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ८। मा. ६) १४ (जू।२५९)

(१५४।१) ॥ सौमपौषं गोअश्वीयं वा। सोमपूषावृषी गायत्रीन्द्रः॥

सोमःपूषा॥ चचाइततुः। अयायोऽ२३४वा। वाइश्वासा२ंसुक्षिती। नाम्। अयायोऽ२३४वा॥
दाइवत्राराऽ२३॥ थियोऽ३र्हाऽ५इताऽ६५६॥ गावोऽ२अश्वाऽ२३४५ः॥

(दी. ७। प. ९। मा. ८) १५ (झ्रौ।२६०)

पञ्चदश चतुर्थः खण्डः॥४॥ दशतिः॥४॥

(१५५।२) ॥ वैतहव्यानि त्रीणि अध्यर्द्धेड वैतहव्यम्। त्रयाणां वीतहव्योऽनुष्टुबिन्द्रः॥

पान्तमावोअन्धसाः॥ इन्द्रामाभि। प्रगायाताऽ३। हाऽ३हाइ। विश्वासाहम्। शताक्रातूऽ३म्।
हाऽ३हाइ॥ म२ंहाइष्ठंचाऽ३। हाऽ३हा॥ षणाऽ२इ। नाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ५। प. १२। मा. ९) १६ (फ्रो।२६१)

(१५५।२) ॥ इहवद्वामदेव्यम्॥

पान्तमावोअन्धसः। इहा॥ इन्द्रमभाइ। प्रगायताऽ२। इहा। विश्वासाहंशताऽ२क्रतूम्।
इहा॥ मंहाऽ२इषंचा। इहा॥ षणाऽ२इनाम्॥ इहाऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ११। मा. ७) १७ (के।२६२)

(१५५।३) ॥ ओकोनिधनं वैतहव्यम्॥

पाऽ५न्तम्। आऽ३वोऽ३अन्धसाः॥ आइन्द्रामभाइ। प्रगाऽ२याऽ२३४ता।
विश्वाऽ२साऽ२३४हाम्॥ शाऽ३ताक्राऽ३तूम्॥ मंहिषंचर्षे। णायेऽ३।
नाऽ२माऽ२३४औहोवा॥ ओऽ३काऽ२३४५ः॥

(दी. २। प. १०। मा. ९) १८ (ञो।२६३)

(१५६।१) ॥ शाक्त्यानि षट्, शाक्त्ये सामनी द्वे। षण्णां शक्त्यो गायत्रीन्द्रः॥

प्रवइन्द्राऽ२। यमादाऽ२३४नाम्॥ प्रवाऽ२इन्द्रा। औऽ३हो। याऽ२३४मा॥ दाऽ३नाम्॥
हराऽ२अश्वा। औऽ३हो। याऽ२३४गा॥ याऽ३ता॥ सखाऽ२याःसो। औऽ३होऽ३।
मापोऽ२३४वा। आऽ५न्नोऽ६हाइ॥

(दी. नास्ति। प. १४। मा. ६) १९ (लू।२६४)

(१५६।२)

प्रवाऽ२इन्द्रा। औऽ३हो। याऽ२३४मा। दाऽ३नाम्। हराऽ२अश्वा। औऽ३हो। याऽ२३४गा।
याऽ३ता॥ सखाऽ२यास्सो। औऽ३होऽ३॥ मापोऽ२३४वा। आऽ५न्नोऽ६हाइ॥

(दी. नास्ति। प. १२। मा. ४) २० (यी।२६५)

(१५६।३) ॥ गौरीविते द्वे॥

प्रवईऽ३या। ईऽ३या। इन्द्रोईऽ३या। ईऽ३या। याऽ२३४मा। दाऽ३नाम्॥ हरईऽ३या।
ईऽ३या। आश्वोईऽ३या। ईऽ३या। याऽ२३४गा। याऽ३ता॥ सखईऽ३या। ईऽ३या।
यास्सोईऽ३या। ईऽ३याऽ३॥ मापोऽ२३४वा। आऽ५न्नोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. १८। मा. ८) २१ (डै।२६६)

(१५६।४)

प्रवौहोवाऽ२। इन्द्रौहोवा। याऽ२३४मा। दाऽ३नाम्॥ हरौहोवाऽ२। आश्वौहोवा।
याऽ२३४गा। याऽ३ता॥ सखौहोवाऽ२। यास्सौहोवाऽ३॥ मापोऽ२३४वा। आऽ५न्नोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. १२। मा. २) २२ (खा।२६७)

(१५६।५) ॥ शाक्त्यं साम॥

प्रवोदऽ३दा। औऽ३हो। इन्द्रोददा। औऽ३हो। याऽ२३४मा। दाऽ३नाम्॥ हरिदऽ३दा।
औऽ३हो। आश्वोददा। औऽ३हो। याऽ२३४गा। याऽ३ता॥ सखिदऽ३दा। औऽ३हो।
यास्सोददा। औऽ३होऽ३॥ मापोऽ२३४वा। आऽ५न्नोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. १८। मा. २) २३ (दा।२६८)

(१५६।६) ॥ गौरीवीतम्॥

प्रवः। प्रवाः॥ इन्द्रायेन्द्रा। यमादाऽ१नाऽ२म्। हराइहर्यश्वा। यगायाऽ१ताऽ२॥
सखायाऽ२३स्सोऽ३॥ मापोऽ२३४वा। आऽ५न्नोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ९। मा. ५) २४ (भु।२६९)

(१५७।१) ॥ काण्वे द्वे। द्वयोः कण्वो गायत्रीन्द्रः॥

वयंवायाम्॥ ऊऽ२३४ब्वा। तादीदाऽ२३४र्थाः। इन्द्रब्वायन्तः। सखाऽ२३४याः॥

कण्वाऽ३१२३४ः॥ उक्थेभिर्जरन्ते। एहियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ६) २५ (नू।२७०)

(१५७।२)

वयमूऽ३ब्वातदिदर्थाः॥ ऐहिहाऽ२इ। वयमुब्वातदिदर्थाइन्द्रब्वायन्तस्सखाऽ२३याः॥

काऽ२३४ण्वाः॥ ऊ। क्थाइ। भिर्जोऽ२३४वा॥ रन्ताऽ३याऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ८। मा. ६) २६ (बू।२७१)

(१५८।१) ॥ गौरीविते द्वे। द्वयोर्गौरीवितो गायत्रीन्द्रः॥

इन्द्रायमद्वनाइ॥ सुताम्। इन्द्रायमद्वनेसुताम्। पराइष्टोऽ२३भा। तुनोगिरो॥ अर्कमाऽ२३र्चा॥

तुकाराऽ२३वाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ६) २१ (भू।२७२)

(१५८।२)

इन्द्रायमद्वनेहाउ॥ ओइसूऽ३ताम्। परिष्टो। भा। तुनोऽ२३हाइ। गाइराऽ२ः। परिष्टोभा।

तुनोऽ२३हाइ॥ गाइराऽ२ः॥ अर्काऽ२३म्॥ आऽ२र्चाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३।

तुकाऽ३रवाऽ२३४५ः॥

(दी. ६। प. १३। मा. १२) २८ (गा।२७३)

(१५८।३) ॥ श्रौतकक्षम्। श्रुतकक्षा गायत्रीन्द्रः॥

इन्द्रायमद्वनेसुतम्। इन्द्रायमोवा॥ द्वाऽ३नाइसूऽ३ताम्। परिष्टो। भाऽ२३। हाऽ३हाऽ३। तूनोऽ२गाऽ२३४इराः॥ आर्कमर्चाऽ३। हाऽ३हा॥ तुकाराऽ२३वाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १२। मा. ७) २९ (फे।२७४)

(१५९।१) ॥ सौमित्रे द्वे। द्वयोः सुमित्रो गायत्रीन्द्रः॥

अयंतआ॥ द्रसोमो। होवाऽ३होइ। निपूतोआऽ३। धीबर्हाऽ२३४इषी॥ आइहीमस्याऽ२३॥ द्राऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ पीऽ२३४बा॥

(दी. ६। प. ८। मा. ६) ३० (गू।२७५)

(१५९।२)

अयंतइन्द्रसोऽ४माः॥ निपूतोअधिवाऽ२र्हाइषीऽ२। ऐहोऽ२इमास्या॥ द्रवापाइवाऽ२। आइहीमस्याद्रवाऽ३१उवाऽ२३॥ पीऽ२३४बा॥

(दी. ५। प. ६। मा. ८) ३१ (पै।२७६)

(१५९।३) ॥ इहवद्दैवोदासम्। दिवोदासो गायत्रीन्द्रः॥

अयंतइन्द्रसोऽ४मः। नाऽ२३४इ। पूतोअधिबर्हिषी॥ निपूतोअधिबर्हाऽ२३इषी॥ ऐहोइमाऽ२३स्या॥ द्रवापाऽ२३४५इबाऽ६५६॥ ईऽ२३४हा॥

(दी. ६। प. ७। मा. ८) ३२ (खे।२७७)

(१६०।१) ॥ शाक्वरवर्णम्। शाक्वरवर्णो गायत्रीन्द्रः प्रजापतिर्वा॥

सुरू॥ पकृत्नुमूतयाइ। सुदुघाम्। इवगोऽ२। दुहयाऽ३१उवाऽ२३। ऊऽ३४पा॥

जुहूमाऽ२३सी॥ द्यविद्यवियाऽ३१उवाऽ२३॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ३। प. ९। मा. ४) ३३ (ड्डी।२७८)

(१६०।२) ॥ रैवतम्। रेवतो गायत्रीन्द्रः (रैणवम्। रेणुर्गायत्री प्रजापतिर्वा)॥

सुरूहाहाउ॥ पकृत्नुमूऽ२तायाऽ२इ। सुदुघाम्। इवगोऽ२। दुहे। ऐहीयैहीऽ१॥ जुहौऽ२।

हौऽ२। हुवाऽ२इ। मासीऽ२॥ द्यविद्यवि॥ ऐहीयेहीऽ१॥

(दी. १०। प. १२। मा. ४) ३४ (फी।२७९)

(१६०।३)॥ ऐणवे वैणवे वा औदले द्वे, वींकम्। वींको गायत्रीन्द्रः प्रजापतिर्वा॥

सुरूपकृत्नूऽ३मूताऽ२३४याइ॥ ओइसुरूपकृत्नूमूऽ१तायाऽ२इ।

ओइसुदुघामिवागोऽ१दुहाऽ२इ। जुहूमसाऽ२इ। द्यविद्याऽ२३४वी। ऐही॥ जुहूऽ२मासीऽ२॥

द्यविद्या। वीवीऽ२३। आऔहोइ। आऔहोऽ६वा॥ एऽ३। द्यविऽ३ईऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १३। मा. १०) ३५ (गौ।२८०)

(१६०।४) ॥ औदलम्। ओदलो गायत्रीन्द्रः॥

सुरूपकृ॥ त्नूमूऽ२तयाइ। सुदुघामीऽ३। वागोदूऽ२३४हाइ॥ सुदुघामा॥ वागोऽ२दुहाइ।

जुहूमाऽ२३सीऽ३। द्याऽ२३वीऽ३। द्याऽ३४५वोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ९। मा. ४) ३६ (धी।२८१)

इति ग्रामे गेय-गाने चतुर्थः प्रपाठकः॥४॥

(१६१।१)॥आर्षभानि सैन्धुक्षितानि वा वाध्राश्वानि वा त्रीणि। त्रयाणामृषभो गायत्रीन्द्रः॥

अभित्वावृषभासुताइ॥ सूतश्सृजा। मिपाइताऽ१याऽ२इ॥ तृम्पावाऽ१याऽ२॥

श्नुहाऽ३१उवायेऽ३॥ माऽ२३४दाम्॥

(दी. ३। प. ६। मा. ५) १ (टु।२८२)

(१६१।२)

अभित्वावृषभासुतेअभ्याहाउ॥ त्वावृऽ३षाभाऽ१सूताऽ२इ। सूतश्सृजा। मिपाइताऽ१याऽ२इ॥

तृम्पाऽ३होइ। वियाऽ३हो॥ श्नुहीमाऽ२३दाऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ९। मा. ८) २ (झै।२८३)

(१६१।३)

अभित्वावृषभासुते। सुतश्सृजोवा॥ मिपीतायाऽ२इ। सुतश्सृजामि। षीताऽ२३याइ॥

त्राऽ२३०पाऽ३॥ वाऽ२याऽ२३४औहोवा॥ श्नुहीमदाऽ२३४५म्॥

(दी. ९। प. ८। मा. ४) ३ (दी।२८४)

(१६२।१)॥कौत्से पाश्ववाजे वा दाश्ववाजे वा द्वे, ऐडकौत्सम्। द्वयोः कुत्सो गायत्रीन्द्रः॥

याही०द्राऽ२३। चमसेषुवाईया॥ सोमश्चमूषुतेसुतः। सोमश्चमू। षुताइसूऽ२३ताः॥

पाइबेऽ३ह्याइ। आस्याऽ३हाइ॥ त्वमीशाऽ२३इषाऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १०। मा. १०) ४ (जौ।२८५)

(१६२।२) ॥ स्वार कौत्सम्॥

यइन्द्रचामाऽ६सेषुवा॥ सोमश्चमूषुताऽ१इसूऽ३ताः। सोमश्चमूऽ३। षूऽ३ताइसूऽ३ताः॥

आऽ२इ। पिबेदस्योऽ२३४हाइ॥ त्वमाऽ३इशाऽ५इषा६५६इ॥

(दी. ६। प. ७। मा. १०) ५ (खौ।२८६)

(१६३।१)॥सौमेधानि, पूर्वतिथानि पौर्वातिथानि वा त्रीणि। त्रयाणां सुमेधा गायत्रीन्द्रः॥

योगेयोगेतवस्तराम्॥ वाजेवाजेहवामहे॥ सखायाऽ२३ईऽ३॥ द्रमूऽ२३४वा। ताऽयोऽ६हाइ॥

(दी. ११। प. ५। मा. ३) ६ (ङि।२८७)

(१६३।२)

योगेयोगेतवस्ताऽ६राम्॥ वाजेऽ२वाजेऽ२हवाऽ२महेऽ३। होवाऽ३हाइ॥ साखाऽ२याईऽ२३।

होवाऽ३हाइ॥ द्रमूऽ२३। ताऽ२याऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ११। प. ८। मा. ५) ७ (गु।२८८)

(१६३।३) ॥ सोमेधम्॥

योगेयोगेतवाहाउस्ताराम्॥ वाजेवाजे। हवाऽ२माहाइ। हूवाइ। औऽ३होऽ२३४वा।

साखायइ। द्रमूऽ२तायाइ। हूवाइ। औऽ३होऽ२३४वा॥ सखायआ॥ हूवाऽ२इ।

औऽ३होऽ२३४५वाऽ६५६॥ द्रमूऽ३तयेऽ२३४५॥

(दी. ११। प. १३। मा. ९) ८ (गो।२८९)

(१६४।१) ॥ दैवतिथं मैधातिथं वा। देवातिथिर्गायत्रीन्द्रः॥

आतूऽ३४। एतानि। षीदाऽ६ता॥ इंद्रमभाइ। प्रगायता। साखायस्स्तोम। वा। औऽ३हो।

ववाऽ२हाऽ२३४साः॥ हयाइ। सखायस्स्तोम। वा। औऽ३हो॥ हिम्माऽ२३।

हाऽ३४५सोऽ६हाइ॥

(दी. ९। प. १५। मा. ४) ९ (नी।२९०)

त्रिंशत् पञ्चमः खण्डः॥५॥ दशतिः॥५॥

(१६५।१) ॥ आंगिरसं माधुछन्दसम् वा। मधुछन्दा गायत्रीन्द्रः॥

इदाऽ६मे॥ हियऽ३नूओऽ१जासाऽ२। सूतश्राधा। नाम्पाऽ१ताऽ२इ।

पिबातुवस्यागिर्वाणाऽ२३४ः॥ पिबाऽ३४तुवाऽ३॥ स्याऽ२गाऽ२३४औहोवा॥ वाऽ२३४णाः॥

(दी. ३। प. ८। मा. ५) १० (डु।२९१)

(१६५।२) ॥ गायत्री (आंगिरसं) क्रौञ्चम् वा। क्रौंचो गायत्रीन्द्रः॥

इदश्हियाऽ४औहो॥ नूऽ३ओजाऽ२३४सा। सूतश्राधा। नाऽ३२म्। पाऽ२३४ताइ॥

पिबातुवस्याऽ२३। ग। वाहाइ॥ वाऽ२३४णाः। एहियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १२। मा. ७) ११ (छे।२९२)

(१६५।३)॥आंगिरसं घृतश्चुन्निधनं प्राजापत्यं माधुच्छन्दसं वा। प्रजापतिर्गायत्रीन्द्रः॥

इदश्ह्यनूऽ६ओजसा॥ सुतश्राधा। ना०पातौ। होवाऽ३हाइ। पिबातुव। स्यगाइर्वाणौ।

होवाऽ३हाइ॥ पिबातुवौ। होवाऽ३हा॥ स्यगायेऽ३ः। वाऽ२नाऽ२३४औहोवा॥

घृतश्चुताऽ२३४५ः॥

(दी. ९। प. १२। मा. ७) १२ (थे।२९३)

(१६६।१)   ॥ वाम्राणि प्रैयमेधानि वा त्रीणि। त्रयाणां वाम्रो गायत्रीन्द्रः॥

महा२इन्द्राः॥ पुरश्चनो। माऽ१हीऽ२त्वामाऽ२। स्तुव। ज्रिणाइ॥ द्यौऽ२र्नाप्राऽ२॥

थिनाशाऽ२३वाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १। प. ९। मा. ५) १३ (घु।२९४)

(१६६।२)

महाहा२इन्द्राः॥ पूऽ३राश्चाऽ३नो। महाऽ२इत्वाऽ२३४मा। स्तुवौऽ३हौऽ३। हवाऽ५ज्रिणाइ।

द्यौर्नप्र। थिनाशवाऽ२३ः॥ द्यौऽ२र्न्नाऽ२३४प्रा॥ थिनौऽ३हौऽ३। हवोवा। शाऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ११। मा. ६) १४ (टू।२९५)

(१६६।३)

महा२इन्द्राऽ५ःपुरश्चनाः॥ माहित्वाऽ३२३२३मा। स्तुवज्राऽ३२३२३इणाइ॥

द्यौर्न्नाऽ३२३२३प्रा॥ थिनाशवाऽ३२३२३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ७। मा. ६) १५ (ठू।२९६)

(१६७।१)   ॥ गौरीविते द्वे। द्वयोर्गौरीवितिर्गायत्रीन्द्रः॥

आतूनआ॥ द्रक्षुमाऽ२३न्ताम्। चाइत्रंग्राभाऽ२३२हाइ। संगृऽ२भाया।

महाहस्तोऽ२३४५हाइ। दक्षाऽ२इणाना॥ महाऽ२३॥ हाऽ२स्ताऽ२३४औहोवा॥

दक्षिणेऽ३नाऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ९। मा. ८) १६ (घै।२९७)

(१६७।२)

आतूनइन्द्रक्षुमान्ताम्॥ चित्राऽ२०ग्राऽ२३४भाम्। संगृभाऽ२३४या। माऽ३हाऽ३॥
हाऽ२स्ताऽ२३४औहोवा॥ दक्षिणेनाऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ६। मा. ४) १७ (पी।२९८)

(१६७।३) ॥ आपालवैणवे, वेणवे वा आपाले वा आकूपारे पारववे वा द्वे।

द्वयोराकूपारो गायत्रीन्द्रः॥

आतूनइ। द्रक्षुमाऽ६न्ताम्॥ चित्रंग्राभ१संगृभाऽ२या। चित्रंग्राभ१सम्। गृऽ। औऽ३होइ।
भाऽ२३४या॥ ऐहोइ। महाहस्तीदक्षाऽ२३होइ॥ औहो। वाहोऽ२३४वा। णाऽ५इनोऽ६हाइ॥

(दी. ९। प. १२। मा. ८) १८ (थै।२९९)

(१६७।४)

आतूनइन्द्रक्षुमाऽ६न्ताम्॥ चित्रंग्राभ१संगृभाया। चित्रंग्राभ१सम्। गृऽ२३। ईऽ३४हा।
भाऽ२३४या॥ ऐहोइ। महाहस्तीदक्षाऽ२३होइ॥ औहो। वाहोऽ२३४वा। णाऽ५इनोऽ६हाइ॥

(दी. १०। प. ११। मा. ७) १९ (पे।३००)

(१६८।१) ॥ धुरोः सामनी द्वे। द्वयोर्धुरा गायत्रीन्द्रः॥

अभीअभी॥ प्रगोऽ३पातिंगिराऽ२। इन्द्रमर्चयाथाऽ१विदाऽ२इ॥ सूनूऽ३१होइ।
सत्योऽ२३४हा॥ स्याऽ२साऽ२३४औहोवा॥ पतीऽ३मेऽ२३४५॥

(दी. ४। प. ७। मा. ४) २० (थी।३०१)

(१६८।२)

अभीअभी॥ प्रगो। पतिंगिरा। इन्द्राम्। अर्चायाऽ२३४था। हिऽ३०स्थिहिम्ऽ३।

आऽ२३४ऽइविदाइ॥ सूनुꣳसत्यस्यसा। हिऽ३स्थिहिम्ऽ३। ओऽ२३४वा। पाऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ११। मा. ९) २१ (को।३०२)

(१६८।३)

अभि। प्रगोऽ३। पतिंगिरा॥ इन्द्रमर्चयथाविदाऽ२३इ। सूनुꣳसत्याऽ३१२३।

स्यसाऽ५त्पताइम्॥ सूनुꣳसत्याऽ३१२३॥ स्यसोवा। पाऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ९। मा. ४) २२ (घी।३०३)

(१६९।१) ॥ वाचस्सामनी द्वे। द्वयोर्वाक् गायत्रीन्द्रः॥

कयानश्ची॥ त्रआभूऽ३वात्। ऊताइस। दा। वार्द्धःसाऽ२३४खा॥ कयाश्चाऽ३चीऽ३॥

ष्ठाऽ२३याऽ३। वाऽ३४५र्तोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ८। मा. ४) २३ (जी।३०४)

(१६९।२)

होवाइ। होवाइकयानश्ची॥ त्रआभूऽ३वाऽ३४त्॥ होवाइ। होवाऊतीसदा॥

वृधास्साऽ३खाऽ३४॥ होवाइ। होवाइकयाश्चाइ॥ ष्ठया। वाऽ२र्त्ताऽ२३४औहोवा॥

ऊऽ२३४पा॥

(दी. १९। प. ११। मा. १०) २४ (व्रौ।३०५)

(१६९।३) ॥ महावामदेव्यं वा। वामदेवो गायत्रीन्द्रः॥

काऽ५या। नश्चाऽ३इत्राऽ३आभुवात्॥ ऊ। तीसदावृधस्स। खा। औऽ३होहाइ।

कयाऽ२३श्चाइ॥ ष्ठयौहोऽ३। हिंमाऽ२। वाऽ२र्तोऽ३५हाइ॥

(दी. ६। प. १०। मा. ६) २५ (ङू।३०६)

(१७०।१)॥ इन्द्रस्य सत्रासाहीये, अजितस्य आजिती वा द्वे। द्वयोरिन्द्रो गायत्रीन्द्रः॥

त्यमुवाः॥ सत्रासाहाऽ२म्। विश्वासुगीर्षूआऽ१याताऽ२म्॥ आच्याऽ२३॥

वाऽ२याऽ२३४औहोवा॥ सियूऽ३तयेऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ६। मा. ५) २६ (कु।३०७)

(१७०।२)

त्याऽ३४म्। उवस्सत्रासाहम्। ओऽ६वा॥ विश्वासुगीर्ष्वायाऽ२ताम्। आऽ२च्या। वाऽ२३या॥

सियौऽ३हो। वाहाऽ३४३इ॥ ताऽ२३४योऽ६हाइ।

(दी. ७। प. ९। मा. ५) २७ (झु।३०८)

(१७१।१) ॥ वामदेव्यम्। वामदेवो गायत्रीन्द्रः॥

सादा॥ सस्पताइमद्भुता। ओऽ२३४वा। प्रायाओऽ२३४वा॥ आइंद्रा।

स्याकामाऽ२३४५याऽ६५६म्॥ सनिंमेऽ२धामयासिषाऽ२३४५म्॥

(दी. ६। प. ७। मा. ५) २८ (ठु।३०९)

(१७२।१) ॥ अश्विनोः साम। अश्विनौ गायत्रीन्द्रः॥

हाइ। आप्सूदाऽ२३४क्षाः। आप्सूदाऽ२३४क्षाः। येतेपंथाअऽ३धोदिवाऽ२३४५ः॥ हाइ।

आप्सूदाऽ२३४क्षाः। आप्सूदाऽ२३४क्षाः। येभिर्व्यश्वऽ३माइरयाऽ२३४५ः॥ हाइ।

उताश्रोऽ२३४षा॥ तुनोऽ२३। भूऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४ती॥

(दी. ६। प. १३। मा. १२) २९ (गा।३१०)

(१७३।१) ॥ गौतमस्य भद्रं। गोतमो गायत्रीन्द्रः॥

भद्रंभाद्राम्॥ नआभाऽ२३राऽ३। आइषामूर्जाम्॥ शतक्राऽ२३ताऽ३उ॥ यादिन्द्रामृ॥
डाऽ२याऽ२३४औहोवा॥ सीऽ२३४नाः॥

(दी. ३। प. ७। मा. ७) ३० (ठे।३११)

(१७४।१) ॥ आश्विनोः साम, सोम साम वा। आश्विनौ गायत्रीन्द्रः॥

अस्तिसोमोअयꣳसुतः। अ। स्त्येआस्ती॥ सोमोअयꣳसुतःपिबन्त्यस्यम। रुतोऽ२३४हाइ॥
उतस्वराऽ५जोवा॥ श्वाऽ५इनोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ७। मा. ७) ३१ (थे।३१२)

॥ द्वाविंशतिः, षष्टः खण्डः॥६॥ दशतिः॥८॥

॥ इत्यैंद्राख्ये द्वितीये गाने बहुसामाख्यम्॥

॥ द्वितीयं तन्त्रं सम्पूर्णम्॥

(१७५।१) ॥ त्वाष्ट्री साम। त्वष्टा गायत्रीन्द्रः॥

ईङ्खयन्तीः॥ अपाऽ२स्यूवाऽ२ः। आइन्द्रंजातम्। ऊपाऽ१साताऽ२इ॥ वन्वानाऽ२३साः॥
सुवीरियाऽ३१उवाऽ२३॥ वृधेऽ१॥

(दी. ३। प. ७। मा. ७) ३२ (ठे।३१३)

(१७६।१) ॥ गोधा साम। गोधा गयत्रीन्द्रो विश्वेदेवा वा॥

नकिदेवाः॥ इनाइ। इनीमासाऽ३इ। मासीऽ३या॥ नकियायो॥ पया। पयामासाऽ३इ।

मासीऽ३या॥ मन्त्रश्रुत्याम्॥ चरा। चरामासाऽ३इ। मासीऽ३या॥

(दी. २। प. १२। मा. ६) ३३ (छू।३१४)

(१७७।१) ॥ सुवितुस्साम। सविता गायत्री सविता॥

दोषोआगात्॥ बृहद्गाया। द्युमद्गाऽ२३मान्। आथर्वणाऽ३॥ स्तुहि। औऽ३होऽ३४इ॥

देवाऽ३म्। सवोवा। ताऽ५रोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) ३४ (घू।३१५)

(१७८।१) ॥ उषसस्साम। उषा गायत्र्यश्विनौ॥

एषोउषाः॥ आपूर्विया। व्युच्छति। होवाऽ३हाइ। प्रियादाऽ२३इवाऽ३४ः॥

स्तुषाऽ३४इवामाऽ३॥ श्विनोऽ२३४वा। वृऽ५होऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ८। मा. ७) ३५ (गे।३१६)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने पञ्चमस्यार्धः प्रपाठकः॥

(१७९।१) ॥ त्वष्टुरातिथ्य द्वे। द्वयोस्त्वष्टा गायत्रीन्द्रः॥

इन्द्रोदधीचोअस्थभिरियाऽ२ईऽ३या॥ वृत्राण्यप्रतिष्कुतइयाऽ२ईऽ३या॥

जघाननवतीर्णवइयाऽ२॥ ईऽ२। याऽ२३४। औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ८। प. ७। मा. ५) १ (ठु।३१७)

(१७९।२)

इन्द्रोदधाइ॥ चोअस्थाऽ२३४भीः। वृत्राणिया। प्रातिष्कुताः॥ जघानाऽ२३ना॥ वतीर्नवा।
औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ५) २ (भु।३१८)

(१८०।१) ॥ पौषम्। पूषा गायत्रीन्द्रः॥

इन्द्रोहिमाहाउ॥ त्सीऽ३आन्धाऽ३साः। वाइश्वेभिस्सोऽ२३हाऽ३। मापर्वाऽ२३४भीः।
महा२३॥ आऽ२भाऽ२३४औहोवा॥ ष्टिरोजसाऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ७। मा. ६) ३ (खू।३१९)

(१८१।१) ॥ इन्द्रस्यमायम्, माया वा। इन्द्रो गायत्रीन्द्रो वृत्रहा वा॥

आतूऔहो। आ तूऔहो॥ नइन्द्रवृत्राऽ२३४हान्। अस्माकमर्द्धम्। आगाऽ२३ही। गाहीऽ२॥
माहाऽ२न्माहीऽ२३॥ भिरूऽ२३४वा। ताऽ५इभोऽ६हाइ॥

(दी. १०। प. ९। मा. ७) ४ (भे।३२०)

(१८२।१) ॥ इन्द्रस्य संवर्तस्य सांवर्ते वा द्वे। द्वयोरिन्द्रो गायत्रीन्द्रः॥

हा। हाउवाऽ३। ओजस्तदस्यतित्विषेऽ२३४॥ हा। हाउवा। उभेयत्समवर्तयाऽ२३४त्॥ हा।
हाउवाऽ३। इन्द्रश्चर्मेऽ२वरोदसीऽ२३४५॥

(दी. ४। प. ९। मा. ४) ५ (धी।३२१)

(१८२।२)

ओजस्तदाऽ५स्यतित्विषाइ॥ उभेयत्समवर्तयादाऽ१इन्द्राऽ२३ः॥ चाऽ२र्माऽ२३४औहोवा॥
वरोदसीऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ४। मा. ४) ६ (भी।३२२)

(१८३।१) ॥ आंगिरस्सस्य शौनःशेपम्, च्यावनं वा। शुनःशेपो गायत्रीन्द्रः॥

अयाऽ५मु। ताऽ३इसाऽ३मातसाइ॥ कापोतइ। वगार्भाऽ१धीऽ२म्॥ वाचाऽ२स्ताचीऽ२३त्॥

नओऽ२३४वा। हाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ७। मा. ७) ७ (छे।३२३)

(१८४।१) ॥ प्रतीचीनेडं काशीतम्। काशीतो गायत्रीन्द्रो वायुर्वा॥

वातआवातु। भाऽ५इषजाम्॥ शा०भुमयः। भुनोहृदाऽ२३४इ। हाहोइ॥ प्रनआयूंषीऽ३ता॥

रिषात्। औऽ२३होवा॥ ईडा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ८) ८ (भे।३२४)

॥ द्वादशप्रथमः, सप्तमः खण्डः॥७॥ दशतिः॥९॥

(१८५।१) ॥ सौमित्रम्। सुमित्रो गायत्रीन्द्रो विश्वेदेवा वा॥

यंरक्षन्तिप्रचेतसा॥ वरुणोमित्रोअर्याऽ२३मा॥ न। काइस्साऽ२३दा॥ हिंमायेऽ३।

भ्याऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ जाऽ२३४नाः॥

(दी. ५। प. ७। मा. ५) ९ (फु।३२५)

(१८६।१) ॥ श्यावाश्वे द्वे। द्वयो श्यावाश्वो गायत्रीन्द्रः॥

गव्योषुणोयथापुरा॥ अश्वयोतरथा। यावरिवस्या॥ म। होमाऽ२३॥ होनाऽ३४औहोवा॥

ऊऽ२३४५पा॥

(दी. ८। प. ७। मा. १) १० (द्वा।३२६)

(१८६।२)

गव्योषुणोयथापुराऽ६ए॥ अश्वयोऽ१त। रथाऽ२। या। वरिवाऽ२स्या॥ महो।

महोऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ८। मा. २) ११ (ग्रा।३२७)

(१८७।१) ॥ शैखण्डिनम्। शिखण्डी गायत्रीन्द्रः॥

इमास्तई॥ द्रपृश्नयोघृतंदूऽ३हा। औहोऽ३हाऽ३। हाऽ३इ। ताआऽ२शाऽ२३४इराम्॥

एनाऽ३४मृताऽ३॥ स्यपोऽ२३४वा। प्यूऽ५षोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) १२ (दू।३२८)

(१८८।१) ॥ वैतहव्यम्। वीतहव्यो गायत्रीन्द्रः॥

अयाधियाचगव्याऽ६या॥ पुरुणाऽ३। मन्पूऽ२३४रू। ष्टूतौ। वाऽ३२। यत्सोमेऽ३सोमआ॥

यात्सोमेऽ२सो। मओऽ२३४वा। भूऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ९। मा. ३) १३ (ढि।३२९)

(१८९।१) ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः सरस्वती वा॥

पावकानईया॥ सरास्वाऽ१तीऽ२। वाजेभिर्वा। जिनाइवाऽ१तीऽ२॥ यज्ञाऽ२३म्॥

वाऽ२ष्टूऽ२३४औहोवा॥ धियावसूऽ२३४५ः॥

(दी. ७। प. ७। मा. ५) १४ (छु।३३०)

(१९०।१) ॥आरुणस्य वैतहव्यस्य वा साम्, सौभरं वा। आरुणोगायत्रीन्द्रः॥

कइमम्। उहुवाहाई॥ नाहुऽ३षाइषूऽ१वाऽ२। आइन्द्रसोम। स्यतार्पाऽ१याऽ२त्।

सानोऽ२वसू। नियाभाऽ१राऽ२त्॥ सनोऽ२वसूनि॥ आऽ२३। भराउवा॥

आगहियेहिताइमेऽ१॥

(दी. ८। प. ११। मा. ९) १५ (टो।३३१)

(१९१।१) ॥ सौभरम्। सुभरिर्गायत्रीन्द्रः॥

आयाहिसू। षुमाहाऽ१इतेऽ२। षुमाहाऽ१इतेऽ२। आइंद्रसोमम्। पिबाइमम्।

पिबाआऽ१इमाऽ२म्॥ एदंबर्हाइः॥ सदोमाऽ२३माऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. १२) १६ (ना।३३२)

(१९२।१) ॥ पाष्ठौहे द्वे। द्वयोः पष्ठवाड् गायत्रीन्द्रः॥

महाइत्राऽ२३४इणाम्॥ अवाऽ२रस्तू। द्युक्षंमाऽ२३४इत्रा। स्याऽ२र्यम्णाः॥

दुराधाऽ२३४र्षाम्॥ वरौहोऽ२३४। वा॥ णाऽ५स्योऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ८। मा. ७) १७ (गे।३३३)

(१९२।२)

महित्रीणामवरस्तूऽ६ए॥ द्युक्षंमित्रस्यार्यम्णाः॥ दुराधाऽ२३र्षाम्॥ वरौहोऽ२। हिंमाऽ२। ण।

स्योऽ२। याऽ२३४औहोवा॥ हाओवा। ओवाऽ२३४५॥

(दी. ७। प. १०। मा. ५) १८ (जु।३३४)

(१९३।१) ॥ धुरासाकमश्वम्। साकमश्वो गायत्रीन्द्रः॥

त्वावतोऽ३। हौऽ३होऽ३१इ॥ पुरूवसोऽ३। हौऽ३होऽ३१इ॥ वयमिन्द्राऽ३। हौऽ३होऽ३१इ।
प्रणेतऽ३ः। हौऽ३होऽ३१इ॥ स्मसिस्थातऽ३ः। हौऽ३होऽ३१इ॥ हरीणाऽ३म्।
हौऽ३होऽ३१२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १३। मा. ९) १९ (बो।३३५)

॥ एकादश द्वितीयः, अष्टमः खण्डः॥८॥ दशतिः॥१०॥

॥ इति द्वितीयः प्रपाठकः॥२॥

(१९४।१) ॥ यामम्। यमो गायत्रीन्द्रः॥

उत्वामन्दन्तुसोहोमाः॥ कृणौहो। ष्वरौहो। धाअद्रिवाः॥ अ। वब्राऽ२३ह्मा॥ द्विषाऽ२ः।
हाऽ२इ। औऽ३होऽ३१येऽ३। जाऽ२हाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। ययूऽ२३४५ः॥

(दी. ७। प. १२। मा. ७) २० (छे।३३६)

(१९५।१) ॥ आंगिरसां हरिश्रीनिधनम्। अंगिरसो गायत्रीन्द्रः॥

गिर्वणःपाहिनःसुतम्। गिर्वणःपा॥ हिनःसुताऽ२म्। मधोर्धाराभिराहोऽ२। ज्यासेऽ२३।
हाउवा॥ इन्द्रात्वाऽ२३दा॥ तमायेऽ३त्। याऽ२शाऽ२३४औहोवा॥ हरीऽ३श्रीऽ२३४५ः॥

(दी. ६। प. १०। मा. ६) २१ (ङू।३३७)

(१९६।२) ॥ वैरूपम्। विरूपो गायत्रीन्द्रः॥

सादा॥ वइन्द्राऽ३ः। चर्कृषादा। उपोनुसाऽ३ः। सापर्यन्॥ नदेवाऽ२३ः॥ वृताऽ३४३ः।
शूऽ३४३। राऽ३आऽ५इन्द्राऽ६५६ः॥

(दी. २। प. ९। मा. ९) २२ (झो।३३८)

(१९७।१) ॥ आसितं सिन्धुषाम वा। असितो गायत्रीन्द्रः॥

आत्वाविशंत्विन्दाऽ६वाः॥ समुद्रमिवसिन्धवः। समुद्रमि। वसिन्धाऽ२३वाः। नत्वामिन्द्रातिरिच्यते॥

नत्वामाऽ२३इन्द्रा॥ तिरिच्याऽ२३ताऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) २३ (घू।३३९)

(१९८।१) ॥ यमस्य इन्द्रस्य वा अर्कः (अर्कम्)। यमो गायत्रीन्द्रः॥

इन्द्रमिद्गाथिनोबृहात्॥ इन्द्रामर्काइ। भिरर्किणाः॥ इन्द्रंवाणीऽ३ः। हाऽ३हाइ॥

अनूऽ५षता। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. ८। मा. ६) २४ (जू।३४०)

(१९९।१) ॥ सौमित्रे द्वे। द्वयोः सुमित्रो गायत्रीन्द्रः ऋभुर्वा॥

इन्द्रइषेददातुनः। ओहाइ॥ ऋभु। क्षणाऽ२म्। ऋभुꣳराऽ२३४यीम्। वाजीददातुवाऽ३॥

वाजीददा॥ तुवोऽ२३४वा। जाऽ५इनोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ९। मा. ७) २३ (घे।३४१)

(१९९।२)

इन्द्रइषेददातुनाऽ६ए॥ ऋभुक्षणमृ। भूऽ२१२३म्। रयीऽ३४३म्॥ वाऽ२३जी॥

ददाऽ२ओऽ२३। तुवोवा। जाऽ५इनोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ८। मा. ७) २६ (जे।३४२)

(२००।१) ॥ इन्द्रस्याभयङ्करम्। इन्द्रो गायत्रीन्द्रः॥

इन्द्रोअंगा॥ महद्भाऽ२३याम्। आभीषद। पचुच्याऽ२३वाऽ३४त्॥ सहाऽ३४इस्थिराऽ३ः॥

विचोवा। षाऽ५णोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ७। मा. ६) २७ (छू।३४३)

(२०१।१) ॥ त्वाष्ट्री साम। त्वष्टा गायत्रीन्द्रः॥

इमाउत्वा॥ सुताइसुताइ। नक्षन्ताऽ२३इगीऽ३४ः। वनः। गाऽ३इराः॥ गावोवाऽ३त्साऽ३म्॥

नधोऽ२३४वा। नाऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ८। मा. १०) २८ (जौ।३४४)

(२०२।१) ॥ पौषम्। पूषा गायत्रीन्द्रः इन्द्रापूषणौ वा॥

इन्द्रानुपू॥ षणावाऽ२३याम्। साख्याय। सुवस्ताऽ२३याइ॥ हूवेऽ२मावाऽ२३॥

जसोऽ२३४वा। ताऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ७। मा. ३) २९ (ठि।३४५)

(२०३।१) ॥ इन्द्राण्याः साम। इन्द्राणी गायत्रीन्द्रः॥

न। क्येनाकी॥ आइन्द्रत्वदुत्तराम्। नज्यायोऽ२। अस्ताऽ२३इवृ। हिम्ऽ३स्थिहिम्।

त्राऽ२३४हान्॥ नक्ये। वंयाऽ२३था॥ हिम्ऽ३स्थिहिम्ऽ३४३। तूऽ३४५वोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ११। मा. ९) ३० (टो।३४६)

एकादशस्तृतीयः, नवमः खण्डः॥९॥ दशतिः॥१॥

(२०४।१) ॥ श्यावाश्वं तारणं वा। स्यावाश्वो गायत्रीन्द्रः॥

तरणिंवाः। जनाऽ२३नाम्। त्रदंवाजाऽ३हाऽ३। स्यागोमाऽ२३४ताः॥ समानाऽ२३मू॥
प्रशाऽ५ऽसिषाम्। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. ८। मा. ५) ३१ (जु।३४७)

(२०५।१) ॥ वैरूपं। विरूपो गायत्रीन्द्रः॥

असृग्रमाइन्द्राऽ६तेगिराः॥ प्रातीऽ२त्वामूऽ२त्। अहा। सता॥ साऽ१जोऽ२षावाऽ२॥
षभाऽ२०पतिम्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ८। मा. ५) ३२ (डु।३४८)

(२०६।१) ॥ सौमित्रम् कौत्सं वा। सुमित्रो गायत्रीन्द्रः॥

सुनीथोघाऽ५समर्तियाः॥ यंमरुतोऽ२यमर्यमा॥ मित्रास्पांत्यद्रुहः॥ ऊऽ। ऊऽऽ।
वाहाऽ३१उवाऽ२॥ अतिद्विषाऽ२३४५ः॥

(दी. ७। प. ७। मा. ४) ३३ (छी।३४९)

(२०७।१) ॥ तौभम्। तुभो गायत्रीन्द्रः॥

औहोवाऔहोऽ२३४वा। ओऽ६हा। यद्वीडावीऽ३०द्राऽ३यत्स्थिराइ॥ औहोवाऔहोऽ२३४वा।
ओऽ६हा। यत्पर्शानेऽ३पाऽ३राभृतम्॥ औहोवाऔहोऽ२३४वा। ओऽ६हा।
वसुस्पार्हाऽ३०ताऽ३दाभर॥ औहोवाऔहोऽ२३४वा। ओऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २२। प. १३। मा. ७) ३४ (जे।३५०)

(२०८।१) ॥ श्रौतम्। श्रुतो गायत्रीन्द्रः॥

श्रुताम्॥ वोवृत्रहन्तमम्। प्रशर्द्धंचर्षणा ऽ२३इनाम्॥ आशाइषा ऽ२३इरा॥ धसेमहा।
औ ऽ३होवा। हो ऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ८। मा. ७) ३५ (डे।३५१)

इति ग्रामे गेय-गाने पञ्चमः प्रपाठकः॥५॥

(२०९।१) ॥ आभीशवम्। अभिशुर्गायत्रीन्द्रः॥

अरंतइन्द्रश्रवसेए। ए॥ गमाइमशूरत्वावताऽ३ः। होवाऽ३हाइ॥ अरा२श्वाऽ१क्राऽ२३।
होवाऽ३हाइ॥ पराइमाऽ२३णाऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ९। मा. ९) १ (ढो।३५२)

(२१०।१) ॥ पौषम्। पूषा गायत्रीन्द्रः॥

धानावतंकरंभिणाम्॥ अपूपवन्तमूऽ१क्थीऽ३नाम्॥ इन्द्राप्राऽ२३४ताः। ओऽ२३४हाइ॥
जुषोवा। स्वाऽ५नोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ६। मा. ५) २ (टु।३५३)

(२११।१) ॥ इन्द्रस्य क्षुरपवि। इन्द्रो गायत्रीन्द्रः॥

अपाफेनेननमुचेः॥ शिरइ। द्रोत्। अवाऽ२र्त्ताऽ२३४याः॥ वाइश्वोऽ२३ः॥
याऽ२दाऽ२३४औहोवा॥ जयस्पृधाऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. ७। मा. ८) ३ (फे।३५४)

(२१२।१) ॥ सौमित्रे द्वे। सुमित्रो गायत्रीन्द्रः॥

इमेतआ॥ द्रसोमाः। होवाऽ३होइ। सुतासोयेऽ३। चासोतूऽ२३४वाः॥ तेऽ४षाम्।
हाऽ३हाइ॥ मात्स्वप्रभूऽ२३४वा। वाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ९। मा. ७) ४ (भे।३५५)

(२१३।१)

तुभ्यꣳहाउ॥ सुतासस्सोमाः। स्तीर्णंबाऽ२३र्हीः। विभाऽ२होऽ१इ। वाऽ२३साउ॥

स्तोताऽ३उवाऽ३॥ भ्यआऽ२इ। द्रमृऽ३४औहोवा॥ डाऽ२३४या॥

(दी. ६। प. ९। मा. ९) ५ (घो।३५६)

दश चतुर्थः, दशमः खण्डः॥१०॥ दशतिः॥२॥

(२१४।१) ॥ कौत्से द्वे। कुत्सो गायत्रीन्द्रः॥

आवइन्द्राम्॥ कृविंयथा। वाजयाऽ२३०ताः। शताक्रतुम्॥ मꣳहिष्ठाऽ२३ꣳसी॥

चायाऽ३उवाऽ३इ॥ दूऽ२३४भीः॥

(दी. २। प. ७। मा. ७) ६ (छे।३५७)

(२१५।१)

अतश्चिदिंद्रिनउपाऽ६ए॥ आयाहिश। तवाजाऽ२३याऽ३४॥ इषाऽ३४सहाऽ३॥

स्रवोऽ२३४वा। जाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ६। मा. ३) ७ (चि।३४८)

(२१६।१) ॥ औषसम्। उषा गायत्रीन्द्रः॥

आबुन्दंवृ॥ त्रहाद। दाइ। जातःपृच्छाऽ३त्। विमाऽ२ताऽ२३४राम्॥ कउग्राऽ२३ःके॥

हाशृण्विरे। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ५) ८ (णु।३५९)

(२१७।१) ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजो गायत्रीन्द्रः॥

बृबदुक्थ२हाऽ६वामहाइ॥ सार्प्राऽ२कारा२ऽ२। स्नमू। तयाइ॥ साऽ१धाऽ२ःकार्ण्वाऽ२३।
तमोऽ२३४वा। वाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ७। मा. ३) ९ (छि।३६०)

(२१८।१) ॥ कौत्सं। कुत्सो गायत्रीन्द्रः॥

ऋजुनीतीनोवरुणः। इहा॥ मित्रोनयतिविद्वाऽ२३न्त्साः। इहा॥ अर्यमादाऽ२३इवाइ। इहा॥
सजोषाऽ३उवाऽ३॥ ईऽ३४हा॥

(दी. ५। प. ८। मा. ५) १० (बु।३६१)

(२१९।१) ॥ औषसम्। उषा गायत्रीन्द्रः अश्विनौ वा॥

दूरादीऽ२३हेवयत्सताः॥ अरुणप्सुराशिश्वाऽ२३इतात्॥ विभानूऽ२३०वी॥ श्वाथातनत्।
इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ७। मा. ५) ११ (फु।३६२)

(२२०।१) ॥ मित्रावरुणयोः संयोजनम्। मित्रावरुणौ गायत्रीन्द्रः मित्रावरुणौ॥

आनोमित्रा। वरुणाऽ३। औहोवाऽ२३४॥ घृतैर्गव्यूतिमु। क्षताऽ३म्। औहोवाऽ२॥
माध्वारजाऽ२२सिषूऽ३। औहोवाऽ२॥ क्रतू। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १२। मा. २) १२ (खा।३६३)

(२२१।१) ॥ ऋतुषाम। ऋतवो गायत्रीन्द्रो मरुतो वा॥

उदुत्येसूनाऽ६वोगिराः। काष्ठाय। ज्ञाइ। षुवाऽ२त्नाऽ२३४ता॥ वाश्राऽ२३भीऽ३॥
ज्ञूऽ२३याऽ३। ताऽ३४५वोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ७। मा. ४) १३ (खी।३६४)

(२२२।१) ॥ विष्णोः साम। विष्णुर्गायत्री विष्णुः॥

इदाऽ६मे॥ विष्णूऽ२ः। विचक्राऽ२३४माइ। त्राइधानि। दधाइपाऽ१दाऽ२म्॥ समूऽ२होऽ१।
ढाऽ२३माऽ३॥ स्याऽ२पाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। सुलेऽ१॥

(दी. ३। प. १०। मा. ५) १४ (णु।३६५)

नव पञ्चमः, एकादशः खण्डः॥११॥ दशतिः॥३॥

(२२३।१) ॥ कौत्सम्। कुत्सो गायत्रीन्द्रः॥

अतीहिमा॥ न्युषाऽ२वाइणाऽ२म्। सुषुवा२साऽ२म्। होइ। ऊपैऽ१रायाऽ२॥
अस्यराताऽ२३उ॥ सूऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ पीऽ२३४बा॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) १५ (दू।३६६)

(२२४।१) ॥ काश्यपम्, आप्सरसं वा। कश्यपो गायत्रीन्द्रः॥

कदुप्रचेतस। महाऽ३इ॥ वाऽ२३४चो। देवाहाउ। वचोदेवा। यशस्याऽ२३ताऽ३४इ॥
तदाऽ३४इद्धियाऽ३॥ स्यवोऽ२३४वा। धाऽ५नोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ९। मा. ५) १६ (भु।३६७)

(२२५।१) बार्हदुक्थे द्वे। द्वयोर्बृहदुक्थो गायत्रीन्द्रः॥

उक्थंचनोहाइ॥ शस्यमानम्। नागाराऽ२३यीः। आचिकेता॥ नगायाऽ२३त्राम्। गी।
यमाऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ९। प. ८। मा. ५) १७ (ह्वु।३६८)

(२२६।१)

इन्द्रोक्थाइ॥ भिर्मान्दाष्ठोऽ३। वाजानाऽ२३४०चा। वाजपतिः॥ हराऽ२इवाऽ२३४न्त्सू॥

तानाऽ२९स। खा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ६) १८ (णु।३६९)

(२२७।१) ॥ कौत्सम्। कुत्सो गायत्रीन्द्रः॥

आयाही॥ उपनस्सुतम्। होवाऽ३हाइ। वाजेऽ२भिर्माहृणीयथाऽ३ः। होवाऽ३हाइ॥

महा९इवयुवाऽ२३। होवाऽ३हाऽ३इ॥ जाऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ९। प. ९। मा. ७) १९ (घ्रे।३७०)

(२२८।१) ॥ कौत्से द्वे। द्वयोः कुत्सो गायत्रीन्द्रः॥

ओऽ२होऽ१इ। कदावसो। स्तोत्राऽ३म्। हर्यताआ॥ ओऽ२होऽ१इ। अवश्मशा।

रुधादूऽ२३४वाः॥ ओऽ२होऽ१इ। दीर्घ९सुतम्॥ वाताऽ३४३। पीऽ३याऽ५याऽ६५६॥

ईऽ२३४५॥

(दी. ५। प. १२। मा. ७) २० (फ्रे।३७१)

(२२८।२)

कदाऽ३४औहोवा। वसो। स्तोत्राऽ३म्। हर्यताआ॥ अवाऽ३४। औहोवा। श्मशाऽ२।

रुधादूऽ२३४वाः॥ दीर्घाऽ३४औहोवा। सुताऽ२३म्॥ वाताऽ३४३। पीऽ३याऽ५याऽ६५६॥

(दी. ८। प. १२। मा. ६) २१ (ठू।३७२)

(२२९।१) ॥ और्ध्व (अर्ध) सद्मनम्। ऊर्ध्वसद्मा गायत्रीन्द्रः॥

ब्राह्मणादी। द्रराधसाः। पिबासोमाऽ२म्। ऋतूऽ२नू॥ तवेदाऽ२ऽसाऽ२३॥ ख्याऽ२३माऽ३।

स्ताऽ३४५र्तोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ७। मा. ३) २२ (खि।३७३)

(२३०।१) ॥ और्ध्व (अर्ध) सद्मनम्। ऊर्ध्वसद्मा गायत्रीन्द्रः॥

वयंघातेअपिस्मसाइ॥ स्तोतारइन्द्रगिर्वणाः। ववाऽ२३होइ॥ तूवन्नोजीऽ२। ववाऽ२३हो॥

न्वसोऽ२३। माऽ२पाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। उपाऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) २३ (घू।३७४)

(२३१।१) ॥ अभीपादस्य औदलस्य साम। उदलो गायत्रीन्द्रः॥

एन्द्रपृक्षुकासुचीऽ६दे॥ नृमणाम्। तनूषुऽ३धाइहाऽ१इनाऽ२ः॥ सात्राजिदु॥ ग्रपौऽ२३ऽसियाउ।

वाऽ३। ऊऽ३४पा॥

(दी. ४। प. ७। मा. ५) २४ (थ्यु।३७५)

(२३२।१) ॥ आमहीयवं उक्थ्यामहीयवम् वा। अमहीयुर्गायत्रीन्द्रः॥

एवाहोऽ३असिवीरयूः॥ एवाशूऽ१राऽ२ः। उताऽ२३स्थिराः॥ आइवातेरा॥ धियाऽ२३०मनाउ।

वाऽ३॥ स्तौषेऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ७। मा. ६) २५ (छू।३७६)

॥ एकादश षष्ठः, द्वादशः खण्डः॥१२॥ दशतिः॥४॥

इति द्वितीयोऽध्यायः॥२॥

॥ इत्यैन्द्राख्ये तृतीये गाने एकसाम्याख्यं तृतीयं तन्त्रं संपूर्णम्॥

(२३३।१) ॥ भरद्वाजस्यार्कौ द्वौ। द्वयोभरद्वाजा बृहतीन्द्र ईशानेन्द्रौ वा॥

अभित्वाशू॥ रनोनुमाऽ२ः। ओइनूऽ३माः। आदुग्धाइ। वधाइनवाऽ२ः। ओइनाऽ३वाः।
आइशानमस्यजगतः। सुवार्दृशम्। आर्दृऽ३शाम्॥ आइशानमि॥ द्रतास्थुषः। आऽ२३।
स्थुऽ२। षाऽ२३४। औहोवा॥ स्थुषःस्थुषाऽ२३४५ः॥

(दी. ६। प. १६। मा. १५) २६ (कु।३७७)

(२३३।२)

अभित्वाऽ३शूरनोनुमा॥ आदुग्धाइव। धाइनाऽ२३वाः। आइशानमस्याजग। ताः।
सुवाऽ२र्दृऽ२३४शाम्॥ ईशानाऽ२३मी॥ द्रातस्थुषः। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥
डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ९) २७ (को।३७८)

(२३४।१) ॥ इन्द्रस्य भारद्वाजे द्वे। द्वयोर्भरद्वाजो बृहतीन्द्रः॥

त्वामिद्धी॥ हवाऽ२महे। आ। ओऽ३होवाहाउवाऽ३। ऊऽ३४पा। सातौवाज।
स्यऽ३काऽ२रवः। आ। औऽ३होवाहाउवाऽ३। ऊऽ३४पा॥ त्वांवृत्राइषुड। द्रसाऽ२त्पतिम्।
आ। औऽ३होवाहाउवाऽ३। ऊऽ३४पा॥ नरस्त्वांकाष्ठा। सुआऽ२र्वतः। आ।
औऽ३होवाहाउवाऽ३॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. १७। प. २०। मा. १०) २८ (श्लौ।३७९)

(२३४।२)

त्वामिद्धिहवामह। सातौवाजोवा॥ स्याकाऽ१रावाऽ२ः। त्वांवृत्राइषुइन्द्रसत्। पातिन्नाराऽ२ः॥

त्वांकाऽ२३ष्ठा। सुअर्वाऽ२३ताऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ९। मा. ८) २९ (ढै।३८०)

(२३५।१) ॥ सान्नते द्वे। द्वयोः सन्नतिर्बृहतीन्द्रः॥

अभिप्रवाः॥ सुराधाऽ२३साम्। इन्द्रमर्चयाथाऽ१विदाऽ२३४इ। योजाऽ३४रितॄ।

भ्योमघवापूरूऽ१वासूऽ२ः॥ सहाऽ२३॥ स्राऽ२इणाऽ२३४औहोवा॥ वशिक्षतीऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ८। मा. ६) ३० (गू।३८१)

(२३५।२)

अभाइप्रवाऽ२ः। सुराधाऽ२३४साम्॥ इन्द्रामर्चाऽ२३। याऽ२थाऽ२३४औहोवा। वीऽ२३४दे।

योजरितृभ्योमघवाऽ२पुरूवसुः॥ सहा॥ स्रेणेवऽ३शायेऽ३। क्षाऽ२ताऽ२३४औहोवा॥

सुमूऽ३तयेऽ२३४५॥

(दी. १०। प. १०। मा. ६) ३१ (मू।३८२)

(२३५।३) ॥ श्यैतम्। प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः॥

अभिप्रवस्सुरा। धसाऽ३४औहोवा॥ आइन्द्रमर्च। यथाविदाऽ२३४इ। ओऽ६हा।

योजरितृभ्यः। माघाऽ२३वा। पुरूऽ२। वाऽ२३४सूः॥ सहस्रेणावाइवाऽ३शा॥ हिम्मायेऽ३।

क्षाऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ वाऽ२३४सू॥

(दी. ७। प. १३। मा. ७) ३२ (जे।३८३)

(२३६।१) ॥ प्राजापतेर्नाविकम्। प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः॥

तंवः। एदास्माम्॥ ऋतीषहम्। हाऽ२इ। आऔऽ३हो। इहा। वासोर्मन्दानमन्धसाऽ३ः।

हाऽ२इ। आऔऽ३हो। इहा। अभिवत्सन्नस्वसरेषुधेनवाऽ२ः। हाऽ२इ। आऔऽ३हो। इहा॥

इन्द्रम्। हाऽ२इ। आऔऽ३हो। इहा॥ गीर्भाइः। नाऽ२३४औहोवा॥ वामहेऽ२३४५॥

(दी. १०। प. २१। मा. १७) ३३ (पे।३८४)

(२३६।२) ॥ अभीवर्तस्य इन्द्रस्य वा, अभीवर्तम्। अभीवर्तो बृहतीन्द्रः॥

तंवोऽ३दाऽ३स्मामृतीषहोवा॥ वासोर्मन्दा। नमान्धाऽ१साऽ२ः। आभिवत्साऽ३१२३४म्।

नस्वसरे। षुधाइनाऽ१वाऽ२ः॥ इन्द्रा२गाऽ१इर्भीऽ२ः॥ नवाऽ३। माऽ२३४५॥ हाऽ२३४५इ॥

(दी. ४। प. १०। मा. ७) ३४ (ने।३८५)

(२३६।३) ॥ अभीर्वतस्य भागम्। भगो बृहतीन्द्रः॥

तंवोदस्ममृती। षहाओऽ२३४वा॥ वासोर्मन्दानमन्धासाऽ२ः।

आभिवत्सन्नस्वसरेषूधेऽ१नावाऽ२ः। ओऽ३वा॥ इन्द्रंगाऽ२३४इर्भीः॥

नवामाऽ२३४५हाऽ६५६इ॥ भगाऽ३याऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ८। मा. ६) ३५ (गू।३८६)

(२३६।४) ॥ आभीवर्त आभीवर्तम् वा। इन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

तंवोदस्ममृती। षहाऽ३म्। वाऽ२३४। सोर्मन्दानम्। धासाः॥ अभिवत्सन्नस्वसरेषूऽ३धाइ।

नाऽ२३वाः॥ इन्द्रंगीर्भाइर्नाऽ३वा॥ हिंऽम्३स्थिहिंऽम्३। हिंऽम्३स्थिहिम्। नवानवोऽ२३४वा।

माऽ५होऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. १२। मा. १०) ३६ (ग्वौ।३८७)

(२३६।५)   ॥ नौधसम्। नोधा बृहतीन्द्रः॥

ताऽ२३४म्। वोदस्ममृती। षाहाम्॥ वसोर्मन्दा। नाऽ३मान्धाऽ३साः। आऽ२३भी। वात्सन्न।

स्वस। राइ। षूधेनाऽ२३४वाः॥ आऽ२३इन्द्राम्॥ गाइभिर्नवोऽ२३४वा॥ माऽ२३४हे॥

(दी. ३। प. १३। मा. ८) ३७ (डै।३८८)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने षष्टस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(२३७।१)   ॥ लौशे द्वे। द्वयोर्लुशो बृहतीन्द्रः॥

तारो॥ भाइर्वोविदाऽ३१उवाऽ२३। वाऽ२३४सूम्। इन्द्राऽ२ॱसबाधतयेऽ२। बृहात्।

बृहाऽ३१उ। वाऽ२। गायन्तस्सुतसोमेध्वरे॥ हुवेभाऽ२३राम्॥ नाकारिणम्।

इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १३। मा. १०) १ (गौ।३८९)

(२३७।२)

तारो॥ भाइर्वोविदाऽ३१उवाऽ२३। वाऽ२३४सूम्। इन्द्राऽ२ॱसबाधऊतयेऽ२।

बृहाद्वाऽ१याऽ२। तास्सुतसोऽ२। मेअध्वराइ॥ हुवेभाऽ२३राम्॥ नाकारिणम्।

इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १२। मा. ९) २ (ठो।३९०)

(२३७।३)   ॥ धानाके द्वे। द्वयोर्धानाको बृहतीन्द्रः॥

तरोभिर्वोविदद्वासूम्॥ इन्द्राम्। इन्द्र२सबाधऽ३ऊताऽ१याऽ२इ॥ बृहात्।

बृहद्वायन्तस्सुतसोमऽ३आध्वाऽ१राऽ२इ॥ हुवाइ। हुवेभरन्नकारिणम्। इडाऽ२३भाऽ३४३।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १०। मा. १०) ३ (ञौ।३९१)

(२३७।४) ॥ क्षुल्लककालेयं वा॥

तरोभिर्वोविदाऽ४द्वासूम्॥ इन्द्र२सबाऽ३। धऊऽ२ताऽ२३४याइ। बृहात्। बृहाऽ३१उ। वाऽ२।

गायन्तस्सुतसोमेध्वरे॥ हुवेहोइभाऽ२३राम्॥ नाकारिणम्। इडाऽ२३भाऽ३४३।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १२। मा. १०) ४ (ठौ।३९२)

(२३७।५) ॥ कालेयानि त्रीणि। त्रयाणां कालेयो बृहतीन्द्रः॥

तरोऽ२३भिर्वो। विदाऽ५द्वसूम्॥ इन्द्र२सबाऽ३धाऊऽ१तायाऽ३इ। ओऽ३४वा। ओऽ२३४वा।

बृहगायन्तस्सुतसोऽ३माअध्वाराऽ३इ। ओऽ३४वा। ओऽ२३४वा॥ हुवाइभराम्॥

नाकाराऽ२३४इणाम्। ओऽ२३४वा। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १३। मा. १०) ५ (डौ।३९३)

(२३७।६)

तरोभिर्वोऽ२। विदद्वाऽ२३४सूम्॥ इन्द्र२सबाऽ३धाऊऽ१तायाऽ२इ। औऽ३होऽ३वा। २।

बृहद्गायतस्सुतसोऽ३माअध्वाऽ२इ। औऽ३होऽ३वा। औऽ३होऽ३वा॥ हुवाइभाऽ१राऽ२म्।

औऽ३होऽ३वा। औऽ३होऽ३वा॥ नाकारिणम्। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १५। मा. ९) ६ (मो।३९४)

(२३७।१)

तरोभाऽ३इर्वोविदद्वसूम्॥ इन्द्रा२सबा। धऊतयाऽ२३इ। बृहद्गायाऽ३। ताऽ२३४ः।

सुतसोमेअ। ध्वाऽ३राइ। हुवाइभरौ। वाऽ३४३ओऽ३४वा॥ नकाऽ५रिणाम्। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. ११) ७ (खा।३९५)

(२३८।१) ॥ ऐषिरे द्वे। द्वयोरिषिरो बृहतीन्द्रः॥

तरणिरीत्॥ सिषाऽ३साती। वाजा०पुराम्। धियायुजा। आवाऽ३आइंद्राम्॥ पुरूहूतम्।

नमेगाइरा॥ नाइमीऽ३०ताष्टे॥ वासुद्रवाऽ२३४५म्॥

(दी. ५। प. ९। मा. ९) ८ (भो।३९६)

(२३८।२)

तराहाउ॥ णिरित्सिऽ३षासति। हयाइ। हयाइ। वाजंपुरम्। धियायूजौ। होवाऽ३हाइ।

आवइन्द्रंपुरुहूतम्। नमाइगाइरौ। होवाऽ३हाइ॥ नेमिंतष्टेवऽ३सा॥

औऽ३होवाहाऽ३४औहोवा॥ उप्। द्रूऽ२३४वाम्॥

(दी. १२। प. १४। मा. १३) ९ (झि।३९७)

(२३८।३) ॥ गौश्रृंगे द्वे। द्वयोर्गौश्रृंगो बृहतीन्द्रः॥

तरणिरित्सिषा। साऽ३ती। वाजंपुरंध्यायुजा॥ वाजंपुरंध्यायुजा। वआऽ२३इन्द्राऽ३४म्।

पुरुहूतंनमे। गाऽ३इरा॥ नेमाइन्ताऽ२३ष्टे॥ वसुद्रुवम्। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥

डा॥

(दी. ९। प. १२। मा. ७) १० (थे।३९८)

(२३८।४)

तरणिरित्सिषा। सतीऽ३। वाऽ२३४। जंपुरंधिया। युजा॥

वाजंपुरंध्यायुजावइन्द्रंपुरुहूतन्नमाऽ२इगाइराऽ२। हाऽ२ऊऊवाइ॥

नोमिंतष्टेवसोवाऽ३ओऽ२३४वा॥ द्रुऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ९। मा. ८) ११ (ढै।३९९)

(२३९।१) ॥ पृष्ठं। पृष्ठोबृहतीन्द्रः॥

पिबाऽ३सुतस्यरसिनाः॥ मत्स्वानइन्द्रगोमताऽ२३होइया।

आपिर्नोबोधिसधमाद्येवृधाऽ२३होइया॥ अस्माऽआऽ२३वा॥ तुताइधाऽ२३याऽ३४३ः।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ७। मा. ८) १२ (ठै।४००)

(२३९।२) ॥ शौक्लम्। शुक्लो बृहतीन्द्रः। अभीवर्तौ द्वौ। द्वयोर्जमदग्निः॥

पिबासुतस्यरसिनोहाउ॥ मत्स्वानइन्द्रगोमाऽ२तः। हाओऽ२३४वा॥

आपिर्नोबोधिसधमादियेवाऽ२र्द्धे। हाओऽ२३४वा॥ अस्माऽअवन्तुतेधाऽ२यः। हाओऽ२३४वा॥

ईऽ२३४५॥

(दी. १२। प. ८। मा. ८) १३ (ज्रै।४०१)

(२३९।३) ॥ जमदग्नेरभीवर्तः। जमदग्निर्बृहतीन्द्रः॥

पिबासुतस्यरसिनोमत्स्वाहाउ। नाऽ२ः। इन्द्राऽ२गोमताऽ२३ः। हाउ। आपिर्नोऽ२बो।

धिसाधमाऽ२। दियेवृधाऽ२३। हाउ॥ अस्मा२अवाऽ२३। हा॥ तुतेऽ३होऽ२।

याऽ२३४औहोवा॥ धियऊऽ२३४५॥

(दी. १०। प. १३। मा. ८) १४ (बै।४०२)

(२४०।१) ॥ कौल्मलबर्हिषे द्वे। द्वयोः कुल्मलबर्हिर्बृहतीन्द्रः॥

तुवाऽ३२होऽ३एहिचेरवाइ॥ विदाभगंवसूऽ२त्तायाऽ२३४इ। उद्वावृषस्वमघावान्॥ ऐहोइ।

गाऽ२विष्टयाइ॥ उदिन्द्राश्वमोवाऽ३ओऽ२३४वा। ष्टाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ७। मा. ८) १५ (खै।४०३)

(२४०।२)

त्व२ह्येहिचेराऽ६वाइ॥ विदाभगंवसूत्ताऽ१याऽ२३४इ। उद्वावृषस्व। माऽ५घवान्॥ आइहियाइ।

गविष्टायाऽ२इ॥ उदिन्द्राऽ२अश्वमी। ओऽ३१म्। ओऽ२३४वा। ष्टाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. १०। मा. ९) १६ (नो।४०४)

(२४१।१) ॥ वसिष्ठस्यजनित्रे द्वे। द्वयोर्वसिष्ठो बृहतीन्द्रः॥

नहिवाऽ३श्चारमंचना॥ हुवेहोऽ२इ। वसिष्ठःपराइम२साताऽ२इ। अस्माकमद्यमरुताऽ२ः।

सुताइसाऽ२३४चा॥ वाइश्वेऽ३होइ। पिबाऽ३हो॥ तुकाऽ२३। माऽ२इनाऽ२३४औहोवा॥

जनित्राऽ२३४५म्॥

(दी. ३। प. १०। मा. १०) १७ (णौ।४०५)

(२४१।२)

नहिवश्वरमम्। चनाऽ३। वसिष्ठाः। होइ। होइ। पराइम२साताऽ२३४इ। अस्माकमद्यमरुतः।

सुताऽ३इसाचा॥ वाइश्वेपिबन्तुकौऽ३। होऽ३१येऽ३॥ माऽ२इनाऽ२३४औहोवा॥

जनिऽ३त्राऽ२३४५म्॥

(दी. ४। प. १२। मा. १२) १८ (था।४०६)

(२४२।१) ॥ मैधातिथं दैवतिथं वा। मेधातिथिर्बृहतीन्द्रः॥

माचिदन्यहोहाइ॥ विशोऽ३२साता। सखायाऽ२होऽ१इ। माऔऽ३हो। राइषाउवा।

ण्याताउवा॥ इन्द्रमित्स्तोतावृषणाओऽ३हो॥ साचाउवा। सूताउवा॥ मुहुरुक्थाऔऽ३हो। चशा।

औहो। वाहोऽ२३४वा। साऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. १४। मा. ११) १९ (घा।४०७)

एकत्रिंशत्प्रथमः खण्डः॥१॥ दशतिः॥५॥

(॥ इति तृतीयस्य प्रथमोऽर्धः॥)

(२४३।१) ॥ वैखानसम्। वैखानसा बृहतीन्द्रः॥

नकिष्टाऽ३०कर्मणानशात्॥ यश्चाकारा। सदावृधाऽ२३म्। सदावृधाम्। इद्रान्नया। ज्ञैर्विश्वगू।

तमाऽ२र्भ्वसाऽ२३म्। तमृभ्वसाम्॥ अधार्ष्टधा। ष्णुमोजसाऽ२३॥ ष्णुमोजसाऽ३४३।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १३। मा. ६) २० (डू।४०८)

(२४३।२) ॥ पौरुहन्मनं प्राकर्षं वा। पुरुहन्मा बृहतीन्द्रः॥

नकिष्टंकर्मणानशत्। होऽ३४इ। यश्चकाऽ३रासदावृधाम्॥ आइन्द्राऽ२न्नायाऽ२।

ज्ञैर्विश्वगूर्तामृभ्वासाऽ२म्॥ अधाऽ२हो१। ष्टाऽ२३०धृऽ३४॥ हाओवा॥ ष्णुमोजसाऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) २१ (घू।४०९)

(२४४।१) ॥ सात्यम्। सत्यो बृहतीन्द्रः॥

यऋताऽ३इचीदभिश्रिषाः॥ पूराऽ२जात्रूऽ२। भ्यआतृदाऽ३ः। होवाऽ३हाइ।

सा०धाऽ२तासाऽ२म्। धाइंमघवाऽ२पुरूवसुः। होवाऽ३हाइ॥ नाइष्काऽ२र्तावीऽ२॥ ह्लुतंपुनः।

हो। वाऽ२। हाऽ२३४। औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ५। प. १४। मा. १२) २२ (भ्वा।४१०)

(२४५।१) ॥ भारद्वाजानिचत्वारि, भारद्वाजम्। चतुर्णांभरद्वाजो बृहतीन्द्रः॥

आत्वासहा॥ स्रमाशाऽ१ताऽ२म्। यूक्तारथेहिरण्यय। ब्रह्मायूऽ१जाऽ२ः। हारयइ।

द्रकाइशाऽ१इनाऽ२ः॥ वहा०तूऽ१सोऽ२३॥ माऽ२पाऽ२३४औहोवा॥ ताऽ२३४ये॥

(दी. ७। प. ९। मा. ७) २३ (झे।४११)

(२४५।२) ॥ भारद्वाजं, कण्वबृहद्वा। कण्वोबृहतीन्द्रः॥

औहोआत्वासहाऽ६ए॥ स्रमाशाऽ१ताऽ२३४म्। हाहोइ। यूक्तारथेहिरण्यये।

ब्रह्मायूऽ१जाऽ२३४ः। हाहोइ। हारयइ। द्रकाइशाऽ१इनाऽ२३४ः। हाहोइ॥

वहा०तूऽ१सोऽ२३४। हाहो॥ मपीऽ३। ताऽ२३४याइ। उहुवाऽ६हाउ॥ वा॥

(दी. ११। प. १५। मा. १३) १४ (ङि।४१२)

(२४५।३)　　　॥ भारद्वाजे द्वे। द्वयोर्भारद्वाजो बृहतीन्द्रः॥

आत्वासहस्रमाशतमा॥ युक्तारथेहिरण्यये। ब्रह्मयुजोहरयइन्द्रकेहोऽ२इ। शाइनाऽ२३ः।

हाउवा॥ वहन्तुसोमपीहोऽ३। हिंमाऽ२॥ तयाऽ३इ। ओऽ२३४वा॥ ऊऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १०। मा. ६) २५ (ईू।४१३)

(२४५।४)

आत्वासहस्रमा। शताम्। आत्वासहा॥ स्रमाशतम्। आऽ२इहियाऽ२३४हाइ।

यूक्तारथेहिरण्यये। ब्रह्मायूऽ१जाऽ२३ः। आऽ२इहियाऽ२३४हाइ। हारयइ।

द्रकाइशाऽ१इनाऽ२३ः। आऽ२इहियाऽ२३४हाइ॥ वहा०तूऽ१सोऽ२३।

आऽ२इहियाऽ२३४हाइ॥ मपीताऽ२३याऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. १६। मा. १५) २६ (ते।४१४)

(२४६।१)　　　॥ अग्नेर्वाम्राणि त्रीणि। त्रयाणां वम्रो बृहतीन्द्रः॥

आमन्द्रैरा॥ द्रहरिभाइर्याहिमयूरऽ३रामाभाऽ३इः। मात्वाकाइचीत्। नियेमूऽ२३४रीत्।

नपाशिनाः। अतिधान्वेऽ२॥ वताऽ१ऽ२३। आऽ२इहाऽ२३४औहोवा॥ वाऽ२३४याः॥

(दी. ७। प. ९। मा. १०) २७ (झौ।४१५)

(२४६।२)

आमन्द्रैरिन्द्र। हाऽ५रिभाइः॥ याहिमयूररोमभा-इः। मात्वाकाऽ२३इचीत्। नाइयेमुरित्।

नपाशाऽ२३इनाः॥ अताइधाऽ२३न्वे॥ वताऽ१ऽ२३। आऽ२इहाऽ२३४औहोवा॥

वयोऽ३भीऽ२३४५ः॥

(दी. १०। प. १०। मा. १४) २८ (मी।४१६)

(२४६।३)

आमन्द्रैरिन्द्र। हाऽ५रिभीः॥ याहिमयूररोमभाउ। वाऽ२। माबाऽ२। केचिन्नियेमुरिन्नपाशिनाउ।

वाऽ२॥ आतीऽ२॥ धन्वेवताऽ३१उवाऽ२३॥ ईऽ२३४ही॥

(दी. ८। प. १०। मा. ४) २९ (णी।४१७)

(२४७।१) ॥ गुङ्गोः साम, गौङ्गवम् वा। अग्निर्बृहतीन्द्रः॥

त्वमाऽ३०गाप्रश्न२सिषा॥ दाइवाऽ२ः। शविष्ठमाऽ३। तायाम्। नत्वदन्योमघवाऽ२३नाऽ२॥

स्तिमाऽ३र्डाइता॥ आइन्द्रब्र। वा। औऽ३हो॥ मितोऽ२३४वा। वाऽ५चोऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ११। मा. ७) ३० (के।४१८)

(२४८।१) ॥ इन्द्रस्य यशश्चत्वारि सामानि। इन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

त्वमिन्द्रा॥ यशाः। असाइ। ऋजीषीशवसः। पताइः। त्ववृत्राणीऽ३ह२सिया। प्रतीनाएऽ२।

कइत्पूरूऽ२॥ अनूऽ२होऽ१॥ तश्च। षाऽ२णाऽ२३४औहोवा॥ धाऽ२३४र्तीः॥

(दी. ७। प. १२। मा. ९) ३१ (छो।४१९)

(२४८।२) ॥ साध्रम्। साध्रा बृहतीन्द्रः॥

त्वमाऽ३इन्द्रायशाअसाइ॥ ऋजाइषीशाऽ२। वसाऽ३४५ः। पाऽ२३४तीः।

त्ववृत्राणिह२स्यप्रतीन्येकइत्पु। रू॥ आनाओऽ२३४वा। ताश्चाओऽ२३४वा॥ षणाऽ५इधृतीः।

होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ११। मा. १२) ३२ (पा।४२०)

(२४८।३) ॥ (समीचीनं) साध्रम् वा। सध्रो बृहतीन्द्रः॥

हाउत्वमिन्द्रा॥ याशाआऽ२३४सीऽ६। हाउ। ऋजाइषीऽ२३४शा। वासस्पाऽ२३४तीऽ६ः। हाउ। त्ववृत्रा। णीह२सिया। हाउ। प्रतीनाऽ२३४ए। कइत्पूऽ२३४रूऽ६। हाउ॥ अनुत्ताऽ२३४श्चाऽ६। हाउ॥ षाऽ२णाऽ२३४औहोवा॥ धाऽ२३४र्तीः॥

(दी. ४। प. १६। मा. १३) ३३ (ति।४२१)

(४२८।४) ॥ (प्राचीनं) यशसी द्वे। द्वयोरिन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

हाउत्वमिन्द्रा॥ यशाअसि। होइ। होइ। होयेऽ३४। हाऽउहाऽउहाऽउ। ऋजीषीशवसस्पतिः। होइ। होइ। होयेऽ३४। हाऽउहाऽउहाऽउ॥ त्ववृत्राणिह२स्यप्रतीन्येकइत्पुरू। होइ। होइ। होयेऽ३४। हाऽउहाऽउहाऽउ॥ अनुत्तश्चर्षणीधृतिः। होइ। होइ। होयेऽ३४। हाऽ३उहाऽउहाऽउवा॥ सुवर्महाऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. २२। मा. २६) ३४ (ठू।४२२)

(२४८।५)

होत्वमिन्द्रा॥ यशाअसि। होयेऽ३। होऽ२३४५। ऋजीषीशवसस्पतिः। होऽयेऽ३। होऽ२३४५॥ त्ववृत्राणिह२स्यप्रतीन्येकइत्पुरू॥ होयेऽ३। होऽ२३४५॥ अनुत्तश्चर्षणीधृतिः। होयेऽ३। होऽ२३४वाऽ६। हाउवा॥ सुवर्मयाऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. १५। मा. ६) ३५ (णू।४२३)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने षष्ठः प्रपाठकः॥६॥

(२४९।१) ॥ यौक्तस्रुचम्। युक्तस्रुक् बृहतीन्द्रः॥

इन्द्रमिद्देवता॥ तयाइ। इन्द्रंप्रयातियत्ध्वाऽ२३राइ। आइन्द्राऽ२म्।

समीकेवनिनोहवामाऽ२३हाइ॥ आइन्द्राऽ२म्॥ धानस्यसोऽ२३४वा॥ ताऽ२३४ये॥

(दी. ५। प. ८। मा. ७) १ (बे।४२४)

(२५०।१) ॥ आत्राणि त्रीणि, वासिष्ठानि वा। त्रयाणां अत्रिर्बृहतीन्द्रः॥

इमाउत्वापुरूवसोगिरः॥ एऽ५। गिराः॥ वार्द्धन्तुयाममाऽ२३। पावकवर्णाः। शुचयोवीऽ३पा।

हिम्०ऽ३स्थिहिम्। चाऽ२३४इता॥ अभिस्तोमैरनोऽ२॥ हुवाइ। होऽ३वा। षता।

औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १५। मा. १०) २ (णौ।४२५)

(२५०।२)

इमाउत्वापुरूवसोहाउ॥ गिरोवर्द्ध। तूयाऽ१ममाऽ२। इहाहाहोइ। इहोऽ२३४वा।

पावकवर्णाःशुचयः। इहाहाहोइ। इहोऽ२३४वा॥ विपश्चि। तो। अभिस्तोमैः। इहाहाहोइ।

इहोऽ२३४वा॥ अनूऽ२३। षाऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १७। प. १६। मा. ८) ३ (चै।४२६)

(२५०।३)

इमाउत्वापुरू। वसाऽ३उ। गाऽ२३४इ। रोवर्द्धतुयाः। ममा॥ पावकवर्णाःशुचयोविपश्चि। ता।

औऽ३हो। आऔऽ३हो॥ अभिस्तोमैरनोऽ२॥ हुवाइ। होऽ३वा। षता। औऽ३होवा।

होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १६। मा. ७) ४ (पे।४२७)

(२५१।१) ॥ वासिष्ठानि त्रीणि, आत्रीणि वा। त्रयाणां वसिष्ठो बृहतीन्द्रः॥

उदुत्येमा॥ धूमत्तमाऽ२३ः। गाइरस्तोऽ२३४मा। साईरतायेऽ३। सात्राजाऽ२३४इताः।

धानासाऽ२३४आ। क्षीतोतयाऽ२३ः॥ वाजायाऽ२३४०ताः॥ रथाऽ३आऽ५इवाऽ६५६॥

(दी. ६। प. ९। मा. १०) ५ (घो।४२८)

(२५१।२)

उदुत्येमाऽ५धुमत्तमा॥ गिरस्तोमासआऽ२इराताऽ२इ। सत्राजितोधनाऽ२साअ॥

क्षितोतायाऽ२ः॥ वाजयन्तोरथाऽ३१उवाऽ२३॥ ईऽ२३४वा॥

(दी. ९। प. ६। मा. ७) ६ (ते।४२९)

(१५१।३)

हऽ२३४५। उदुत्येमधुम। तमोऽ२३४हाइ॥ गाइराऽ२स्तोमाऽ२। सआऽ३४५इ।

राऽ२३४ते। सत्राजितोऽ२धनसाअक्षितोतयाऽ२३४५ः। हऽ२३४५॥ वाजयन्तोरथाः।

इवोऽ२३४हाइ॥ वाजयन्तोरथाइ। वा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १५। मा. १०) ७ (ङौ।४३०)

(२५२।१)॥ गौतमस्य मनाज्ये, गौराङ्गिरसस्य सामनी वा द्वे। द्वयोर्गोतमो बृहतीन्द्रः॥

यथागौऽ२३रोअपाकृताम्॥ तृष्यन्नेतियवेराऽ२३इणाम्। आपिब्रेनःप्रपिब्रेतूयमागाऽ२३ही॥

कण्वेऽ२षुसूऽ२३॥ साऽ२चाऽ२३४औहोवा॥ पीऽ२३४वा॥

(दी. १२। प. ६। मा. ५) ८ (चु।४३१)

(२५२।२)

ओवाओऽ२३४वा। याथा॥ गौरोअऽ३पाकृतम्। ओऽ३४। हाहोइ। तृष्यन्नेतियऽ३वाइरिणम्।

ओऽ३४। हाहोइ। आऽ२३४पी। त्वेनःप्रपित्वेतूयामाऽ१गहि। ओऽ३४। हाहोइ॥

कण्वेऽ२षुसूऽ२३॥ साऽ२चाऽ२३४औहोवा॥ पिबाऽ३ईऽ२३४५॥

(दी. ११। प. १५। मा. १०) ९ (ङौ।४३२)

पञ्चविंशः, द्वितीयः खण्डः॥२॥ दशतिः॥६॥

(२५३।१)॥इन्द्रस्य हारयणनि, हारायणानि वा, त्रीणि। त्रयाणामिन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

शग्ध्यूषू॥ शचाइपताइ। ईऽ२३४०द्रा। विश्वाभिऽ३रूतिभाइः। भाऽ२३४गाम्॥

नहित्वायशऽ३सा०वसू। वीऽ२३४दाम्॥ अनूऽ२३। शूऽ२राऽ२३४औहोवा॥

चराऽ२मसीऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १०। मा. ७) १० (ङे।४३३)

(२५३।२)

शग्ध्यूष्वौहोऽ५इशचीपताइ॥ आइन्द्रविश्वाभिरूतिभिः। भगान्नाऽ३ही। त्वायशसाम्।

वसूऽ३हाइ॥ वाइदाऽ२म्॥ अनुशूरचरोवाऽ३ओऽ२३४वा। माऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. ८। मा. १०) ११ (जौ।४३४)

(२५३।३)

शग्ध्यूषुशची। पताइ। शग्ध्यूषू॥ शचाइपते। आऽ२इहिमाऽ२३४हाः। आइन्द्रविश्वा।

भिरूतिभिः। आऽ२इहिमाऽ२३४हाः। भागन्नहित्वायशसम्। वसूविदम्।

आऽ२इहिमाऽ२३४हाः॥ अनूशूऽ१राऽ२३। आऽ२इहिमाऽ२३४हाः॥

चरामाऽ२३साऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १६। मा. १६) १२ (चू।४३५)

(२५४।१) ॥ वाम्राणि त्रीणि। त्रयाणां वाम्रो बृहतीन्द्रः॥

याहोइ। ईऽ२३४०द्रा॥ भुजऽ३आभाऽ१राऽ२ः। सुवाऽ२३हा। र्वाऽअसुऽ३राइभाऽ१याऽ२ः।

स्तोताऽ३हा। रमिन्मघवन्नस्यावर्द्धायाऽ२॥ याइचाऽ३हाइ॥ त्वेवृक्तबर्हाऽ२३इषाऽ३४३ः।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ११) १३ (ट।४३६)

(२५४।२)

याइन्द्रभुजआभाऽ६राः॥ सुवर्वाऽअ। सुरेऽ२भाऽ२३४याः। हा। औहोऽ२३४हा।

स्तोतारमाइत्। माघवन्ना। स्यवाऽ२र्द्धाऽ२३४या। हा। औहोऽ२३४हा॥ येचत्वाऽ२३इवृऽ३।

हा। औहोऽ२३४हा॥ क्तबर्हाऽ२३इषाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. १६। मा. ११) १४ (त।४३७)

(२५४।३)

याइन्द्रभुजआभरः। उहुवाहाइ॥ सुवर्वाऽअसुरेभ्यः। उहुवाऽ२३हाइ। स्तोतारमिन्मघवन्न।

स्यावर्द्धायाऽ२। उहुवाऽ२३हाइ॥ येचत्वाऽ२३इवृ। उहुवाऽ२३हा॥ क्तबर्हाऽ२३इषाऽ३४३ः।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १२। मा. १२) १५ (छा।४३८)

(२५५।१) ॥ वरुणसामानि त्रीणि। त्रयाणां वरुणो बृहतीविश्वेदेवाः॥

प्रमित्रायप्राहाउ॥ आऽ२र्यम्णाइ। सचाऽ२हो। थियोऽ२। हुवाइ। आर्तावसाउ। वराऽ२हो।

थियोऽ२। हुवाइ। वरुणेच्छा। दीयंवचाः॥ स्तोत्राऽ२ꣳहोइ॥ राजोऽ२। हुवा।

षूगायताऽ३१उवाऽ२३॥ ऊऽ३४पा॥

(दी. १०। प. १६। मा. ८) १६ (प्यै।४३९)

(२५५।२)

प्रमित्रायप्रौहोवा॥ आर्यम्णा। औहोऽ३४इ। औहोऽ३वा। साचथ्यम्। ऋतावासा।

औहोऽ३४इ। औहोऽ३वा। वारूथ्येवरुणेछ। दिया०वाचा। औहोऽ३४इ। औहोऽ३वा॥

स्तोत्रꣳराजा। औहोऽ३४इ। औहोऽ३वा॥ षूगायता। औहोऽ३४इ। औहोऽ३वाऽ३४३।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १६। प. २०। मा. ७) १७ (डे।४४०)

(२५५।३)

प्रमित्रायप्रार्यम्णेवा। ओवा॥ साचथ्यम्। ऋतावाऽ१साऽ२उ। वाऽ२३रू। थाऽ२३याइ।

वरुणेछ। दायाऽ२३ꣳहाइ। वचोऽ३आ॥ स्तोत्रꣳराजसुगायत। स्तोऽ२३त्राम्॥ राजसुगोऽ३।

होऽ३१२३४। वा। याऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. १५। मा. ७) १८ (डे।४४१)

(२५६।१) ॥ प्रजापतेः वषट्कारणिधनम्। प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः॥

अभित्वापूर्वपीतये। अभित्वाऽ३पूर्वपीतयाइ॥ इन्द्रस्तोमोभिऽ३रायवाऽ२ः। भिरायाऽ१वाऽ२३ः।

ओमोऽ३वा॥ समीचीनासऋभवःसऽ३मास्वराऽ२न्। समास्वाऽ१राऽ२३न्। ओमोऽ३वा॥

रुद्रागृणन्तऽ३पूर्वियाऽ२म्। तपूर्वाऽ१याऽ२३म्। ओम्। ओऽ२। वाऽ२३४। औहोवा॥

ऊऽ२३४पा॥

(दी. १७। प. १५। मा. ९) १९ (श्वो।४४२)

(२४७।१) ॥ धृषतो मारुतस्य साम, मारुतम् वा। मारुतोबृहतीन्द्रः॥

प्रवइन्द्रायबृहते। प्रवाः॥ इन्द्रायऽ३बृहाऽ१तेऽ२३। ओमोऽ३वा।

मरुतोब्रह्मऽ३आर्चाऽ१ताऽ२३। ओमोऽ३वा। वृत्रꣳहाना। तिवृ। त्राहाऽ२३। ओमोऽ३वा।

शताक्रतुः॥ वाऽ२३४ज्रे॥ णशाऽ३। हाऽ३हा। तपाऽ५र्वणा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १७। मा. ५) २० (छु।४४३)

(२५८।१)॥ संश्रवसः, विश्वश्रवसः, सत्यश्रवसः, श्रवसो वा, सँज्ञानानि चत्वारि सामानि।

चतुर्णामिन्द्रो बृहती मरुतः॥

सा०त्वाहिन्व। तिधाइताइभीऽ३ः। ताऽ२इ। भाऽ२३४। औहोवा॥ सꣳश्रवसेऽ३॥ दा १

सांत्वारिण। तिधाइताइभीऽ३ः। ताऽ२इ। भाऽ२३४। औहोवा॥ विश्रवसेऽ३॥ दा २

सांत्वातत। क्षुर्द्धाइताइभीऽ३ः। ताऽ२इ। भाऽ२३४। औहोवा॥ सत्यश्रवसेऽ३॥ दा ३

(दी. ९। प. १८। मा. १२) २१ (दा।४४४)

(२४८।२)॥ इन्द्रस्य वाप्यानां वा, संज्ञानानि, वासिष्ठानि वाम्राणि वा त्रीणि॥

सा०श्वाशिश्व। तिधाइताऽ१इभीऽ२ः। ताइभीऽ२ः। बृहदिन्द्रायऽ३गायाऽ१ताऽ२। याताऽ२॥

मरुतोवृत्रऽ३हा०ताऽ१माऽ२म्। तामाऽ२म्॥ येनज्योतिरजनयन्नृऽ३तावाऽ१र्द्धाऽ२ः।

वार्द्धाऽ२ः॥ देवंदेवायऽ३जागृऽ१वीऽ२। गृवीऽ२। सा०श्वाशिश्व। तिधाइताइभीऽ३ः। ताऽ२इ।

भाऽ२३४। औहोवा॥ श्रवसेऽ२३४५॥

(दी. ११। प. १७। मा. १३) २२ (खि।४४५)

(२५९।१) ॥ वाम्रे द्वे। द्वयोर्वाम्रो बृहतीन्द्रः॥

इन्द्राऔऽ३हो॥ क्रतुन्नऽ३आभाऽ१राऽ२। पिताऔऽ३हो। पुत्रेभिऽ३योयाऽ१थाऽ२।

शिक्षाऔऽ३हो। णोअस्मिन्पुरुहूतयामाऽ१नीऽ२॥ जीवाऽ२३ः॥ ज्योऽ२ताऽ२३४औहोवा॥

अशीमहीऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ९। मा. ७) २३ (झो।४४६)

(२५९।२) ॥ क्रतु वासिष्ठम्॥

इन्द्रक्रतूऽ५न्नआभरा॥ पितापुत्रेभियोयथा। शिक्षाणोऽ२३आ। स्माइन्पुरुहू। तयामाऽ१नीऽ२।

ओऽ२। हौऽ२। हुवाइ। औऽ३होऽ२३४वा॥ जीवाज्योऽ२३तीः॥ अशीमाऽ२३हाऽ३४३इ।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १३। मा. ७) २४ (डे।४४७)

(२५९।३) ॥ वासिष्ठम्। वासिष्ठो बृहतीन्द्रः॥

३ ४ ३ ४ ५ र ३ २^ ३ ५ र २ ४र ५ ४र ५ ३ १ १ १ ४ ३र ४ ३र ४ ५
इन्द्रक्रतुन्नआ। भराओऽ२३४वा॥ पितापूऽ३त्रेभियोयथा। ह९ऽ२३४५। पितापुत्रेभियः।
१ ५ ४ ५ ४ ५ ३ ४५र ५ १ ५ ४ ५ ४ ५
याथाऽ२३४हाइ। शाइक्षाणोआ। स्माइन्पुरुहूतया। मानोऽ२३४हाइ॥ जीवाज्योतीः॥
२ १ ५ ४ ॥ ५
अशोऽ२३४वा। माऽ५होऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. १२। मा. १०) २५ (ठौ।४४८)

(२६०।१)॥ आङ्गिगस्य अङ्गिगस्य वा, स्वपसः सामनी द्वे। आङ्गिगस्यस्वपसिः बृहतीन्द्रः॥

५र १ २ २ १ र २ २ २ १ र र २ २
मानइन्द्रा॥ परावाऽ३र्णाक्। भवानःसधमाऽ१दीऽ३याइ॥ त्वन्नऊतीत्वमिन्नआपीऽ३याम्॥
१र र २ २ ^ ५
मानइन्द्रपरावृणाऽ३१उवाऽ२३॥ ऊऽ३४षा॥

(दी. ६। प. ६। मा. ८) २६ (क्यै।४४९)

(२६०।२)

३र ४ ५ ४ ५र ३ २ ^ ३र ४ ५ २ १र २ १ विर १र २
मानइन्द्रपरा। वृणाक्। मानइन्द्रा॥ परावाऽ२३र्णाक्। भवाऽ२नःस। धमादाऽ२३याइ।
१ २ — १ १र ३र १ २ १र २
त्वन्नऊतीऽ२। त्वमिन्नाऽ२आपियाम्॥ मानाआऽ२३इन्द्रा॥ परावाऽ२३र्णाऽ३४३क्।
१
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १२। मा. १२) २७ (फा।४५०)

(२६१।१) ॥ आष्कारणिधनं काण्वम्। कण्वो बृहतीन्द्रः॥

५ २ ४र ५र ४ ५ १ र २ १ २ २ १ २ १ २ ३ २ १
वयंघाऽ३त्वासुतावन्ताः॥ आपोनवृ। क्तबाऽ२३र्हिषाउ। वाऽ३२। पवित्रस्या। प्रस्रवणाइ।
२ १ ५ १ २ १र र २ १ ३ १ १ १
षुवृत्राऽ२३४हान्॥ पाऽ२३री॥ स्तोतारः। आसाऽ२३४५ताऽ६५६इ॥ आऽ२३४५षू॥

(दी. ६। प. ११। मा. ७) २८ (के।४५१)

(२६१।२) ॥ महावैष्टंभम्। वैष्टंभो बृहतीन्द्रः॥

औहोवा। वयंघत्वासुतावन्तः। औहोवा॥ औहोइ। आपोनवृक्तबर्हिषः। पवाइत्राऽ३स्या।

प्रस्रवणेषुवाऽ१र्त्राऽ३हान्। औहोऽ३इ। औहोइ॥ परिस्तोतारआसते। पराइस्तोऽ३ता॥

रआसता। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १७। प. १५। मा. ११) २९ (ञा।४५२)

(२६१।३) ॥ अभिनिधनं काण्वम्। कण्वो बृहतीन्द्रः॥

औहोहोहाइ। आइही। वायाम्॥ घाऽ२३४त्वा। सूतावाऽ२३४०ताः। आपोनाऽ२३४वृ।

क्ताबर्हिषाः। ऐहोइ। आऽ२३४इही। पावित्राऽ२३४स्या। प्रास्रावाऽ२३४णे। षूवृत्रहान्।

ऐहोइ। आऽ२३४इही॥ पारिस्तोऽ२३४ता॥ रआऽ३सा५ताऽ६५६इ। आऽ२३४भी॥

(दी. ५। प. १७। मा. १२) ३० (फा।४५३)

(२६१।४) ॥ महावैष्टंभम्। वैष्टंभो बृहतीन्द्रः॥

वयंघत्वोहाइ। सुतावन्तोवा॥ आपोनवृ। क्तबार्होऽ१इषाऽ२३ः। होवाऽ३हाइ।

पवित्रस्यप्रस्रवणे। षुवार्त्राऽ१हाऽ२३न्। होवाऽ३हाइ॥ पराइस्तोऽ१ताऽ२३। होवाऽ३हा।

रआऽ२३॥ साऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ दीऽ२३४शाः॥

(दी. ५। प. १३। मा. १०) ३१ (बौ।४५४)

(२६२।१) ॥ श्नौष्टीगवम्। श्नुष्टीगुर्बृहतीन्द्रः॥

ओहाइ। यदिन्द्रना॥ हुषीषूऽ६वा॥ ओजोऽ२नार्म्णाऽ२म्। चकृष्टि। षूऽ।

ऐऽ२हीऽ१आइहीऽ२। हाऽ२ऊऽऊऽवाइ। याऽ१द्वाऽ२पा०चाऽ२। क्षितीनाम्।

ऐऽ२हीऽ१आइहीऽ२। हाऽ२ऊऽऊऽवाइ॥ द्युम्नमाभ। रा। ऐऽ२हीऽ१आइहीऽ२।

हाऽ२ऊऽऊऽवाइ॥ साऽ१त्राऽ२वाइश्वाऽ२। निपौ॑सि। या। ऐऽ२हीऽ१आइहीऽ२।

हाऽ२ऊऽऊऽवाऽ२। याऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ९। प. २३। मा. २४) ३२ (द्रौ।४५५)

त्रयोविंशतिस्तृतीयः खण्डः॥३॥ दशतिः॥७॥

(२६३।१) ॥ इन्द्रस्य वृषकम्। इन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

सत्यमित्थावृ। षाऽ५इदसाइ॥ वृषजूतिर्नोविताऽ२। वृषाह्युग्राश्रृण्विषाऽ२इ। परावताइ॥

वृषोऽ२३र्वा॥ वताइश्रूऽ२३ताऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ७) ३३ (भे।४५६)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने सप्तमस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(२६४।१) ॥ द्यौते द्वे, द्वैगते वा। द्विगद्बृहतीन्द्रः॥

यच्छक्राऽ३सीपरावती॥ यादर्वाव। तिवार्त्राऽ१हाऽ२न्। अताऽ३ः। हौऽ३होऽ३वा।

त्वागीभिर्द्युगदिन्द्राकेऽ१शिभीऽ२ः॥ सुताऽ२३॥ वाऽ२॰आऽ२३४औहोवा॥ एऽ३।

विवाऽ२सतीऽ२३४५॥

(दी. ७। प. १०। मा. ५) १ (त्रु।४५७)

(२६४।२)

यच्छक्रासिपरावतियदोहाइ॥ वावऽ३ताइवृत्राहाऽ२३४न्। अताऽ३४स्त्वागाइ। भाइर्द्युगदि।

द्राकेऽ१शिभीऽ२ः॥ सुताऽ२३॥ वाऽ२॰आऽ२३४औहोवा॥ विवाऽ२सतीऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ८। मा. ८) २ (जे।४५८)

(२६५।१) ॥ कार्तयशं कार्तवेशं वा। कृतयशा बृहतीन्द्रः॥

अभिवोवीरमन्धसाः॥ मदेषुऽ३गायाऽ२। गिरामाहाऽ३। वीचेताऽ२३४साम्॥ इन्द्रन्नामा॥

श्रूत्यꣳशाकाऽ२इ। नाऽ२३४औहोवा॥ वचोउपाऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ८। मा. ५) ३ (डु।४५९)

(२६६।१) ॥ इन्द्रस्य शरणम्। इन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

इन्द्रत्रिधाऽ५तुशरणाम्॥ त्रिवरूथꣳसुवस्तयाइ। छर्दिर्याऽ२३छा। माघवद्भ्यः। चामह्याऽ२३०चा॥

यावयाऽ२३दी॥ वूमेऽ२भिया। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १०। मा. ४) ४ (जी।४६०)

(२६७।१) ॥ श्रायन्तीयम्। श्रायन्तीयो बृहतीन्द्रः (प्रजापतिः) सूर्यः॥

श्रायन्तइवसूऽ४रायाम्॥ विश्वाऽ२इदिन्द्राऽ२। स्यभाऽ२क्षाता। वासूनिजातोजनिमा।

नियोजाऽ१साऽ२॥ प्रतिभागन्नदीऽ२धिमः। प्राऽ२३ती॥ भागान्नाऽ३दा। हिम्। धिमाऽ३ः।

ओऽ२३४वा॥ हेऽ२३४५॥

(दी. ८। प. १२। मा. ६) ५ (ठू।४६१)

(२६८।१) ॥ वाम्रम् आक्षीलं वा। वाम्रो बृहतीन्द्रः॥

नसीमदेवआ। हाऽ३हाऽ३इ। पाऽ२३४। तत्पतोवा॥ इषꣳहोऽ२इ। दीर्घाहोऽ२।

योमर्तायाऽ२ः। आइतग्वाचित्। यआइताशो। युवाउवाऽ३। ऊऽ३४पा। जताऽ२इ॥

आइन्द्रोऽ२हारीऽ२॥ युयोऽ२३। जाऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ७। प. १६। मा. १२) ६ (ह्ला।४६२)

(२६९।१)॥ श्याक्राणि, वा वैयश्वानि वा, आश्वानि वा, श्यौल्कानि वा, सुम्नानि वा, द्युम्नानि वा, पृष्ठानि वा, यौक्ताश्वानि वा, सोम सामानि वा, वासिष्ठानि वा, इमानि त्रीणि। त्रयाणां वसिष्ठो बृहतीन्द्रः॥

आनः। एविश्वा॥ सुहाव्याऽ२म्। आइन्द्रः२सम्। त्सूभूऽ१षाता। ऊऽ२३४पा। हाऽ३हाइ। ब्रह्माणिसवना। निवृत्रहान्॥ परमाऽ२३ज्याः। आर्चाऽ३हाइ। षमा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १५। मा. ८) ७ (णे।४६३)

(२६९।२)

आनोविश्वासुहाहाव्याम्॥ इन्द्रः२समत्सुभूषतो। पब्राऽ२३ह्मा। णिसवना। निवृत्रहान्॥ परमाऽ२३ज्याः। आर्चाऽ३हाइ॥ षमा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ५) ८ (कु।४६४)

(२६९।३)

आनाविश्वासुहाव्याम्॥ इन्द्राम्। सुमत्सुभूषत। उपाब्राऽ१ह्माऽ२। णिसवनानिवृत्रहन्॥ परामाऽ१ज्याऽ२ः॥ ऋचीषाऽ२३माऽ३४३। ओऽ२३४इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ५) ९ (घु।४६५)

(२७०।१) ॥ प्रजापतेर्निधनकामम्। प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः॥

तवेदिन्द्राऽ५वमंवसू॥ त्वंपुष्यसिमध्यमम्। सात्रावाऽ२३४इश्वा। स्यापरमस्यराजसि॥ नकिष्ट्वाऽ२३४गो॥ षूवृण्वाऽ२३ताइ। होवाऽ३होइ। होऽ। वाहाऽ३१उवाऽ२३४५॥

(दी. ३। प. ९। मा. ५) १० (दु।४६६)

(२७१।१)॥ इन्द्रस्य प्रियाणि त्रीणि, वसिष्ठस्य वा। त्रयाणां इन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

क्वेयथा॥ कुवेदसाऽ२इ। औहोऽ२। औहोइ। औऽ३होऽ२३४वा। पुरुत्राचाइत्।
हितेमनाऽ२ः। औहोऽ२। औहोइ। औऽ३होऽ२३४वा। अलर्षियू। ध्माखजकृऽ२त्।
औहोऽ२। औहोइ। औऽ३होऽ२३४वा॥ पुरन्दरा। प्रगायात्राऽ२ः। औहोऽ२। औहोइ।
औऽ३होऽ२३४वा॥ अगाऽ३। साऽ२इषूऽ२३४औहोवा॥ सुश्र॰साऽ२३४५ः॥

(दी. १२। प. २३। मा. १३) ११ (जि।४६७)

(२७१।२)

कुवाकुवा॥ याथा। कुवेदसाइ। ऊवाइ। औऽ३होऽ२३४५। पुरुत्राचाइत्। हितेमनाः।
उवाइ। औऽ३होऽ२३४५। अलर्षियू। ध्माखजकृत्। ऊवाइ। औऽ३होऽ२३४५॥ पुरन्दरा।
प्रगायात्राः। ऊवाइ। औऽ३होऽ२३४५॥ अगाऽ३। साऽ२इषूऽ२३४औहोवा॥
सुश्राऽ३॰साऽ२३४५ः॥

(दी. ७। प. २०। मा. १३) १२ (त्रि।४६८)

(२७१।३)

क्वेयथकुऽ३वाइदाऽ२३४सी॥ पुरुत्राचित्। हिताइमाऽ२३नाः। आलर्षि। युध्माखजकृऽ३त्।
हाउवा॥ पुरंदाऽ२३रा। प्रगायात्राऽ२ः॥ अगाऽ२३। साऽ२इषूऽ२३४औहोवा॥ प्सूऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ११। मा. ९) १३ (पो।४६९)

(२७२।१)॥ ऐन्द्राणि वासिष्ठानि वा, वैरूपाणि त्रीणि। त्रयाणां वसिष्ठो बृहतीन्द्रः॥

वयमेनाम्॥ आऽ२इदाऽ२३४औहोवा। हीऽ२३४याः। अपीपेमेहवज्रिणम्।

तास्माऽ२ऊवाऽ२। द्यसवनाइ। सूतंभाराऽ२॥ आनूनाऽ२३०भू॥ षातश्रुते।

इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. १२। मा. ८) १४ (थे।४७०)

(२७२।२)

वयमेनाम्॥ इदाऽ२हायाः। अपौहोइ। पेमौहोइ। इ। हावज्रिणाम्॥ तस्माउवा। द्यासवनाइ।

सूतंभरा॥ आनौहो। नंभौहो॥ षातश्रुताऽ३१उवाऽ२३॥ ऊऽ३४पा॥

(दी. १२। प. १३। मा. ८) १५ (ज्यै।४७१)

(२७२।३)

वयमेनमिदा। हियाओऽ२३४वा। इयाहाइ॥ हुवेहोऽ२इ। अपीपेमेहावज्रिणाऽ२म्।

तस्माउवद्यसवनाइ। सूतंभाराऽ२। ईऽ३या॥ आनूनाऽ२३४०भू॥ षताश्रूऽ२३४५ताऽ६५६इ॥

श्रवाऽ३साऽ२३४५इ॥

(दी. ८। प. ११। मा. ८) १६ (टै।४७२)

सप्तदश चतुर्थः खण्डः॥४॥ दशतिः॥८॥

(२७३।१) ॥ पौरहन्मनम्। पुरुहन्मा बृहतीन्द्रः॥

योराजाऽ३चर्षणाइनाम्॥ यातारथे। भिराध्राऽ१इगूऽ२ः॥ ध्राइगूऽ२ः। वाइश्वासाऽ३म्।

तरुताऽ३। तरुताऽ३। पार्त्तानाऽ२३४नाम्॥ ज्याइष्ठंयोवा। त्राहागाऽ२३४र्णाइ॥

त्रहाऽ५गृणाइ॥ होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १३। मा. १३) १७ (बि।४७३)

(२७३।२) ॥ प्राकर्षम्। प्रकर्षो बृहतीन्द्रः॥

योराजाच। षणाऽ३२३४इनाम्॥ यातारथेभिरध्राऽ२३इगूः। विश्वासान्तरुतापृतानाऽ२३नाम्॥

ज्याऽ२३इष्ठाम्॥ योवृत्रंहोवाऽ३ओऽ२३४वा। गाऽ५र्णोऽ६हाइ॥

(दी. ९। प. ७। मा. ९) १८ (थो।४७४)

(२७४।१) ॥ इन्द्रस्याभयङ्करम्। इन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

यतआऽ३इन्द्राभयामहाइ॥ ततोनोअभयंकाऽ२३र्धी। मघवञ्छग्धितवतन्नऊताऽ२३याइ॥

विद्वाइषोऽ२३वी॥ मार्द्धोजहि। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ८। मा. ८) १९ (बै।४७५)

(२७५।१) ॥ कावषे द्वे। द्वयोः कवषो बृहतीन्द्रो वास्तोष्पतिः॥

वास्तोष्पताइ॥ ध्रुवा। स्थूणाओऽ२३४वा। अꣳसत्रꣳसोम्यानाऽ२म्।

द्रुप्सःपुरांभेत्तश्शश्वताऽ२३इनाम्॥ आऽ२३४इन्द्राः॥ मुनीऽ२। नाऽ३१उवाऽ२३॥

साऽ२३४खा॥

(दी. ९। प. ९। मा. ८) २० (धे।४७६)

(२७५।२)

वास्तोष्पतेध्रुवा। स्थूणाऽ३। आऽ२३४। सत्रꣳसो। म्यानाम्॥

द्रप्सःपुरांभेत्ताशश्वताऽ२३इनाम्॥ आऽ२३इन्द्राः॥ मुनीऽ२। नोऽ२३४वा॥ साऽ२३४खा॥

(दी. ११। प. १०। मा. ५) २१ (ङु।४७७)

(२७६।१) ॥ सूर्यसाम। सूर्यो बृहती सूर्यः॥

बण्महा२ऽ३असिसूर्यो॥ बाडादित्य। महा२आऽ१साऽ२३४इ। महस्तेसतोमहिमापनि।

ष्टाऽ३मा॥ मह्वादाऽ३इवाऽ३॥ महोऽ२३४वा। आऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ८। मा. ५) २२ (गु।४७८)

(२७७।१) ॥ वैश्वदेवे, आनूपे, वाध्र्यश्वे वा द्वे। आनूपो बृहतीन्द्रः॥

अश्वीअश्वी॥ रथीसुऽ३रूपाऽ१ईऽ२त्। गोमा२यदि। द्रातेऽ१साखाऽ२। श्वात्राऽ२भाजाऽ२।

वयसासचतेसाऽ२३दा॥ चन्द्राइर्याऽ३तीऽ३॥ साऽ२३भाऽ३म्। ऊऽ३४५पोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ९। मा. ६) २३ (धू।४७९)

(२७७।२)

अश्वीरथीसुरूपाऽ६ईत्॥ गोमा२यदिन्द्रतेसखाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया।

श्वात्राभाजावयसासचतेसदाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया॥ चन्द्राइर्याऽ१तीऽ२॥ साभामुप।

इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १३। प. ८। मा. ८) २४ (डै।४८०)

(२७८।१) ॥ वैरूपम्। विरूपो बृहतीन्द्रः सूर्यः॥

यद्यावाऽ२३इन्द्रतेशताम्॥ शतंभूमीरुतस्यूऽ२ः। नत्वावज्रिन्त्सहस्र२सूर्याअनूऽ२॥

नाजाऽ२तामाऽ२३॥ ष्टरोऽ२३४वा। दाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. ६। मा. ५) २५ (चु।४८१)

(२७९।१) ॥ नैपातिथे द्वे। द्वयोर्निपातितिथिर्बृहतीन्द्रः॥

यदिन्द्रप्रागपाक्॥ उदाक्। न्यग्वाहूयसेनृभाऽ२इः। सिमापुरूनृषूतोअ। सियानवाऽ२इ॥

आसीऽ२प्राशाऽ२॥ धतोवाऽ३ओऽ२३४वा। र्वाऽ५शोऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ८। मा. ८) २६ (डै।४८२)

(२७९।२)

यदिन्द्रप्रागपागुदाऽ६गे॥ नायग्वाहू। यसाइनृभीऽ३ः। हा। औहोऽ२३४हा।

सिमाऽ२पुरूनृषूतोअ। सियानवेऽ२३। हा। औहोऽ२३४हा॥ असाइप्राशाऽ३। हा।

औहोऽ२३४हा॥ धाऽ२तूऽ२३४औहोवा॥ र्वाऽ२३४शे॥

(दी. १३। प. १४। मा. ५) २७ (दु।४८३)

(२८०।१)॥ कौमुदस्य बृहतः सामनी द्वे। (द्वयोः कुमुदो बृहत्) कौमुदस्य बृहद् बृहतीन्द्रः॥

कस्तमिन्द्रा॥ त्वाऽ२वासाऽ२उ॥ आमर्त्योदधर्षताइ। श्रद्धाहाइतेऽ२। माघवन्पा।

रियाइदाऽ१इइवीऽ२॥ वाजीवाजाऽ२म्॥ सिषाऽ२३। साऽ२ताऽ२३४औहोवा॥

ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ८। प. १०। मा. ७) २८ (णे।४८४)

(२८०।२)

कस्तमिन्द्रत्वा। वसाऽ३उ। आऽ२३४। मर्त्योदध। षताइ॥ श्रद्धाहाइतेऽ२। माघवन्पा।

रियाइ। दाइवाओऽ२३४वा। ऊऽ२३४पा॥ वाजीवाजाऽ२म्॥ सिषाऽ२३।

साऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ८। प. १४। मा. ८) २९ (द्वै।४८५)

(२८१।१)   ॥ वाचस्साम। वाक्बृहतीन्द्रः॥

इन्द्राग्नीअपादियाऽ६मे॥ पूर्वागाऽ२त्। पद्वताइभाऽ१याऽ२ः। हित्वाशिरोऽ२जिह्वयारा।

रापच्चाराऽ२त्॥ त्रिꣳशत्पदा॥ नियाऽ२३। क्राऽ२माऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. १०। प. ९। मा. ६) ३० (भू।४८६)

(२८२।१)   ॥ वाम्रे आशीले वा द्वे। द्वयोर्वम्रो बृहतीन्द्रः॥

इन्द्रनेदीयएदि। हाइ। मितमे। धा॥ भिरूतिभिः॥ आशन्ताऽ२३मा। शन्तमाभिरभिष्टिभिः॥

आस्वाऽ२३पे॥ स्वाऔऽ३होऽ३। पिभिरोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ११। मा. ६) ३१ (टू।४८७)

(२८२।२)

इन्द्रनेदीयएदि। हाऽ। मितमे। धा। भिरूतिभाइः॥ आशन्तमशन्तमाऽ२भाइः। आभिष्टिभिः॥

आस्वाऽ२पाइस्वाऽ२३॥ हाऽ३। पिभिरोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ११। मा. ९) ३२ (टो।४८८)

॥ षोडश पञ्चमः खण्डः॥५॥ दशतिः॥९॥

(२८३।१) ॥ गौरीविते, प्रहितौ द्वौ, वासुक्रे वा। द्वयोर्गौरीवितिर्बृहतीन्द्रः॥

इतऊती॥ वोऽ३ओजाऽ३राम्। औऽ३होऽ३वा। प्रहेतारमप्राहीऽ३ताम्। औऽ३होऽ३वा।

आशुंजेतारऽ३ꣳहाइताऽ३राम्। औऽ३होऽ३वा॥ रथाइतममतूर्त्ताऽ२३४०तू॥ ग्रियाऽ३।

वाऽ२र्द्धाऽ२३४औहोवा॥ स्तुषेऽ१॥

(दी. ९। प. ११। मा. ८) ३३ (तै।४८९)

(२८३।२)

इतऊतीवोअजाऽ६राम्॥ प्रहेतारमप्रहितमुहुवाऽ२३होइ। आशुंजेतार२हाइतारमुहुवाऽ२३हो॥

रथी। तमाऽ२म्। अतूर्ताऽ२३४०तू॥ ग्रियाऽ३। वाऽ२र्द्धाऽ२३४औहोवा॥

स्तौऽ३षाऽ२३४५इ।

(दी. १२। प. ९। मा. ८) ३४ (झै।४९०)

(२८४।१) ॥ आत्रे द्वे। द्वयोरत्रिर्बृहतीन्द्रः॥

मोषुत्वावा॥ घाताऽ२३४५ः। चाऽ२३४ना। आरेअस्मन्निरीऽ२रमन्। आराऽ१त्ताद्वाऽ२।

साधमादाऽ२म्। नाआगहि॥ आइहवासाऽ२न्। ऊपश्रुधि। इडाऽ२३भाऽ३४३।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. ८) ३५ (खै।४९१)

(२८४।२)

मोषुत्वावाघतश्चनाऽ६ए॥ आरेअस्मन्निरीरमाऽ२न्। हाऽ२ऊऊवाऽ२इ। ऊ।

आरात्ताद्वासधमादाऽ२म्। हाऽ२ऊऊवाऽ२इ। ऊऽ२। नआगाऽ२३४ही॥ आइह।

वासौवाओऽ२३४वा॥ उपश्रूऽ२३धाऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १३। मा. १५) ३६ (गु।४९२)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने सप्तमः प्रपाठकः॥७॥

(२८५।१)   ॥ गौरीविते द्वे। द्वयोर्गौरीवितिर्बृहतीन्द्रः॥

सुनोतसोमपान्नाऽ६ए॥ सोममिन्द्राऽ२३। होवाऽ३हा। यवज्राऽ२३इणाइ।

पचतापक्ताइरवसेकृ। णूऽ। ध्वाऽ१मीऽ२३द्धाइ॥ पृ। णान्। आइत्पृऽ३हा॥

णताइमाऽ२३याऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १३। मा. १०) १ (गौ।४९३)

(२८५।२)

सुनोतसोमपा। आन्नाओऽ२३४वा। हयाहाइ॥ सोममिन्द्राऽ२। हुवेऽ२। हुवेऽ२हो।

यावज्रिणाऽ२इ। पचतापक्ताइरवसेकृ। णू। ध्वाऽ१मीऽ२३द्धाइ॥ पृ। णान्। आइत्पृऽ३हा।

णताइमाऽ२३याऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥ः

(दी. ७। प. १६। मा. १०) २ (चौ।४९४)

(२८६।१)   ॥ वामदेव्यम्। वामदेवो बृहतीन्द्रः॥

यःसत्राहाविचर्षणिः। इन्द्रन्ताऽ३ꣳहूमहेवयाम्॥ इन्द्रन्तꣳहूमहेवाऽ२३याम्।

सहस्रमन्योतुविनृम्णसत्पाऽ२३ताइ॥ भवासाऽ२३मा॥ त्सूनोवृधे। इडाऽ२३भाऽ३४३।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. ९। मा. ५) ३ (भु।४९५)

(२८७।१)   ॥ अश्विनोः साम। अश्विनो बृहतीन्द्र अश्विनौ॥

शुचीभिर्नाऽ५ः शचीवसू॥ दिवानक्तंदिशस्यताम्। मावाऽ२म्। रातिरुपदसत्कदाचना॥

आस्माऽ२त्॥ रातिःकदोऽ२३४वा। चाऽ५नोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ७। मा. ४) ४ (फी।४९६)

(२८८।१)॥ वसिष्ठस्य वासिष्ठस्य वा, पज्रस्य पाज्रस्य वा, पज्राणि त्रीणि। त्रयाणां वसिष्ठो बृहतीन्द्रो वरुणः॥

यदाकादा॥ चाऽ२माऽ२३४औहोवा। ढूऽ२३४षे। स्तोताजरेतमर्तियऽ३ः। आदिद्वन्द्वे। तावरुणाऽ२३४म्। विपाऽ३४गिरा॥ धार्त्तारांवीऽ२३॥ व्राऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ नाऽ२३४५म्॥

(दी. ९। प. १०। मा. ५) ५ (नु।४९७)

(२८८।२)

यदाकदाचमाहाउ॥ ढूषाऽ२इस्तोताऽ२। जराइ। तमर्तियाः। आदिद्वन्दा। औहोऽ३हाऽ३। हाऽ३इ। तावाऽ२रूऽ२३४णाम्। विपागिरा॥ धर्त्तारंव्या। औहोऽ३हाऽ३। हाइ॥ व्रातानाम्। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १६। मा. ९) ६ (पो।४९८)

(२८८।३)

यदाऽ४क। दाऽ४चमी। ढुषाऽ३इ। स्तोता॥ जराइ। तमार्त्तायाऽ३ः। आदाइद्वन्दाऽ३इ। तावाऽ२रूऽ२३४णाम्॥ विपा। गिरौवाओऽ२३४वा। धर्त्ता। रंव्यौवाओऽ२३४वा॥ व्रताऽ५नाम्। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १५। मा. १०) ७ (णो।४९९)

(२८९।१) ॥ सौभरे द्वे। सौभरिर्बृहतीन्द्रः॥

पाहिगाआ। धसोमाऽ२३दाइ। आइन्द्रायमे। धियाताऽ२३इथाइ। यःसंमिश्लोहरियोर्यः।

हाइरण्यायाऽ२ः॥ आइन्द्रोवाऽ३ज्री॑ऽ३॥ हिरोऽ२३४वा। ण्याऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ९। मा. १०) ८ (ढौ।५००)

(२८९।२)

पा। ह्येपाही॥ गाअन्धसोमाऽ२३दाइ। आइन्द्रायमे। धियाताऽ२३इथाइ।

यसंमिश्लोऽ२हरियोर्यः। हाइरण्यायाऽ२ः॥ आइन्द्रोवाऽ३ज्रीऽ३। हिरोऽ२३४वा।

ण्याऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. १०। मा. १०) ९ (णौ।५०१)

(२९०।१) ॥ इन्द्रस्य वैयश्वम्। व्यश्वो बृहतीन्द्रः॥

उभयश्शृणवच्चनाऽ६ए॥ आइन्द्रोऽ२अर्वागिदंवचाऽ२३ः। होवाऽ३हाइ। सत्राचियामघवाऽ२न्।

सो। मापाऽ३हाइ। ताऽ२३४याइ॥ धियाशाविष्ठआऽ२३होइ॥ गमात्। औऽ२३होवा।

होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. १२) १० (खा।५०२)

(२९१।१) ॥ सहस्रायुतीये, प्रजापतेर्महोविशीये वा द्वे। प्रजापतिर्बृहतीन्द्रः॥

महेचनोवा॥ त्वाअद्राऽ२३४इवाः। पुराशुल्का। यऽ३दायासाऽ३इ। नस। हस्राऽ३।

यानायुता। यवाज्राइवोऽ३॥ नश। तायाऽ३॥ शाऽ२३ताऽ३। माऽ३४५घोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. १२। मा. ६) ११ (खू।५०३)

(२९१।२)

महेचाऽ३नत्वाअद्रिवाः॥ पाराशुल्का। यदायाऽ१साऽ२इ। नसहस्राऽ२। यनायुतायावज्रिऽ२ः॥

नशाताऽ२३या॥ शताऽ२३। माऽ२धाऽ२३४औहोवा॥ महोविशेऽ१॥

(दी. ९। प. ९। मा. ५) १२ (धु।५०४)

(२९२।१) ॥ इन्द्राण्यास्साम। इन्द्राणी बृहतीन्द्रः॥

वस्याः२इन्द्रासिमे। हाउपितूः॥ उताभ्राऽ२३४तूः। अभूञातौ। वाओऽ२३४वा। माताचामौ।

वाओऽ२३४वा॥ छदयथः। साऽ३मावासौ। वाओऽ२३४वा॥ वसूत्वानौ। वाओऽ२३४वा॥

यरोऽ२३४वा। धाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. १४। मा. १०) १३ (धौ।५०५)

सप्तदश षष्ठः खण्डः॥६॥ दशतिः॥१०॥

इति तृतीयः प्रपाठकः॥३॥

(२९३।१) ॥ सौभरम्। सुभरिर्बृहतीन्द्रः॥

इमाऽ३४इ॥ इमइ। द्रायसुन्वाऽ६इराइ॥ सोमासोदध्याशिराः।

ताः२आमदायवज्रहस्तपीतायाइ॥ हराऽ२३हो। भ्यायाऽ२३हो॥ हियोऽ२३।

काऽ२आऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १२। प. १०। मा. ९) १४ (श्वो।५०६)

(२९४।१) ॥ गार्त्समदम्। गृतसमदो बृहतीन्द्रः॥

इममन्द्राऽ५मदायताइ॥ सोमाश्चिकित्रउक्थिनाः। माऽ१धोऽ२ःपापाऽ२।

नउपनोगिराःशाऽ१र्णूऽ२॥ रास्त्वस्तोऽ२३त्रा॥ यगिर्वाऽ२३णाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ८। मा. ७) १५ (बे।५०७)

(२९५।१) ॥ वाचस्साम। वाग्बृहतीन्द्रः॥

आत्वद्यासाऽ६बर्दुघाम्॥ हुवाइगाऽ२यत्रवेऽ२पसम्। आइन्द्रधेऽ३नूम्। सुदुघाम्। आऽ।

नियाऽ२माऽ२३४इषाम्॥ उरुधाऽ२३राम्॥ अरंकाऽ२३र्ताऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ११) १६ (म।५०८)

(२९६।२) ॥ बार्हदुक्थम्। बृहदुक्थो बृहतीन्द्रः॥

नत्वाबृह। तोऽ५द्रयाः॥ वरन्तइन्द्रवीडाऽ२३वाः। याछिक्षासीऽ२। स्तूवताइमाऽ२। वतेवसू॥

नकिष्टाऽ२३दा॥ मिनाताऽ२३इताऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ७) १७ (ने।५०९)

(२९७।१) ॥ नैपातिथं वाश्रम् वा। निपातिथिर्बृहतीन्द्रः॥

कईंवेदा॥ सुताइसाऽ१चाऽ२। पिबन्तंकद्वायोऽ१दाधाऽ२इ।

अयंयःपुरोविभिनत्ताओऽ१जासाऽ२॥ मन्दानाऽ२३ःशीऽ३॥ प्राऽ२याऽ२३औहोवा॥

धाऽ२३४साः॥

(दी. ६। प. ७। मा. ६) १८ (खू।५१०)

(२९८।१) ॥ तौरश्रवसम्। तुरश्रवा बृहतीन्द्रः॥

यदिन्द्राऽ२३शासोअव्रताम्॥ च्यावयास। दाऽ३सास्पारौ। वाऽ३२। अस्माकामौ। वाऽ३२।

शुंमघवन्। पुरूस्पृहौ। वाऽ३२॥ वसाव्यायौ। वाऽ३२३॥ धिबोऽ२३४वा। हाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. १३। मा. ४) १९ (दी।५११)

(२९९।१)　　॥ त्वाष्ट्र्यास्साम। त्वाष्ट्री बृहतीन्द्रो विश्वेदेवाः॥

त्वष्टाऽ३४। नोदैवियम्। वचाः। पर्जन्योब्रह्मणस्पाऽ२३तीः॥ पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्न्नुपातूऽ२३नाः॥

दुष्टाराऽ२३०त्रा॥ मणंवाऽ२३चाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) २० (घू।५१२)

(३००।१)　　॥ अदितेः साम। अदितिर्बृहतीन्द्रः॥

कदाचनास्ताऽ६रीरसाइ॥ नेन्द्रासाऽ२३४श्चा। साइदाशूऽ२३४षाइ। उपोपेन्नुमघवन्भूयइत्।

हाऽ२इनूऽ२३४ताइ॥ दानंदाऽ२३४इवा॥ स्यपोऽ२३४वा। च्याऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ८। मा. ९) २१ (गो।५१३)

(३०१।१)　　॥ आजीगर्तम्। अजीगर्तिर्बृहतीन्द्रः॥

आइहीऽ२। आइहीहाइ। युंक्ष्वाहिवाऽ३र्त्राऽ३हन्तम॥ हारीइन्द्र। परावाऽ१ताऽ२३४ः।

अर्वाऽ३४चीनाः। मांघवन्त्सो। मपाइताऽ१याऽ२३४इ॥ उग्राऽ३४ऋष्वाऽ३इ॥

भिरोऽ२३४वा। गाऽ५होऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ११। मा. ११) २२ (ता।५१४)

(३०२।१)　　॥ माधुच्छन्दसम्। मधुच्छन्दा बृहतीन्द्रः॥

त्वामिदा। होइ। हियोनराऽ६ए॥ अपाइप्यन्वा। ज्राइभूर्णाऽ२३४याः। सइन्द्रस्तोमवाहसः।

इहाश्रूधा। औहोऽ३४वाहाइ॥ उपास्वासा। औहोऽ३४वाहा॥ रमागाऽ२३हाऽ३४३इ।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १३। मा. १०) २३ (बौ।५१५)

दश सप्तमः खण्डः॥७॥ दशतिः॥१॥

(३०३।१) ॥ उषसस्साम। उषा बृहतीन्द्रः॥

प्रताइ। इहा। आइ। इहा। उवद। शिऽ३आयती। आयती॥ उच्छा। इहा। आऽ। इहा।

तीदु। हिऽ३तादिवाऽ२ः। आदिवाऽ२ः॥ अपो। इहा। ओऽ। इहा। माहीवृणुतेच।

क्षुषातमाऽ२ः। आतमाऽ२ः॥ ज्योताइ। इहा। आइ। इहा। कृणो। तिऽ३सूनरीऽ२।

ओनरीऽ२३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ३०। मा. १०) २४ (मौ।५१६)

(३०४।१) ॥ अश्विनोः साम। अश्विनौ बृहतीन्द्रः (अश्विनौ वा)॥

इमाउवांदिविष्टयाऽ२३४ऐही॥ उस्राहवन्तेअश्विनाऽ२३४ऐही॥

अयंवामह्वेवसेशचीवसूऽ२३४ऐही॥ विशंविश॑हिगच्छाथाऽ२३४ऐही। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १२। प. ६। मा. ७) २५ (चे।५१७)

(३०५।१) ॥ अश्विनोः संयोजनम्। अह्विनौ बृहतीन्द्रः (अश्विनौ वा)॥

कुष्ठःकोवामश्विनाआ॥ तापानोदे। वामर्तायाऽ३ः। होवाऽ३हाऽ३४इ। घ्नताऽ३४वामाऽ१।

श्नायाऽ३। होवाऽ३हाऽ३४इ। क्षपाऽ३४माणाः। आ॑शूनाऽ३। होवाऽ३हाऽ३४इ॥

इत्थाऽ३४मुवाऽ३त्॥ उवाऽ२न्। यथाऽ३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १०। प. १४। मा. ९) २६ (भ्वो।५१८)

(३०६।१) ॥ अश्विनोः साम। अश्विनौ बृहतीन्द्रः (अश्विनौ वा)॥

अयाऽ३४म्। अयंवांम॥ धुमत्ताऽ६माः॥ सुतःसोमोऽ२दिविष्टिषु। ओऽ३हा। ओऽ३हाऽ३४।

ओहा। तामश्विनापिबतंतिरोअह्नियम्। ओऽ३हा। ओऽ३हाऽ३४। ओहा॥ धताꣳराऽ१त्नाऽ२।

ओऽ३हा। ओऽ३हाऽ३४। ओहा॥ निदाऽ२३। शूऽ२पाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १०। प. १८। मा. ५) २७ (बु।५१९)

(३०७।१) ॥ सोमसाम। सोमो बृहतीन्द्रः (सोमो वा)॥

आत्वासोमा। स्य। गल्दाऽ२याऽ२३४औहोवा। सदाऽ२याचन्नहंजियाऽ२३।

भूर्णाओऽ२३४वा। सृगन्नसवनेषुचुक्रुधम्॥ कईश्राऽ२३नाम्॥ नायाचिषत्।

इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. ११। मा. ७) २८ (पे।५२०)

(३०८।१) ॥ आजमायवम्। अजमायुर्बृहतीन्द्रः॥

अध्वर्योद्राऽ५वयातुवाम्॥ सोममिन्द्राऽ२ः। पिपासाऽ१तीऽ२। उपोऽ२नूनंयुयुजेवृ।

षाणाऽ१हारीऽ२॥ आचाजाऽ२३गा॥ मवृत्रहा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ३) २९ (जि।५२१)

(३०९।१) ॥ समुद्रप्रेयमेधम्। प्रियमेधा बृहतीन्द्रः॥

अभीषतस्तदाहाउ॥ भरा॥ इन्द्रज्यायःकनीयाऽ२३साः। पुरूवसुर्हिमघवन्बभूवाऽ२३इथा॥

भराइभाऽ२३रे॥ चहव्यः। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) ३० (घू।५२२)

(३१०।१) ॥ वैरूपे द्वे। द्वयोरिन्द्रो बृहतीन्द्रः॥

यदिन्द्राऽ२३यावतस्तुवाम्॥ एतावदहमीशीया। स्तोताराऽ२३मीत्। दाधिषे।

रदावाऽ१साऽ२उ॥ नपापाऽ२३४त्वा॥ यारौवाऔऽ२३४वा। साऽ५इषोऽ६हाइ॥

(दी. ९। प. ८। मा. ६) ३१ (दू।५२३)

(३१०।२)

यदिन्द्रयावतस्तुवाम्॥ आइताऽ३। वादाऽ३हामी। शायाऽ३ऽऽ२। स्तोतारामीऽ२३त्।

दधिषेरदा। वासाऽ३ऽऽ२उ॥ नापापात्वाऽ२३॥ यारौवाओऽ२३४वा। साऽ५इषोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. १०। मा. ७) ३२ (ने।५२४)

(३११।१) ॥ वैश्वदेवम्। विश्वेदेवा बृहतीन्द्रः॥

त्वमिन्द्रोहाइ। प्रतूर्तिष्वोवा॥ अभिविश्वाः। असाइस्पाऽ१र्द्धाऽ२ः। अशस्तिहाजनितावृ।

त्रातूऽ१रासाऽ२इ॥ त्वां०तूऽ१र्याऽ२॥ तरुष्यता। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ११। मा. ६) ३३ (तू।५२५)

(३१२।१) ॥ पूरीषम्। अथर्वा बृहतीन्द्रः॥

प्रयोरिक्षिओजसाऽ६ए॥ दिवःसदोऽ२भ्यस्परि। नत्वाविव्या। औहोऽ३वा। चा। रजः।

औहोऽ३वाइ। द्रपार्थिवाम्॥ अतिवाऽ२३इश्वाम्॥ वावक्षिथ। इडाऽ२३भाऽ३४३।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १३। मा. ८) ३४ (गै।५२६)

एकादश अष्टमः खण्डः॥८॥ दशतिः॥२॥ इति बार्हतमैन्द्रम्॥

(३१३।१) ॥ प्राकर्षम्। प्रकर्षः, त्रिष्टुबिन्द्रः॥

असौहोवाऽ३हाइ। वीऽ२३४दे। वांगोऋ। जीकमन्धाः॥ न्यौहोवाऽ३हा। स्मीऽ२३४नी।

द्रोजनु। षेमुवोचा॥ बोधौहोवाऽ३हाइ। माऽ२३४सी। त्वाहरि। अश्वयज्ञेः॥

बोधौहोवाऽ३हाइ। नाऽ२३४स्तो। ममन्ध। सोऽ३४३। माऽ३दाऽ५इषूऽ६५६।

(दी. ११। प. १७। मा. ७) ३५ (खे।५२७)

(३१३।२) ॥ निहवः निहवम् वा॥ वसिष्ठस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

आइहीऽ३। आइही। एहीया। ओऽ२३४वा। हाइ। असाविदेवंगोऋजीकऽ३मान्धाऽ३ः।

आन्धाः। अन्धा। ओऽ२३४वा। हाइ॥ न्यस्मिन्निन्द्रोजनुषेमुऽ३ वोचाऽ३। वोचा। वोचा।

ओऽ२३४वा। हाइ॥ बोधामसित्वाहर्यश्वऽ३याज्ञेऽ३ः। याज्ञैः। यज्ञा। ओऽ२३४वा। हाइ॥

बोधानस्तोममन्धसोमऽ३दाइषूऽ३। आइषू। एषुवा। ओऽ२३४वा। हाइ। आइहीऽ३॥

आइही। एहीया। ओऽ२३४वा। हाऽ३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १९। प. ३२। मा. १६) ३६ (श्रू।५२८)

॥ इति ग्रामे गेय-गानेऽष्टमस्यार्धः प्रपाठकः॥

(३१४।१) ॥ योनिनी द्वे। द्वयोर्गृत्समदः त्रिष्टुबिन्द्रः॥

योनीः। तआइ। द्राऽ३सद। नाअकारी॥ तामा। नृभाइः। पुरूहूऽ३। ताप्रयाही॥ आसाः।

यथा। नोऽ३अवि। तावृधश्चीत्॥ दादाः। वसू। नीऽ३मम। दाऽ३४३ः।

चाऽ३सोऽ५माऽ६५६इः॥

(दी. नास्ति। प. १७। मा. १३) १ (यि।५२९)

(३१४।२)

योनिष्टआइ। द्रसदनाइ। होवा॥ आकाऽ३। राइतमानृभीः। होवा। पूऽ। रुहूऽ३।

ताप्रयाही। होवा। आसोयथा। नोअविता। होवा॥ वार्द्धाऽ३ः। चाइद्दोवसू। होवा॥

नाइममदः। चसोमैः। होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. २१। मा. १२) २ (का।५३०)

(३१५।१) ॥औरुक्षये द्वे। द्वयोरुरुक्षयस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

अदर्दरूत्॥ समसृजोविखानि। त्वमर्णाऽ२३४वान्। बद्धधाना२अराम्णाः। महान्ताऽ२३४मी।

द्रपर्वतंवियाद्धः॥ सृजाद्धाऽ२३४राः॥ अवयद्दान। वाऽ२३न्हाऽ३४३न्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ११। मा. ८) ३ (पै।५३१)

(३१५।२)

अदर्दरुत्समसृजाः॥ विखानि। त्वमर्णवान्बद्धधाना२अराऽ२३म्णाः।

महान्तमिन्द्रपर्वतंवियाऽ२३द्धाः॥ सृजाद्धाराऽ२ः॥ अवाऽ२यद्दान। वाऽ२। याऽ२३४औहोवा॥

हाऽ२३४५न्।

(दी. १०। प. ९। मा. ७) ४ (भे।५३२)

(३१६।१) ॥ पार्थे द्वे। द्वयोः (पृथी वैन्यः) पार्थस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

सूष्वाणासाः॥ इन्द्रस्तु। मसित्वा। सनिष्यन्तश्चित्तुविनृ। म्णवाऽ२३४जाम्। आनः।

भराओऽ२३४वा। सुवितंयस्यको। नाऽ॥ तानात्माना॥ सहिया। माऽ३४३।

तूऽ३वोऽ५ताऽ६५६ः॥

(दी. ३। प. १३। मा. ५) ५ (ङु।५३३)

(३१६।२)

ओऽ३होऽ३होइ। सूऽ२३४ष्वा। णासाः। इन्द्रस्तु। मसित्वा॥ ओऽ३होऽ३होइ। साऽ२३४नी। ष्यन्ताः। चीऽ३त्तुवि। नृम्णवाजाम्॥ ओऽ३होऽ३होइ। आऽ२३४नाः। भरा। सुवितऽ३म्। यस्यकोना॥ ओऽ३होऽ३होइ। ताऽ२३४ना। त्मना। सहिया। माऽ३४३। तूऽ३वोऽ५ताऽ६५६ः॥

(दी. २। प. २१। मा. १०) ६ (चौ।५३४)

(३१७।१) ॥ सौपर्णे द्वे। द्वयोः सुपर्णस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

जगृह्यातेदक्षिणमोहाओहाऽ६ए॥ इन्द्रहाऽ२३स्ताम्। विसूयवो। वसुपाऽ३। ताइवसू। नाम्। ओऽ३। हा। ओऽ३। हाऽ३ए॥ विद्माहित्वा। गोपतीऽ३म्। शूरगो। नाम्। ओऽ३। हा। ओऽ३। हाऽ३ए॥ अस्मभ्यंचाइ। त्राऽ३०वृष। णꣳरयिम्। दाः। ओऽ३। हा। ओऽ३। हाऽ३ए। रयाइन्दाऽ३२उवाऽ३। ऊऽ३४पा। औहोऔहोवाऽ२३४५हाउ। वा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ११। प. ३१। मा. १७) ७ (क्रे।५३५)

(३१७।२)

जगृह्मातेदक्षिणम्। औहौहोवाहाइ॥ इन्द्राहाऽ२३४स्ताम्। वसूयवो। वसुपाऽ३। ताइवसू। नौ। वाओऽ२३४वा। हाऽ३हाइ॥ विद्माहित्वा। गोपतीऽ३म्। शूरगो। नौ। वाओऽ२३४वा। हाऽ३हाइ। अस्मभ्यंचाइ। त्राऽ३०वृष। णꣳरयिम्। दौ। वाओऽ२३४वा। हाऽ३हाऽ३४। औहोवा। ईऽ२३४५॥

(दी. ९। प. २३। मा. १२) ८ (द्रा।४३६)

(३१७।३)॥ वात्सप्राणि त्रीणि। त्रयाणां वत्सप्रिस्त्रिष्टुबिन्द्रः। तृतीयं वात्सप्रम्॥

होईऽ२। होईऽ२। होईऽ२। जगृह्मातेदक्षिणम्। इन्द्रहास्ताऽ२म्। हास्ताऽ२म्। हास्ताऽ२म्॥

वसूयवोऽ२वसुप। तेवसूनाऽ२म्। सूनाऽ२म्॥ सूनाऽ२म्॥ विद्माहित्वागोपतिम्।

शूरगोनाऽ२म्। गोनाऽ२म्। गोनाऽ२म्॥ अस्मभ्यंचित्रंवृष। ण२रयाइन्दाऽ२ः। आइन्दाऽ२ः।

आइन्दाऽ२ः। होइऽ२। होइऽ२। होयाऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥ ई२३४५॥

(दी. ११। प. २४। मा. २३) ९ (घ्रि।५३७)

(३१७।४)

आऔहोइ। आऔहोइ। आऔहोऽ६वा। औऽ३होइ। औऽ३होइ। औऽ२३होवा।

जगृह्माताइ। दक्षिणाऽ३म्। इन्द्रहस्तम्। द्रहस्तम्। द्रहस्ताम्॥ वसूयवो। वसूपाऽ३।

ताइवसूनाम्। वसूनाम्। वसूनाम्॥ विद्माहित्वा। गोपतीऽ३म्। शूरगोनाम्। रगोनाम्।

रगोनाम्॥ अस्मभ्यंचाइ। त्राऽ३०वृष। ण२रयिन्दाः। रयिन्दाः। रयिन्दाः। आऔहोइ।

आऔहोइ। आऔहोऽ६वा। औऽ३होइ। औऽ३होइ। औऽ२३होवाऽ३४। औहोवा॥

ईऽ२३४५॥

(दी. १४। प. ३४। मा. ३१) १० (ध्रा।५३८)

(३१७।५) ॥ महावात्सप्रोत्तरम्॥

हाउऽ(३)। ओ। होहोवा। (द्वेत्रिः)। जगृह्माताइ। दक्षिणाऽ३म्। इन्द्रहस्तम्। द्रहस्तम्।

द्रहस्ताम्॥ वसूयवो। वसूपाऽ३। ताइवसूनाम्। वसूनाम्। वसूनाम्॥ विद्माहित्वा।

गोपातीऽ३म्। शूरगोनाम्। रगोनाम्। रगोनाम्॥ अस्मभ्यंचाइ। त्राऽ३०वृष। ण२रयिन्दाः।

रयिन्दाः। रयिन्दाः। हाउऽ(३)। ओऽ। होहोवा। ओऽ। होहोवा। ओऽ। हो। होऽ२।
वाऽ२३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १२। प. ३८। मा. २३) ११ (ज्रि।५३९)

(३१८।१) ॥ गौरीवितम्। गौरीवितस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

इन्द्रन्नाऽ२३४रो। नेमाधाऽ२३४इता। हवन्ताऽ२३इ॥ यत्पाराऽ२३४याः। यूनाजाऽ२३४ताइ।
धियास्ताऽ२३ः॥ शूरोनाऽ२३४र्षा। ताश्रावाऽ२३४साः। चकामाऽ२३इ॥ आगोमाऽ२३४ती।
व्रजाइभाऽ२३४जा। त्वन्नाऽ३२उवाऽ३। एऽ३। उपाऽ२३४५॥

(दी. नास्ति। प. १४। मा. ९) १२ (लो।५४०)

(३१९।१) ॥ वैदन्वतम्। विदन्वांस्त्रिष्टुबिन्द्रः (सूर्यो वा)॥

वयोहाहाउ॥ सूपर्णाउपसेदुराइन्द्रम्। प्रियमेधाऋषयोनाधमाऽ२३नाः।
अपध्वान्तमूर्णहिपूर्धिचाऽ२३क्षूः॥ मुमुग्धि। औऽ३होऽ३इ॥ आऽ२१। स्माऽ३न्निध।
येऽ३४३। वाऽ३बाऽ५द्धाऽ६५६न्॥

(दी. १०। प. १०। मा. ९) १३ (मो।५४१)

(३२०।१) ॥ यामम्। यमस्त्रिष्टुबिन्द्रः (यमो वा)॥

आऽ२यांम्। अयायम्। औऽ३होऽ३इ। आऽ२इ। ऊऽ२। नाकेसुपार्णमुपयात्पतन्ताम्।
पतन्तम्। औऽ३होऽ३इ। आऽ२इ। ऊऽ२॥ आऽ२याम्। अयायम्। औऽ३होऽ३इ।
आऽ२इ। ऊऽ२। हृदावेनांतोअभ्यचाक्षतत्वा। क्षतत्वौऽ३। होऽ३इ। आऽ२इ। ऊऽ२॥
आऽ२याम्। अयायम्। औऽ३होऽ३इ। आऽ२इ। ऊऽ२। हिरण्यपाक्षंवरुणास्यदूताम्।

स्यदूतम्। औऽ३होऽ३इ। आऽ२इ। ऊऽ२॥ आऽ२याम्। अयायम्। औऽ३होऽ३इ।

आऽ२इ। ऊऽ२। यमस्ययोनौश्चकुनांभुरण्यूम्। भुरण्युम्। औऽ३होऽ३इ। आऽ२इ। ऊऽ२।

आऽ२याम्। अयायम्। औऽ३होऽ३इ। आऽ२इ। ऊऽ२। वाहाऽ३१उवाऽ२३॥ एऽ३।

दिवम्। एऽ३। दिवम्। एऽ३। दिवाऽ२३४५म्।

(दी. १४। प. ५२। मा. ३९) १४ (थो।५४२)

(३२१।१) ॥ ऋतुसामनी द्वे। ऋतुस्त्रिष्टुबिन्द्रः (बृहस्पतिर्वा)॥

ब्रह्मा। ब्राऽ२३ह्मा। जज्ञानंप्रथमंपुरास्तात्। विसाइ। वाऽ२३इसी। मतःसुरुचोवेनआवः॥

सबू। साऽ२३बू। ध्नियाउपमाअस्यवाइष्ठाः॥ सताः। साऽ२३ताः।

चयोनिमसतश्चवाइवाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १४। मा. १४) १५ (घी।५४३)

(३२१।२)

हुवेऽ३हाऽ३इ। हुवेऽ३हाऽ३इ। हिषाऽ३या। ब्रह्मजज्ञा। नाऽ३०प्रथ। मुंपुरस्तात्॥

विसीमताः। सुरुचः। वेनआवाः॥ सबुध्नियाः। उपमाः। अस्यविष्ठाः॥ सतश्चयो। नीऽ३मस।

तश्चविवाः। हुवेऽ३हाऽ३इ। हुवेऽ३हाऽ३इ। हि। षाऽ२ः। आऽ२३४। औहोवा॥ एऽ३।

ऋतममृतम्। एऽ३। ऋतममृतम्। एऽ३। ऋतममृताऽ२३४५म्॥

(दी. ४। प. २७। मा. १७) १६ (थे।५४४)

(३२२।१) ॥ वारवन्तीयम्। इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

अपूर्व्याऔहोहोहाइ॥ पुरुत। मानियस्मै। महेवीरा। याऽ३तव। साइतुराया। विरप्शि।
नाइवज्रिणे। शाऽ३४३०तमानि॥ वचाꣳसिया। स्माऽ३इस्थवि। रायतक्षूः॥ स्थविरायतक्षुः।
स्थवि। राऽ३४३। याऽ३ताऽ५क्षूऽ६५६ः॥ स्थविरायतक्षूऽ२३४५ः॥

(दी. १०। प. १७। मा. ९) १७ (फो।५४५)

॥ एकोनविंशति प्रथमः, नवमः खण्डः॥९॥ दशतिः॥३॥

(३२३।१) ॥ क्षुरपविणी द्वे। इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः (इन्द्राबृहस्पती वा)॥

अवद्राऽ२३४प्साः। आꣳशूमाऽ२३४तीम्। आतीऽ३। ष्ठाऽ२३४५त्॥ ईयानाऽ२३४ःकृ।
ष्णोदाशाऽ२३४भीः। साहाऽ३। स्राऽ२३४५इः॥ आवत्ताऽ२३४मी। द्रःशाचीऽ२३४या।
धामाऽ३। ताऽ२३४५म्॥ आपस्नीऽ२३४ही। तिंनृमाऽ२३४णाः। अधाऽ२द्राऽ२३४औहोवा॥
अधाऽ३द्राऽ२३४५ः॥

(दी. २। प. १६। मा. १०) १८ (चौ।५४६)

(३२३।२)

अवद्रप्साऽ६ए॥ आꣳशुमतीमतिष्ठाऽ२३त्। इयानःकृष्णाः। दाशभिःसहस्राऽ२३इः॥
आवत्तमिन्द्राः। शाचिशाधमन्ताऽ२३म्॥ अपास्नीहितीम्। नृमणाऽ२३ः। अधाऽ५द्राः।
होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ११। मा. ११) १९ (पा।५४७)

(३२३।३) ॥ स्यौमरश्मे द्वे। स्युमरश्मिस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

अवद्रप्सोअꣳशुमतीम्। औऽ३होऽ३४इ। औहोवा॥ आतीऽ३ष्ठात्। औऽ३होऽ३४इ।

औहोवा। ईयानःकृष्णाः। औऽ३होऽ३४इ। औहोवा। दाश। भाइःसहस्रैः। औऽ३होऽ३४इ।

औहोवा॥ आवत्तमिन्द्राः। औऽ३होऽ३४इ। औहोवा। शाऽचि। यधमन्ताम्।

औऽ३होऽ३४इ। औहोवा॥ अपास्नीहितीम्। औऽ३होऽ३४इ। औहोवा।

नृमाऽ२णाऽ२३४औहोवा॥ अधाऽ३द्राऽ२३४५ः॥

(दी. २१। प. २५। मा. १८) २० (डै।५४८)

(३२३।४)

अवद्रप्सोअꣳशुमतीम्। एऽ३। औऽ३होऽ५वाऽ॥ आताऽ२३४५इष्ठाऽ६५६त्।

ईयानःकृष्णोदशभिस्सहस्रैः॥ आवत्तम्। आऽ। द्राऽ३ःशचि। याधमंताम्॥

अपस्नीहितिंनृमणाः। ओवा॥ अधद्राऽ३आऽ२३४५॥

(दी. ९। प. १२। मा. १०) २१ (थौ।५४९)

(३२४।१) ॥ द्यौताने, धृषतो मारुतस्य सामनी वा द्वे। द्युतानस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाऽ३। ओऽ३हाऽ३। ओऽ३हाऽ३। हाइ। वृत्रस्यत्वा। श्वसथात्। ईषमाणाः॥ विश्वेदेवाः।

अजहूऽ३ः। येसखायाः॥ मरुद्भिराइ। द्राऽ३सखि। यन्तेअस्तू॥ अथेमावाइ। श्वाऽ३ःपृत।

नाजयासी। हाऽ३। ओऽ३हाऽ३। ओऽ३हाऽ३। हाऽ३४। औहोवा॥ आऔऽ३होऽ२३४५॥

(दी. ८। प. २२। मा. १०) २२ (ठौ।५५०)

(३२४।२)

होयेऽ३। हयायेऽ३। हया। औहोऽ२३४वा। हाऽ। वृत्रस्यत्वा। श्वसथात्। ईषमाणाः॥

विश्वेदेवाः। अजहूऽ३ः। येसखायाः॥ मरुद्भिराइ। द्राऽ३सखि। यन्तेअस्तू॥ अथेमावाइ।

श्वाऽ३ःपृत। नाजयासी। होयेऽ३। हयायेऽ३। हया। औहोऽ२३४वा। हाऽ३४। औहोवा॥

आऔऽ३हो। आऔऽ३होऽ२३४५॥

(दी. १०। प. २५। मा. ११) २३ (मा।५५१)

(३२५।१) ॥ सोमसामनी द्वे। द्वयोः समस्त्रिष्टुबिन्द्रः (सूर्यो वा)॥

वीधूम्। दद्रादद्रा। णाऽ३२सम। नाइबहूनाम्॥ यूवा। न२सान२सा। ताऽ३०पलि।

तोजगारा॥ देवा। स्यपास्यपा। श्याऽ३कावि। यंमहित्वा॥ आद्या। ममाममा। राऽ३सहि।

याऽ३४३ः। साऽ३माऽ५नाऽ६५६॥

(दी. १। प. १७। मा. ४) २४ (खी।५५२)

(३२५।२)

ह२ऽ४। आऽ४५। ह२। ह२२३४५। विधुंदद्रा। णाऽ३२म। नाइबहूनाम्॥ युवान२सा।

ताऽ३०पलि। तोजगारा॥ देवस्यपा। श्याऽ३कावि। यंमहित्वा॥ ह२ऽ४। आऽ४५। ह२।

ह२२३४५। अद्याममा। राऽ३सहि। याऽ३४३ः। साऽ३माऽ५नाऽ६५६॥

(दी. ४। प. २१। मा. ३) २५ (ति।५५३)

(३२६।१) ॥ इन्द्रवज्रे द्वे। इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

औहोइतुवाम्। हत्यत्सप्तभ्योजायमानाऽ२३४ः॥ औहोअशा। त्रुभ्योअभवःशत्रुरिन्द्राऽ२३४॥

औहोइगूढे। द्यावापृथिवीअन्वविन्दाऽ२३४ः॥ औहोइविभू। मद्भ्योभुवनेभ्योरणंधाऽ२३४५ः॥

(दी. ११। प. ८। मा. १०) २६ (दौ।५५४)

(३२६।२)

श्वोहाइ। हत्यौवाओ॒ऽ२३४वा। सप्तभ्योजायमा। नोवाऽ३। ओवाऽ२३४५॥ अश्वोहाइ।

त्त्रुभ्यौवाओ॒ऽ२३४वा। अभवःश्चत्रुरि। द्रोवाऽ३। ओवाऽ२३४५॥ गूढोहाइ।

द्यौवाओ॒ऽ२३४वा। पृथिवीअन्ववि। दोवाऽ३। ओवाऽ२३४५॥ विभोहाइ।

मद्भ्यौवाओ॒ऽ२३४वा। भुवने। भ्योवाऽ३। ओवाऽ२३४५। रणा५०धाः। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. २३। मा. ११) २७ (गा।५५५)

(३२७।१)॥ ऋषिप्रमाणपदगणिते अर्द्धवेयः। सूर्यवर्चसो भृष्टिमतः सामनी द्वे।

भृष्टिमांस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

मेडीम्॥ नत्वावज्रिणंभृष्टिमाऽ२३०ताम्। पुरुधस्मानंवृषभꣳस्थिराऽ२३प्स्नूम्।

करोष्यर्यस्तरुषाइर्दुवाऽ२३स्यूः॥ आइन्द्रद्युक्षम्॥ वृत्राऽ२३। हाऽ२णाऽ२३४औहोवा॥

गृणीऽ३षेऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ८। मा. ८) २८ (बै।५५६)

(३२७।२)

मेडिन्नत्वा॥ वाऽ३४औहो। ज्राइ। णंभार्ष्टाइमौ। वाऽ३२३४। ताम्। पुराऽ३४औहो।

धस्मानंवृ। षभꣳस्थाइरौ। वाऽ३२३४। प्स्नूम्॥ कराऽ३४औहो। षिअर्यस्त। रुषाइर्दूवौ।

वाऽ३२३४। स्यूः। इंद्राऽ३४औहो। द्युक्षम्। वृत्राऽ२३। हाऽ२णाऽ२३४औहोवा॥

गृणीषेऽ२३४५॥

(दी. ५। प. २१। मा. १४) २९ (पी।५५७)

(३२८।१) ॥ अंकुशौ द्वौ (वसिष्ठौ)। वसिष्ठस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

प्रवाः॥ माहेमहेवृधे। भराधूऽ३वाम्। प्रचाइतसाई। प्रासूमाऽ२३४तीम्॥ कृणुध्वम्।

इहाऽ२वाऽ२३४इशाः॥ पूऽ२३र्वीः। प्रचा। राऽ२३चा। षणाइ। प्रा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥

डा॥

(दी. ३। प. १५। मा. ११) ३० (ण।५५८)

(३२८।२)

हृ॒ऽ२३४५। प्रवोमहाइमाऽ२३४हे। वृधाऽ३४३इ। भराऽ२३४त्ध्वाम्॥ हृ॒२३४५।

प्रचेतासाइप्राऽ२३४सू। मताऽ३४३इम्। कृणूऽ२३४त्ध्वाम्॥ हृ॒२३४५।

विशःपूर्वाइःप्राऽ२३४चा। रचाऽ३४३। षणाऽ२३४इप्राः॥ हृ॒ऽ२३४५। हाउहौहोवाऽ६।

हाउवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ५। प. १६। मा. १२) ३१ (प्रा।५५९)

(३२९।१) ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

शुन॒हुवेममघवानमिन्द्राम्॥ अस्मिन्भरेनृतमंवाजसाऽ२३ताउ।

शृण्वन्तमुग्रमूतयेसमाऽ२३त्सू॥ घ्न। तंवाऽ२३त्रीऽ३। होवाऽ३हा॥ णिसंजितम्।

धनाऽ२३नीऽ३। होवाऽ३हाऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ५) ३२ (कु।५६०)

(३३०।१) ॥ वैश्वदेवम्। विश्वेदेवास्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

दिवया। ओवा। औऽ३होऽ३वा। उदुब्रह्मा। णीऽ३ऐर। तश्रवस्या॥ इन्द्र२समा। येऽ३मह।
यावसिष्ठा॥ आयोविश्वा। नीऽ३श्रव। साततानाः॥ दिवया। ओवा। औऽ३होऽ३वा। उपश्रोता।
मईव। तोऽ३४३। वाऽ३चाऽ५२साऽ६५६इ॥

(दी. ७। प. ११। मा. ३) ३३ (झि।५६१)

(३३१।१) ॥ पुरीषम्। अथर्वा त्रिष्टुबिन्द्रः॥

चक्रंयदस्याप्सुवानिषत्ताम्॥ उतोतदस्मैमध्विच्चछाऽ२३द्यात्। पृथिव्यामतिषितंयदूऽ२३धाः॥
पयोगोऽ२३षू। आदधाओषधीषु। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. ८। मा. ५) ३४ (दु।५६२)

सप्तदश द्वितीयः, दशमः खण्डः॥१०॥ दशतिः॥४॥

इति ग्रामे गेय-गानेऽष्टमः प्रपाठकः॥८॥

(३३२।१) ॥ तार्क्ष्यसामनी द्वे। तार्क्ष्यास्त्रिष्टुबिन्द्रः (तार्क्ष्यो वा)॥

त्यमूषू॥ वाजि। नाऽ२३४५म्। देवजूताऽ२३४म्। सहोवानंता। रुताऽ३। र२तथानाम्।
अरिष्टनाऽ२३४इमीम्। पृतनाऽ३४३जमाशुम्॥ स्वस्त। याइ॥ तार्क्ष्यमिहाऽ३४३।
हूऽ३वाऽ५इमाऽ६५६॥

(दी. ८। प. १३। मा. ८) १ (डै।५६३)

(३३२।२)

ईयइयाऽ३हाइ। त्यमूषुवाजिनाऽ३०देऽ३वजूतम्॥ ईऽ४यइया। हाऽ४इ। सहोवानंता।
रुताऽ३। र२रथानाम्॥ ईयइयाऽ३हाइ। अरिष्टऽ३। नाइ। मीऽ३०पृत। नाजमाशूम्॥
ईऽ४यइया। हाऽ२३४५इ। स्वस्त। याइ। तार्क्ष्यमिहाऽ३४३। हूऽ३वाऽ५इमाऽ६५६॥

(दी. १०। प. १८। मा. १४) २ (बी।५६४)

(३३३।१) ॥ इन्द्रस्य तातम्। इन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

त्रातारमिन्द्रमविता। रमीऽ२३०द्राम्॥ हवेहवेसुहव२शूं। रमीऽ२३०द्राम्॥ हुवानुशक्रंपुरहू।
तमीऽ२३०द्राम्॥ इद२ह। वाइः। मघवा। वाऽ३४३इ। तूऽ३वाऽ५इन्द्राऽ६५६ः॥

(दी. ५। प. ११। मा. ९) ३ (पो।५६५)

(३३४।१) ॥ वार्त्रातुरम्। वृत्रतुरस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

यजामहोवा॥ आइन्द्रंवज्र। दक्षाऽ२३इणाम्। हरीणा२रथ्यंवि। व्रताऽ२३नाम्।
प्रश्मश्रुभिर्दोधुवत्। ऊऽ। ध्वाधाभूऽ२३४वात्॥ विसाइ। नाऽ। भिर्भयमानाऽ२३ः॥
वाऽ२३इराऽ३। धाऽ३४५सोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. १३। मा. १०) ४ (दौ।५६६)

(३३५।१) ॥ मारुतस्य धृषतः सामनी द्वे। धृषत्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

सत्रा। हणाऽ३४औहोवा॥ दाधृषींतू। म्रमिन्द्राओऽ२३४वा। महामपारंवृषभ२ंसुवज्राऽ२३म्॥

हन्ताऽ२योऽ२३४वृ॥ त्रा२ंसनि। तोऽ३४३। ताऽ३वाऽ५जाऽ६५६म्॥

दातामघानिमघवाऽ२सुराधाऽ२३४५ः॥

(दी. ११। प. १०। मा. ५) ५ (डु।५६७)

(३३५।२)

सत्राहणंदाधृषिम्। तूऽ३४३०म्रमिन्द्रम्॥ महामपारंवृषभ२ंसुवज्राऽ२३म्॥ हन्तायोऽ२३४वृ॥

त्रा२ंसनि। तोऽ३४३। ताऽ३वाऽ५जाऽ६५६म्॥ दातामघानिमघवाऽ२सुराधाऽ२३४५ः॥

(दी. ९। प. ८। मा. ५) ६ (दु।५६८)

(३३६।१) ॥ आत्रम्। अत्रिस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

योनोवनुष्यन्नभिदा। तिमाऽ३२३४र्ताः॥ उगणावामन्यमानस्तुरोऽ२३वा।

क्षिधीयुधाशवसावातमाऽ२३इन्द्रा॥ अभाइष्याऽ३मा॥ वृषामाऽ३णाऽ३ः। त्वोऽ२३ताऽ३४३ः।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. ९। मा. ६) ७ (भू।५६९)

(३३७।१) ॥ गृत्समदस्य मदौ द्वौ गार्त्समदे द्वे। गृत्समदस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउयंवृत्रेषू। क्षितयाऽ३ः। स्पर्द्धमानाः। धमानाऽ३ः। ईऽ२३४यइया॥ हाउयंयुक्तेषु। तुरयऽ३।

तोहवन्ताइ। हवन्ताऽ३इ। ईऽ२३४यइया॥ हाउय२ंशूरसा। ताऽ३उयम। पामुपज्मान्।

उपज्माऽ३न्। ईऽ२३४यइया॥ हाउयंविप्रासाः। वाऽ३जय। ताइसइन्द्राः। सइन्द्राऽ३ः।

ईऽ२३४य। इयाऽ६। हाउवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १२। प. २३। मा. २२) ८ (ज्रा।५७०)

(३३७।२)

यंयंया। हाउयंवृत्रेषू। क्षितयाऽ३ः। स्पर्द्धमानाः। धमानाः। यंयंयऽ२०याम्॥ यंयंया।

हाउयंक्तेषू। तुरयऽ३। तोहवंताइ। हवन्ते। यंयंयऽ२०याम्॥ यंयंया। हाउयश्शूरसा।

ताऽ३उयम। पामुपज्मान्। उपज्मन्। यंयंयऽ२०याम्॥ यंयंया। हाउयंविप्रासाः। वाऽ३जय।

ताइसइन्द्राः। सइन्द्रः। यंयंयऽ२०याम्। यंयंयाऽ६। हाउवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. १५। प. २७। मा. १२) ९ (फ्रा।५७१)

(३३८।१) ॥ वैश्वामित्रम्। विश्वामित्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः (इन्द्रापर्वतौ वा)॥

इन्द्राहाउ। हाहोइ। पर्वताबृहतारथाऽ२इनाऽ२उवाऽ३। ऊऽ३४पा॥ वामीर्हाउ। हाहोइ।

इषआवहतश्सुवाऽ२इराऽ२उवाऽ३। ऊऽ३४पा॥ वीतश्हाउ। हाहोइ।

हव्यान्यध्वरेषुदाऽ२इवाऽ२उवाऽ३। ऊऽ३४पा॥ वर्द्धाहाउ। हाहो।

यांगीर्भिरिडयामदाऽ२०ताऽ२उवाऽ३॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. १४। प. १६। मा. १५) १० (त्लु।५७२)

(३३९।१) ॥ सावित्राणि षड्गामानि (सवित्रम्)। षण्णां सविता त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाऽ३। हाइ। इन्द्रायगाइ। राऽ३अनि। शीतसर्गाः।१। असाउ। असाउ। इन्द्रायगाइ।

राऽ३अनि। शीतसर्गाः।२। कुवा। कुवा। इन्द्रायगाइ। राऽ३अनि। शीतसर्गाः।३। अयाम्।

अयाम्। अपःप्रैरा। याऽ३त्सग। रस्यबुध्नात्।४। अविदाऽ३त्। अविदत्। योअक्षेणाइ।

वाऽ३चक्रि। यौशचीभीः॥५॥ इहाऽ२३। ईऽ३४हा। विष्वक्तस्ता। भाऽ३पृथि। वीऽ३४३म्।

ऊऽ३ताऽ५द्याऽ६५६म्॥

(एवं षट् सामानि) (दी. ६। प. ३१। मा. २२) ११ (का।५७३)

(३४०।१) ॥ कुतीपाद वैरूपस्य साम। विरूपस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

आत्वासखायःसख्याववृत्यूः॥ तिरःपुरूचिदर्णवांजगाऽ२म्यौ। हौहोऽ३वा।

पितुर्नपातमादधीतवाऽ२इधौ। हौहोऽ३वा॥ अस्मिन्क्षयेप्रतरांदीदियाऽ२नौ। हौहोऽ३वा।

औहोऽ२॥ इहाऽ२३४५॥

(दी. ११। प. ९। मा. १२) १२ (धा।५७४)

(३४१।१) ॥ आमहीयवम्। अमहीयुस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

कोअद्ययुङ्क्तेधुरिगाऽऋतस्याऽ६ए॥ शिमीवतोभामिनोदुर्हृणाऽ२३यून्॥

आसन्नेषामप्सुवाहोमयोऽ२३भून्॥ यएषांभृत्यामृणधत्सजाइवाऽ२उवा३॥ ऊऽ३४पा॥

(दी. १५। प. ५। मा. ८) १३ (म्यै।५७५)

॥ त्रयोदश तृतीयः, एकादशः खण्डः॥११॥ दशतिः॥५॥

॥ इति त्रैष्टुबमैन्द्रम्॥

(३४२।१) ॥ शैखण्डिने द्वे। द्वयोः शिखण्ड्यनुष्टुबिन्द्रः॥

गायाऽ३१। तिब्राऽ३१२३४। गाय। त्राऽ३इणाः॥ अर्चाऽ३१। तियाऽ३१२३४। कम।

काऽ३इणाः॥ ब्रह्माऽ३१। णस्त्वाऽ३१२३४। शत। क्राऽ३ताऽ॥ उद्वाऽ३१। शमाऽ३१२३इ।

वयाऽ५इमिराइ। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १७। मा. ९) १४ (छो।५७६)

(३४२।२)

गायन्तिब्रोहाइ॥ गायात्रीऽ२३४णाः। अर्चन्त्यर्कमाऽ१र्कीऽ३णाः। अर्चन्तियोऽ२३४हा।

कमार्कीऽ२३४णाः॥ ब्रह्माणस्त्वाशताऽ१क्राऽ३तो। ब्रह्माणस्त्वोऽ२३४हाइ॥

शताक्राऽ२३४ताउ। उद्वꣳशमिवयाऽ१इमीऽ३रे। उद्वꣳशमोऽ२३४हाइ।

वयाऽ३इमाऽ५इराऽ६५६इ॥

(दी. ५। प. ११। मा. ११) १५ (पा।५७७)

(३४२।३) ॥ औद्वꣳशीयम्। विश्वेदेवानुष्टुबिन्द्रः॥

गायन्तिब्रागायत्रिणआ॥ अर्चन्त्यर्कमर्काऽ२३इणाः। ब्रह्माणस्त्वाऽ२होऽ१इ। शतक्राऽ२३ताउ।

उद्वꣳशमिवयाऽ१इमीऽ३रे॥ उद्वꣳशाऽ२३४मी॥ वायाऽ३२उवाऽ३। उप्।

माऽ२इरोऽ३५हाइ॥

(दी. ४। प. ९। मा. १०) १६ (धौ।५७८)

(३४३।१) ॥ शैखण्डिनानि त्रीणि। त्रयाणां शिखण्ड्यनुष्टुबिन्द्रः॥

इन्द्रंविश्वाः॥ आवीऽ२वृधान्। सामुद्रव्या। चासंगिराः। राथीतमाऽ३१उवाऽ२। रथाइनाऽ२म्॥

वाजानाऽ२३ꣳसात्॥ पातिंपतिम्। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ९) १७ (टो।५७९)

(३४३।२)

ओइन्द्रंविश्वाः॥ अवी। वृधान्। साऽ१मूऽ२द्राव्याऽ२। चसम्। गिराः॥ राऽ१थीऽ२तामाऽ२म्।
रथी। नाम्॥ वाजाऽ२नाऽसाऽ२त्॥ पतिंपाऽ२३तीऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १३। मा. १०) १८ (जौ।५८०)

(३४३।३)

इन्द्रंविश्वाअवीवृधन्। समूद्राऽ२३४व्या॥ चाऽ३सांगीऽ३राः। राथीतमाऽ२म्। ऊऽ२।
हाऽ२इ। ऊऽ२। रथाइनाम्॥ वाजानाऽसाऽ२। ऊऽ२। हाऽ२इ। ऊऽ२॥
पतिंपाऽ२३तीऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १५। मा. १०) १९ (मौ।५८१)

(३४३।४) ॥ आष्टादऽष्ट्रे द्वे। द्वयोरष्टादऽष्ट्रोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

इन्द्रंविश्वाअवीवृधन्। ऐयाहाइ॥ समूद्राऽ१व्याऽ२। चसांगाऽ१इराऽ२३ः। ऐयाऽ२३हाइ॥
रथाइताऽ१माऽ२म्। रथाइनाऽ२३म्। ऐयाऽ२३हाइ॥ वाजानाऽ१ऽसाऽ२त्।
पताइंपाऽ१तीऽ२३म्। ऐयाऽ२३हाऽ३४३इ॥ ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १३। मा. १६) २० (गू।५८२)

(३४३।५)

इन्द्रंविश्वाअवीवृधन्नैयादौ। होऽ६वा॥ समुद्रव्यचसम्। गाइराऽ२३ः। ऐयाऽ२३त्।
औऽ२३होवा॥ रथाइतमꣳर। थाइनाऽ२३म्। ऐयाऽ२३त्। औऽ२३होवा॥
वाजानाꣳसत्पतिम्। पातीऽ२३म्। ऐयाऽ२३त्। औऽ२३होवाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १४। प. १६। मा. १३) २१ (ति।५८३)

(३४३।६) ॥ महावैश्वामित्रे द्वे। द्वयोः विश्वामित्रोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

हयाइ। हयाऽ३। ओहाओहा। (त्रीणि त्रिः)। इन्द्रंविश्वाः। अवीवार्द्धाऽ२न्॥ समुद्रव्या।
चसंगाइराऽ२ः॥ रथीतमम्। रथाइनाऽ२म्॥ वाजानाꣳसात्। पतिंपातीऽ२म्। हयाइ।
हयाऽ३। ओहाओहा॥ (त्रीणि त्रिः)। होऽ४इडा। होऽ४इडा। होऽ२३४५इ। डा॥

(दी. ५। प. ३०। मा. २४) २२ (मी।५८४)

(३४३।७)

हयायेऽ३। हयायेऽ३। हयाऽ२३४५। हꣳऽ२३। आऽ२३४इ। द्रंविश्वाअवी। वृधाऽ३न्।
साऽ२३४। मुद्रव्यचसम्। गिराऽ३ः॥ राऽ२३४। थीतमꣳरथी। नाऽ३म्॥ वाऽ२३४।
जानाꣳसत्पतिम्। पताऽ३इम्। हयायेऽ३। हयायेऽ३। हयाऽ२३४५। हꣳ२३४५॥
होऽ४इडा। होऽ४इडा। होऽ२३४५इ। डा॥

(दी. ६। प. २४। मा. १२) २३ (घा।५८५)

(३४४।१) ॥ वासिष्ठस्य प्रियाणि चत्वारि। वसिष्ठोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

इममाऽ२३४इन्द्रा॥ सुतम्। पाऽ२इबाऽ२३४औहोवा। ज्येष्ठममाऽ२र्तियंमदम्। शुक्रा॥
स्यात्वाभिऽ३याऽ२३॥ क्षाऽ२राऽ२३४औहोवा॥ धाराऽ२ऋतस्यसादनेऽ२३४५॥

(दी. १०। प. ८। मा. ७) २४ (बे।५८६)

(३४४।२) ॥ गौतमम्। गोतमोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

इममिन्द्रसुतंपिबा॥ ज्येष्ठाममा। तियंमदाऽ२म्। शुक्रा। औहोऽ२३४वा। स्यात्वाभ्यक्षरन्॥

धारा। औहोऽ२३४वा। ऋता। औहोऽ२३४वा॥ स्यसाऽ५दनाइ। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १३। मा. ४) २५ (गी।५८७)

(३४४।३) ॥ वासिष्ठस्य प्रिये द्वे। द्वयोर्वसिष्ठोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

इममिन्द्राऽ५सुतंपिबा॥ ज्येष्ठममऽ३र्त्तायमादाऽ२म्। औऽ२। हौऽ२। हुवाइ।

औऽ३होऽ२३४वा। शुक्रस्यत्वाऽ३भायक्षाराऽ२न्। औऽ२। हौऽ२। हुवाइ।

औऽ३होऽ२३४वा॥ धाराऽ१ऋताऽ२। औऽ२। हौऽ२। हुवाइ। औऽ३होऽ२३४वा॥

स्यसादाऽ२३नाऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ८) २६ (ढै।५८८)

(३४४।४) ॥ वसिष्ठस्यप्रियम्॥

इममीऽ२३। द्रसुतंपिब। ज्येष्ठाम्॥ अमऽ३र्त्तायंमादाऽ२म्। शुक्रास्यत्वाऽ३।

भियाऽ२क्षाऽ२३४रान्॥ धाराओऽ२३४वा। आर्त्ताओऽ२३४वा॥ स्यसाऽ४दनाइ। होऽ५इ॥

डा॥

(दी. नास्ति। प. ११। मा. ७) २७ (हे।५८९)

(३४५।१) ॥ वींकानिचत्वारि, वीङ्के द्वे। द्वयोः गृत्समदोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

यदिन्द्रोहाइ॥ चित्रमइहनाऽ२३। आऽ२३४। स्तित्वादा। हाऽ३इ। तमद्राइवाऽ२३ः।
राऽ२३४। धस्तन्नोविदा। हाऽ३। वाऽ। साउ॥ उभयाहाऽ२३॥ स्तियाउवाऽ३४३।
भाऽ३४५रोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. १४। मा. ८) २८ (धे।५९०)

(३४५।२)

यदिन्द्रचित्रमौहोवा॥ हाऽ२३४ना। अस्तित्वादातमोवाऽ३। ओवा। द्राऽ२३४इवाः॥
राधस्तन्नोविदोवाऽ३। ओवा। वाऽ२३४साउ॥ उभयाहस्तियोवाऽ३। ओवाऽ३४३।
भाऽ३४५रोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ११। मा. ४) २९ (की।५९१)

(३४५।३) ॥ आकूपारं आकूपारमनादेशं वा। आकूपारोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

यदिन्द्राऽ२३चित्र। मइहाऽ२३४ना॥ अस्ताऽ२इत्वादा। तमद्राइवो। राधस्तान्नाऽ२ः।
विदद्वसाउ॥ उभयाहाऽ२३॥ स्ताऽ२३याऽ३। भाऽ३४५रोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ९। मा. ६) ३० (झू।५९२)

(३४५।४) ॥ वींकम्॥

यदिन्द्रचित्रमइ। हनाऽ३। आस्ती॥ त्वादातमद्रिवः। राधस्ताऽ२३न्नाः। वीवीऽ२। दद्वसाउ॥
उभयाऽ२३हा॥ स्तायाऽ२३। भाऽ२३राऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १२। मा. ५) ३१ (ठु।५९३)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने नवमस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(३४६।१)   ॥ तैरश्चे द्वे। द्वयोः तिरश्चयनुष्टुबिन्द्रः॥

श्रुधी॥ हावाऽ२ऽहावाऽ२म्। तिरश्चियाः। इन्द्रयाऽ२३स्वा। सपौऽ३हो। यतीऽ३या॥

सुवीर्यस्यगोमताः॥ रायास्पूऽ२३र्धी॥ महाऽऽ२३। असियाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १२। मा. ४) १ (ठी।५९४)

(३४६।२)

श्रुधीहाऽ३वंतिरश्चियाः॥ इन्द्रायस्वा। सपर्यतायेऽ३४। सुवी। रिया।

स्याऽ२३४गा। माताऽ२ः॥ रायस्पूर्द्धीऽ३। हाऽ३हाइ॥ महाऽऽ५असीऽ। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १२। मा. ५) २ (छु।५९५)

(३४७।१)   ॥ महावैश्वामित्रम्। विश्वामित्रोऽनुष्टुबिन्द्रः सूर्यो वा॥

असाविसोमइन्द्रते। शाविष्ठाऽ२३४धृ५॥ ष्णो२ऽ३आगाऽ३ही। आत्वापृणाऽ२३हाऽ३।

क्तुईऽ२०द्राऽ२३४याम्॥ रजाः। सूर्यौवाओऽ२३४वा॥ नराऽ५श्मिभीः॥ होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ८) ३ (नै।५९६)

(३४८।१)   ॥ काण्वे द्वे। द्वयोः कण्वोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

एन्द्राऽ३याहिहरिभाइः॥ उपाकण्वाऽ३। स्यासुष्टूऽ२३४तीम्। दिवोअमूऽ३।

ष्याशासाऽ२३४ताः॥ दाइवंययाऽ३१उवाऽ२३॥ दाऽ२३इवाऽ३। वाऽ३४५सोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ८। मा. ९) ४ (डो।५९७)

(३४८।२)

एन्द्रयाहिहरिभिः। उहुवाहाइ॥ उपकण्वस्यसुष्टुतिम्। उहुवाऽ२३हाइ। दिवोअमूऽ३।

ष्याशासाऽ२३४ताः॥ दाइवंययाउ। वाऽ३॥ देऽ२३४वा। वसोऽ५हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १२। मा. ९) ५ (ठो।५९८)

(३४९।१) ॥ वैश्वामित्रम्। स्विश्वामित्रोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

आत्वागाऽ३इरोरथीरिवा॥ अंस्थुः सुतेऽ३षूगिर्वाणाऽ३ः। ओऽ३४वा। ओऽ२३४वा॥

अभित्वासऽ३मानूऽ१षाताऽ३। ओऽ३४वा। ओऽ२३४वा॥ गावोवाऽ३त्साऽ३म्॥

नधोऽ२३४वा। नाऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. १०। मा. ४) ६ (ञी।५९९)

(३५०।१)॥ शुद्धाशुद्धीये द्वे (पदान्त निधनंशुद्धाशुद्धीयम्)। द्वयोः इन्द्रोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

एतोन्विन्द्रꣳस्तवामा॥ शुद्धꣳशुद्धेनसाऽ२३म्ना। शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वाऽ२३ꣳसाम्॥

शुद्धैराऽ२३शीऽ३॥ र्वाऽ२न्। ममाऽ३४औहोवा॥ तूऽ२३४५॥

(दी. १०। प. ७। मा. ३) ७ (फि।६००)

(३५०।२) ॥ ऐडँशुद्धाशुद्धीयम्॥

एतोन्विन्द्रꣳस्तवाऽ६मा॥ शुद्धꣳशुद्धे। न। साम्नाऽ२। शुद्धाइरूऽ३क्थाऽ३इः।

वावाऽ२र्ध्वाऽ२३४ꣳसाम्॥ शुद्धैराऽ२३शी॥ र्वान्ममत्तु। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥

डा॥

(दी. ४। प. ११। मा. ५) ८ (तु।६०१)

(३५१।१) ॥ रयिष्ठे द्वे। द्वयोः गोतमोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

योरयिंवोरयाहाउ॥ ताऽ२३४माः। योद्युम्नैर्द्युमवत्तमः। सोमःसुतःसआऽ२३होइ। द्रताऽ२इ॥
अस्तिस्वधापताऽ२३होयेऽ३॥ मदोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ८। मा. ७) २ (जे।६०२)

(३५१।२)

योरयिंवोरयि। तमोऽ२३४हाइ॥ योद्युम्नैर्द्युम्नव। तमोऽ२३४हाइ॥ सोमःसुतःसइ।
द्रतोऽ२३४हाइ॥ अस्तिस्वधापते। मदोऽ२३४हाऽ। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ५) १० (ज्ञु।६०३)

॥ आष्टाविंशति प्रथमः, द्वादशः खण्डः॥१२॥ दशतिः॥६॥

इति तृतीयोऽध्यायः॥३॥

(३५२।१) ॥ कौल्मबर्हिषे द्वे। द्वयोः कुल्मबर्हिरनुष्टुबिन्द्रः॥

प्रत्यस्मैपिपाहाउ॥ आइषाऽ३ताइ। वाइश्वानिवाइ। दूषेऽ३हाऽ३इ। भाऽ३रा।
आराऽ२०गमा॥ याजाऽ३हाऽ३। ग्माऽ३याइ॥ अपाऽ२३। श्वाऽ२दाऽ२३४औहोवा।
ध्वनेऽ२नराऽ२३४५ः॥

(दी. ७। प. ११। मा. ९) ११ (चो।६०४)

(३५२।२)

प्रत्यस्मैपीऽ६पीषताइ॥ वाइश्वानिवाइ। दूषेभाराऽ२। आराऽ२०गमा। यजग्मा। याऽइ॥
अपश्वादध्वनाऽ२३होइ॥ नरा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ६) १२ (कू।६०५)

(३५२।३)   ॥ नानदम्। इन्द्रोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

प्रत्यस्मैपिपी। षताऽ३इ। वाऽ२३४इ। श्वानिविदुषे। भारा॥ अरंगमायजा। ग्मयोऽ२४हाइ॥

आपश्चादा॥ घ्वनोऽ२३४वा। नाऽ५रोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. १०। मा. ४) १३ (मी।६०६)

(३५३।१)   ॥ शाकपूतम्। शाकपूतिरनुष्टुबिन्द्रः॥

आनोवयोवयःशाऽ६याम्॥ महान्तंगह्वराऽ२३४इष्ठाम्। महान्तंपूर्विनाऽ२३४इष्ठाम्॥

उग्रंवाऽ२३चाः॥ अपाऽ३वाऽ५धाऽ६५६इः॥

(दी. ६। प. ५। मा. ८) १४ (डै।६०७)

(३५४।१)   ॥ कौल्मलबर्हिषे द्वे। द्वयोः कुल्मलबर्हिरनुष्टुबिन्द्रः॥

आत्वारथंयथोहोवा॥ तायाइसूऽ२३४म्ना। यवर्त्तयामसितुविकूर्मीम्। आऽ२३४र्ती। षहम्॥

आइन्द्राऽ३२शावी॥ ष्ठसत्पाऽ२३तीऽ३४३म्॥ ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ६) १५ (धू।६०८)

(३५४।२)

आत्वारथंयथा। तयाइ। आत्वारथाम्॥ यथोताया। औहोऽ२३४वा। ईऽ२३४हा।

सुम्नायवर्त्तऽ३यामसि। औहोऽ३१इ। औऽ२होऽ२३४वा॥ तुविकूर्मिमृऽ३ताइषहम्।

औहोऽ३१इ। औऽ२होऽ२३४वा॥ इन्द्र२शविष्ठऽ३सात्पतिम्। औहोऽ३१इ।

औऽ२होऽ२३४५वाऽ६५६॥ ईऽ२३४हा॥

(दी. ११। प. १६। मा. ८) १६ (कै।६०९)

(३५५।१) ॥ मधुश्चिन्निधनम्। प्रजापतिरनुष्टुबिन्द्रः॥

सपूर्व्योमहोनाऽ६मे॥ वेनःक्रतुऽ३भाइरानजेऽ३। हाऽ३हा। औऽ३होऽ३वा। आइहीऽ२।

यस्यद्वाराऽ३मानुःपिताऽ३। हाऽ३हा। औऽ३होऽ३वा। आइहीऽ२। दाइवेषुधाऽ३।

हाऽ३हाइ। औऽ३होऽ३वा। आइहीऽ२॥ यआऽ२३। नाऽ२जाऽ२३४औहोवा॥

मधुश्चुताऽ२३४५ः॥

(दी. १०। प. १६। मा. ९) १७ (पो।६१०)

(३५६।१) ॥ उषसस्साम। उषानुष्टुबिन्द्रः मरुतो वा॥

यदीवहन्त्याशवः। य। द्येयादी॥ ओइवहन्ताआऽ१शावाऽ२ः। ओइभ्राजमानारथाइषूऽ१वाऽ२।

ओइपिबन्तोमदिरांमाऽ१धूऽ२॥ ओइ। तत्रश्रवाꣳसिकोवाऽ३ओऽ२३४वा॥ ण्वाऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. ९। मा. १०) १८ (झौ।६११)

(३४७।१) ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

त्वमुवाअ। प्रहा। हाऽ२३४णाम्॥ गृणीषेशवसः। पताइम्। आइन्द्राऽ३०वाइश्वा।

सहाऽ३ꣳहोयेऽ३४। नारमोऽ३इ॥ शचिष्ठाऽ२३४०वी॥ श्ववाऽ३होऽ२३४। वा।

दाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. १२। मा. ९) १९ (ठो।६१२)

(३४८।१) ॥ (दधिक्रम्) दधिक्राव्णम्। अग्निरनुष्टुबिन्द्रः दधिक्रा वा॥

ओहाइ। दधिक्राव्णोअकारिषम्। ओहाइ॥ ओहाइ। जिष्णोरश्वस्यवाजिनाऽ२३होइ।

सुरभिनोमुखाकाऽ२३रात्॥ प्रनाऽ२३होइ। आयूऽ२३हो॥ षिताराऽ२३इषाऽ३४३त्।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. ११। मा. ११) २० (ता।६१३)

(३५९।१) ॥ मारुतम्। मरुतोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

पुरांभिन्दुर्युवाकवीः॥ अमितौजाअजायाऽ२३ता। आइन्द्रोविश्वाऽ३। स्याकर्माऽ२३४णाः॥

धर्त्ता। वाज्रौवाओऽ२३४वा॥ पुरूऽ५ष्टुताः। होऽ४इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ७) २१ (घे।६१४)

॥ एकादश द्वितीयः, प्रथमः खण्डः॥१॥ दशतिः॥७॥

(३६०।१) ॥ वामदेव्यम्। वामदेवोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

प्रप्रवास्त्रिष्टुभमिषमोहाओहाऽ६ए॥ वन्दद्वीरा। यआइन्दवेऽ२॥ ओऽ३हा। ओऽ३हाऽ३ए।

धियावोमेधसाऽ१ताऽ३याइ। ओऽ३हा। ओऽ३हाऽ३ए॥ पुरांधीऽ३याऽ३॥ विवोऽ२३४वा।

साऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ११। मा. ८) २२ (कै।६१५)

(३६१।१) ॥ काश्यपम्। कश्यपोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

कश्यपस्यसुवर्विदाऽ६ए॥ यावाहुस्स। युजावाऽ१इतीऽ२३४। ययोर्विश्वमपि। व्रताऽ३म्॥

यज्ञान्धीऽ३राः॥ निचाऽ२३। आऽ२याऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ५) २३ (ध्वु।६१६)

(३६२।१) ॥ प्रेयमेधम्। प्रियमेधानुष्टुबिन्द्रः॥

अर्चतप्रार्चतानाऽ२३४राः॥ प्रियमेधाऽ३सोऽ३अर्चत। अर्चन्तुपूऽ२३त्राऽ३काउत॥

पुरमिद्धाऽ२३॥ ष्णुवाऽ३र्चाऽ५ताऽ६५६॥

(दी. ३। प. ५। मा. ३) २४ (णि।६१७)

(३६३।१) ॥ बार्हदुक्थम्। बृहदुक्थोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

उक्थमिन्द्रा॥ यशꣳसाऽ२३याम्। वार्द्धनंपु। रुनिःषाऽ२३इधाइ। शक्रोयाऽ३थाऽ३।

सूतेषुऽ२३४नाः॥ रारणाऽ२३त्सा॥ खियाइषूऽ२३चाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १। प. १०। मा. ६) २५ (ङू।६१८)

(३६४।१)॥ अग्नेर्वैश्वानरस्य सामनी द्वे। द्वयोरग्निरनुष्टुबग्निरिन्द्रो वैश्वानरौ वा॥

विश्वानरा॥ स्यवाऽ२स्पातीऽ२म्। आनानत। स्यशावाऽ१साऽ२ः। एवैश्वा। चर्षणाऽ२इनाम्॥

ऊऽ२ती॥ हुवाइर। थाऽ२३४नोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ९। मा. ६) २६ (धू।६१९)

(३६४।२)

विश्वाऽ३४। नरस्यवौ। होस्पातीम्॥ अनानताऽ३। स्याशावाऽ२३४साः। एवैश्वा।

चर्षणाऽ२३४इनाम्॥ ऊतीहुवाइर॥ थाऽ२३४नोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) २७ (घू।६२०)

(३६५।१) ॥ शाकपूते द्वे। द्वयोः शाकपूतिरनुष्टुबिन्द्रः॥

सघायस्ताऽ३इ। ए। दिवोनराऽ३ः। ए॥ धियामर्त्ताऽ३। ए। स्यश्चमताऽ३ः। ए॥
ऊताइसबृऽ३। ए। हतोदिवाऽ३ः। ए॥ द्विषोअ२हाऽ३ः। ए। नातरति। इडाऽ२३भाऽ३४३।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १८। मा. ८) २८ (गै।६२१)

(३६५।२)

सघायस्ताइ॥ दिवोनराः। धियामार्त्ताऽ२। स्यश्चमताः। ऊतीसाबृऽ२। हतोदिवाः॥
द्विषोआ२हाऽ२ः॥ नातरति। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ११। मा. ७) २९ (चे।६२२)

(६३३।१) ॥ वरुणान्याः साम। वरुणान्यनुष्टुबिन्द्रः॥

विभोष्टइन्द्रराधाऽ६साः॥ विभ्वीराऽ२तिःशतक्रतो। शताऽ२क्राता॥ आथानोविश्वचर्षणे।
श्वचाऽ२र्षाणाइ॥ द्युम्न२सुदत्रम२हय। त्रमाऽ३२हाऽ५याऽ६५६॥

(दी. ८। प. ७। मा. ४) ३० (ठी।६२३)

(३६७।१) ॥ उषसम्, औषसम् वा। उषानुष्टुबिन्द्रः उषा वा॥

वयश्चाऽ३इत्तेपतत्रिणाः॥ द्विपाच्चतुष्पादर्जुनायेऽ३। ऊषःप्रारान्। ऋतू२रनू॥ दिवोआन्तेऽ२३॥
भाऽ२३याऽ३ः। पाऽ३४५रोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ७। मा. ६) ३१ (फू।६२४)

(३६८।१) ॥ देवानांरुचिः रोचनम् वा। रुचिरनुष्टुबिन्द्रः विश्वेदेवा वा॥

अमीयेदेवास्थाना॥ मध्यआरोचनेदिवाः॥ कद्धऋताम्॥ कदमार्त्ताऽ२म्॥

काप्रत्नावआहूऽ२३तीऽ३४३ः। ओऽ२३४५ इ॥ डा॥

(दी. १०। प. ७। मा. ८) ३२ (फे।६२५)

(३६९।१) ॥ ऋक् साम्नोः सामनी द्वे। द्वयोः ऋगनुष्टुबिन्द्रः॥

ऋचःसामयजा॥ महाइ। याम्यांकर्माणिकृण्वाऽ२३ताइ। वितेसदसिराजाऽ२३ताः॥

यज्ञंदाऽ२३इवे॥ षूवक्षतः। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५ इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) ३३ (घू।६२६)

(३६९।२) ॥ साम्नः साम। सामानुष्टुबिन्द्रः॥

ऋचः२साऽ३मायजामहाइ॥ याम्यांकर्मा। णिकार्ण्वाऽ१ताऽ२इ। ण्वाताऽ२इ। वाइतेसद।

सिराजाऽ१ताऽ२ः। जाताऽ२ः। यज्ञांदाऽ१इवेऽ२॥ षूवक्षतः। इडाऽ२३भाऽ३४३।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १२। मा. ९) ३४ (थो।६२७)

॥ त्रयोदशतृतीयः, द्वितीयः खण्डः॥२॥ दशतिः॥८॥

॥ इत्यानुष्टुभमैन्द्रम्॥

(३७०।१) ॥ त्रैशोकम्। त्रिशोको जगतीन्द्रः॥

विश्वोहाइ॥ पृतनाअभिभू। तरन्नराः। सजूस्ततक्षुराइन्द्रंजजनूः। चराजासोऽ२३४हाइ।

क्रत्वोहोइ। वरौहोइ। स्थेमन्याऽ२मूऽ२३४रीम्॥ उतोहाइ॥ उग्रमोऽ२३४जी।

ष्ठंताराऽ२३४साम्। होइ। तराऽ३४। स्विनम्। ओऽ६वा॥ ओइदीऽ२३४वा॥

(दी. ७। प. १६। मा. १४) ३५ (ची।६२८)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने नवमः प्रपाठकः॥९॥

(३७१।१) ॥ शैखण्डिने द्वे। द्वयोः शिखण्डी जगतीन्द्रः॥

श्रत्तेऽ३होइ। दधाऽ३होऽ२३४। मिप्रथमायम्। न्यवाइन्यवाइ॥ अहाऽ३नूहोइ।

यद्वाऽ३होऽ२३४। स्यन्नर्यविवेः। अपाअपाः॥ उभेऽ३होइ। यत्त्वाऽ३होऽ२३४।

रोदसीधावताम्। अनूअनू॥ भ्यसाऽ३ह्वोइ। तेशूऽ३होऽ२३४। ष्मात्पृथिवीचिद। द्रिवोद्रिवाः।

द्रिवआ। औहोवाऽ६। हाउवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ११। प. २०। मा. १४) १ (ङ्री।६२९)

(३७१।२)

श्रत्ताऽ३१इ। दधाऽ३१२३४। मिप्रथमायम। न्यवाइन्यवाइ॥ अहाऽ३१न्। यद्वाऽ३१२३४।

स्युन्नर्यविवेः। अपाअपाः॥ उभाऽ३१इ। यत्वाऽ३१२३४। रोदसीधावताम्। अनूअनू॥

भ्यसाऽ३१त्। तेशूऽ३१२३४। ष्मात्पृथिवीचिद। द्रिवोद्रिवाः। द्रिवए। हियाऽ६हा। होऽ५इ॥

डा॥

(दी. ९। प. २०। मा. १४) २ (नी।६३०)

(३७१।३) ॥ अत्रेर्विवर्तौ द्वौ। द्वयोरत्रिर्जगतीन्द्रः॥

अयोऽ२३४वा। अयायोऽ२३४वा। श्रात्ताइ। दाऽ२३४धा। मिप्रथमायम्। न्यवाइन्यवाइ॥

अयोऽ२३४वा। अयायोऽ२३४वा। आहान्। याऽ२३४द्द। स्युन्नर्यविवेः। अपाअपाः॥

अयोऽ२३४वा। अयायोऽ२३४वा। ऊभाइ। याऽ२३४त्वा। रोदसीधावताम्। अनूअनू॥

अयोऽ२३४वा। अयायोऽ२३४वा। भ्यासात्। ताऽ२३४इशु। ष्मात्पृथिवीचिद। द्रिवोद्रिवोः।

द्रिवआ। औहोवाऽ६। हाउवा॥ द्रिवऔहोऽ३ह्२ऽ१॥

(दी. १३। प. २८। मा. १६) ३ (डू।६३१)

(३७१।४)

इयोऽ२३४वा। इयायोऽ२३४वा। श्रात्ताइ। दाऽ२३४धा। मिप्रथमायम्। न्यवाइन्यवाइ॥

इयोऽ२३४वा। इयायोऽ२३४वा। आहान्। याऽ२३४द्दा। स्युन्नर्यविवेः। अपाअपाः॥

इयोऽ२३४वा। इयायोऽ२३४वा। ऊभाइ। याऽ२३४ब्वा। रोदसीधावताम्। अनूअनू॥

इयोऽ२३४वा। इयायोऽ२३४वा। भ्यासात्। ताऽ२३४इशु। ष्मात्पृथिवीचिद। द्रिवोद्रिवाः।

द्रिवआ। औहोवाऽ६। हाउवा॥ द्रिवइहोऽ३ह्२ऽ१॥

(दी. १२। प. २८। मा. १६) ४ (जू।६३२)

(३७१।५) ॥ महासावेतसे द्वे। द्वयोः सवेतसो जगतीन्द्रः॥

आऽ२३याऽ३म्। श्रात्ताइ। दाऽ२३४धा। मिप्रथमायम। न्यवाइन्यवाइ॥ आऽ२३याऽ३म्।

आहान्। यऽ२३४द्दा। स्युन्नर्यविवेः। अपाअपाः॥ आऽ२३याऽ३म्। ऊभाइ। याऽ२३४ब्वा।

रोदसीधावताम्। अनूअनू॥ आऽ२३याऽ३म्। भ्यासात्। ताऽ२३४इशु। ष्मात्पृथिवीचिद।

द्रिवोद्रिवोः। द्रिवआ। औहोवाऽ६। हाउवा॥ द्रिवोऽ३द्रिवाऽ२३४५ः॥

(दी. १२। प. २४। मा. २०) ५ (झो।६३३)

(३७१।६)

अयंयाऽ३ः। श्रात्ताइ। दधाऽ३१२३४। मिप्रथमायम। न्यवाइन्यवाइ॥ अयंयाऽ३ः। आहान्।

यद्वाऽ३१२३४। स्युन्नर्यंविवेः। अपाअपाः॥ अयंयाऽ३ः। ऊभाइ। यत्वाऽ३१२३४।

रोदसीधावताम्। अनूअनू॥ अयंयाऽ३ः। भ्यासात्। ताइशूऽ३१२३४। ष्मात्पृथिवीचिद।

द्रिवोद्रिवाः। द्रिवआ। औहोवाऽ६। हाउवा॥ द्रिवऽ३ईऽ२३४५॥

(दी. १०। प. २४। मा. २०) ६ (भौ।६३४)

(३७१।७) ॥ महोशैरीषे द्वे। द्वयोः शिरीषो जगतीन्द्रः॥

औहोहोहाइ। श्रात्ताइ॥ दाऽ२३४धा। मीप्राथाऽ२३४मा। यमन्याऽ२३४वे।

यमन्याऽ२३४वाइ। अहाऽ३१२न्स्थियाऽ२३४द्वा। स्युन्नारीऽ२३४याम्। विवेराऽ२३४पो।

विवेराऽ२३४पाः॥ उभाऽ३१२इयाऽ२३४त्वा। रोदसीऽ२३४धा। वतामाऽ२३४नू।

वतामाऽ२३४नू॥ भ्यसाऽ३१२त्ताऽ२३४इशू। ष्मात्पृथीऽ२३४वी। चिदद्रिऽ२३४वः।

चिदद्राऽ२३४इवाः। द्रिवआ। औहोवाऽ६। हाउवा॥ एऽ३। द्रिवइहाऽ२३४५॥

(दी. ३। प. २३। मा. १४) ७ (डी।६३५)

(३७१।८)

श्रत्ताऔहोहोहाइ॥ दधाऽ३१२३४। मिप्रथमायम। न्यवाइन्यावाइ। अहाऔहोहोहाइ।

यद्वाऽ३१२३४। स्युन्नर्यंविवेः। अपाअपाः॥ उभाऔहोहोहाइ। यत्वाऽ३१२३४।

रोदसीधावताम्। अनूअनू॥ भ्यसाऔहोहोहाइ। ताइशूऽ३१२३४। ष्मात्पृथिवीचिद।

द्रिवोद्रिवाः। द्रिवआ। औहोवाऽ६। हाउवा॥ द्रिवएऽ३द्रिवाऽ२३४५ः॥

(दी. १८। प. २०। मा. २१) ८ (ण।६३६)

(३७२।१)   ॥ इन्द्रस्य प्रियाणि त्रीणि। इन्द्रो जगतीन्द्रः॥

समाहाउ॥ आइतविश्वाओजसाऽ३। पतिमाऽ३इ। दिवाऽ२३४ः। होहोइ।

यआइकाऽ१ईऽ२त्। भूरतिथिः। जनाऽ२३नाऽ३४म्। हाहोइ। सपूर्वियाऽ२ः। नूतनमा।

जिगाऽ२३इषाऽ३४न्। हाहोइ॥ तंवार्त्ताऽ१नीऽ२ः॥ अनुवावृते। आयेऽ३। कयाउवाऽ३॥

वृधेऽ१।

(दी. १०। प. १८। मा. १९) ९ (बो।६३७)

(३७२।२)

समेतविश्वाओजसापतिम्। एपातीम्॥ दिवया। हौऽ२। हौऽ३होऽ३वा। ईऽ३या।

यआइकाऽ१ईऽ२त्। भूरतिथिः। जनाऽ२३नाम्। हौऽ२। हौऽ३होऽ३वा। ईऽ३या।

सपूर्वियाऽ२ः। नूतनमा। जिगाऽ२३इषान्। हौऽ२। हौऽ३होऽ३वा। ईऽ३या॥

तंवार्त्ताऽ१नीऽ२ः॥ अनुवावृते। आयेऽ३। कयाउवाऽ३॥ महेऽ१॥

(दी. १०। प. २३। मा. १४) १० (बी।६३८)

(३७२।३)

अमेतविश्वाओजसापतिम्। एपातीम्॥ दाइवाऽ१याऽ२। औऽ२। हौऽ३होऽ३वा। ओमोवा।

यआइकाऽ१ईऽ२त्। भूरतिथिः। जनाऽ२३नाम्। औऽ२। हौऽ३होऽ३वा। ओमोवा।

सपूर्वाऽ१याऽ२ः। नूतनमा। जिगाऽ२३इषान्। औऽ२। हौऽ३होऽ३वा। ओमोवा॥

तंवार्ताऽ१नीऽ२ः॥ अनुवावृते। आयेऽ३। कयाउवाऽ३॥ धर्मणेऽ२३४५॥

(दी. ९। प. २३। मा. १५) ११ (दु।६३९)

(३७३।१) ॥ वैरूपाणि त्रीणि। इन्द्रो जगतीन्द्रः॥

इमेतआ॥ द्रतेवयंपुरूऽ२ष्टूताऽ२। येत्वारभ्यचरामसिप्रभूऽ२वासाऽ२उ।

नहित्वदन्योगिर्वणोगिराऽ२ःसाधाऽ२त्॥ क्षोणीरिवप्रतितद्धर्यनोऽ२वाचाऽ२ः॥ वचाओऽ२३४वा।

होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. ८। मा. ६) १२ (दू।६४०)

(३७३।२)

इमेतआ॥ द्रतेवयंपुरु। ष्टुता। याऽ१इत्वाऽ२राभ्याऽ२। चारामसिप्रभू। वसाउ।

नाऽ१हीऽ२त्वादाऽ२न्। योगिर्वणोगिरः। सघात्॥ क्षोऽ२णीऽ२राइवाऽ२॥ प्रतितद्ध।

र्यनोवाऽ२३चाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १४। मा. ९) १३ (घो।६४१)

(३७३।३)

इमेताऽ२३इन्द्रतेवयंपुरुष्टुतोवा॥ येत्वाराभ्याऽ२। चरामसीऽ२३प्राऽ३भूवसाउ।

नहित्वादाऽ२न्। योगिर्वणोऽ२३गीऽ३रःसघत्॥ क्षोणीरिवाऽ२॥ प्रतितद्धाऽ२३। र्यनोऽ५वचाः।

होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. १०। मा. ६) १४ (नू।६४२)

(३७४।१) ॥ बार्हदुक्थम्। बृहदुक्थो जगतीन्द्रः॥

चर्षणीधृतꣳहाउ॥ मघवानमुक्थाऽ२३याम्। इन्द्रंगिरोबृहतीरभ्यनूषाऽ२३ता। वावृधानाऽ२म्।

पुरुहूताऽ२३म्। सुवाऽ२र्क्ताऽ२३४इभीः॥ अमाऽ२र्तियाम्॥ जरमाणाऽ२३म्।

दाऽ२३इवेऽ३। दाऽ३४५इवोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. १०। मा. ११) १५ (म।६४३)

(३७५।१) ॥ त्रासदस्यवे द्वे। द्वयोस्त्रसदस्युर्जगतीन्द्रः॥

अच्छावइन्द्रंमतयःसुवर्युवाऽ६ए॥ सध्रीचीर्विश्वाश्चतीरनूऽ२षाताऽ२।

परिष्वजन्तजनयोयथाऽ२पातीऽ२म्॥ मर्यन्नाऽ२३शू। ध्युम्मं। घवाऽ२। नमूऽ३४औहोवा॥

तयाऽ३ईऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ८। मा. ६) १६ (डू।६४४)

(३७५।२) ॥ अच्छत्रासदस्यवम्॥

आऽ२३४। च्छावइन्द्रंम। तयाः। सूवर्युवाऽ२३ः॥ साऽ२३४। ध्रीचीर्विश्वाउ। श्चतीः।

आनूषताऽ२३॥ पाऽ२३४। रिष्वजन्तज। नयाः। याथापताऽ२३इम्॥ माऽ२३४।

र्यन्नशुन्ध्युम्म। घवा। नामूतयाऽ३१उ॥ वाऽ२३४५॥

(दी. ११। प. १७। मा. ९) १७ (खो।६४५)

(३७६।१) ॥ जागतꣳसोमसाम। सोमो जगतीन्द्रः॥

अभित्याऽ३०मेषंपुरुहू॥ तमृग्मायाऽ२म्। इन्द्रंगीर्भाइः। मदतावस्वऽ३आर्णवम्। ओऽ३४।

हाहोइ। यस्यद्यावोनविचरन्तिऽ३मानुषम्। ओऽ३४। हाहोइ॥ भुजेमꣳहिष्ठमभिविप्रमर्चत।

दुराऽ२। तिनाऽ३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १०। प. १३। मा. ९) १८ (ब्रो।६४६)

(३७७।१) ॥ सौभरम्। सुभरिर्जगतीन्द्रः॥

त्यꣳसूऽ३मेषंमहया॥ सुवर्वाइदाऽ२म्। शतंयस्यसुभुवस्साकऽ३माइराऽ१ताऽ२इ।
अत्यंनवाजꣳहवनस्यऽ३दाꣳराऽ१थाऽ२म्॥ आइद्रंववृत्याम॥ वसायेऽ३।
सूऽ२वृऽ२३४औहोवा॥ क्तीऽ२३४भीः॥

(दी. ६। प. ८। मा. ८) १९ (गै।६४७)

(३७८।१) ॥ जागतं वरुणसामनी द्वे। द्वयोर्वरुणो जगतीद्यावापृथिव्यौ॥

घृतव। ताऽ३इभुवनानाम्। अभिश्रिया॥ उर्वीपृथ्वीमधुदुघेसुपेशसाऽ२३होइ।
द्यावापृथिवीवरुणा। स्याधर्मणाऽ२३। होइ॥ विष्काभाऽ२३इते॥ आजरे। भूरि। रायेऽ३।
तसाउवाऽ३॥ एऽ३। इन्दुस्समुद्रमुर्वियाविभातीऽ२३४५॥

(दी. १४। प. १४। मा. ६) २० (धू।६४८)

(३७८।२)

घृतवतीभुवनानाम्। भाऽ५इश्रिया॥ उर्वीपृथ्वीमधुदुघेसुपेशाऽ२सा। द्यावापृथिवीवरुणा।
स्याधर्मणा॥ वाइष्कभिताइ॥ अजरेऽ२भूरि। रायेऽ३। तसाउवाऽ३॥
इन्दुस्समुद्रमुर्वियाविभातीऽ२३४५॥

(दी. १५। प. १०। मा. ४) २१ (मी।६४९)

(३७९।१) ॥ श्येनम् इन्द्रो जगतीन्द्रः॥

उभेयदिन्द्ररोदसाइ॥ आऽ२३पा। प्राथौषाऽ३१उवाऽ२३। इवआ। महान्तन्त्वामाहाइनाम्॥

संम्रौऽ३हो॥ जंचर्षणाऽ३१उवायेऽ३। नाऽ३मा। देवीजनित्रियाजीऽ१जानाऽ२त्। भद्रौऽ३हो॥

जानित्रियजाऽ३१उवाऽ२३॥ एऽ३। जनदाऽ३२॥

(दी. ६। प. १३। मा. ९) २२ (गो।६५०)

(३८०।१) ॥ वैरूपम्। विरूपो जागतीन्द्रो मरुत्वान्॥

प्रमंदाऽ२३४इने॥ पितुमदाऽ३र्चाऽ३तावचः। यःकाऽ३ओऽ२३४वा।

ष्णगर्भानिरहन्नृजिश्वनाऽ३। अवस्याऽ२३४वाः। वृषणंवा। ज्रादक्षाऽ२३४इणाम्।

मारौवाओऽ२३४वा॥ त्वन्तꣳसख्यायहुवाऽ५इमहाउ॥ वा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ९) २३ (णो।६५१)

॥ चतुर्विंशति चतुर्थः, तृतीयः खण्डः॥३॥ दशतिः॥९॥

॥ इत्यैन्द्राख्ये तृतीयेगाने अनुष्टुबाख्यम्॥

॥ षष्ठं तन्त्रं संपूर्णम्॥

॥ इति जागतम्॥

(३८१।१) ॥ क्रोशम्। इन्द्र उष्णिगिन्द्रः॥

इन्द्रा॥ सुतेषुसोमे। षु। होइऽ२। हो। वाहोइ। क्रतुंपुनीषउक्थियाम्।

विदाऽइवाऽ१र्द्धाऽ२३॥ स्याऽ३दाक्षाऽ३स्या॥ महाऽ२३ꣳहिषाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १२। मा. ७) २४ (फे।६५२)

(३८१।२) ॥ अनुक्रोशम्। इन्द्र उष्णिगिन्द्रः॥

इन्द्राऽ३होइ। हवेऽ३होइ॥ सुतेषुसोमेषुक्रतुम्पुनीषउक्थियाम्॥ विदाइवाऽ१र्द्धाऽ२।
स्यदक्षस्या। माऽ३हा२हि॥ षाऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. ७। मा. ६) २५ (फू।६५३)

(३८१।३) ॥ कौत्सम् (क्रौञ्चम्)। कुत्स उष्णिगिन्द्रः॥

इन्द्रसुतेषुसोमेषू॥ क्रतूऽ२०पुनाइ। षउक्थियाम्। विदेवार्द्धाऽ२। स्यदक्षस्या॥
महा२हाइषाऽ२ः॥ महाऽ२३२हिषाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ७) २६ (धे।६५४)

(३८२।१) ॥ दैवोदासे द्वे। द्वयोः दिवोदास उष्णिगिन्द्रः॥

हाउतमूवभी॥ प्रगायता। हाउ। पुरुहूऽ२३४ताम्। पुरुष्टुताम्। हाउ॥ इन्द्रंगाऽ२३४इर्भीः॥
तवाइषाऽ२३माऽ३४। हाउ। विवाऽ३साऽ५ताऽ६५६॥ दीऽ२३४वी॥

(दी. ६। प. ११। मा. ९) २७ (को।६५५)

(३८२।२)

ताऽ४मूवभी। हाइ। प्रगायताऽ६ए॥ पुरुहूऽ३ताम्। पुरुष्टूऽ३ताऽ३म्। पूरूऽ२ष्टूऽ२३४ताम्।
इन्द्रांगीऽ३र्भाइः। तवाइषाऽ३मा। विवासाऽ३ताऽ३। विवाऽ२साऽ२३४ता। आइन्द्राऽ३४म्।
हीर्भाऽ३इः। तविषम्। आऽ॥ विवाऽ२३हाऽ३॥ साताओऽ२३४वा॥ ऊऽ२३४५॥

(दी. ३। प. १७। मा. १४) २८ (ठीं।६५६)

(३८२।३) ॥ प्रहितः संयोजने द्वे। ओकोनिधनं वा द्वयोः प्रहितिरुष्णिगिन्द्रः॥

तमूऽ३अभिप्रगायता॥ पुरू। हूतंपुरूऽ२ष्टूताऽ२म्। इन्द्राऽ२०गाइर्भीऽ२ः। तविषाऽ२३४मा॥

विवाऽ२३॥ साऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ ओऽ२३४काः॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) २९ (दू।६५७)

(३८२।४)

तमूऽ३अभिप्रगायतेदाम्॥ पुरू। हूतंपुरूऽ२ष्टूताऽ२म्। आइन्द्रंगीर्भिस्तविषमा।

विवासाऽ१ताऽ२। आइन्द्रंगाऽ३४५इ। भाऽ२३४५इः। तवाइषाऽ२३माऽ३॥

वाऽ२इवाऽ२३४औहोवा॥ सतएऽ२३४५॥

(दी. ७। प. १०। मा. १२) ३० (जा।३५८)

(३८३।१) ॥ हारिवर्णानि चत्वारि। चतुर्णां हरिवर्ण उष्णिगिन्द्रः॥

तंतेऽ५मदम्। गृणीऽ५मसि॥ वृषा। णंपृक्षुसासाऽ२हाइम्। उलोका। कृत्नुमद्राइ॥

वोहाऽ२३रीऽ३॥ श्राऽ२३याऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ६) ३१ (णू।६५९)

(३८३।२)

ता४०ते। होइ। मदंगृणीमसीऽ६ए॥ वृषाहोऽ२। णंपृक्षूसाऽ१साहीऽ२म्।

उलोककृत्नुमद्रिवोहाऽ१रीऽ२॥ श्रियाम्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ५) ३२ (णु।६६०)

(३८३।३)

तंतेमदंगृणीमसीऽ६ए॥ वृषाऔऽ३होऽ३४। णंपृक्षुसासहीम्। उलाऔऽ३होऽ३४।

ककृत्नुमद्रिवाः। हरोऽ२३४वा॥ श्राऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ७। मा. ६) ३३ (ठू।६६१)

(३८३।४)

तंतेमदाऽ५०गृणीमसाइ॥ वार्षणंपृ। क्षुसासाऽ३हीऽ३म्। होवाऽ३हाइ॥ उलोकाऽ३कृऽ३।

होवाऽ३हा॥ त्नुमाऽ२३। द्राऽ२इवाऽ२३४औहोवा॥ हरिश्रियाऽ२३४५म्।

(दी. ४। प. ९। मा. ६) ३४ (धू।६६२)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने दशमस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(३८४।१) ॥ त्रैतानि चत्वारि। चतुर्णां त्रित उष्णिगिन्द्रः॥

यत्सोममिन्द्रविष्णावी॥ यद्वाघत्रितआप्तियाइ॥ यद्वामरुत्सुमऽ३०दासोऽ२३४हाइ॥

साऽ२माऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। दुभीऽ२३४५ः।

(दी. ६। प. ६। मा. ५) १ (कु।६६३)

(३८४।२)

यत्सोममाऽ५इन्द्रविष्णवाइ॥ यद्वाघात्रितआप्ताऽ२याइ॥ यद्वामाऽ२रुत्सुमा॥ दासायेऽ३।

साऽ२माऽ२३४औहोवा॥ दूऽ२३४भीः॥

(दी. ६। प. ६। मा. ६) २ (कू।६६४)

(३८४।३)

हाओहायत्सोममा॥ द्राऽ२वाऽ२३४औहोवा। ष्णाऽ२३४वी। यद्वाऽ२घत्रितआऽ२प्तिये।

यद्वामरुत्सुमाऽ२३हो। दसाऽ२इ॥ समाऽ२३होयेऽ३॥ दुबिरोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. ९। मा. ५) ३ (भु।६६५)

(३८४।४)

औहोऽ३१इ। औऽ२होऽ२३४वा। यत्सोममीऽ३०द्राऽ३विष्णवाइ॥ औहोऽ३१इ।

औऽ२होऽ२३४वा। यद्वाघत्रीऽ३ताऽ३आप्तियाइ॥ औहोऽ३१इ। औऽ२होऽ२३४वा।

यद्वामरूऽ३त्सूऽ३मंदसाइ॥ औहोऽ३१इ। औऽ२होऽ२३४५वाऽ६५६॥ समिन्दुभीऽ२३४५ः।

(दी. ८। प. १२। मा. ९) ४ (ठो।६६६)

(३८५।१) ॥ सुराधसम्। सुराधस उष्णिगिन्द्रः॥

एदुमधो। मदाऽ३२इन्ताऽ२३४राम्। सिश्चाध्वर्योन्धसाऽ२ः। धाऽ२३४साः॥

एवाहिवीरस्तवताऽ२इ। वाऽ२३४ताइ॥ सदाऽ३वाऽ५र्द्धाऽ६५६ः॥

(दी. ७। प. ७। मा. ९) ५ (छो।६६७)

(३८५।२) ॥ प्रराधसम्। प्राराधस उष्णिगिन्द्रः॥

एदुमधौहोऽ५र्मदिन्तराम्॥ सिश्चाहोऽ२इ। अध्वर्योअंधासाऽ२ः॥ आइवाऽ१हिवीऽ२॥

राऽ२स्तवताइ। सदावृ। धाऽ। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ७) ६ (णे।६६८)

(३८६।१) ॥ विकल्पमारुतम्। मरुत उष्णिगिन्द्रः॥

एऽ५०दुमि। द्राऽ३याऽ३सिश्वता॥ पिबाऽ२तिसोम्यंमधु। प्राधाऽ२३९सी॥

चोदयताइमाऽ३ही॥ ब्ना। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ९। मा. २) ७ (धा।६६९)

(३८७।१) ॥ वैश्वमनसम्। विश्वमना उष्णिगिन्द्रः॥

एतोन्विन्द्र९स्तवाऽ६मा॥ साखायस्तोऽ२। मियाऽ३४५म्। नरमाकृष्टीर्योविश्वाअभि॥ आऽ।

स्तियाये॥ काईऽ२दाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४५॥

(दी. ९। प. ८। मा. ४) ८ (र्दी।६७०)

(३८८।१) ॥ सौमित्राणि त्रीणि। त्रयाणां सुमित्र उष्णिगिन्द्रः॥

इन्द्रायसा॥ मागायत। वाइप्राऽ१याबृऽ२। होतेबृहत्॥ ब्राह्मकृतेऽ२॥ विपाऽ२३ः।

चाऽ२इताऽ२३४औहोवा॥ पनस्यवेऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ८। मा. ५) ९ (बु।६७१)

(३८८।२)

इन्द्राऽ३४। यसाम। गायाऽ६ता॥ वाइप्रायबृऽ२। हताऽ३४५इ। बृऽ२३४हात्।

ब्राह्मकृतेऽ२विपश्चितेऽ२॥ ओयेऽ३। पाऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ स्याऽ२३४वे॥

(दी. ७। प. १०। मा. ४) १० (त्री।६७२)

(३८८।३)

औहौहोइ। औऽ३होऽ३इ। ओऽ३२३४५वाऽ६५६। इन्द्राऽ२यसाभगायत॥
विप्राऽ२यबृहतेबृहत्॥ ब्रह्मकृतेऽ२विपश्चितेऽ२॥ औहौहोइ। औऽ३होऽ३इ।
ओऽ३२३४५वाऽ६५६॥ एऽ३। पनस्यवेऽ२३४५॥

(दी. ११। प. ११। मा. ५) ११ (कु।६७३)

(३८९।१) ॥ त्रैककुभानि त्रीणि। त्रिककुबुष्णिग्वस्त्रीशानेन्द्रः॥

यएकइदिहाहाउ॥ विदयताइ। वसुमाऽ२३र्त्ता। यदाशुषाइ॥ ईशानोऽ२३आ॥
प्रातिष्कुताऽ३१उवाऽ२३। ईऽ२३४०द्राः। अंगा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ९) १२ (को।६७४)

(३८९।२)

याऽ२३४ए। काऽ२३४ईत्॥ वीदायाऽ२३४ताइ। वासुमर्त्ताऽ२३हाऽ३। यादाशूऽ२३४षाइ।
आईशानोअ। प्रताऽ२३हाइ॥ ष्कूऽ२३४ताः। आइन्द्रोअ। गाऽ२। याऽ२३४औहोवा।
ईऽ२३४०द्राः॥

(दी. ५। प. १२। मा. १३) १३ (फि।६७५)

(३८९।३)

यएकइद्विदायाऽ६ताइ॥ वासुमर्त्तायाऽ३दा। हिम्। शूऽ२३४षाइ। आइशानोअप्रतिष्कुतः।
आइशा। नोअप्रताइ॥ ष्कूऽ२३४ताः॥ आइन्द्रोअ। गाऽ२। याऽ२३४औहोवा॥
ईऽ२३४०द्राः॥

(दी. ९। प. १२। मा. १६) १४ (थू।६७६)

(३९०।१)   ॥ औक्ष्णोरन्ध्राणिनियनानि त्रीणि। त्रयाणामुक्ष्णोरंध्रोष्णिगिन्द्रः॥

सखायआहाउ॥ शिषाऽ३महेहाउ। ब्रह्माऽ३इन्द्राहाउ। यवज्रिणाइ। स्तूषऊषूऽ३हाइ।

वोनृत्तमाऽ२३हा॥ यधाऽ२३॥ ष्णाऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ९) १५ (ध्वो।६७७)

(३९०।२)

सखायआशिषम। हाइ। ब्रह्मेन्द्रायवज्रिणोवा॥ आइतीऽ३वाऽ३। होवाऽ३हाऽ३। हाइ।

स्तुषऊषूऽ२३४। वोहोहाइ॥ नार्त्ताऽ३माऽ३। होवाऽ३हाऽ३। हा॥ यधाऽ२३॥

ष्णाऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ८। प. १४। मा. ७) १६ (द्रे।६७८)

(३९०।३)

साऽ४खायः। आशिषा। माऽ३हाइ। ब्रह्मेन्द्रायवज्रिणो। हाऽ॥ स्तुषऊषुवोऽ३नार्त्तामा।

याऽ२३४धृ। हाऽ३हाइ। वोनार्त्तामा। याऽ२३४धृ। हाऽ३हा॥ ष्णवाऽ३इ। औऽ३हो।

औहोवा॥ ष्णवाऽ३इ। औऽ३हो। औहोवाऽ३४। औहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. १४। प. १९। मा. ७) १७ (ध्ले।६७९)

॥ अष्टाविंशति प्रथमः। चतुर्थः खण्डः॥ दशतिः॥१०॥

॥ इति द्वितीयोऽर्धः, चतुर्थः प्रपाठकश्च समाप्तः॥

(३९१।१)   ॥ प्रयस्वम्, प्रयस्वद्वा। प्रजापतिरुष्णिगिन्द्रः॥

हाउगृणाइ॥ तदाऽ३इन्द्राताइ। श्नवाऽ२३१२३ः। उपाऽ३मान्दे। वतातयाइ।

यद्ध२ंसाऽ२३इवा। त्रमोऽ३जासा॥ शाची॥ पते। औऽ२३होवाऽ३४। औहोवा॥

द्युऽ२३४भीः॥

(दी. ५। प. १२। मा. ८) १८ (फे।६८०)

(३९१।२) ॥ आक्षारम्। प्रजापतिरुष्णिगिन्द्रः॥

गृणे। तदाऽ३४। औहोऽ५इन्द्रतेश्नवाः। उपमांदेवताताऽ२३याऽ३४इ॥ यद्धाऽ३४२ंसिवा॥

त्रमोजसा। शाऽ३चीप॥ ताऽ२३४५इ॥

(दी. ८। प. ८। मा. ४) १९ (डी।६८१)

(३९१।३) ॥ प्रयस्वम्, रजापतिरुष्णिगिन्द्रः॥

गृणेतदौहोऽ५इन्द्रतेश्नवाः॥ उपमान्देऽ२वताऽ२तये। उपमांदे। वताताऽ२३याइ॥ यद्ध२ंसिवृ।

त्रमोऽ२३जसाउ। वाऽ३। शाऽ२३४ची। पाऽ२३४ताइ। हाऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. ११। मा. ६) २० (पू।६८२)

(३९२।१) ॥ दैवोदासानि चत्वारि। चतुर्णां दिवोदास उष्णिगिन्द्रः॥

यस्याऽ३१। त्यच्छाऽ३१२३४म्। बरम्। माऽ३दाइ॥ दिवोऽ३१। दासाऽ३१२३४। यर।

धाऽ३यान्॥ अयाऽ३१म्। ससोऽ३१२३४। मइ। द्राऽ३ताइ॥ सुताऽ३१ः। पिबाऽ३।

ओऽ२३४वा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १। प. १६। मा. ८) २१ (क्रै।६८३)

(३९२।२)

यस्यत्यच्छाऽ५०बरंमदाइ॥ दिवोदासायरंधयन्॥ आयꣳससोऽ३॥ मइ। द्रताऽ३इ।
सूऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ पीऽ२३४बा॥

(दी. ५। प. ७। मा. ५) २२ (फु।६८४)

(३९२।३)

यस्यत्याऽ३च्छाऽ०बरमदाइ॥ दिवोऽ२दासायरंधयन्॥ आयꣳससोऽ३। मइ। द्रताऽ३इ।
सुतआऽ२३ः। पाऽ२इबाऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४ती॥

(दी. ५। प. ८। मा. ८) २३ (बै।६८५)

(३९२।४)

याऽ४स्यत्यत्। होइ। शंबरंमदाऽ६ए॥ दिवोदासायरंधयन्नयाꣳसाऽ३सो। मइ। द्रताऽ३४।
औहोवा। सूऽ२३४ताः॥ पिबोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ६) २४ (मू।६८६)

(३९३।१) ॥ सांवर्ते द्वे। द्वयोरिन्द्र उष्णिगिन्द्रः॥

एन्द्रनाः॥ गधिप्राऽ२३या। सात्राजित्। अगोहाऽ२३याऽ३४॥ गिराऽ३४इर्नवाइ॥
श्वताःपार्थूऽ३ः। पाऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ दीऽ२३४वाः॥

(दी. ५। प. ८। मा. ७) २५ (बे।६८७)

(३९३।२)

एन्द्रनोऽ५गधिप्राया॥ सात्राजित्। अगोहायौ। होऽ३वा॥ गिराइर्नवौ। होऽ३वा। श्वताऽ२३ः।
पाऽ२र्थूऽ२३४औहोवा॥ पतिर्दिवाऽ१ः॥

(दी. ६। प. ९। मा. ५) २६ (घु।६८८)

(३९४।१) ॥ यामम्, आक्षारं वा। यम उष्णिगिन्द्रः॥

४ ५ १ २ ४ ५ २ १ २ १ २ र १ २ ४ ५ २ १
यइन्द्रसो॥ मापाऽ३तामाः। मदाश्चवाइ। ४चेतताइ॥ याइनाऽ३हा१सी॥ नियत्रिणाम्।

२ ४र ५ ३ १ १ १
ताऽ३मीम॥ हाऽ२३४५इ॥

(दी. २। प. ८। मा. ७) २७ (जे।६८९)

(३९५।१) ॥ दीर्घायुष्यम्। प्रजापतिरुष्णिगिन्द्र आदित्यो वा॥

४ ३र ४ ५र ३ २ ^ ३ ५ २ ^ ३ ५ ३र १ १ १
तुचेतना। यताऽ३त्सूऽ२३४नाः॥ द्राघीयाऽ२३४यूः। जीवासाऽ२इ॥ आदीऽ२त्यासाऽ२ः॥

१ २ १ ^ ३ २ ४ ३ १ १ १
समहसाऽ२ः। कृणोऽ३ताऽ५। नाऽ२३४५॥

(दी. ३। प. ८। मा. ५) २८ (ड्डु।६९०)

(३०६।१) ॥ शुन्ध्युस्साम। भरद्वाज उष्णिगिन्द्रः॥

४र ५र ४ ५ र ४ १ २ १ २ १ २ १ २
वेत्थाहिनिर्ऋतीनाम्॥ वाज्रहस्तपरिवृ। जाम्॥ अहर। हाः॥ शुन्ध्युःपरि।

१ २ ४ ॥
पदाऽ३माऽ५इवाऽ६५६॥

(दी. ३। प. ७। मा. ४) २९ (ठी।६९१)

(३९७।१) ॥ अपामीवम्। आदित्य उष्णिगादित्यः॥

४ र ५र र ४ १ र २१ २ १ १
अपामीवामपा॥ स्रिधाम्। अपसेधतदुर्माऽ२३तीम्। आदीऽ२त्यासाऽ२ः॥

१र र २ ५ ४ ॥ ५
युयोतनानओवाऽ३ओऽ२३४वा॥ हाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ६। मा. ६) ३० (कू।६९२)

(३९८।१) ॥ वैराजे द्वे। द्वयोरिन्द्रो विराडिन्द्रः॥

पिबा॥ सोममिन्द्रमदन्तुत्वाऽ२। यंतेसुषावहरिया॥ श्वाऽ२३द्रीः। सोऽ२३तूः॥

बाहूभीऽ३याऽ३म्। सुयाऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। नार्वाऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ९। मा. ४) ३१ (झी।६९३)

(३९८।२) ॥ सहोदैर्घतमसम्॥

हाउपिबा॥ सोममिन्द्र। माऽ। दतुत्वाऽ३। दतुत्वा। यन्तेसुषावहरिया। श्वाऽ१द्रीऽ२ः।

श्वाद्रीऽ२ः॥ सोतुर्बाहुभ्याम्। सुयताऽ३ः। सुयताऽ३ः॥ नाऽ२र्वाऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १३। मा. ७) ३२ (ग्रे।३९४)

॥ इति पञ्चदश द्वितीयः, पञ्चमः खण्डः॥५॥ दशतिः॥१॥

॥ इत्यौष्णिहम्॥

(३९९।१) ॥ अभ्रातृव्यं। इन्द्रः ककुबिन्द्रः॥

अभ्रातृव्योऽ५अनातुवाम्॥ अनापिराइन्द्राऽ२। जनुषाऽ२॥ सनाऽ३४५त्॥ आऽ२३४सी।

युधेदाऽ२पित्वमिच्छसे॥ युधाऽ१॥

(दी. ६। प. ७। मा. ४) ३३ (खी।३९५)

(४००।१) ॥ शार्करे द्वे। द्वयोः शर्करः ककुबिन्द्रः॥

योनोहाउ॥ इदाम्। इदंपुराऽ२३हाउ। प्रवा। प्रवस्यआऽ२३हाइ। निना।

निनायतमुवाऽ२३हाउ॥ स्तुषाइ। सखायआऽ२३हाइ॥ द्रमूताऽ२३याऽ३४३इ।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १२। मा. ११) ३४ (था।६९६)

(४००।२)

योनाऽ३इदमिदंपुरा॥ योनइदमिदाऽ१०पूऽ३रा। प्रवस्यआनिना। यत्ताऽ३मूऽ३वस्तुषाइ॥

निना। यताऽ३मूऽ३वस्तुषाइ॥ सखायाऽ२ः। आऽ२३इ। द्रमूऽ३ताऽ५याऽ६५६इ॥

(दी. ३। प. ९। मा. ८) ३५ (ढै।६९७)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने दशमः प्रपाठकः॥१०॥

(४०१।१) ॥ बृहत्कम्। बृहत्ककुम्मरुतः॥

आगन्ता॥ मारिषण्याऽ२३ता। प्रास्थावानोमापस्थात। सामान्यावाऽ२ः॥ दृढाचीऽ३द्याऽ३॥

मयोवा। ष्णाऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. ७। मा. २) १ (छा।६९८)

(४०२।१) ॥ सौयवसानि त्रीणि। त्रयाणां सूयवसः ककुबिन्द्रः॥

आयाही॥ अयमिन्दवे। श्वपाऽ२३ताइ। गोपतउ। वीराऽ१पाताऽ२३४इ॥ सोमाऽ३म्॥

सोमाऽ२३। पाऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ पीऽ२३४बा॥

(दी. ७। प. ९। मा. ५) २ (झु।६९९)

(४०२।२)

आयाहिया॥ याऽ३माइंदाऽ३वे। आश्वपतेगोपते। ऊ। वेराऽ२३हाऽ३इ। पाऽ३ताइ॥

सोऽ२३४मᳲहाइ॥ सोऽ। म। पतेऽ३हाऽ३इ। पाऽ२३४इबा॥ एहियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १४। मा. ७) ३ (घे।७००)

(४०२।३)

आयाह्यमिन्दाऽ६वाइ॥ अश्वापाऽ१ताऽ२इ। गोपाताऊऽ३। वेराऽ२पाऽ२३४ताइ॥

सोमᳲसोमाऽ३१॥ पताइ। पिबाऽ३ओऽ२३४वा॥ ऊऽ२३४पा। उपा॥

(दी. ३। प. ९। मा. ६) ४ (ढू।७०१)

(४०३।१) ॥ धेनुषां। मरुतः ककुबिन्द्रः॥

ब्रहाहस्वीत्॥ यूजावयम्। प्रातिसाऽ२। तंवृषभ। ब्रूवीऽ१माहाऽ२३४इ॥ स२स्थाऽ३इ॥

जानस्यगोऽ२३४वा॥ माऽ२३४ताः॥

(दी. २। प. ८। मा. ५) ५ (जु।७०२)

(४०४।१) ॥ संवेशीयम्। मरुतः कुकुभ्मरुतः॥

गावश्चिद्घासाऽ६मन्यवाः॥ सजात्येनमरुतस्सबन्धवाऽ२३होइ॥ रिहतेकाकूऽ३भो॥ मिथा।

औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ७। मा. ३) ६ (फि।७०३)

(४०५।१) ॥ आभरे द्वे। द्वयोरिन्द्रः ककुबिन्द्रः॥

ब्रन्नई॥ द्रआभाऽ२३रा। ओजोनृम्णम्। शातक्रताऽ३उ। वीचर्षाऽ२३४णाइ॥

आवीरंपाऽ३हाऽ३॥ ताऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ साऽ२३४हाम्॥

(दी. ५। प. ८। मा. ७) ७ (बे।७०४)

(४०५।२)

ब्रन्नइन्द्रा॥ आभाऽ२३रा। ओजोनृम्णम्। शातक्रताऽ३उ। वीचर्षाऽ२३४णाइ॥

आवीराऽ२३०पा॥ तनासहाम्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ६) ८ (मू।७०५)

(४०६।१) ॥ ऐषिराणि त्रीणि। त्रयाणां वायुः ककुबिन्द्रः॥

अधाहिया॥ द्रगिर्वाऽ२३णाः। उपत्वाका। मईमाऽ२३हाइ। ससृग्माऽ२३हाइ॥ ऊदेऽ२॥

वग्माऽ२३०ताः। उदाऽ२३भाइः। इडाऽ५भीः। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ११। मा. ९) ९ (तो।७०६)

(४०६।२)

अधाहीन्द्रगिर्वाऽ६णाः॥ ऊपत्वाका। माईऽ१माहाऽ२इ। सासृग्माहाऽ२इ॥

ऊदेऽ१वाग्माऽ२३॥ तओवा। दाऽ५भोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ७। मा. ६) १० (थू।७०७)

(४०६।३)

अधाहीन्द्रगिर्वणाऽ६ए॥ उपत्वाका। माईऽ१माहाऽ३इ। सासृग्माऽ२३४हाइ॥

ऊदौऽ३होऽ३। वाऽ३हाऽ३॥ ग्माऽ२। तऊऽ३४औहोवा॥ दभीऽ३रेऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) ११ (घू।७०८)

(४०७।१) ॥ सीदन्तीये द्वे। द्वयोः प्रजापतिः ककुबिन्द्रः॥

साऽ३४इ। दन्तस्तेव। योयाऽ६था॥ गोश्राइतेम। धोमदिराइ। वाऽ३इवक्ष। णाऽ२३४५इ॥

अभित्वामाइन्द्राऽ३नोऽ३॥ नूऽ३४५॥ माऽ२३४५ः॥

(दी. ६। प. १०। मा. ७) १२ (ङे।७०९)

(४०७।२)

सीदन्तस्तेवयः। यथाऽ३। गोऽ२३४। श्रीतेमधोम। दिराइ॥ विवाऽ३। हाऽ३।

क्षाऽ२३४णाइ॥ अभीऽ३। होऽ३इ। त्वाऽ२३४मी॥ द्रनोऽ३। नूऽ२३४माः। उहुवाऽ६हाउ॥

वा॥

(दी. ५। प. १५। मा. ६) १३ (मू।७१०)

(४०८।१)   ॥ सौभरे द्वे (पक्थम्)। द्वयोः सुभरिः ककुबिन्द्रः॥

वयमुत्वामपूर्विया॥ स्थूरन्नकच्चिद्भरन्तआवस्यावाऽ२३४ः॥ वज्रिन्। चित्राऽ३म्॥ हाऽ२३वाऽ३। माऽ३४५होऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ६। मा. ५) १४ (टु।७११)

(४०८।२)   ॥ सौभरम्॥

वयमुत्वामपूर्व्यस्थूरन्नकच्चिद्भरन्तः। ओवा॥ हाऽ३हाइ। अवस्यावाऽ२३४५ः॥ हाऽ२हाइ। वज्रिन्चित्राऽ२३४५म्॥ हाऽ३हाइ। हवाऽ३। माऽ२३४हाइ॥ उहुवाऽ६हाउ॥ वा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ८) १५ (टै।७१२)

अष्टादश तृतीयः, षष्ठः खण्डः॥६॥ दशतिः॥२॥

॥ इति काकुभम्॥

(४०९।१)   ॥ यामम्। यमः पंक्तिरिन्द्रः॥

स्वादोरित्थाविषू। वताऽ३ः। माऽ२३४। धोःपिबन्तिगौ। रियाः॥ याइन्द्रेण। सयावाऽ२३रीः। वृष्णामद। तिशोभाऽ२३था॥ वस्वाइराऽ१नूऽ२॥ स्वाराजियम्। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १२। प. १४। मा. ७) १६ (झे।७१३)

(४१०।१)   ॥ गृत्समदस्य मदौ द्वौ। द्वयोः गृत्समदः पंक्तिरिन्द्रः॥

इत्थाहिसो॥ मइन्माऽ२३दाः। ब्रह्मचका। रवर्द्धाऽ२३नाम्। शविष्ठव। ज्रिन्नोजाऽ२३सा। पृथिव्यानिश्शशाअहिम्॥ अर्चानाऽ१नूऽ२॥ स्वरौहोऽ२। जियमोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ११। मा. ६) १७ (पू।७१४)

(४१०।२)

इत्थाहिसोऽ५मइन्मदाः॥ ब्रह्मचका। रवर्द्धाऽ२३नाम्। शाविष्ठाऽ२३४वा। ञिन्नोजाऽ२३४सा।
पृथिव्यानिःशशाअहिम्॥ अर्चाऽ३न्होई। अनूऽ२३हो॥ स्वाराजियम्। इडाऽ२३भाऽ३४३।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १२। मा. ८) १८ (फे।७१५)

(४११।१) ॥ आभीके द्वे। द्वयोरभीकः पंक्तिरिन्द्रः॥

इन्द्रोमदायवाऽ३। वार्द्धाइ॥ शवसेवृत्रहाऽ३। नृभीः। तमिन्महत्सुवाऽ३। जाइषू॥
ऊतिमर्भेहवाऽ३। माहाइ॥ सावा। जाइषुप्रनोऽ२३४वा। वाऽ५इषोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ११। मा. ७) १९ (पे।७१६)

(४११।२)

इन्द्रोमदाऽ५यवावृधाइ॥ शवसेवृ। त्रहानृभीऽ३४ः। ताम्। इन्माहाऽ२३४त्सुवाऽ६। हाउ।
जाइषू। ऊतिमर्भेहवाऽ१। माऽ३हाइ॥ सावा॥ जाइषुप्रनोऽ२३४वा। वाऽ५इषोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. १२। मा. ९) २० (फो।७१७)

(४११।३) ॥ आभीशवे द्वे। द्वयोरभीशुः पंक्तिरिन्द्रः॥

इन्द्रोमदाऽ५यवावृधाइ॥ शवसेवृ। त्रहाऽ२नृभिः। आऔऽ३हो। औहोवाऽ२३४५।
ह॰२३४५। तमिन्मह। त्सुवाऽ२जिषु। आऔऽ३हो। औहोवाऽ२३४५। ह॰२३४५।

ऊतिमर्भे। हवाऽ२महे। आऔऽ३हो। औहोवाऽ२३४५। ह्२३४५॥ सवाजेषूप्राऽ३नोऽ३॥

वाऽ३४५इषोऽ६हाइ॥

(दी. ११। प. १८। मा. ७) १२ (गे।७१८)

(४११।४)

इन्द्रोमदायवावृधेशवसेवृ॥ त्रहानृऽ१भीऽ२ः। तामिन्महृ। त्सूआऽ१जिषूऽ३।

ऊतीमाऽ२३४र्भाइ। हवाऽ२माहाइ॥ सवाजेषूप्राऽ३नोऽ३॥ वाऽ३४५षोऽ६हाइ ॥

(दी. ७। प. ८। मा. ६) २२ (जू।७१९)

(४११।४) ॥ बार्हद्गिराणि त्रीणि। त्रयाणां बृहद्गिरिः पंक्तिरिन्द्रः॥

इन्द्रोऽ३१२३४। मदा॥ यवावृधेशवाऽ२साऽ२३४इवृ। त्रहाऽ३। औहोऽ३वा। आऽ३।

औहोऽ२३४वा। नृभाइः। तमिन्महत्स्वाजिषूतिमाऽ२३र्भाइ। हवाऽ३। औहोऽ३वा। आऽ३।

औहोऽ२३४वा। महाइ॥ सवाजेषुप्रनाऽ३। औहोऽ३वा। आऽ३। औहोऽ२३४वा॥

वाऽ५इषोऽ६हाइ॥

(दी. ९। प. १९। मा. ७) २३ (धे।७२०)

(४११।६)

इन्द्रोऽ३४। मदाय। वावाऽ६र्द्धाइ॥ शवसेवृ। त्रहानृभीऽ३ः। हाउहौ। होवा। तामिन्महृ।

त्सूआऽ१जिषूऽ३। हाउहौ। होवा। ऊतिमर्भे। हवामाहेऽ३। हाउहौ। होवा॥

सवाजेषूप्राऽ३नोऽ३॥ वाऽ३४५इषोऽ६हाइ॥

(दी. १५। प. १७। मा. ८) २४ (फे।७२१)

(४११।७)

ओहाइ। इन्द्रोऽ३४। मदाय। वावाऽ६र्द्धाइ॥ शवसेवृ। त्रहानृभीऽ३ः। आउहौ। होवा।

तामिन्मह। त्सूआऽ१जिषूऽ३। आउहौ। होवा। ऊतिमर्भाइ। हवौ। होऽ३वा। माहाऽ२इ॥

सवाजेषूप्राऽ३नो॥ विषात्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १५। प. २१। मा. १०) २५ (पौ।७२२)

(४१२।१) ॥ स्वाराज्यम्। इन्द्रः पंक्तिरिन्द्रः॥

इन्द्रतुभ्यमिदद्रिवाऽ६ए॥ आनुत्तंवज्रिन्वीरियम्॥ यद्धात्याऽ१म्माऽ२। याइनंमृगम्।

तवात्याऽ१न्माऽ२। यायावधीः॥ अर्चानाऽ१नूऽ२॥ स्वाराजियम्। इडाऽ२३भाऽ३४३।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ११। मा. ७) २६ (ते।७२३)

(४१३।१) ॥ संवेशीयम्, धृष्णुसाम। कश्यपः पंक्तिरिन्द्रः॥

प्राइहीऽ२। अभीहिधृष्णुहाऔऽ३हो॥ नाताऽ२इ। वज्रोनियꣳसताऔऽ३हो। आइन्द्राऽ२।

नृम्णꣳहितेशवाऔऽ३हो॥ हानाऽ२ः। वृत्रंजयाअपाऔऽ३हो॥ आर्चाऽ२नानूऽ२। स्वाराजियम्।

इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १३। मा. ११) २७ (बा।७२४)

(४१४।१) ॥ संवेशीयम्। मरुतः पंक्तिरिन्द्रः॥

यदुदीराऽ५तआजयाः॥ धृष्णवेऽ२धी। यताइधाऽ१नाऽ२म्। युंक्ष्वामदच्युताऽ३। हारी।

क२हनःकंवसाऽ३उ। दाधाः॥ अस्मा२आऽ२३इन्द्रा॥ वसौदाऽ२३धाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥

डा॥

(दी. ७। प. ११। मा. १०) २८ (चौ।७२५)

(४१५।१) ॥ यामे द्वे। यमः पंक्तिरिन्द्रः, चित्रा वा। (पितरो वा पूर्वस्य)॥

अक्षन्नमीमद। तहीऽ३। आऽ२३४। वप्रियाअधू। षता॥ अस्तोषतस्वभानवः।

विप्रानाऽ२३वी। ष्ठायामती॥ योजानूऽ३वाऽ३इ॥ द्राऽ२ताऽ२३४औहोवा॥

हाऽ२३४री॥

(दी. ११। प. ११। मा. ४) २९ (की।७२६)

(४१६।१) ॥ यामम्। यमः पंक्तिरिन्द्रः॥

उपोषुश्रृणुहीगिरः। एऽ३। औऽ३होऽ५वा॥ माद्यवन्मा। तथाआऽ१इवाऽ२३४।

कदाऽ३४नस्सू। नार्त्तावतः। करइद। थायाऽ१साईऽ२३४त्॥ योजाऽ३४नुवाऽ३इ॥

द्राऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ हाऽ२३४री॥

(दी. ७। प. १२। मा. ९) ३० (छो।७२७)

(४१७।१) ॥ त्रैतानि त्रीणि। त्रितः पंक्तिरिन्द्रो विश्वेदेवाः॥

चन्द्रमाआउवा। प्सुवान्ताराउवा। सुपर्णोधाउवा॥ वतेदिवि। नवोहिराउवा। ण्यनाइमायाउवा।

पदंविन्दाउवा। तिविद्युताः॥ वित्तम्माआउवा। स्यरोदाऽ२३साऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १२। मा. १३) ३१ (फि।७२८)

(४१७।२)

चन्द्रमाआ॥ प्सूऽ३आन्ताऽ३रा। सूपर्णोधाव। ताऽ२३इ। दिवियां।

नवोऽ२हिरण्यनेमयःपदंविन्दे। तिविद्यूतो॥अ२३४हाइ॥ वित्तश्होइ। मआऽ२३हो॥

स्यरोदाऽ२३साऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. ८) ३२ (खै।७२९)

(४१७।३)

चन्द्रमाऽ३आप्सुवन्तरा॥ सूपर्णोधा। वताइदाऽ१इवीऽ२। नवोऽ२हिरण्यनेमयःपदंविन्दे।

तिविद्यूताऽ२३ः॥ वित्तश्होइ। मआऽ२३हो॥ स्यरोदाऽ२३साऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ८) ३३ (मै।७३०)

(४१७।४)

चन्द्रमाअप्सुवा॥ तरा। सुपर्णोधावतेदाऽ२३इवी। नवाऽ२३होइ। हिरण्यनेमयःपदंविन्दे।

तिविद्यूताऽ२३ः॥ वित्तश्होइ। मआऽ२३हो॥ स्यरोऽ२३। दाऽ२साऽ२३४औहोवा॥

ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ७। प. ११। मा. ७) ३४ (च्ले।७३१)

(४१७।५)

चन्द्रौहोमाअप्सुवन्तरा। ओऽ६वा॥ सुपर्णोधावतेदाइवायेऽ३। होवाऽ३होऽ२इ।

हुवाऽ२३४५इ। नवोहाइरण्यनाइमायाऽ२३ः। होवाऽ३होऽ२इ। हुवाऽ२३४५इ॥

पदंविन्दन्तिवाइद्यूताऽ२३ः। होवाऽ३होऽ२इ। हुवाऽ२३४५इ॥ वित्तम्मेअस्यरोदासायेऽ३।

होवाऽ३होऽ२इ। हुवाऽ३ओऽ५वाऽ६५६॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. १०। प. १५। मा. १६) ३५ (म्लू।७३२)

(४१८।१) ॥ लौशम्। लुशः पंक्तिरश्विनौ॥

प्राऽ२३४। तिप्रियतमम्। राथाम्॥ वार्षणंव। सुवाहाऽ२३नाम्। स्तोतावाऽ३माऽ३।

श्विनाऽ२वाऽ२३४र्षीऽ३ः। स्तोमाइभीऽ३र्भूऽ३। षातिप्राऽ२३४ती॥ माध्वाइमाऽ३माऽ३॥

श्रूऽ२३ताऽ३म्। हाऽ३४५वोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. १२। मा. ८) ३६ (थै।७३३)

एकविंशति चतुर्थः, सप्तमः खण्डः॥७॥ दशतिः॥४॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने एकादशस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(४१९।१) ॥ संजये द्वे। द्वयोरिन्द्रः पंक्तिरग्निः॥

आऽ२३४। तेअग्नइधी॥ माहाइ॥ द्युमन्तंदेवऽ३। आऽ२३। जरमा। यद्धास्याऽ३ताऽ३इ।

पानीऽ२याऽ२३४सी। समिद्दीऽ२दय। ताऽ२३इ। द्यविया॥ इषाꣳस्तोऽ३तृऽ३॥

भ्याऽ२३आऽ३। भाऽ३४५रोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. १४। मा. ७) १ (धे।७३४)

(४१९।२)

आतेअग्नइधी। माऽ३हाइ। द्युमन्ताऽ३०देवअजरम्॥ यद्धस्यातेपनीयसी।

समिद्दीदयताइ। हिम्ऽ३स्थिहिम्। द्याऽ२३४वी॥ इषꣳस्तोतृभ्याऽ३आ॥

हिम्ऽ३स्थिहिम्ऽ३४३म्। भाऽ३४५रोऽ६हाइ॥

(दी. १०। प. १०। मा. १२) २ (मा।७३५)

(४२०।१)　　॥ उत्सेधः, उत्सेधम् वा। अंगिरसः पंक्तिरग्निः॥

हाउ। औहोऽ२३४वा। आग्निन्नस्ववृक्तिभीऽ२३४५ः॥ हाउ। औहोऽ२३४वा।

होतारन्त्वावृणीमहेऽ२३४५। हाउ। औहोऽ२३४वा। शीरंपावकशोचिषम्।

विवोमाऽ२३४दाइ॥ हाउ। औहोऽ२३४वा। यज्ञाइषुस्तीर्णबर्हिषाऽ२३४५म्॥ हाउ।

औहोऽ२३४वा॥ विवक्षसेऽ२३४५॥

(दी. ९। प. १६। मा. १०) ३ (तौ।७३६)

(४२०।२)　　॥ निषेधः, निषेधम् वा। अंगिरसः पंक्तिरग्निः॥

आग्निन्नस्ववृक्तिभिर्हइहाहाइ॥ होतारन्त्वावृणीमहइहइहाऽ३। हाइ।

शीरंपावकशोचिषमिहइहाऽ३। हाइ। विवोमाऽ२३४दाइ॥ यज्ञाइषुस्तीर्णबर्हिषमिहइहाऽ३॥

हाऽ३इ॥ वाऽ२इवाऽ२३४औहोवा॥ क्षाऽ२३४से॥

(दी. १२। प. १०। मा. १३) ४ (त्रि।७३७)

(४२१।१)　　॥ सत्यश्रवसः वाय्यस्य साम। सत्यश्रवाः पंक्तिरुषा॥

महाऽ३४इ। महेनोअद्य। बोधाऽ६या॥ उषोराये। दिवित्माऽ२३ती। यथाचीऽ३न्नाऽ३ः।

आबोधाऽ२३४याः। सत्याश्राऽ३वाऽ३। सिवाऽ२याऽ२३४याइ॥ सुजाताऽ३आऽ३।

श्वाऽ२३सूऽ३॥ नाऽ३४५र्तोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. १२। मा. ७) ५ (खे।७३८)

(४२२।१) ॥ पौषम्। पूषा पंक्तिःसोम॥

भद्रन्नोऽ२३अपिवातया॥ मनोऽ२द। क्षाम्। ऊतक्राऽ२३४तूम्॥ आथाते। सा।

ख्येअन्धसाऽ२ः। विवोमाऽ२३४दाइ। रणाऽ२गावाऽ२नय॥ वसायेऽ३॥

वाऽ२इवाऽ२३४औहोवा॥ क्षाऽ२३४से॥

(दी. १०। प. १२। मा. ८) ६ (फै।७३९)

(४२३।१) ॥ औषसम्। उषा पंक्तिरिन्द्रः॥

ऋत्वामहाॅ॰अनुष्वधाऽ६मे॥ भीमआवावृऽ३ताइश्राऽ१वाऽ२ः। श्रियऋष्वाऽ३ः।

ऊपाकाऽ२३४योः। निशिप्रीहरिऽ३वान्दाऽ१धाऽ२इ॥ हस्तायोऽ३र्वाऽ३॥ ज्रमोऽ२३४वा।

याऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ८। मा. ९) ७ (गो।७४०)

(४२४।१) ॥ लौशम्। लुशः पंक्तिरिन्द्रः॥

सघातंवृषणम्। रथाऽ३४औहोवा॥ आधितिष्ठा। तिगोवाऽ१इदाऽ२म्॥ यपात्रॅ॰हा।

रियाऽ२जाऽ२३४नाम्। पूर्णिम्। द्रा। चीकेताऽ२३४ती॥ योजानूऽ३वाऽ३इ॥

द्राऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ हाऽ२३४री॥

(दी. ९। प. १२। मा. ७) ८ (थे।७४१)

(४२५।१) ॥ निषेधस्साम। अंगिरसः पंक्तिरग्निः॥

अग्निंताऽ३०मन्येयोवसूः॥ अस्तंयंयाऽ३। तीधेनाऽ२३४वाः। अस्तमर्वाऽ३।

ताआऽ२श्वाऽ२३४वाः। अस्तन्नित्याऽ३। सोवाऽ२जाऽ२३४इनाः॥ इषाꣳस्तोऽ३तृऽ३४।

हाहोऽ२३४हा॥ भ्याऽ२३आऽ३। भाऽ३४५रोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ११। मा. ८) ९ (तै।७४२)

(४२६।१)॥ अꣳहोमुचस्साम, गौराङ्गिरसस्य साम वा। अꣳहोमुग्बृहती विश्वेदेवाः॥

नतमꣳहोनदुरितम्। ईयइयाहाइ॥ दाइवाऽ२सोअष्टमर्तियमी। यइयाऽ२३हाइ।

सजोषसोयमर्यमाई। यइयाऽ२३हाइ॥ माइत्रोनायाऽ३॥ तिवाऽ२रूऽ२३४५णाऽ६५६ः॥

अतिद्विषाऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. ९। मा. १३) १० (दि।७४३)

दश पञ्चमः, अष्टमः खण्डः॥८॥ दशतिः॥४॥

॥ इति पंक्तिः॥

(४२७) ॥ इन्द्रस्य संक्रमे द्वे। द्वयोरिन्द्रः पंक्तिरिन्द्रसोमौ॥

परिप्रधन्वा॥ इन्द्रायसोमास्वाऽ१दूऽ२३४ः। हाइ। मित्राया॥ पूष्णेभाअ२३४हाइ॥

गाऽ२३४योऽ६हाइ।

(दी. ५। प. ६। मा. ४) ११ (पी।७४४)

(४२७।२)

परिप्रधन्वा॥ इन्द्रायसोमा। ओऽ३हा। ओऽ३हा॥ स्वादुर्मित्राया। ओऽ३हा। ओऽ३हा॥

पूष्णाऽ३४औहोवा॥ भगाऽ३याऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ९। मा. १) १२ (झ।७४५)

(४२७।३)॥ सोहविषाणि त्रीणि (स्वर्निधनः सोहविषम्)। त्रयाणां सुहविः पंक्तिरिन्द्रसोमौ॥

परीऽ३होइ। प्रधाऽ२३४न्वा॥ इन्द्राऽ३हो। यसोऽ२३४मा। स्वादूऽ३होइ। मित्राऽ२३४या।
पूष्णेऽ३होइ। भगाऽ२३४या॥ पूष्णेभगाय॥ पूष्णेऽ३४३। होऽ३४३इ।
भाऽ३गाऽ५याऽ६५६॥ एऽ३। सुवर्वतेऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १४। मा. ४) १३ (घी।७४६)

(४२७।४)

हाऽ३हाइ। परिप्रऽ३धान्वा। एऽ२३४हिया। हाऽ३हाइ॥ हाऽ३हाइ। इन्द्रायऽ३सोमा।
एऽ२३४हिया। हाऽ३हाइ॥ हाऽ३हाइ। स्वादुर्मिऽ३त्राया। एऽ२३४हिया। हाऽ३हाइ।
पूष्णेभऽ३गाया। एऽ२३४हिया। हाऽ३हाऽ३४३५इ॥ ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १८। मा. ९) १४ (दो।७४७)

(४२७।५) ॥ वाङ्निधनंसोहविषम्॥

प। र्येपारी॥ प्रधन्वा। होवाऽ३होइ। इन्द्रायसोमा। होवाऽ३होइ। स्वादुर्मित्राया।
होवाऽ३होयेऽ३॥ पूष्णौवाओऽ२३४वा॥ भगाऽ५याउ॥ वा॥

(दी. ५। प. ११। मा. ४) १५ (पी।७४८)

(४२८।१) ॥ बाकानि त्रीणि। त्रयाणां बकोऽनुष्टुप् सोमः॥

पर्यूषुप्रधन्वावाजऽ३सा॥ तायाइ। ओइ। पारी। ओइ। वृत्राणि। सक्षणिः॥ द्वाइषस्ताराऽ२॥

धियाऽ२इ। अर्णायाऽ२ः। नाऽ२ः। ईरासाऽ२३इ। ओयेऽ३। रसाऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥

डा॥

(दी. ५। प. १६। मा. ११) १६ (प।७४९)

(४२८।२)

पर्यूषू॥ प्रधन्वावाऽ३। जासाताऽ२३४याइ। परिवृत्राणिसक्षणिः। द्विषास्ताऽ३रा॥

धियाऋणयाऽ१नाऽ३ई॥ हिम्। राऽ३४५सोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) १७ (दू।७५०)

(४२८।३)

प। र्येपारी॥ ऊषुप्रधन्वावाजसातयेपरिवृत्राणिसक्षणिर्द्वाऽ२३इषाः। ताऽ२३रा॥

धियाऋणयानओवाऽ३ओऽ२३४वा॥ राऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ६। मा. ६) १८ (टू।७५१)

(४२९।१) ॥ धर्म धाम सामनी वा द्वे। द्वयोः प्रजापतिः पंक्तिस्सोमः॥

पवस्वसोमा॥ माहान्त्समुद्राः। पितादेऽ२वानाऽ२३म्॥ वाऽ२इश्वाऽ२३४औहोवा॥

भिधामाऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ५। मा. ४) १९ (णी।७५२)

(४२९।२)

५र ५ ३र २ र १ ^ ३ ५र ५ १ २ र १र २ १
औहोऽ६वा। औहोऽ३वा। औहोऽ२वाऽ२३४औहोऽ६वा। पवस्वसोम। महान्त्समुद्रः॥

१ १रविर १र बिर १ ३र १ र ५र ५ ३र २
पितादेऽ२वानाऽ२म्॥ विश्वाभिधामाऽ२३४। औहोऽ६वा। औहोऽ३वा।

र १ ^ ३ ५र ५ २ १ १ १ १
औहोऽ२वाऽ२३४औहोऽ६वा॥ एऽ३। धर्माऽ२३४५॥

(दी. १६। प. १२। मा. ४) २० (खी।७५३)

(४३०।१) ॥ विधर्म सामनी द्वे। द्वयोः प्रजापतिः पंक्तिस्सोमः॥

५ र ५ ३र २ र १ ^ ३ ५र ५ १ २ र १र ३र
ओहोऽ६वा। ओहोऽ३वा। ओहोऽ२वाऽ२३४औहोऽ६वा। पवस्वसोम॥ महेदक्षाय॥

१ ३र १ २ १ बिर १र बिर ^ ३ ५र ५ ३र २
अश्वोननिक्तः। वाऽ२जीधनाऽ२याऽ२३४। ओहोऽ६वा॥ ओहोऽ३वा।

र १ ^ ३ ५र ५ २ १ २ ३ १ १ १
ओहोऽ२वाऽ२३४ओहोऽ६वा॥ एऽ३। विधर्माऽ२३४५॥

(दी. १५। प. १२। मा. ३) २१ (फि।७५४)

(४३०।२) ॥ धनसाम॥

४ ५ र ४ २ र १ — १ र र २ ५र र
पवस्वसोमा॥ महेदऽ३क्षायाऽ२॥ अश्वोननिक्तोऽ२३॥ वाजाऽ३४। औहोवा।

२ १ १ १ १
धनाऽ३याऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ६। मा. नास्ति) २२ (का।७५५)

(४३१।१) ॥ भागम्। भगः पंक्तिस्सोमः॥

४ ५ ४ १ २ र १ २ र १ २ १ ^ र ५र र
इन्दुःपविष्टा। चाऽ२३रूः। मदाया॥ अपामुपाऽ२३स्थाऽ३इ॥ काऽ२वाऽ२३४औहोवा॥

२ १ १ १ १
भगाऽ३याऽ२३४५॥

(दी. ४। प. ६। मा. ३) २३ (ति।७५६)

(४३२।१) ॥ वाजिनाꣳसाम। वाजिनोऽनुष्टुप्सोमः॥

अनु। अनू॥ हाइब्वासुत२सोममदामसि। मदामसाये ऽ३। महा ऽ३४३इ। सा ऽ३४मा॥
र्यराज्ये। वाजा२अभिपवमान। पवमाना॥ प्रागाहसा। औ ऽ३होवा। हो ऽ५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १३। मा. ४) २४ (गी।७५७)

(४३३।१) ॥ हिकम्। प्रजापतिः पंक्तिर्मरुतः॥

कईव्य ऽ५क्ताः॥ नरस्स ऽ३नाइडा ऽ२ः॥ रुद्रस्यमर्या ऽ२३ः॥ आ ऽ२था ऽ२३४औहोवा॥
सुव ऽ३श्वा ऽ२३४५ः॥

(दी. ३। प. ५। मा. ७) २५ (णे।७५८)

(४३३।२) ॥ विकम्। प्रजापतिः पंक्तिर्मरुतः॥

कई ऽ३४३०वियक्ताः॥ नरा ऽ३४३स्सनीडाः॥ रुद्रस्यामर्या ऽ२३ः॥ आ ऽ२था ऽ२३४औहोवा॥
सुव ऽ३श्वा ऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. ५। मा. ६) २६ (मू।७५९)

(४३३।३) ॥ निकम्। प्रजापतिः पंक्तिर्मरुतः॥

काईम्। विया ऽ२३। ओवा ऽ३। आक्ताः॥ नाराः। सना ऽ२३। ओवा ऽ३। आइडाः। रूद्रा।
स्यमा ऽ२३। ओवा ऽ३। आर्याः॥ आथा। सुवा ऽ२३। ओवा ऽ३। आश्वाः। हो ऽ५इ॥ डा॥

(दी. नास्ति। प. १८। मा. ९) २७ (रो।७६०)

(४३४।१) ॥ आश्वे द्वे। द्वयोरश्वः पंक्तिरग्निः॥

अग्नेतमाद्या॥ अश्वन्नस्तोमाइः। क्रतुन्न ऽ३भाद्रा ऽ२म्॥ हार्दिस्पृशाम्॥
ऋध्या ऽ२मा ऽ२३४औहोवा॥ तओहा ऽ२३४५इः॥

(दी. ५। प. ६। मा. ८) २८ (पै।७६१)

(४३४।२)

अग्ने। होऽ३४३इ। तमद्य॥ अश्वन्नस्तोमाइः। क्रतुन्नऽ३भाद्राऽ२म्॥ हार्दाऽ३ओइ॥ स्पृशम्।
ऋध्याऽ२माऽ२३४औहोवा॥ तओहाऽ२३४५इः॥

(दी. ५। प. ९। मा. ११) २९ (भा।७६२)

(४३५।१) ॥ वाजिनाꣳसाम। वाजिनोष्णिक् सविता॥

आविर्माऽ२३४र्याः॥ आवाजंवाजिनोअग्मान्। देवस्यस॥ वितुस्साऽ२३४वाम्॥
स्वर्गाꣳअर्वाऽ२३४५न्ताऽ६५६ः॥ जयताऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ६। मा. ६) ३० (कू।७६३)

(४३६।१) ॥ पवित्रम्॥ आदित्याः पंक्तिस्सोमः॥

पवस्वसोमा॥ द्युम्नीऽ३४३सुधारः। माहाꣳअवीनाम्॥ अनुपू॥ र्वियोऽ३४५ इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ६। मा. ४) ३१ (पी।७६४)

॥ एकविंशतिः षष्ठः, नवमः खण्डः॥९॥ दशतिः॥५॥

(४३७।१) ॥ आभरे द्वे। द्वयोरिन्द्रः पंक्तिरिन्द्रः॥

विश्वतोहाउ॥ दावान्विश्वतोनाः। ओऽ३। हा। ओऽ२३४हाइ। आ। भरा। भाऽ२३रा॥
यान्त्वाशविष्ठमाइ॥ माहा। औहोऽ२३४वा॥ ऐहीयैहीऽ१॥

(दी. ९। प. १२। मा. ४) ३२ (थी।७६५)

(४३७।२)

विश्वतोदावनिविश्वतोनआ॥ भरा। भाऽ२३रा॥ यान्त्वाश्चविष्ठमाइम्॥ हाऽ। औऽ३होवा।
होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ८। मा. ३) ३३ (बि।७६६)

(४३८।१) ॥ वासुमन्दे द्वे। द्वयोर्वसुमन्दो गायत्रीन्द्रः॥

एषाः॥ ब्राह्मायआऽ३१उवाऽ२३। एऽ३। त्वियआ॥ आऽ२३इन्द्राः॥ नमश्रूताऽ३१उवाऽ२३॥
एऽ३। गृणआ॥

(दी. १। प. ८। मा. ८) ३४ (गे।७६७)

(४३८।२)

एषाएषाः॥ ब्राह्माऽ२ब्राह्माऽ२। यऋत्वियोवा। ओवा॥ आइन्द्राऽ२आइन्द्राऽ२ः॥ नामश्रुतोवा।
ओवा। गृणा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १। प. ११। मा. ८) ३५ (कै।७६८)

(४३८।३) ॥ कावषाणि त्रीणि। त्रयाणां कवषो गायत्रीन्द्रः॥

एषाः। ओ। ओवा॥ ब्रह्मायाः। ऋत्वियाऽ२ः। आइन्द्रोऽ३हाऽ३इ॥ नाऽ३मा॥ श्रूऽ२३तो।
गृणा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १। प. १२। मा. ६) ३६ (खू।७६९)

(४३८।४)

ओऽ३हाऽ३४३। ओऽ३४हा। एषाब्राह्माऽ३४३। याऽ३४ः। ऋत्वियाः॥ ओऽ३हाऽ३४३।
ओऽ३४हा। इन्द्रोनामाऽ३४३। श्रूऽ३४। तोगृणाइ। ओऽ३हाऽ३४३। ओऽ३४५हाऽ६५६॥
एऽ३। सुवर्वतेऽ२३४५॥

(दी. २। प. १४। मा. ३) ३७ (झि।७७०)

(४३८।५)

एषब्रह्मौहो। याऋत्वियाः॥ इन्द्रोनामौहो॥ श्रूतोगृणाऽ३१उवाऽ२३॥ ऊऽ३४पा॥

(दी. ८। प. ५। मा. ३) ३८ (ण्यि।७७१)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने एकादशः प्रपाठकः॥११॥

(४३९।१)　　॥ श्लोके द्वे। द्वयोः प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

हाउस्वरता॥ ब्रह्माणाऽ२ः। इन्द्रम्। आऽ। महयाऽ२०तोऽ२३४। कैः॥ अवाऽ२र्द्धयान्॥

अहयेह्। तवाऽ३४५इ। ऊऽ६५६॥ श्लोकयताऽ२३४५॥

(दी. ३। प. ११। मा. ६) १ (टू।७७२)

(४३९।२)

हाउ। अभि। स्वरता॥ ब्रह्माणआइन्द्राऽ२म्। महयाऽ२०तोऽ२३४। कैः। अवर्द्धायाऽ२न्॥

अहयेहन्तवाऽ२३४५ऊऽ६५६॥ श्लोऽ२३४काः॥

(दी. ३। प. ९। मा. ८) २ (ढै।७७३)

(४४०।१)　　॥ अनुश्लोके द्वे। द्वयोः प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः त्वष्टा वा॥

हाउस्वरता। स्वरतस्वराऽ२३ता। आनवस्तेरथम। श्वायाताऽ१क्षूऽ२३४ः॥ हाउस्वरता।

स्वरतस्वराऽ२३ता। त्वष्टावज्रपुरुहू। ताद्युमान्ताऽ२३४म्॥ हाउस्वरता॥ स्वरतस्व। राऽ२।

ताऽ२३४। औहोवा॥ स्वराऽ३ताऽ२३४५॥

(दी. ९। प. १४। मा. ५) ३ (धु।७७४)

(४४१।१)

औहोइ। शम्पदाम्॥ मघ२रयाऽ३१२३४इ। षिणाइ। नकाममव्रतोहिनोतिनस्पृशत्॥

रयिमोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ७। मा. ६) ४ (थू।७७५)

(४४२।१)　　॥ वाचः सामनी द्वे। द्वयोर्वाग्पङ्क्तिर्वाक्॥

सादा॥ गावश्श्रुचयोविश्वधायाऽ२३साः॥ साऽ२३४दा॥ दाइवाअरोऽ२३४वा॥ पाऽ२३४साः॥

(दी. ४। प. ५। मा. ४) ५ (नी।७७६)

(४४३।१)

औहोऽ३इ। आयाही॥ वनाऽ२सासहा। गावःसच। तावर्त्तानीऽ२म्॥ यात्। ऊऽ२३॥
धभिरोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १। मा. ४) ६ (झी।७७७)

(४४४।१) ॥ माधुछन्दसम्। मधुछन्दा त्रिष्टुभ्मरुतः॥

ओवा। उपप्रक्षेमधुमतिक्षियन्तः। ओवा॥ ओइ। पुष्येमरयिन्धीमहेतआऽ२३इन्द्रा॥ ओ।
वाओवा॥ ओ। वाहाऽ३१उवाऽ२३॥ ऊऽ३४पा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ६) ७ (म्यू।७७८)

(४४५।१) ॥ मारुतम्। मरुतस्त्रिष्टुभ्मरुतः॥

अर्चन्तिया॥ कम्मरुतःसुवाऽ२३र्काः॥ आस्तोभताइ॥ श्रुतोयुवासआइन्द्राऽ३उवाऽ३॥
ऊऽ३४पा॥

(दी. ३। प. ५। मा. ५) ८ (ण्यु।७७९)

(४४६।१) ॥ उद्वाश्शं साम। उद्वश्शपुत्रः प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रो वृत्रहा॥

प्रवाः॥ आइन्द्रायवृत्रहान्तमाऽ२३या॥ वाइप्रायगाथंगाऽ१याऽ३ता॥ यांजुजौवाऽ३। उप्।
षाऽ२ताऽ३५हाइ॥

(दी. ३। प. ६। मा. ५) ९ (टु।७८०)

षोडश सप्तमः, दशमः खण्डः॥१०॥ दशतिः॥७॥

॥ इति प्रथमोऽर्धः प्रपाठकः॥

(४४७।१) ॥ शाम्ये द्वे। द्वयोर्धुरो गायत्र्यग्निः॥

अचेती॥ अग्निः। चिकाऽ२३इतीऽ३ः॥ हाऽ२३व्याऽ३। वाऽ२ड्नाऽ२३४औहोवा॥
सुमद्रथाऽ२३४५ः॥

(दी. ३। प. ६। मा. ५) १० (टु।७८१)

(४४७।२)

अचेतिया॥ ग्नाइश्चाइकाइतीऽ२३ः। हौहोइ। औऽ३होऽ२३४५॥ हव्याऽ२३॥
वाऽ२ड्नाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। सुमद्रथाऽ२३४५ः॥

(दी. ४। प. ८। मा. ७) ११ (दे।७८२)

(४४८।१) ॥ गूर्दः (गूर्दम्)। प्रजापतिः पंक्तिरग्निः॥

ओग्नाइ॥ त्वन्नोऽ२३आ। हिम्माऽ२३। ताऽ२३४माः। उतत्राताशिवोभुवः॥ शिवोभुवाऽ२३ः॥
वरोवा। थाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) १२ (दू।७८३)

(४४८।२) ॥ अत्यर्द्दः। विश्वामित्रः पंक्तिरग्निः॥

अग्नौ। होइ। त्वौ। होइ॥ नोअन्तमाऽ३१उवाऽ२३॥ ऊऽ२३४ता॥ त्राताओऽ२३४वा॥
शिवोभुवाऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. ८। मा. ६) १३ (बू।७८४)

(४४८।३)   ॥ गूर्द्दः। प्रजापतिः पंक्तिरग्निः॥

अग्नेतूऽ३वन्नोअन्तमाः॥ उतत्राताशिवोभुवः॥ वराऽ२३॥ औहोहोऽ२३४वा।

थाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ५। मा. ४) १४ (ङी।७८५)

(४४८।४)   ॥ अत्यर्द्दः। विश्वामित्रः पंक्तिरग्निः॥

अग्ने। होऽ३इ। त्वन्नोअ। तमाः॥ उताऽ२। हाऽ२इ। औऽ३होऽ३१इ॥ त्राताऽ२॥

शिवोऽ३४५॥ भूऽ२३४वाः॥

(दी. २। प. १०। मा. ६) १५ (त्रू।७८६)

(४४९।१)   ॥ सान्तनिके द्वे। द्वयोः प्रजापतिर्गायत्र्यग्निः॥

भागाः॥ नचित्रः॥ अग्निर्महोऽ२३नाऽ३म्॥ दाऽ२धाऽ२३४औहोवा॥ तिरत्नाऽ२३४५म्॥

(दी. २। प. ५। मा. ५) १६ (त्रु।७८७)

(४४९।२)

भगोनचित्राः॥ अग्निर्महोऽ२३नाऽ३म्॥ दाऽ२धाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। तिरत्नाऽ२३४५म्॥

(दी. ३। प. ५। मा. ४) १७ (णी।७८८)

(४५०।१)   ॥ धनम् (द्वे। द्वयोः) प्रजापतिर्गायत्री विश्वेदेवाः॥

विश्वस्या॥ प्रस्तोभाऽ२। पुरोवासाऽ३न्। यदिवेऽ२३४हा॥ नूऽ२३॥ नाऽ२माऽ२३४औहोवा॥

धाऽ२३४नाम्॥

(दी. ४। प. ७। मा. ३) १८ (थि।७८९)

(४५०।२)   ॥ धर्मसाम॥

औहोइविश्वस्या॥ प्रस्तोभाऽ२। पुरौहोवाऽ३हाइ। वासाऽ२न्। यदिवेहा॥ नूऽ२३॥

नाऽ२माऽ२३४औहोवा॥ धाऽ२३४र्मा॥

(दी. ७। प. ८। मा. ४) १९ (जी।७९०)

(४५१।१)   ॥ उषसस्साम। उषा पंक्तिरुषा॥

उषाअपा॥ स्वासुष्टाऽ२३४माः। संवाऽ२र्त्तया। तिवाऽ२र्त्ताऽ२३४नीम्॥

सूऽ२ज़ाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। तताऽ२३४५॥

(दी. ३। प. ७। मा. ४) २० (ठी।७९१)

(४५२।१)   ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजः पंक्तिर्विश्वेदेवाः॥

इमानुकंभूऽ५वना॥ सीषधाऽ२इमाउवाऽ३। ईऽ३४हा। इन्द्रश्चवाऽ२इश्वाउवाऽ३।

ईऽ३४हा॥ चदेऽ३। वाऽ२याऽ२३४औहोवा॥ वीऽ२३४श्वाः॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) २१ (दू।७९२)

(४५३।१)   ॥ रातिसाम। इन्द्रो गायत्रीन्द्रः॥

विस्रूविस्रू॥ तायाऽ२स्तायाऽ२ः। यथापथः॥ आइन्द्राऽ२त्वाद्याऽ२३॥ तुरोऽ२३४वा।

ताऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ६। मा. ४) २२ (की।७९३)

(४५४।१)   ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥

अयावाजाम्॥ दाइवहि। त२्सनेमा। मदेमश्र३ताहिमाऽ२ः॥ श्रताऽ२३॥

हाऽ२इमाऽ२३४औहोवा॥ सुवीऽ३राऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. ७। मा. ६) २३ (फू।७९४)

(४५५।१) ॥ ऐषम्। इषस्त्रिष्टुम्मित्रावरुणौ॥

ऊर्जा॥ मित्रोवरुणःपिन्वताऽ२३इडाः॥ पीवरीमिषंकृणुहीनआइन्द्राऽ३उवाऽ३॥ ऊऽ३४पा॥

(दी. ४। प. ४। मा. ५) २४ (ध्यु।७९५)

(४५६।१) ॥ वैराजे द्वे। द्वयोरिन्द्रो गायत्रीन्द्रः॥

इन्द्रोऽ३४॥ विश्वस्यरा॥ जतिहोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १। प. ४। मा. १) २५ (घा।७९६)

(४५६।२)

इन्द्राऽ२होऽ१इ॥ वाऽ२इश्वा॥ स्यराऽ२जति॥ होवाऽ२३होऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. नास्ति। प. ५। मा. ३) २६ (वि।७९७)

॥ सप्तदशाष्टमः, एकादशः खण्डः॥११॥ दशतिः॥८॥

॥ इति द्वैपदमैन्द्रं समाप्तम्॥

(४५७।१) ॥ वाजजित्। प्रजापतिरष्टिर्विष्णुः॥

ओइत्रिक। द्रुकाइ। षूऽ३महिषो। यवाशिरम्। तुवीशुष्मः॥ ओइतृऽ२३४०पात्। सोमाम्।
अपिबाऽ३द्वि। ष्णुनासुतम्। यथावशम्॥ ओइसाऽ२३४ईम्। ममा। दाऽ३महिक। मकर्तवे।
महामुरुम्॥ ओइसाऽ२३४इनाम्। सश्चात्। देवोदेवाम्। सत्यइन्दुःसत्याऽ५मिन्द्राउ॥ वा॥

(दी. ९। प. २०। मा. २०) २७ (नौ।७९८)

(४५८।१) ॥ गौरांहिरसस्य सामनी द्वे। द्वयोर्गौरतिजगतीन्द्रः॥

अयꣳसहोहाइ॥ स्रमानाऽ२३४वाः। दृशाःकवीनांमतिर्ज्यो। तिर्विधाऽ२३४र्मा॥
ब्रध्नाःसमाइचीरुषसः। समाइराऽ१याऽ२त्। अराऽ३। होवाऽ३। पाऽ। सस्सचे। तसाऽ३ः॥
स्वासरे॥ मन्युमाऽ२३०ताः॥ चितो। याऽ२३४औहोवा॥ गोऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. १६। मा. १०) २८ (ठौ।७९९)

(४५८।२)

अयꣳसहस्रमानाऽ६वाः॥ दृशाःकवीनांमतिर्ज्यो। तिर्विधाऽ२३र्मा॥ ब्रध्नाःसमाइचीरुषसः।
समाइराऽ१याऽ२३त्। ओऽ३वा। अरेपसःसचेतसः। स्वासरे॥ मन्युमाऽ२३ताः। ओऽ३वा॥
चिताऽ३ः। गोऽ२राऽ२३४औहोवा॥ बाऽ२३४५॥

(दी. १०। प. १३। मा. ९) २९ (बो।८००)

(८५९।१) ॥ प्रयस्वत्। प्रजापति (रष्टि) रत्यष्टिरिन्द्रः॥

एन्द्रयाह्युपनाः॥ पाराऽ२वाऽ२३४ताः। नायमच्छा। विदथानाइ। वासत्पाऽ२३४तीः।
अस्ताराऽ३जेऽ३। वासत्पाऽ२३४तीः। हवामहेत्वाप्रयस्वन्ताः। सुताइषूऽ३वा॥ पुत्रासोना।
पितरंवा। जासाताऽ२३४याइ॥ मꣳहाइष्ठाऽ३०वाऽ३॥ जाऽ२३साऽ३। ताऽ३४५योऽ६हाइ॥

(दी. ९। प. १५। मा. १०) ३० (नौ।८०१)

(४६०।१) ॥ अक्षय्यम्। रेवत्प्रजापतिरतिजगतीन्द्रः॥

तमिन्द्रंजोहवीमघवानाम्॥ ऊऽ२३४ग्राम्। सत्राहोइ। दधानमप्रताऽ२इष्कूऽ२३४ताम्।

श्रवाऽ२३१सांऽ२इ। भूऽ२३४री। मंहिष्ठांगीर्भिरा। चयाऽ२ज्ञाऽ२३४याः। वावार्त्ताऽ२॥

रायेहोइ॥ नोविश्वासुपाऽ२३४था। कृणोऽ३। तूऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १४। प. १४। मा. ९) ३१ (ध्वो।८०२)

(४६१।१) ॥ याज्ञतुरम्। यज्ञतुरोऽत्यष्टिरिन्द्रः॥

अस्तुश्रौषाट्॥ पुरोअग्निंधियादधे। हाऽ। औऽ३होऽ२३४वा। आनुत्यच्छर्द्धोदि। व्याम्।

वृणाऽ२३हाइ। माऽ२३४हे। इन्द्रावाऽ३यूऽ३। वृणीऽ२माऽ२३४हाइ।

यद्धक्राणाविवाऽ१स्वाऽ३ताइ। नाभासन्दायनाऽ३। व्यासाइ। अधप्रनूनमुपया।

तिधीतायाऽ२३ः। हाऽ। औऽ३होऽ२३४वा॥ दाइवाऽ१अच्छाऽ२३। हाऽ।

औऽ३होऽ२३४वा॥ नधोऽ२३४वा। ताऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. १३। प. २२। मा. ११) ३२ (ठा।८०३)

(४६२।१) ॥ एवयामरुतः साम। एवयामरुदतिजगतीन्द्रः॥

प्राऽ२३४। वोमहेमतयोयन्तुविष्णवो। हाइ॥ मरुत्वताऽ३इगिरिजाऽ३४ः। हाहोइ। एवायाऽ२।

माऽ२३४रूत्। प्राशर्द्धायाऽ२। प्रायज्यावाऽ२३इ। सूखादाऽ२३४याइ। तवसेभंददिष्टये॥

धुनाइव्राऽ३ताऽ३॥ याऽ२शाऽ२३४औहोवा॥ वाऽ२३४से॥

(दी. ९। प. १४। मा. ९) ३३ (धो।८०४)

(४६३।१) ॥ विषमानि त्रीणि, (विषमाणानि वा)। भरद्वाजो।त्यष्टिसोमः॥

आया॥ रुचा। हरि। ण्यापुनानाः। विश्वाद्वेषा॑सितरतीऽ२३साऽ३युग्वभिः॥ सूरोऽ२३नाऽ३॥
साऽ२यूऽ२३४औहोवा॥ ग्वाऽ२३४भीः॥

(दी. ६। प. ८। मा. ४) ३४ (गी।८०५)

(४६३।२)

अयारुचाहरिण्या॥ पुनानः। विश्वाद्वाऽ२३इषा। साइतर। त्यौहो। वाऽ३हाऽ३इ।
सायूऽ२ग्वाऽ२३४भीः॥ सूरोऽ२३ना॥ सयूऽ३ग्वाऽ५भाऽ६५६इः॥

(दी. ७। प. ९। मा. ७) ३५ (झे।८०६)

(४६३।३)

अयारुचाहरिण्या। पूऽ२३४। नानोविश्वाद्वेषा। साइतरति। सायुग्वाभीऽ२ः। सूरोनाऽ३।
सायूऽ२ग्वाऽ२३४भीः। धारापृष्ठा। स्यारोऽ२चताइ। पुनानोआऽ३। रूपोहाऽ२३४रीः।
विश्वायद्रू। पापरिया। साऋक्वाभीऽ२ः। सप्तासीऽ३येऽ३॥ भाऽ२३इराऽ३।
क्वाऽ३४५भोऽ६हाइ॥

(दी. १०। प. १०। मा. १०) ३६ (फौ।८०७)

(४६४।१) ॥ सुवितस्साम। सवितात्यष्टिः सविता॥

अभित्यन्देव॑सवितारम्। औहौहोवाहाइ॥ ओणाऽ२३४योः। कविक्राऽ२३४तूम्।
आर्चामीऽ२३४सा। त्यासावाऽ२३४॑रा। त्नधामाऽ२३४भी। प्रियम्माऽ२३४तीम्।
औहोहोवाऽ२३४हाउ॥ ऊर्ध्वायाऽ२३४स्या। आमातीऽ२३४र्भाः। अदिद्यूऽ२३४तात्।

सवीमाऽ२३४नी। औहोऔहोवाऽ२३४हाउ॥ हरिण्याऽ२३४पा। णीरामीऽ२३४मी।

तसुक्राऽ२३४तूः। औहोऔहोवाऽ२३४५हाउ। वा॥ एऽ३। कृपासुवाऽ२३४५ः॥

(दी. १७। प. २१। मा. १५) ३७ (चु।८०८)

(८६५।१) ॥ भारद्वाजे द्वे। भरद्वाजोऽत्यष्टिरग्निः॥

अग्निꣳहोता॥ रम्मन्येऽ३दास्वन्तम्। ओऽ३वाऽ३। वासोःसूऽ२३४नूम्।

सहसोजाऽ३तावेऽ१दासाऽ२म्। विप्रन्नजा। ओऽ३वाऽ३। तवेऽ२दाऽ२३४साम्।

यऊर्ध्वाऽ१याऽ२। सुवाध्वाऽ१राऽ२ः। देवादेवा। ओऽ३वाऽ३। चियाऽ२काऽ२३४र्पा।

घृतोवा। स्यविभ्राऽ२ष्टिम्। अनुशुक्रशा। ओऽ३वाऽ३। चिषः॥ आजुह्वाऽ२३ना॥ स्यसा।

ओऽ३वाऽ३। पाऽ२इषाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १३। प. २३। मा. १०) ३८ (ङ्वौ।८०९)

(४६५।२)

अग्निꣳहोतारंमन्ये। दाऽ२३४। स्वन्तंवसोःसूनुम्॥ सहसोजाऽ३तावेऽ१दासाऽ२म्।

विप्रजन्नजाऽ३तावेऽ१दासाऽ२म्। यऊर्ध्वयाऽ३सूवध्वाराऽ२ः। देवोदेवाऽ३चायाऽ१कृपाऽ२।

घृतास्यविभ्राष्टिमनुशु। क्राशोऽ१चिषाऽ२ः। आजूह्वाऽ३नाऽ३॥ स्याऽ२३साऽ३।

पाऽ३४५इषोऽ६हाइ॥

(दी. १६। प. १२। मा. ८) ३९ (खे।८१०)

(४६५।३) ॥ अवभृथसाम। बृहस्पतिरत्यष्टिरग्निः॥

अहावोहाऽ२३४वाः। अहावोहाऽ२३४वाः। अहावोहाऽ२३४वाः। अग्निष्टपती। प्रतिदहती।

अग्निर्होः। तारम्माऽ३न्येऽ३दास्वन्तम्॥ वसोः। सूनुᳲसहसोजाऽ३ताऽ३वेदसम्। विप्राम्।

नजाऽ३ताऽ३वेदसम्। यऊ। ध्वयाऽ३सूऽ३वध्वरः। देवो। देवाऽ३चीऽ३याकृपा॥ घृता।

स्यविभ्राष्टिमनुशूऽ३क्राऽ३शोचिषः॥ आजू। ह्वानाऽ३स्याऽ३सर्पिषः। अहावोहाऽ२३४वाः।

अहावोहाऽ२३४वाः। अहावोहाऽ२३४वाः। अग्निष्टपती। प्रतिदहाऽ५ताऽ६५६इ॥ एऽ३।

विश्वᳲसमत्रिणंदह। एऽ३। विश्वᳲसमत्रिणंदह। एऽ३। विश्वᳲसमत्रिणंदहाऽ२३४५॥

(दी. १४। प. ३०। मा. १६) ४० (नू।८११)

(४६५।४) ॥ प्रवर्ग्यसाम। बृहस्पतिरत्यष्टिरग्निः॥

त्यग्नाइः। प्रतिदहती। हाउहोऽ५हाउ। अग्निर्होः। तारम्माऽ३न्येऽ३दास्वन्तम्॥ वसोः।

सूनुᳲसहसोजाऽ३ताऽ३वेदसम्। विप्राम्। नजाऽ३ताऽ३वेदसम्। यऊ।

ध्वयाऽ३सूऽ३वध्वरः। देवा। दवाऽ३चीऽ३याकृपा॥ घृता।

स्यविभ्राष्टिमनुशूऽ३क्राऽ३शोचिषः॥ आजू। ह्वानाऽ३स्याऽ३सार्पिषः। त्यग्नाइः। प्रतिदहती।

हाउहोऽ५हाउ। वा॥ एऽ३। विश्वᳲसमत्रिणंदह। एऽ३। विश्वंव्यत्रिणंदह। एऽ३।

विश्वंव्यत्रिणंदहाऽ२३४५॥

(दी. १४। प. २७। मा. १७) ४१ (थे।८१२)

(४६६।१) ॥ ऐषम्। इषोऽष्टिरिन्द्रः॥

ताऽ२३४वत्यन्नाऽ५रियन्नृताउ॥ अपइन्द्राऽ२। प्रथमंपूऽ२। र्वियंदिवि। प्रवा। चियंकृतम्।

योदेवास्याऽ२। शवसाप्राऽ२। रिणाअसु। रिणन्नपः। भुवोविश्वाऽ२म्। अभ्यदाऽ२इ।

वमोजसा। विदेदूर्जम्॥ शताक्राऽ२३४तूः॥ विदाऽ५इदिषाउ॥ वा॥

(दी. ९। प. १७। मा. ११) ४२ (था।८१३)

षोडश नवमः, द्वादशः खण्डः॥१२॥ दशतिः॥८॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने द्वादशस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

॥ इत्यैंद्राख्यतृतीये गाने इन्द्रपुच्छाख्यं सप्तमं तन्त्रं समाप्तम्॥

॥ इति ऐन्द्रं काण्डम्॥

॥ इति चतुर्थोऽध्यायः॥४॥

अथ पावमानं काण्डम्।

(४६७।१) ॥ आजिगम्। अजिगो प्रजापतिर्वा गायत्री सोमः॥

उच्चा। तेजाऽ३तामन्धासाऽ२ः। दिविसद्भूम्याददाइ॥ उग्रꣳशाऽ२३र्माऽ३॥

माऽ२हाऽ२३४औहोवा॥ उप्। श्राऽ२३४वाः॥

(दी. ६। प. ७। मा. ५) १ (खु।८१४)

(४६७।२) ॥ आभीकम्। अभिरसो गायत्री सोमः॥

उच्चातेऽ२३४जा। तमन्धाऽ२३४साः। दिवाइसाऽ२३४द्भू॥ मियाददाइ॥ उग्रꣳशाऽ२३र्मा॥

महायेऽ३। श्राऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ वाऽ२३४५इ॥

(दी. ४। प. ८। मा. ५) २ (द्रु।८१५)

(४६७।३) ॥ ऋषभः पावमानम्। ऋषभो गायत्री सोमः॥

हाहाउच्चातेजा॥ हाऽ३। हाऽ३इ। तामाऽ२०धाऽ२३४साः। दिविसद्भूमियाऽ१दाऽ३दे॥

उग्रꣳशाऽ२३४र्मा॥ ओमोऽ३। महोवा। श्राऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ९। मा. ४) ३ (भी।८१६)

(४६७।४) ॥ आभीकम्। अंगिरसो गायत्री सोमः॥

ऊऽ२३४च्चातेजाऽ५। तमौहो०धासाः॥ दिविसद्भूमियाऽ१दाऽ३दे॥ उग्रꣳशाऽ२३४र्मा॥

माहाऽ३उवाऽ३४३। श्राऽ३४५वोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ६। मा. ३) ४ (ति।८१७)

(४६७।५) ॥ वाभ्रवे द्वे। द्वयोः बभ्रुर्गायत्री सोमः॥

उच्चातेजा॥ तम। धासाऽ२३ः। औमोऽ३वा। दिविसद्भू। मियादाऽ१देऽ२३। ओमोऽ३वा॥

उग्राꣳशाऽ१र्माऽ२३॥ ओमोऽ३वाऽ३। माऽ२हाऽ२३४औहोवा॥ श्रवाऽ३ईऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ११। मा. ३) ५ (टि।८१८)

(४६७।६)

उच्चातेजा॥ तमन्धाऽ२३साः। दिविसद्भू। मियादाऽ२३दाइ॥ ऊग्राऽ३ꣳहाइ। शार्माऽ३हाइ॥

महाऽ३होयेऽ३। श्राऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ ग्वाऽ२३४भीः॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) ६ (घू।८१९)

(४६७।७) ॥ इन्द्राण्याः साम। इन्द्राणी गायत्री सोमः॥

उच्चातेजातमा॥ धासाऽ२३ः। ओमोऽ३वा। दिविसद्भू। मियादाऽ१देऽ२३। ओमोऽ३वा॥

उग्राꣳशाऽ१र्माऽ२३। ओमोऽ३वा॥ महायेऽ३। श्राऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ९। प. ११। मा. २) ७ (त्ला।८२०)

(४६७।८) ॥ शैशवे द्वे। द्वयोः शिशुर्गायत्री सोमः॥

उच्चातेजातमन्धासाः॥ दिविसद्भूम्याददाइ॥ उग्रꣳशाऽ२३४र्मा॥ महाऽ३इश्राऽ५वाऽ६५६ः॥

(दी. ५। प. ४। मा. ४) ८ (भी।८२१)

(४६७।९)

उच्चातेजातमन्धाऽ६साः॥ दिविसद्भू। म्यादाऽ२३दाइ। उ। ग्रꣳशाऽ२३र्मा॥

महाऽ२। हाऽ२इ। औऽ३होऽ३१इ। श्रवाऽ२ः। हाऽ२इ। औऽ३होऽ३१इ॥ इयाऽ३होइ।

इयोऽ२३४५वाऽ६५६॥ ऊऽ२३४५॥

(दी. ५। प. १४। मा. ८) ९ (भैं।८२२)

(४६७।१०) ॥ दोहसामनी द्वे। द्वयोः प्रजापतिर्गायत्री सोमः॥

उच्चाऽ३४औहोवा॥ तेजाऽ२। तमाऽ३४५। धाऽ२३४साः। दिविसद्भूम्याददे॥

ऊग्रꣳशाऽ२३र्मा॥ महिश्रवा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ३) १० (मि।८२३)

(४६७।११) ॥ दोहीयसाम॥

उचातेजातमन्धसोदोहाइदोहाऽ६ए॥ दिविसद्भूम्याददे। दोऽ३हाइ। दोऽ३हाऽ३ए॥

उग्रꣳशाऽ२३र्मा। दोऽ३हाइ। दोऽ३हाऽ३ए॥ महिश्राऽ२३वाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १०। मा. ८) ११ (मै।८२४)

(४६७।१२) ॥ इन्द्राण्याः साम। इन्द्राणी गायत्री सोमः॥

उच्चातेजातमन्धसाः॥ दिवाइसाऽ२३४ङ्घू। मियाऽ२ददे। ओम्। ओऽ३वा। ओऽ३वा।

ववाऽ२३होइ॥ उग्रश्शाऽ२३र्मा। ओऽ३वा। ओऽ३वा। ववाऽ२३होइ॥ महिश्रवोऽ२।

याऽ२३४औहोवा॥ ययुरेऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १४। मा. ६) १२ (घू।८२५)

(४६७।१३) ॥ आमहीयवम्। अमहीयुर्गायत्री सोमः॥

उच्चाताऽ३इजातमन्धसाः॥ दिवाइसाऽ१ङ्घूऽ२। मियाऽ२३ददाइ॥ उग्रश्शर्मा॥

महाऽ२३इश्रवाउ। वाऽ३॥ स्तौषेऽ२३४५॥

(दी. ३। प. ७। मा. ६) १३ (ठू।८२६)

(४६८।१) ॥ आजिगम्। आजिगो गायत्री सोमेन्द्रौ॥

स्वादाइष्ठाया। मदाइष्ठाया॥ पवस्वसो। माधाऽ१राऽ२३या॥ इन्द्रायापा॥

तवाइसूऽ२३ताऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २। प. ८। मा. ५) १४ (जु।८२७)

(४६८।२) ॥ सुरूपे द्वे। द्वयोः सुरूपोगायत्री सोमेन्द्रौ॥

स्वादिष्ठयाऽ२। इयाऽ२इया। मदिष्ठायाऽ२॥ पवस्वसोऽ२। इयाऽ२इया। मधारायाऽ२॥

इन्द्रायपाऽ२। इयाऽ२इया॥ तवासूऽ२३ताऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ६) १५ (टू।८२८)

(४६८।३)

स्वादिष्ठयौहोऽ२। इया। मदिष्ठायाऽ२॥ पवस्वसौहोऽ२। इया। मधारायाऽ२॥

इन्द्रायपौहोऽ२। इया॥ तवाइसूऽ२३ताऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ३) १६ (टि।८२९)

(४६८।४) ॥ जमदग्नेः शिल्पे द्वे। द्वयोः जमदग्निर्गायत्री सोमेन्द्रौ॥

ओइस्वाऽ२३४दी॥ ष्ठयाऽ३मादिष्ठया। ओऽ२३४वा। पवस्वसोमधारयाऽ३॥

ओईऽ२३४०द्रा॥ याऽ२पाऽ२३४औहोवा॥ तवेसुताऽ१ः॥

(दी. ६। प. ७। मा. ४) १७ (खी।८३०)

(४६८।५)

उहुवाइ। स्वाऽ२३४दी॥ ष्ठयाऽ३मादिष्ठया। ओऽ२३४वा। पवस्वसोमधारयाऽ३॥ उहुवाइ।

इन्द्राऽ५ययया॥ ताऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ सूऽ२३४ताः॥

(दी. ५। प. ९। मा. ४) १८ (भी।८३१)

(४६८।६) ॥ सꣳहितम्। सꣳहितः साध्या देवा गायत्री सोमेन्द्रौ॥

स्वादाइष्ठया॥ मदिष्ठयाऽ३। पावाऽ३स्वासो। मधारयाऽ३॥ आइन्द्राऽ३यापाऽ६। हाउ॥

तवाऽ५इसुताउ॥ वा॥

(दी. २। प. ८। मा. ५) १९ (ज़ु।८३२)

(४६८।७) ॥ शकुलः। वसिष्ठो गायत्री सोमेन्द्रौ॥

स्वादिष्ठयामदिष्ठयापवस्वसोमधारयाइ। द्राऽ५यपा॥ तवाऽ२इ। ऊऽ२। तवाऽ२इ। ऊऽ२॥

तवाऽ३४औहोवा॥ सूऽ२३४ताः।

(दी. ८। प. ८। मा. ५) २० (डु।८३३)

(४६८।८) ॥ गंभीरम्। जमदग्निर्गायत्री सोमेन्द्रौ॥

औहोहिम्स्थिहाएहिया। हाऽ३हाइ। स्वादाइष्ठाया। माऽ२३४दी॥ ओइमाऽ२३४दी॥

औहोहिम्स्थिहाएहिया। हाऽ३हाइ। ष्ठयापाव। स्वाऽ२३४सो॥ औस्वाऽ२३४सो॥

औहोहिम्स्थिहाएहिया। हाऽ३हाइ। मधारया। ईऽ२३४०द्रा। ओईऽ२३४०द्रा॥

औहोहिम्स्थिहाएहिया। हाऽ३हाइ। यपातवाइ। सूऽ२३४ताः। ओइसूऽ२३४ताः।

औहोहिम्स्थिहाएहिया। हाऽ३हाऽ३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. २३। प. २४। मा. २१) २१ (द्व।८३४)

(४६८।९) ॥ सꣳहितम्। सम्हितः साध्या देवा गायत्री सोमेन्द्रौ॥

स्वादिष्ठयाम। दाऽ५इष्ठया॥ पवाऽ२। स्वाऽ२३सो। मधाऽ२राया॥ आऽ२३इन्द्रा॥ याऽ२पा।

तवाऽ२३॥ हाउवाऽ३॥ सूऽ२३४ताः॥

(दी. २। प. १०। मा. ४) २२ (जी।८३५)

(४६९।१) ॥ सोम सामनी द्वे। द्वयोः सोमो गायत्री सोमौ इन्द्रो वा॥

वृषापवा॥ स्वधारायाऽ२ मरुत्वताइ। चमत्साऽ२३राः॥ वाइश्वाऽ२३॥

दाऽ२धाऽ२३४औहोवा॥ नओजसाऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ७। मा. ५) २३ (फु।८३६)

(४६९।२)

वृषाहाउ॥ पाऽ२३४वा। स्वाधाराऽ२३४या। माऽ२३४रू। त्वाऽ२३४ताइ।

चामत्साऽ२३४राः॥ वाइश्वादधाऽ२३॥ नाऽ२ओऽ२३४औहोवा॥ जाऽ२३४सा॥

(दी. ३। प. ९। मा. ६) २४ (ढू।८३७)

(४६९।३) ॥ आशुभार्गवम्। भृगुर्गायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रो वा॥

वृषापव। स्वधाराऽ६या॥ मारुत्वताऽ३इ। चामाऽ२त्साऽ२३४राः॥ विश्वादाऽ१धाऽ२॥

नओऽ३। जाऽ२३४सोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ७। मा. ४) २५ (छी।८३८)

(४६९।४) ॥ वैश्वदेवे द्वे। द्वयोर्विश्वेदेवा गायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रो वा॥

आइवृषा॥ पवा। इहा। औऽ३हो। स्वधाराऽ२३४या। म। रू। त्वतेऽ३हाइ। च। मा।

त्सराऽ२३हाऽ३४इ॥ विश्वादधाहाउ। नओजसाहाउ॥ ओवाऽ३४३ओऽ३४५वाऽ६५६॥

अस्मेरायाऽ२उतश्रवाऽ२३४५ः॥

(दी. ९। प. १५। मा. ९) २६ (नो।८३९)

(४६९।५)

वृषा। पवाऽ३। एहिया॥ स्वधाऽ२। रयाऽ३४औहोवा। मारूऽ३४। औहोवा॥

त्वतेचमाऽ१त्साऽ३राः॥ औऽ३होऽ३१येऽ३। औहोऽ२३४५वाऽ६५६॥

विश्वादधानओजसाऽ२३४५॥

(दी. १०। प. ११। मा. ३) २७ (पि।८४०)

(४६९।६)   ॥ इन्द्र सामनी द्वे। द्वयोरिन्द्रो गायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रो वा॥

वृषापावाऽ२३। हौहोइ। औऽ३होऽ२३४५। स्वधारायाऽ२३। हौहोइ। औऽ३होऽ२३४५॥

मरुत्वातेऽ२३। हौहोइ। औऽ३होऽ२३४५। चमात्साराऽ२३ः। हौहोइ। औऽ३होऽ२३४५॥

विश्वादाधाऽ२३। हौहोइ। औऽ३होऽ२३४५। नओजासाऽ२३। हौहोइ। औऽ३होऽ३४३॥

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. २०। मा. ९) २८ (ङो।८४१)

(४६९।७)

वृषापावा। औहौहोऽ२३४वा। स्वधाराया। औहौहोऽ२३४वा॥ मरूत्वाता। औहौहोऽ२३४वा।

चमात्सारा। औहौहोऽ२३४वा॥ विश्वादाधा। औहौहोऽ२३४वा। नओजासा।

औहौहोऽ२३४वा॥ होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १२। प. १४। मा. २) २९ (झा।८४२)

(४६९।८)   ॥ यौक्ताश्वे द्वे। द्वयोर्युक्ताश्वो गायत्री सोमः इन्द्रो वा॥

औहोहोहाइ। वृषा॥ पवस्वऽ३धारायाऽ३। मारूऽ२त्वाऽ२३४ताइ। ओइ। चमाऽ२३।

चमाऽ२त्साऽ२३४राः॥ औहोहोहाइ। विश्वा॥ दधाऽ२नाऽ२३४ओ। जासाऽ२३४औहोवा॥

ओइ। ज्वरआ॥

(दी. ४। प. १३। मा. ९) ३० (दो।८४३)

(४६९।९)

वृषाऔहोहोहाइ॥ पवऽ३स्वाधाऽ१रायाऽ३। मारूऽ२त्वाऽ२३४ताइ। चमाऽ३। ओइ।
चमाऽ२त्साऽ२३४राः॥ विश्वाऔहोहोहाइ॥ दधाऽ२नाऽ२३४ओ। जाऽ२साऽ२३४औहोवा॥
ओइ। जूऽ२३४वा॥

(दी. ६। प. ११। मा. १०) ३१ (कौ।८४४)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने द्वादशः प्रपाठकः॥१२॥

(४७०।१) ॥ भासम्। अत्रिर्गायत्री सोमः॥

यास्ताइ॥ मादो। वाराओऽ२३४वा। णीऽ२३४याः। ताइना॥ पावा। स्वाऽ३आओऽ२३४वा।
धाऽ२३४सा॥ दाइवा॥ वाइरा। घाशाओऽ२३४बा॥ साऽ२३४हा॥

(दी. नास्ति। प. १२। मा. ९) १ (यो।८४५)

(४७०।२) ॥ सोम साम। सोमो गायत्री सोमः॥

यस्तेमदाः॥ वराइणियाः। ताइनापावाऽ३स्वाऽ३। अन्धसा॥ दाइवावाइराऽ३४। हाउ॥
घशाऽ५१ंसहा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. नास्ति। प. ९। मा. १८) २ (लै।८४६)

(४७०।३) ॥ प्राजापत्यम्। प्रजापतिर्गायत्री सोमः॥

यस्ताऽ३२इमाऽ२३४दाः॥ वराइणाया। ओऽ२३४वा। हा। ओऽ२३४वा। हाइ। ताइनापव।
स्वआं०धासा। ओऽ२३४वा। हा। ओऽ२३४वा। हाइ॥ दाइवावाइरा। ओऽ२३४वा। हा।
ओऽ२३४वा। हाऽ३इ॥ घाऽ२शाऽ२३४औहोवा॥ सहोरयिऽ३४ाऽ२३४५ः॥

(दी. ४। प. १९। मा. १२) ३ (धा।८४७)

(४७०।४) ॥ सोम साम। सोमो गायत्री सोमः॥

यस्ताइमाऽ२३दोवरेणियाः॥ ताइनापव। स्वआं०धाऽ१साऽ२॥ दाइवाऽ२वाइराऽ२३॥
घशोऽ२३४वा। साऽ५होऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ६। मा. ७) ४ (टे।८४८)

(४७०।५) ॥ भासम्। अत्रिर्गायत्री सोमः॥

यस्ते। माऽ३दो। वा। ईया॥ राइणाऽ१याऽ२ः। ताइनापव। स्व। औऽ३हो। वाहा।

धसाऽ२॥ दाइवाऽ२३॥ वाऽ२इराऽ२३४औहोवा॥ घश्न२सहाऽ१॥

(दी. ६। प. १३। मा. ६) ५ (गू।८४९)

(४७०।६) ॥ अध्यर्द्धेड२सोम साम॥

यस्तेमदोवरेणियाऽ६ए॥ तेनापवस्वान्धसा। देवावीराऽ२३। हाइ॥ घाशाउवा। साहाउवाऽ३॥

ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ९। प. ७। मा. ४) ६ (थ्री।८५०)

(४७१।१) ॥ वैष्ठम्भे द्वे। द्वयोर्विष्टंभो वा देवा गायत्री सोमः॥

तिस्रोवाचाः॥ उदाइ। उदाऽ३१उ। वायेऽ३। राऽ२३४ते॥ गावोमिमा॥ तिधाइ।

तिधाऽ३१उ। वायेऽ३। नाऽ२३४वाः॥ हरिरेती॥ कनाइ। कनाऽ३१उ। वायेऽ३॥

क्राऽ२३४दात्॥

(दी. ५। प. १५। मा. ९) ७ (मो।८५१)

(८५१।२)

तिस्रोवाचाः॥ उदाइराऽ३ते। गावोमिमन्तिधाऽ१इनाऽ३वाः॥ हरिरेतोऽ२३४हाइ॥

काऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ क्राऽ२३४दात्॥

(दी. ७। प. ६। मा. ७) ८ (चे।८५२)

(४७१।३) ॥ पाष्ठैहे द्वे। द्वयोः पष्टवाड् गायत्री सोमः॥

तिस्रोवाचोऽ२३४हाइ॥ उदीरताइ। गावोमिमाऽ२३४हा। तिधेनवाः॥ हरिराइतोऽ२३४हाइ॥

कनायेऽ३। क्राऽ२दाऽ२३४औहोवा॥ अस्मभ्यंगातुवित्तमाऽ२३४५म्॥

(दी. ८। प. ८। मा. ७) ९ (डे।८५३)

(४७१।४)

तिस्रोवाचउदीरतो। वाहाइ॥ गावोमिमाऽ३। तीधेनाःऽ२३४वाः॥ हरिराइती॥

काऽ२नोऽ२३४औहोवा॥ क्राऽ२३४दात्॥

(दी. ७। प. ७। मा. ६) १० (छू।८५४)

(४७१।५) ॥ क्षुल्लक वैष्टंभम्। विष्टंभो वा देवा गायत्री सोमः॥

तिस्रोऽ५वा। चाऽ३उदीरताइ॥ गावोमिम। तिधाइनाऽ१वाऽ२३ः। होवाऽ३हाइ॥

हराइराऽ१इतीऽ२३। होवाऽ३हाइ॥ कनायेऽ३। क्राऽ२दाऽ२३४औहोवा॥ दीऽ२३४शाः॥

(दी. ५। प. १०। मा. १०) ११ (मौ।८५५)

(४७१।६) ॥ पाष्ठौहम्। पष्ठवाड् गायत्री सोमः॥

तिस्रोऽवाचाऽ५उदीरताइ॥ गावोभिमन्तिधेनवः। हरिराऽ२३इती। कनौऽ२। हुवाइ।

होऽ३वाऽ३॥ क्राऽ२दाऽ२३४औहोवा॥ हाओवा। ओवाऽ२३४५॥

(दी. ९। प. ९। मा. ७) १२ (धे।८५६)

(४७२।१) ॥ इषो वृधीयम्। इषावृधीयो गायत्रीन्द्रासोमौ॥

इन्द्रायेन्दाउ॥ मरुत्वताइ। पवस्वामाऽ२। धुमत्तमाः॥ अर्कस्यायोऽ२। निमाऽ२३।

साऽ२दाऽ२३४औहोवा॥ इषोवृधेऽ१॥

(दी. ५। प. ८। मा. ४) १३ (बी।८५७)

(४७२।२) ॥ इन्द्रसाम। इन्द्रो गायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रो वा॥

आऽ२३४इन्द्रा। याऽ२३४इन्द्रो॥ मरूत्वतेऽ३। पाऽ२३४वा। स्वाऽ२३४मा। धुमत्तमाऽ३ः।

आऽ२३४र्का॥ स्याऽ२३४यो॥ निमासदाऽ२३४५म्॥

(दी. १। प. ९। मा. ४) १४ (घी।८५८)

(४७२।३) ॥ वैश्वदेवे द्वे। द्वयोर्विश्वेदेवागायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रो वा॥

इन्द्रायाइन्दोऽ२३। हाऽ। औऽ३होवा। मरुत्वातेऽ२३। हाऽ। औऽ३होवा॥ पवस्वामाऽ२३।

हाऽ। औऽ३होवा। धुमत्तामाऽ२३ः। हाऽ। औऽ३होवा॥ अर्कस्यायोऽ२३। हाऽ।

औऽ३होवा। निमासादाऽ२३म्। हाऽ। औऽ३होवाऽ३४३॥ ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. २०। मा. ४) १५ (णी।८५९)

(४७२।४)

इन्द्रायेन्दो। एऽ५। मरू॥ त्वताइ। पवस्वमधुमत्ताऽ२३माः। हुवाइ। होऽ३वा॥

अर्कास्याऽ२३यो। हुवाइ। होऽ३वा॥ निमासाऽ२३दाऽ३४३म्। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १३। मा. ६) १६ (दू।८६०)

(४७२।५) ॥ आग्नेये द्वे। द्वयोरग्निर्गायत्रीन्द्रासोमौ॥

इन्द्रायेन्दोहाउ॥ म। रू। त्वतेऽ३हाउ। पवस्वमधु। माऽ। तमाऽ२३हाउ। अ। का।

स्ययोऽ२३हाऽ३इ॥ निमाऽ२३। होऽ२३४वा। साऽ५दोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. १३। मा. ५) १७ (ङु।८६१)

(४७२।६)

इन्द्रायेन्दोवा। ओवा॥ मरुत्वतोवा। ओवा। पवस्वमोवा। ओवा। धुमत्तमोवा। ओवाऽ३॥

अर्काहाउ। स्यंयोहाउ॥ निमोवाऽ३ओऽ२३४वा। साऽ५दोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. १२। मा. ४) १८ (छी।८६२)

(४७२।७) ॥ वैश्वदेवम्। विश्वेदेवा गायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रो वा॥

इन्द्रायेन्दोमरुत्वते। ओहाइ॥ पवस्वमधुमत्तमः। ओऽ३हाऽ३४३। ओऽ२३४हा॥

आर्कस्यायोऽ२३॥ नाऽ२इमाऽ२३४औहोवा॥ उप्। साऽ२३४दाम्॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) १९ (घू।८६३)

(४७२।८) ॥ आग्नेयम्। अग्निर्गायत्रीन्द्रासोमौ इन्द्रो वा॥

इन्द्रायेन्दोमरुत्वाऽ६ताइ॥ पवस्वम। धुमात्ताऽ१माऽ२३४ः॥ अर्कस्ययोनिमाऽ६हाउ॥

साऽ५दोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ५। मा. ४) २० (नी।८६४)

(४७३।१) ॥ शैगवानि चत्वारि। चतुर्णां शिशुर्गायत्री श्येनसोमौ।

आसा॥ वियश्शुर्माऽ३१उवाऽ२३। दाऽ२३४या। आप्सूदाक्षाः। गिराऽ३१उवायेऽ३।

ष्ठाऽ२३४५ः॥ श्येनोनाऽ२३यो॥ निमाऽ३१उवाऽ२३॥ साऽ२३४दात्॥

(दी. २। प. ९। मा. ६) २१ (झू।८६५)

(४७६।२)

असाविया॥ शूर्मदाऽ२। य। आप्सुदाक्षाऽ२ः। गाइरिष्ठाः॥ श्याइनोऽ१नायोऽ२३॥

निमोऽ२३४वा। साऽ५दोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ८। मा. ५) २२ (जु।८६६)

(४७३।३)

असा। वियाओऽ२३४वा॥ शूर्मदाया। ओऽ२३४वा। आप्साओऽ२३४वा॥ दक्षोगिराइ।

ष्ठाओऽ२३४वा॥ श्येनोनयोनिमासदाऽ२३४५त्॥

(दी. ६। प. ८। मा. ५) २३ (गु।८६७)

(४७६।४)

असा। वियौवाओऽ२३४वा॥ शुर्मदायौ। वाओऽ२३४वा। अप्सू। दक्षौवाओऽ२३४वा।

गिराइ। ष्ठौवाओऽ२३४वा। श्येनः। नयौवाओऽ२३४वा॥ निमा। सादौवाओऽ२३४वा॥

होऽ५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १४। मा. ९) २४ (झो।८६८)

(४७३।५) ॥ च्यावनानि चत्वारि चतुर्णां। च्यवनो गात्री श्येना सोमौ॥

असा। व्युहुश्रवाहाइ॥ अश्नुर्मदायाप्सुदक्षोगिरिष्ठाउहुवाऽ२३होइ॥ श्याऽ२३इनोऽ३॥

नाऽ२योऽ२३४औहोवा॥ निमासदाऽ२३४५त्॥

(दी. ८। प. ६। मा. ६) २५ (टू।८६९)

(४७३।६)

असाव्यꣳशुः। औहोवाहाइ॥ मदाऽ२३या। आप्सुदक्षोगिरिष्ठाः॥ श्याइनोनाऽ३योऽ३॥
नाऽ२इमाऽ२३४औहोवा॥ उप्। साऽ२३४दात्॥

(दी. ६। प. ८। मा. ८) २६ (गै।८७०)

(४७३।७)

इहाऽ३१२३४। इहा। साव्यꣳशुर्मदाय। इहा॥ अप्सुदक्षोगिरिष्ठाऽ३४५ः। ईऽ२३४हा॥
श्येनोनयोऽ२निमाऽ३४५। ईऽ२३४हा॥ आऽ२सदाऽ३४५त्॥ ईऽ२३४हा॥

(दी. ६। प. १०। मा. २) २७ (ङा।८७१)

(४७३।८)

असाऽ२३४। वियꣳशुः। मदाऽ२३४याऽ६। हाउ॥ आप्सूदाऽ२३४क्षाः। गिराइष्ठाऽ२३४हाइ॥
श्याइनोनाऽ३योऽ३॥ नाइमाऽ२३हाऽ३४३इ। साऽ२३४दोऽ६हाइ॥

(दी. नास्ति। प. ९। मा. ९) २८ (लो।८७२)

(४७४।१) ॥ प्राजापत्ये द्वे। प्रजापतिर्गायत्री मरुद्वायू॥

पवस्वदो। हौहोवाहाइ॥ क्षासाधनाऽ३ः। औऽ३होऽ३४इ। औहो। वाहाइ। देवेभ्यःपाइ।
तयेहराऽ३इ। औऽ३होऽ३४इ। औहो। वाहाइ॥ मरुद्ध्योवाऽ३। औऽ३होऽ३४इ। औहो।
वाहाऽ३इ॥ याऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ माऽ२३४दाः॥

(दी. १८। प. १७। मा. १२) २९ (ठा।८७३)

(४७४।२)

पवस्वदक्षसाधनः। ओऽ६वा॥ देवेभ्यःपीतयाऽ२ओइ। हराऽ२इ॥ मरुद्भ्योवाऽ२। ओऽ२३॥

यवोवा। माऽ५दोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ८। मा. ५) ३० (बु।८७४)

(४७५।१) ॥ वैदन्वतानि चत्वारि। चतुर्णां विदन्वान्गायत्री सोमः॥

पारी॥ स्वानोगिरिष्ठाः। पवाऽ२इत्रेऽ२३४सो। मोअक्षाराऽ२त्। मदाइपूसाऽ३। ईऽ३याऽ३॥

वँधोऽ२३४वा। आऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) ३१ (दू।८७५)

(४७५।२)

प। येंपारी॥ स्वानोगिरिष्ठाः। पवाऽ२इत्रेऽ२३४सो। मोअक्षाराऽ२त्॥ मदाइषूसाऽ३हाऽ३॥

वाऽ२धाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। असीऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) ३२ (घू।८७६)

(४७५।३)

पाऽ५रि। स्वानोऽ३गाऽ३इरिष्ठाः॥ पवित्रैसो। मोअक्षरात्। पवित्रे। सोमोऽ२३। क्षारात्।

ओइ। मदौ। वाऽ३४३ओऽ२३४वा॥ षुवा॥ सुवर्धाः। असायेऽ३। माऽ२दाऽ२३४औहोवा॥

एऽ३। षुसर्वधाअसीऽ२३४५॥

(दी. ८। प. १६। मा. १०) ३३ (टौ।८७७)

(४७५।४)

औऽ३होइ। इहहाहहाइ। औऽ२होऽ२३४वा। पराइस्त्राऽ२३४नो। गाइराऽ२३४इष्ठाः॥

पावित्रेऽ२३४सो। मोअक्षाऽ२३४रात्॥ मदाइषूऽ२३४सा। वर्धाआऽ२३४सी॥ औऽ३होइ।

इहहाहहाइ। औऽ२होऽ२३४५वाऽ६५६॥ एऽ३। उपाऽ२३४५॥

(दी. २। प. १४। मा. ११) ३४ (झा।८७८)

(४७५।५) ॥ आंगिरसस्य रजेः पदस्तोभौ द्वौ। द्वयो राजिर्गायत्री सोमः॥

प। येस्त्रानाः॥ गाऽ२इ। रिष्ठाऽ२या। हाहाइ। उवाऽ२३होइ। पावित्रेसो। मोअक्षाराऽ२त्।

हाहाइ। उवाऽ२३होइ॥ मदाऽ२इषुसा। हाहाइ। उवाऽ२३हो॥ वंधोऽ२३४वा।

आऽ५सोऽ६हाइ।

(दी. ३। प. १५। मा. ११) ३५ (ण।८७९)

(४७५।६)

पर्योहोवाहाइस्त्रानाः॥ गाऽ२इ। रिष्ठाऽ२या। ओऽ२३४। हाहोइ। हाहा। होवा। होवा।

पावित्रेसो। मोअक्षाराऽ२त्। ओऽ२३४। हाहोइ। हाहा। होवा। होवा॥ मदाऽ२इषुसा।

ओऽ२३४। हाहोइ। हाहा। होवा। होवाऽ३॥ वंधोऽ२३४वा। आऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. १०। प. २३। मा. १०) ३६ (बौ।८८०)

(८७६।१) ॥ और्णायवे द्वे। द्वयोरूर्णायुर्गायत्री सोमः॥

परिप्रियादिवःकावीः॥ वयाꣳसिनस्योर्हितः॥ स्त्रानैर्याऽ२३ती॥ आयाऽ२। इयाऽ२ई३या॥

कविक्रतोऽ२। या२३४औहोवा॥ इऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ८। मा. ४) ३७ (त्री।८८१)

(४७६।२)

परिप्रियाऽ५दिवःकवाइः॥ वयाऽ२होऽ१वा२सिनस्योवोर्हितः॥ स्वानैर्याऽ२३ती॥ हुवा। होवा।

होवा। हुवाऽ२इ। ईऽ३या। कविक्रतोऽ२। याऽ२३४औहोवा॥ ईऽ३याऽ२३४५म्॥

(दी. ८। प. ११। मा. ६) ३८ (टू।८८२)

प्रथमः खण्डः॥१॥ दशतिः॥९॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने त्रयोदशस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(४७७।१) ॥ सौभरे द्वे। द्वयोः सुभरिर्गायत्री सोमः॥

प्रसोमाऽ२३४साः॥ मदच्युतः। औऽ२३होवाऽ३। श्रवाऽ२साऽ२३४इनाः। ओइमघोनाऽ२म्॥

सुताऽ२३ः। वाऽ२इदाऽ२३४औहोवा॥ थेअक्रमूऽ२३४५ः॥

(दी. ४। प. ८। मा. ११) १ (दा।८८३)

(४७८।१)

प्रसोमासाः॥ वाइपश्चितः। आपोऽ१नायाऽ२। ताऊर्मयः॥ वानाऽ१निमाऽ२। आऔऽ३हो।

हिषाइव। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ८) २ (नै।८८४)

(४७९।१) ॥ वृषकाणि त्रीणि। त्रयाणामिन्द्रो गायत्री सोमः॥

पवस्वे०दोऽ५वृषासुताः॥ कृधीनोयशसोजनायेऽ३॥ वाइश्वाआऽ२३४पा॥

द्वाऽ२इषाऽ२३४औहोवा॥ जाऽ२३४ही॥

(दी. ७। प. ५। मा. ५) ३ (जु।८८५)

(४८०।१)

वृषाहिया॥ सिभानूऽ२३ना। द्युमन्तन्त्वाहावाऽ१माहाऽ२३४इ॥ पवाऽ३॥ मानसुवोऽ२३४वा॥

दृऽ२३४शाम्॥

(दी. ३। प. ६। मा. २) ४ (टा।८८६)

(४८०।२)

वृषाहियाऽ५सिभानुना॥ द्युमन्तन्त्वाह्वाऽ२महे। हाऽ२इ। ऊऽ२। होऽ३वा॥

पवमानसुवर्दृशम्। हाऽ२इ। ऊऽ२। होऽ३वा॥ हुवोऽ३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ४) ५ (की।८८७)

(४८१।१)॥ बभ्रोः सामानि त्रीणि, कौम्म्यस्य वा। त्रयाणां बभ्रुर्गायत्री सोमः॥

इन्दुरौहोवाहाइ। पावी॥ ष्टचाऽ२इ। तनोऽ२३४हा। हाहोइ। होऽ३हा। प्रियाःकवी। नाम्म।

तिरोऽ२३४हा। हाहोइ। होऽ३हा। सृजाऽ२त्। अश्वोऽ२३४हा। हाहोइ। होऽ३हाऽ३॥

राऽ२थाऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४वा॥

(दी. ८। प. १७। मा. ७) ६ (ठे।८८८)

(४८१।२)

इन्दुःपविष्टचेतनःप्रियःकवाइ॥ हिम्ऽ३स्थिहिम्। नाम्माऽ२३४तीः॥ सृजादाऽ२३श्वाम्।

हिम्ऽ३स्थिहिम्ऽ३। राऽ२थाऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४वा॥

(दी. ३। प. ७। मा. ८) ७ (ठै।८८९)

(४८१।३)

इन्दुःपविष्टचेतनःप्रियःकवीनाम्मतिःसृ। जाऽ५दश्वाम्॥ ओवाऽ२३॥ ओवाऽ२३॥

राऽ२थाऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४वा॥

(दी. ५। प. ६। मा. २) ८ (पा।८९०)

(४८२।१) ॥ कार्तवेशस्य सामानि त्रीणि। त्रयाणां कृतवेशोगायत्री सोमः॥

असृक्षाऽ३ताप्रवाजिनाः॥ गाव्याऽ२सोमाऽ२। सोअ। श्वया॥ शूऽ१क्राऽ२सोवीऽ२॥

रयाऽ२श्रवः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २। प. ८। मा. ४) ९ (जी।८९१)

(४८२।२)

असृक्षताप्राऽ६वाजिनाः॥ गव्यासोमासोअश्वयाऽ२३होइ॥ शुक्रासोवाऽ३१इ॥ रयाऽ२३।

श्राऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ ग्वाऽ२३४भीः॥

(दी. १०। प. ६। मा. ६) १० (पू।८९२)

(४८२।३)

असृक्षतप्रवाजिनः। एऽ३। गव्यासोमा॥ सोऽ३आश्वाऽ३या॥ शुक्राऽ२सोऽ२३४वी॥

रयोऽ२३४वा। श्राऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ७। मा. ३) ११ (छि।८९३)

(४८३।१) ॥ श्राम्मदे द्वे। द्वयोः शंमद्गायत्रीन्द्रवायू॥

पावस्वादे॥ वयाऽ३। वाऽ२याऽ२३४औहोवा। यूऽ२३४षाक्। आइन्द्रंगच्छा। तुताऽ३इ।

तूऽ२ताऽ२३४औहोवा। माऽ२३४दाः॥ वायूऽ२ऽहोऽ१इ। आऽ२३रो॥ हधाऽ३।

हाऽ२धाऽ२३४औहोवा॥ माऽ२३४णा॥

(दी. ७। प. १३। मा. ८) १२ (जै।८९४)

(४८३।२)

पवस्वदेवऐ। हीऐही ऽ२३४या॥ आयुषगेऽ२हीऐऽ२हीऽ३या।

इन्द्रंगच्छतुतेमदऐऽ२हीऐऽ२हीऽ३या॥ वायूमारोऽ३१२३॥ हधोऽ२३४वा। माऽ५णोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ७। मा. ६) १३ (थू।८९५)

(४८४।१) ॥ जनित्रे द्वे। द्वयोर्वसिष्ठो गायत्री सोमवैश्वानरौः॥

पावा॥ मानो। अजीजाऽ२३४नात्। दिवश्चित्राम्। नतन्यतूम्॥ ज्योतिर्वैश्वाऽ२३॥

नाऽ२राऽ२३४औहोवा॥ बृऽ२३४हात्॥

(दी. ४। प. ८। मा. ५) १४ (दु।८९६)

(४८४।२)

पवमानाः॥ अजाइजाऽ३नात्। दिवश्चित्राऽ२३ऽहाऽ३इ। नातन्याऽ२३४तूम्॥ ज्योऽ२३४तीः।

वाऽ२३४इश्वा॥ नरोवा। बृऽ५होऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ८। मा. ८) १५ (गै।८९७)

(४८५।१) ॥ प्रक्रीडास्त्रयः (स्त्रीणि), (प्रक्रीडम्)। मरुतो गायत्री सोमः॥

पारी॥ स्वानासइन्दवोमदायब। हणाऽ२३गिराऽ३४॥ मधोऽ३४अर्षाऽ३॥ तिधोऽ२३४वा।
राऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ६। मा. ३) १६ (ति।८९८)

(४८५।२) ॥ संक्रीडम्॥

पारी॥ स्वानासइन्दवाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया॥
मदायबर्हणागिराउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईया॥
मधोअर्षन्तिधारयाउवाऽ२३होवाऽ२३हाऽ२ईयाऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ८। प. ६। मा. ९) १७ (द्वो।८९९)

(४८५।३) ॥ निक्रीडम्॥

पाऽ५रि। स्वानाऽ३साऽ३इन्दवाः॥ मदाऽ२यबर्हणाऽ२गिरा॥ मधोऽ२३र्षा॥ ऊर्मिरिवाऽ२।
ईऽ३या। तिधारया। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ३) १८ (नि।९००)

(४८६।१) ॥ औशनम्। उशना गायत्री सोमः॥

परिप्रासी॥ ष्यदत्कावीऽ२ः। सिन्धोरूर्मावाधिश्रिताऽ२ः॥ कारूऽ२३म्॥
बाऽ२इभ्राऽ२३४औहोवा॥ पुरुस्पृहाऽ२३४५म्॥

(दी. ७। प. ६। मा. ६) १९ (चू।९०१)

एकोनविंशति द्वितीयः, द्वितीयः खण्डः॥२॥ दशतिः॥१०॥

॥ इति पञ्चमः प्रपाठकः॥५॥

(४८७।१)   ॥ यामानि त्रीणि। त्रयाणां यमो गायत्री देवाः॥

इहाऽ२इहा। उपोषुजातमाऽ२प्तुराम्। इहा॥ इहाऽ२इहा। गोभिर्भंगपराऽ२इष्कृताम्। इहा॥
इहाऽ२इहा। इन्दुन्देवाअयाऽ२सिषूः॥ इहाऽ१॥

(दी. ५। प. ९। मा. ८) २० (भै।१०२)

(४८७।२)

ऊपोषुजातमाऽ२प्तुराम्। उपा॥ गोभाऽ२३इर्होइ। भंगम्पराऽ२इष्कृताम्। उपा॥
इन्दूऽ२३ऱ्होइ॥ देवाअयाऽ२। सिषुराऽ३१उवाऽ२३॥ ऊऽ३ऽ२३४पा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ८) २१ (भ्रै।१०३)

(४८७।३)

उपोष्वौ। होइजाताम्॥ आप्तूऽ३राम्। औऽ३होऽ३वाऽ३। गोभिर्भाऽ२३४०गाम्॥
ओइपारिष्कृताऽ२म्॥ इन्दूऽ२३म्॥ देवाऽ३४औहोवा॥ अयासिषूऽ२३४५ः॥

(दी. ६। प. ९। मा. ९) २२ (घो।१०४)

(४८८।१)   ॥ अंकतेः साम, (वैरूपम्)। अङ्कतिर्गायत्री सोमः॥

पुनानोआ॥ क्रामीदाऽ२३४भी। विश्वाऽ२माऽ२३४र्द्धाः। वीचर्षाऽ२३४णीः॥
शुम्भाऽ२०ताऽ२३४इवी॥ प्राऽ२०धाऽ२३४औहोवा॥ तीऽ२३४भीः॥

(दी. ४। प. ७। मा. ६) २३ (थू।१०५)

(४८९।१)   ॥ औशने द्वे। द्वयोरुशना गायत्री सोमेन्द्रौ॥

आविशन्कालाऽ६शु२सुताः॥ वाइश्वाअर्षन्। अभाइश्रायाऽ३ः। ओऽ३हाऽ३। ओवा।

ओऽ२३४हाइ॥ इन्दूऽ२३ः॥ आऽ२इन्द्राऽ२३४औहोवा॥ यधीयतेऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ९। मा. १०) २४ (घौ।१०६)

(४८९।२)

आविशन्कलशम्। सुताऽ३ः। वाइश्वाः॥ अर्षन्। अभाइश्राया। औहौहोऽ२३४वा॥

औहौहोऽ१इ॥ इन्दूराऽ१इन्द्राऽ२॥ य। धीयाऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ७। प. ११। मा. ९) २५ (च्वो।१०७)

(४९०।१) ॥ सोमसाम। सोमो गायत्री सोमः॥

असर्जिरा॥ थि। योयाऽ२३था। पवित्रे। चा। मुवोऽ२ःसूऽ२३४ताः॥ कार्ष्मन्वाऽ२३जी॥

नियक्रमाइत्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ४) २६ (टी।१०८)

(४९१।१) ॥ कार्ष्णे द्वे। द्वयोः कृष्णो गायत्री सोमः॥

प्रयद्गाउ॥ गावोनऽ३भूर्णाऽ१याऽ२३४ः। त्वेषाऽ३ः। आयाऽ२सोअक्रमुः॥ घ्नन्ताःकाऽ२३र्ष्णाम्॥

अपात्वचम्। औहोऽ२हाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२२३४पा॥

(दी. ८। प. ८। मा. ८) २७ (ड्रै।१०९)

(४९१।२)

प्रयद्गाऽ२३वोनभूर्णयाः॥ त्वाइषाअया। सोअक्रमूऽ२३ः॥ घ्नाऽ२३४०तोहाइ॥

काऽ२र्ष्णाऽ२३४औहोवा॥ अपत्वचाऽ२३४५म्॥

(दी. ७। प. ६। मा. ८) २८ (चै।११०)

(४१२।१) ॥ सोमसाम (वैश्वदेवम्)। सोमो गायत्री सोमः॥

अपघ्नौ। होइपावा॥ साइमाऽ१र्द्धाऽ२ः। क्रातुवित्सो। ममात्साऽ१राऽ२ः॥ नुदाऽ२३॥

स्वाऽ२दाऽ२३४औहोवा॥ वयुञ्जनाऽ२३४५म्॥

(दी. ४। प. ८। मा. ६) २९ (दू।१११)

(४१३।१) ॥ सूर्यसाम (वैश्वदेवम्)। सूर्यो गायत्री सूर्यः॥

एअयापवा॥ स्वधाऽ२। रयाऽ३१उवाऽ२३। ऊऽ३४पा। ययासूर्यमरोऽ२।

चयाऽ३१उवाऽ२३। ऊऽ३४पा॥ हिन्वानोमानुषोऽ२३इर्होइ॥ आपआऽ३१उवाऽ२३॥

ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ७) ३० (श्ले।११२)

(४१४।१) ॥ वार्त्रघ्नम्। इन्द्रो गायत्रीन्द्रो वृत्रहा॥

सहोऽ३४३इ। पवस्व॥ यआऽ२विथा। इन्द्रंवृत्राऽ३। याहन्ताऽ२३४वे। ओवाऽ३ओवा॥

वव्रिवाऽ२३४साम्॥ माहीरपा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १। प. ११। मा. ५) ३१ (कु।११३)

(४१५।१) ॥ सोम सामानि त्रीणि। त्रयाणां सोमो गायत्री सोमः॥

अयावीती॥ पारिस्रवा। यस्तइन्दाउ। मादाइषुवा॥ अवाहाऽ३न्नाऽ३॥ वतोऽ२३४वा।

नाऽ५वोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ७। मा. ४) ३२ (थी।११४)

(४१५।२)

अयावीता॥ औहोवा। औहोऽ३४इ। औ। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा॥ परिस्रव॥

यस्तइन्दा॥ औहोवा। औहोऽ३४इ। औ। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा॥ मदेऽ२षुवा॥

अवाहन्ना॥ औहोवा। औहोऽ३४इ। औ। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा॥ वतीर्नवाऽ२३४५॥

(दी. २१। प. २४। मा. ४) ३३ (घी।११५)

(४१५।३)

अयाऽ५वा। ताऽ३इपाऽ३रिस्रवा॥ यास्तइन्दो। मदाइषूऽ१वाऽ२॥ अवाहाऽ३न्ना। वतीर्नवा।

औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ९। मा. ४) ३४ (ढी।११६)

(४१६।१) ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजो गायत्री सोमः॥

परिद्युक्षाम्॥ ओइ। सनद्रायीऽ२म्। ओइ। भरद्वाजाऽ२म्। ओइ।

नोअन्धासाऽ२३४॥ स्वानोऽ३४अर्षाऽ३॥ पवोवा। त्राऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. २। प. १०। मा. ९) ३५ (ञो।११७)

षोडशतृतीयः, तृतीयः खण्डः॥३॥ दशतिः॥१॥

इति ग्रामे गेय-गाने त्रयोदशः प्रपाठकः॥१३॥

(४९७।१) ॥ वार्षाहरम्। वृषाहरिर्गायत्री सूर्यः॥

अचिक्रदाऽ३त्। आचिक्रदाऽ३त्। अचिक्रदाऽ५दे॥ वृषाहराऽ३इ। वार्षाहराऽ३इ।

वृषाहराऽ५ए॥ महान्मित्राऽ३ः। माहान्मित्राऽ३ः। महान्मित्राऽ५ए॥ नदर्शताऽ३ः। नादर्शताऽ३ः।

नदर्शताऽ५ए॥ सꣳसूरियाऽ३इ। साꣳसूरियाऽ३इ। सꣳसूरियाऽ५ए॥ णदिद्युताऽ३इ।

णादिद्युताऽ३इ। णदाऽ५इद्युताउ॥ वा॥

(दी. ९। प. ११। मा. १८) १ (धे।११८)

(४९८।१) ॥ वार्शाणि त्रीणि। त्रयाणां वृश्नो गायत्री सोमः॥

आतेदक्षाम्॥ मयोभूऽ३वाम्। वह्निम्। द्याऽ। वृणीऽ२माऽ२३४हाइ॥ पा०तमाऽ३। ईऽ३या॥

पुरूऽ२३। स्पृऽ२हाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ४) २ (त्नी।११९)

(४९८।२)

आतेदाऽ२३४क्षाम्। मायोभूऽ२३४वाम्॥ वह्निमद्यावृणी। महोऽ२३४हाइ॥ पा०ताऽ३माऽ३।

ईऽ३याऽ३॥ पूऽ२रूऽ२३४औहोवा॥ स्पृऽ२३४हाम्॥

(दी. ४। प. ८। मा. ५) ३ (दु।१२०)

(४९८।३)

आतेदक्षमयः। भुवोऽ२३४हाइ॥ वह्निमद्यावृणी। महोऽ२३४हाइ॥

पा०ताऽ१माऽ२॥ पूरुस्पृहम्। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ५) ४ (धु।१२१)

(४९९।१)   ॥ वैरूपे द्वे। द्वयोरिन्द्रो गायत्री सोमः॥

अध्वर्योऽ२३४आ॥ द्रिभाइस्सूऽ३ताऽ३म्। सोमाऽ२०पाऽ२३४वी। त्राआऽ१नायाऽ२॥

पुनाऽ२३॥ हीन्द्राऽ३४औहोवा॥ यपातवेऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ७। मा. ५) ५ (फु।१२२)

(४९९।२)

अध्वर्यो। होअद्री॥ भिस्सुतम्। औऽ३होऽ३वाऽ३। सामाऽ२०पाऽ२३४वी।

ओत्राआऽ१नायाऽ२॥ पुनाऽ२३॥ हाऽ२इन्द्राऽ२३४औहोवा॥ यपातवेऽ२३४५॥

(दी. ५। प. ९। मा. ५) ६ (भु।१२३)

(५००।१)   ॥ तारन्तस्य साम। तरन्तो गायत्री सोमः॥

तरत्समा॥ दिधावाऽ१ताऽ२३इ। धाराऽ२सूऽ२३४ता॥ स्यआऽ२३।

धाऽ२साऽ२३४औहोवा॥ तरत्समन्दीधावतीऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ६। मा. ३) ७ (कि।१२४)

(५०१।१)   ॥ सोमसाम। सोमो गायत्री सोमः॥

आपव्स्वा॥ सहस्रिणाम्। हुवाइ। हुवाऽ२३हो॥ रयिंश्सोमा। सुवीरियाम्। हुवाइ।

हुवाऽ२३होइ॥ अस्मेश्रवा। सिधारया। हुवाइ। हुवाऽ२३होऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥

ऊऽ२३४पा॥

(दी. ७। प. १४। मा. ७) ८ (ह्वे।१२५)

(५०२।१)   ॥ सूर्यसाम। सूर्यो गायत्री सूर्यः॥

अनुप्रत्नासआयाऽ६वाः॥ पदन्नवीयोअक्रमूः॥ रुचाइजना॥ ताऽ३सू। हिम्मायेऽ३॥
रीऽ२३४याम्॥

(दी. ४। प. ६। मा. ६) ९ (तू।१२६)

(५०३।१) ॥ दार्ढच्युतानि त्रीणि। त्रयाणां दृढच्युतिर्गायत्री सोमः॥

अर्षा॥ इहा। सोमद्युमाऽ२त्तमा। इहा॥ अभाइ॥ इहा। द्रोणानिरोऽ२रुवा। इहा॥ सीदा॥
इहा॥ योनौवनाऽ२इषुवा॥ इहाऽ१॥

(दी. ६। प. १२। मा. २) १० (खा।१२७)

(५०३।२)

अर्षाहाउ॥ सोमद्युत्तमो। भिद्रोऽ२३णा। निराऔऽ३हो। रूवाऽ२३त्॥ सीदाउवा॥
योनौवाऽ३ने। हिम्मायेऽ३॥ षूऽ२३४वा॥

(दी. ४। प. ९। मा. ४) ११ (धी।१२८)

(५०३।३)

अर्षासोमद्युम। तमाः। अर्षासोमा॥ द्युमत्तमः। अभिद्रोणाऽ२३हा। निरोरुवत्॥
साइदन्योनाऽ२३उहाइ॥ वनाइषूऽ२३वाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ८) १२ (जै।१२९)

(५०४।१) ॥ वृषकम्। इन्द्रो गायत्री सोमः॥

वृषासोमा॥ द्युमाऽ२९आसाऽ२इ। वृषादेवाऽ३हाऽ३इ। वार्षव्राऽ२३४ताः॥ वृषाधर्माऽ३॥
ईऽ३या॥ णाइदध्रिषे। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ६) १३ (णू।९३०)

(५०५।१) ॥ ऐषम्। इषो गायत्री सोमः॥

इषेपवा॥ स्वधारयौहोवाऽ३हाऽ३४। औहोवा। मृज्यमाऽ२नोमनीषिभिः॥ इन्द्रोरुचा॥
अभिगौहोवाऽ३हाऽ३४। औहोवा॥ उप्। इहीऽ२३४५॥

(दी. १५। प. ९। मा. २) १४ (भा।९३१)

(५०६।१) ॥ श्यावाश्वम्। श्यावाश्वो गायत्री सोमः॥

मन्द्रयासो॥ मधारया। वृषापाऽ२३वा। स्वदाइवाऽ२३यूः॥ अव्याऽ२३ः॥
वाऽ२राऽ२३४औहोवा॥ भिरस्मयूऽ१ः॥

(दी. ५। प. ७। मा. ५) १५ (फु।९३२)

(५०७।१) ॥ अयासोमीयम्। अयासोमो गायत्री सोमः॥

अयाऽ३सोऽ३मसुकृत्यया॥ महात्सन्ना। भ्यवाऽ२र्द्धाऽ२३४थाः॥ मा०दानआयेऽ३त्॥
वृषाऽ३याऽ५सा ऽ६५६इ॥

(दी. २। प. ५। मा. ४) १६ (जी।९३३)

(५०८।१) ॥ आग्नेयम्। अग्निर्गायत्री सोमः॥

आ। औहौहोवाहाइ। अयंविचा॥ षणाइर्हाइता। औहौहोवाहाइ। पवमानाः॥ सचाइताता।
औहौहोवाहाइ॥ हिन्वानआ॥ पियौऽ३हौऽ३। हवोवा। बृऽ५होऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. १२। मा. ९) १७ (ठो।९३४)

(५०९।१) ॥ आयास्ये द्वे। द्वयोरयास्यो गायत्री सोमः॥

प्रनइन्द्रोऐ। हीऐहीऽ२३४या॥ महेतुनऐऽ२हीऽ२हीऽ३या।

ऊर्मिन्नबिभ्रदर्षसऐऽ२हीऐऽ२हीऽ३या॥ अभायेऽ३॥ दाऽ२इवाऽ२३४औहोवा॥

अयासियाऽ२३४५ः॥

(दी. ७। प. ७। मा. १०) १८ (छौ।१३५)

(५०९।२)

प्रनइन्दो। इयाऽ३४३ईऽ३४या॥ महेतुनइयाऽ२ईऽ३या। ऊर्मिन्नबिभ्रदर्षसइयाऽ२ईऽ३या॥

अभायेऽ३॥ दाऽ२इवाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। अयासियाऽ२३४५ः॥

(दी. ६। प. ८। मा. ९) १९ (गो।१३६)

(५१०।१) ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाजो गायत्री सोमेन्द्रौ॥

होईऽ२३४या। [द्विः]। इयाहाइ। अपघ्नाऽ२३न्पाऽ२३४५॥ होईऽ२३४या। [द्विः]।

इयाहाइ। वताइ। माऽ२। धाऽ२३४। औहोवा। अपसोमोऽ२अराऽ२व्णाऽ२३४५ः॥

होईऽ२३४या। [द्विः]। इयाहाइ। गच्छन्नाऽ२३इन्द्राऽ२३४५॥ होईऽ२३४या। [द्विः]।

इयाहाइ। स्यनाइः। काऽ२। ताऽ२३४। औहोवा॥ ईऽ२३४५॥

(दी. ७। प. २४। मा. १८) २० (झे।१३७)

विंशतिश्चतुर्थः, चतुर्थः खण्डः॥४॥ दशतिः॥२॥

(५११।१) ॥ आयास्यम्। अयास्यो बृहती सोमः॥

पुनानःसो॥ माऽ२धाऽ२३४औहोवा। राऽ२३४या। अपोवसानोअर्षसि॥ आरात्नाऽ३धाः।
योनाइमाऽ३र्त्ताऽ३। स्याऽ२साऽ२३४औहोवा। दाऽ२३४सी॥ उत्सोदेऽ३वोऽ३॥
हाऽ२इराऽ२३४औहोवा॥ ण्याऽ२३४याः॥

(दी. १२। प. ११। मा. ८) २१ (चै।१३८)

(५११।२) ॥ माण्डवम्। मण्डुर्बृहती सोमः॥

इयाऽ२ईऽ३या। पुनानःसोऽ२। मधाराऽ२३४या॥ अपोवसानोअर्षाऽ२३सी।
आरत्नधायोनिमृतस्यसीदाऽ२३सी॥ उत्सोदेवोऽ२३॥ हाऽ२इराऽ२३औहोवा॥
ण्याऽ३याऽ२३४५ः॥

(दी. १२। प. ८। मा. ५) २२ (जु।१३९)

(५११।३) ॥ आपदासम्। वसिष्ठो बृहती सोमः॥

पुनानःसोमधारया॥ अपोवसानोअर्ष। स्योऽ३हा। ओऽ३हा। आरत्नधायोनिमृतस्यसीद।
स्योऽ३हा। ओऽ३हा॥ उत्सोदाऽ१इवाऽ२ः। ओऽ३हा। ओऽ३हा॥ हिरण्याऽ२३याऽ३४३ः।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १३। मा. ५) २३ (बु।१४०)

(५११।४) ॥सोमसाम। सोमो बृहती सोमः॥

पुनानःसोऽ५मधारया। आपोऽ२वासाऽ२। नोअर्षसी। आराऽ२त्नाधाऽ२ः। योनिमार्त्ताऽ२।
स्यसीदसी॥ उत्सोऽ२दाइवाऽ२ः॥ हिरण्याऽ२३याऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ६) २४ (मू।१४१)

(५११।५)		॥ ऐडमायास्यम्। अयास्यो बृहती सोमः।

आइपुना॥ नाःसो। मधारया। आपोवसाऽ३१। नोअर्षसी। आरत्नधाऽ३१ः। योनिमृता।

स्यसीदसी॥ ऊत्सोदेवाऽ३१ः॥ हिरण्याऽ२ऽ३याऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १२। मा. ६) २५ (फू।१४२)

(५११।६)		॥ माण्डवम्। मण्डुर्बृहती सोमः॥

पुनानःसोमधारया। पोवसोवा॥ नोअर्षसि। आरत्न। धाउवाऽ२३। होवाऽ३हाइ।

योनिमृतस्यसीदसि॥ उत्सोदे। वाउवाऽ२३। होवाऽ३हाइ॥ हिरण्याऽ२ऽ३याऽ३४३ः।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १३। मा. ७) २६ (गे।१४३)

(५११।७)		॥ उद्वत्प्राजापत्यम्। प्रजापतिर्बृहती सोमः॥

पुनानःसोमधा। होऽ५रया॥ अपोवसानआहोऽ२। षासीऽ२। आरत्नधायोनिमृतस्यसाहोऽ२इ।

दासीऽ२॥ उत्साऽ२होऽ१इ। दाऽ२३इवोऽ३॥ हिरोऽ२३४वा। ण्याऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. १०। मा. ५) २७ (णु।१४४)

(५११।८)		॥ त्रिणि धनमायास्यम्। अयास्यो बृहती सोमः॥

पुनानःसोमधाहाउहोवा॥ रायाआऽ२३४पो। वसाऽ२। नआऽ३४५। षाऽ२३४सी॥

आराऽ३४। औहावा। त्नधायोनिमृताऽ२। स्यसाऽ३४५इ। दाऽ२३४सी॥ उत्साऽ३४।

औहोवा॥ दाइवोऽ२। हिराऽ३४५॥ ण्याऽ२३४याः॥

(दी. ११। प. १५। मा. ६) २८ (डू।१४५)

(५११।९)   ॥ कण्वरथन्तरम्। कण्वो बृहती सोमः॥

पुनानःसोमधारया॥ अपोवसा। नोऽ३आर्षाऽ३सी। आरत्नधायोनिमृतस्यसीदसाऽ२३४ऐही॥

उत्सोदाऽ२३४इवाः॥ हिराऽ३१उवाऽ२३॥ एऽ३। ण्ययआ॥

(दी. ११। प. ८। मा. ६) २९ (गू।९४६)

(५११।१०) ॥ तिरश्ची (द्वि) निधनमायास्यम्। अयास्यो बृहती सोमः॥

पुनानःसोमधारया। एऽ३। औऽ३होऽ५वाऽऽ॥ आपोऽ३। वसाऽ२। नआऽ३४५।

पाऽ३सीऽ२। आरत्नधाः। योनिमृता। स्यासाऽ३आ। औऽ३होऽ३। दाऽ२३४सी॥

उत्साऔऽ३हो॥ दाइवोऽ२। हिराऽ३४५॥ ण्याऽ३याऽ२३४५ः॥

(दी. ४। प. १६। मा. ६) ३० (तू।९४७)

(५११।११)   ॥ सदोविशीयम्। प्रजापतिर्बृहती सोमः॥

पुनानःसोमधारयाओहाओहाऽ६ए। औहोऔहोऽ५वा॥ अपोवसानेअर्ष। स्योऽ३हा।

ओऽ३हाऽ३ए। औऽ३होइ। औऽ३होऽ३वा॥ आरत्नधायोनिमृतस्यसीद। स्योऽ३हा।

ओऽ३हाऽ३ए। औऽ३होइ। औऽ३होऽ३वा॥ उत्सोदाऽ१इवाऽ२ः। ओऽ३हा।

ओऽ३हाऽ३ए। औऽ३होइ। औऽ३होऽ३वा॥ हिर। ण्याऽ२याऽ२३४औहोवा॥

सदोविशाऽ२३४५ः॥

(दी. २०। प. २०। मा. १५) ३१ (मु।९४८)

(५११।१२)   ॥ स्ववासिनी द्वे। द्वयोर्जमदग्निर्बृहती सोमः॥

ओऽ२होऽ१। वाओवा। ओऽ२होऽ१। वाओवा। ओऽ२होऽ१। वाओवाऽ३।

ओऽ२वाऽ२३४औहोवा। पुनानःसोमधारया॥ पोवसानोर्षसि॥ आरत्नधायोनिमृतस्यसीदसि॥

उत्सोदेवाः। ओऽ२होऽ१। वाओवा। ओऽ२होऽ१। वाओवा। ओऽ२होऽ१। वाओवाऽ३।

ओऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। हिरण्ययाऽ२३४५ः॥

(दी. १७। प. २०। मा. ११) ३२ (ञा।९४९)

(५११।१३)

ओऽ३। होऽ१। वाओवाऽ३। ओऽ२वाऽ२३४औहोवा। पुनानःसोमधारया।

पोवसानोअर्षसि॥ आरत्नधायोनिमृतस्यसीद। स्योऽ३। होऽ१। वाओवाऽ३।

ओऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ उत्सोदेवोहिरण्ययः। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १८। प. १५। मा. ७) ३३ (णे।९५०)

(५११।१४) ॥ प्लवः। वसिष्ठो बृहती सोमः॥

हा। वोऽ३हा। वोऽ३हाऽ३। हा। ओऽ२३४वा। हाइ। पूनानाऽ२३४ःसो। माधाराऽ२३४या॥

आपोवाऽ२३४सा। नोअर्षाऽ२३४सी॥ आरत्नाऽ२३४धाः। योनीमाऽ२३४र्त्ता।

स्यासीदाऽ२३४सी॥ उत्सोदाऽ२३४इवो। हाइरण्याऽ२३४याः। हा। वोऽ३हा। वोऽ३हाऽ३।

हा। ओऽ२३४वा। हाऽ३४। औहोवा॥ एऽ३। अतिविश्वानिदुरितातरेमाऽ२३४५॥

(दी. ५। प. २४। मा. ६) ३४ (भू।९५१)

(५११।१५) ॥ रौरवम्। रूरुर्बृहती सोमः॥

पुनानःसोमाऽ३धाराऽ२३४या॥ आपोवसानोअर्षस्यारत्नधायोनिमृतस्यसाऽ२इदसाइ।

ओहाऽ३उवा॥ उत्सोदेवोहिराऽ२३हाइ। ओहाऽ३उवा॥ ण्यया। औऽ३होवा। होऽ५इ॥

डा॥

(दी. ११। प. ९। मा. ७) ३५ (घे।९५२)

(५११।१६) ॥यौधाज्यम्। युधाजिद्बृहती सोमः॥

पुनाऽ३१। नाऽ३ःसो। म। धाराऽ२३४या॥ आपोऽ३। वसाऽ२। नआऽ३४५।

षाऽ२३४सी। आरत्नधाः। यो। निमृताऽ२। स्यसाऽ३४५इ। दाऽ२३४सी॥ उत्साऽ२ः॥

दाइवोऽ२। हिराऽ३४५॥ ण्याऽ२३४याः॥

(दी. २। प. १७। मा. ६) ३६ (छू।९५३)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने चतुर्दशस्यार्धः प्रपाठकः॥

(५१२।१) ॥ अच्छिद्रम्। विश्वामित्रो बृहती सोमः॥

परीतोषी॥ चताऽ३१उवाऽ२३। सूऽ२३४ताम्। सोमोऽ२यउत्तमꣳहवीः॥ सोमोयऊ॥

तमाऽ३१उवाऽ२३। हाऽ२३४वीः। दधन्वाꣳयोनिर्योऽ२प्सुवन्तरा॥ दधन्वाꣳयाः॥ नर्योऽ२।

आ। प्सुवाऽ३१उवाऽ२३। ताऽ२३४रा। सुषावसोममद्रिभीऽ२३४ः॥ सुषावसो।

ममाऽ३१उवाऽ२३॥ द्राऽ२३४इभीः॥

(दी. १५। प. १७। मा. १३) १ (फि।९५४)

(५१२।२) ॥ रयिष्ठम्। इन्द्रो बृहती सोमः॥

परीतोषी॥ चतासूऽ३ताम्। औऽ३होऽ३वा। औऽ३होऽ३वा। ईऽ३या। ईऽ३याऽ३४। हा।

हाउवा। सोमोऽ२यउत्तमꣳहवीः॥ सोमोयऊ॥ तमाꣳहाऽ३वीः। औऽ३होऽ३वा।

औऽ३होऽ३वा। ईऽ३या। ईऽ३याऽ३४। हा। हाउवा। दधन्वाꣳयोनर्योऽ२प्सुवन्तरा॥

दधन्वाꣳयाः॥ नर्योऽ२। आ। प्सूऽ३आन्ताऽ३रा। औऽ३होऽ३वा। औऽ३होऽ३वा। ईऽ३या।

ईऽ३याऽ३४। हा। हाउवा। सुषावसोममद्रिभीऽ२३४ः॥ सुषावसो॥ ममाद्रीऽ३भाइ।

औऽ३होऽ३वा। औऽ३होऽ३वा। ईऽ३या। ईऽ३याऽ३४। हा। हाउवाऽ३॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. १५। प. ३८। मा. १३) २ (ब्लि।९५५)

(५१२।३) ॥ भारद्वाजे द्वे। द्वयोर्भरद्वाजो बृहती सोमः॥

औहोइपरीतोषी। चतासुतम्। औऽ३होइ। औहोइ। आऽ३। औहोऽ३वा।

सोमोऽ२यउत्तमꣳहविः। औऽ३होइ। औहोइ। आऽ३। औहोऽ३वा॥

दधन्वाꣳयोनर्योऽ२प्सुवन्तरा। औऽ३होइ। औहोइ। आऽ३। औहोऽ३वा।

सुषावसोममद्रिभिः। औऽ३होइ। औहोइ। आऽ२३४। उहुवाऽ६हाउ॥ वा॥

(दी. २०। प. २२। मा. १४) ३ (फी।९५६)

(५१२।४)

प। येपारी॥ तोषिश्चताऽ२सुतम्। आउवाऽ२३। हाउहाउ। होऽ३वा।

सोमोऽ२यउत्तमꣳहविः। आउवाऽ२३। हाउहाउ। होऽ३वा। दधन्वाꣳयोनर्योऽ२प्सुवन्तराउ।

वाऽ२३। हाउहाउ। होऽ३वा॥ सुषावाऽ२३सोऽ३। हाउहाउ। होऽ३वा॥ मम।

द्राऽ२३४इभाइ। उहुवाऽ६हाउ॥ वा॥

(दी. १६। प. २१। मा. १७) ४ (के।९५७)

(५१२।५) ॥ आभीशवे द्वे। द्वयोरभीशुर्बृहती सोमः॥

परीतोषिश्वतासुतम्। ए॥ सोमोयउऽ३त्तामᳲहाविः। दाऽ२३४धा। हाइ॥

न्वाᳲयोनर्योअप्सूअन्तरा॥ सूऽ२३४षा। हाइ॥ वासोममोऽ२३४वा। द्राऽ५इभोऽ६हाइ॥

(दी. ९। प. १०। मा. ९) ५ (नो।९५८)

(५१२।६)

परीतोषिश्वतासुतम्। ए। ए॥ सोमोयउऽ३तामᳲहावीः॥ दाऽ२३४धा। हाऽ३हाइ॥

न्वाᳲयोनर्योअप्सूअन्तारा॥ सूऽ२३४षा। हाऽ३हाइ॥ वासोममोऽ२३४वा।

द्राऽ५इभोऽ६हाइ॥

(दी. ९। प. ११। मा. ९) ६ (तो।९५९)

(५१२।७) ॥ माण्डवे द्वे। द्वयोर्मण्डुर्बृहती सोमः॥

परीतोषिश्वतासुतम्। इहा॥ सोमोयउत्तमᳲहाऽ२३वीः। इहा।

दधन्वाᳲयोनर्योअप्सुवन्ताऽ२३रा। इहा॥ सुषावाऽ२३सो। इहा॥ ममाऽ२३।

द्राऽ२इभाऽ२३४औहोवा॥ ईऽ२३४हा॥

(दी. ११। प. ११। मा. ६) ७ (कू।९६०)

(५१२।८)

इहा। परीतोषिश्चतासुतम्। इहा॥ सोमोयउत्तम२हाऽ२३वीः। इहाउवाऽ३। ऊऽ३४पा।
दधन्वा२योनर्योअप्सुवन्ताऽ२३रा। इहाउवाऽ३। ऊऽ३४पा॥ सुषावाऽ२३सो। इहाउवाऽ३॥
ऊऽ३४पा। ममद्राऽ२३इभीः। इहाउवाऽ३॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ९। प. १५। मा. १०) ८ (न्नौ।९६१)

(५१२।९) ॥ अभीवाससाम। अङ्गिरसो बृहती सोमः॥

परीतोषिश्चतासुताम्॥ सामोयउ। तम२हवाइः। दाधाओऽ२३४वा। ऊऽ२३४पा।
न्या२योनर्योअप्सुवन्ताऽ२३रा॥ सुषावाऽ२३सो॥ मामद्रिभिः। इडाऽ२३भाऽ३४३।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. ११। मा. ८) ९ (तै।९६२)

(५१२।१०) ॥ परिवाससाम। अङ्गिरसो बृहती सोमः॥

परीतोषिश्चतासुतम्। ओऽ६वा। सोमोऽ२यउत्तम२हविः। दधान्वा२योऽ३। होऽ३हाइ।
नर्योऽ२प्सुवन्तरा॥ सुषावासोऽ३। हाऽ३हा॥ मामद्रिभिः। इडाऽ२३भाऽ३४३४।
ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १२। मा. ६) १० (छू।९६३)

(५१२।११) ॥ वैणवम्। वेणुर्बृहती सोमः॥

परीतोषिश्चि। ताऽ५सुताम्॥ सोमोयउत्तामाऽ२१ऽ२म्। हावीऽ२ः।
दधन्वा२योनर्योअप्सुवाऽ२१२॥ ताराऽ२॥ सुषावाऽ२३सोऽ३॥ ममोऽ२३४वा।
द्राऽ५इभोऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. ९। मा. ७) ११ (ढे।९६४)

(५१२।१२) ॥ सोमक्रतवीयम्, माण्डवं वा। सोमक्रतुर्बृहती सोमः॥

परीतोषाऽ२इ। चतासुताऽ२म्। ऐहीऽ२। ऐहीऽ२। ऐहिहाऽ२इ। उवाऽ२इ। ईऽ३या॥

सोमोयऊऽ२। तमꣳहवीऽ२ः। ऐहीऽ२। ऐहीऽ२। ऐहिहाऽ२इ। उवाऽ२इ। ईऽ३या॥

दधन्वाꣳयोनर्योऽ२। प्सुवन्तराऽ२। ऐहीऽ२। ऐहीऽ२। ऐहिहाऽ२इ। उवाऽ२इ। ईऽ३या॥

सुषावसोऽ२। ममद्रिभाऽ२इ। ऐहीऽ२। ऐहीऽ२। ऐहीहाऽ२इ। उवाऽ२इ। ईऽ३याऽ३४३।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २०। प. ३०। मा. १४) १२ (मी।९६५)

(५१२।१३) ॥ गूर्दः। प्रजापतिः सोमः॥

उपाउप। उपाऽ३१। उपाउप। परीतोषिश्चतासुतम्॥ उपाउप। उपाऽ३१। उपाउप।

सोमोयउत्तमꣳहविः॥ उपाउप। उपाऽ३१। उपाउप। दधन्वाꣳयोनर्योऽ३प्सुवन्तरा॥

उपाउप। उपाऽ३१। उपाउप। सुषावसोममद्रिभिः। उपाउप। उपाऽ३१।

उपाऽ३ऊऽ५पाऽ६५६॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ११। प. २०। मा. १४) १३ (ङ्गी।९६६)

(५१२।१४)॥ प्रतोदः, अंगिरसां गोष्टः। अंगिरसो बृहती सोमः॥ पुꣳस्ति। अंगिरसो बृहती

सोमः। महारौरवम्। रुरुर्बृहती सोमः। कश्यपो बृहती सोमः॥

हाउऽ(३)वा। परीतोषिश्चतासुतम्। उपाऽ२३४५ ॥१॥ (१५) हाउहाउहाउवा।

परीतोषिश्चतासुतम्। इहा। उपाऽ२३४५ ॥२॥ (१६) हाउहाउहाउवा। परीतोषिश्चतासुतम्।

श्रवोबृहत्। उपाऽ२३४५ ॥३॥ (१७) हाउहाउहाउवा। परीतोषिञ्चतासुतम्॥ (१८)

सोमोऽ२यउत्तमꣳहविः॥ दधन्वाꣳयोनर्योऽ२प्स्वन्तरा॥ सुषावसोऽ२३४५। हाउऽ(३)वा॥

एऽ३। ममद्रिभीऽ२३४५ः॥

(दी. २०। प. १९। मा. २३) १४ (भि।९६७)

(५१२।१५) ॥ महायौधाजयम्। युधाजिद्बृहती सोमः॥

हाओऽ२३४वा। हाओऽ२३४वा। हाऽ३ओऽ२३४वा। हाउवा। परीतोषिञ्चतासुतम्॥

सोमोऽ२यउत्तमꣳहविः॥ दधन्वाꣳयोनर्योऽ२प्स्वन्तरा॥ सुषावसोममा॥ हाओऽ२३४वा।

हाओऽ२३४वा। हाऽ३ओऽ२३४वा। हाउवाऽ३॥ द्राऽ३इभीऽ२३४५ः॥

(दी. ११। प. १३। मा. १३) १५ (गि।९६८)

(५१३।१) ॥ आश्वानि चत्वारि (आश्वम्)। चतुर्णामश्वो बृहत्यश्वः ईश्वरो वा॥

आऽ२३४सो॥ मस्वानोऽ३आ। द्राइभाओऽ२३४वा। तिरोवाराऽ२णिअव्ययाऽ२३॥

जानाओऽ२३४वा। नापाओऽ२३४वा॥ रिचमवोऽ२र्विश्वद्धरीऽ२३ः॥ सादाओऽ२३४वा।

वानाओऽ२३४वा॥ षुदाऽ५धिय्याइ। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. ११) १६ (ख।९६९)

(५१३।२) ॥ सोम साम॥

हावासोमस्वा॥ नोअद्राऽ२३४इभीः। तिरोवाऽ२३४रा। णियाऽ३१उवाऽ२३। व्याऽ२३४या॥

जनोनाऽ२३४पू॥ राइचामूऽ२३४वोः। विश्वाऽ३१उवाऽ२३। हाऽ२४रीः॥ सदोवाऽ२३४ने॥

षुदाऽ३१उवाऽ२३॥ धीऽ२३४षे॥

(दी. ३। प. १२। मा. ९) १७ (ठो।९७०)

(५१३।३)

आसोमस्वानोअद्रिभाइः॥ तिरोवाराणिआव्याऽ१याऽ२। जनोनपुरिचामूऽ१वोऽ२ः।

विशाद्धाऽ१रीऽ२ः॥ सदोवनाइ॥ षूऽ२दध्रिषोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. ७। मा. ८) १८ (थे।९७१)

(५१३।४)

आसोमस्वानोअद्रिभिः। तिरोवाऽ३राणिअव्यया॥ जनोनपुरिचमुवोर्विशद्धरिः। औऽ२। हुवाइ।

होऽ३वा॥ सदोवनेषुदौऽ२। हुवाइ। होऽ३वा॥ ध्रिषा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १३। मा. ७) १९ (बे।९७२)

(५१४।१) ॥ त्रीणिधनमाग्नेयम्। अग्निर्बृहती सोमः॥

प्रसोमदा॥ वावीताऽ२३४याइ। सिन्धूर्नापाइप्यआऽ३१उवाऽ२३। णाऽ२३४सा॥

आ२श्शोःपाऽ२३४या॥ सामदाइरोनजाऽ३१उवाऽ२३। गृऽ२३४वीः॥ आच्छाकोऽ२३४शाम्॥

मधाऽ३१उवाऽ२३॥ श्चूऽ२३४ताम्॥

(दी. ३। प. १०। मा. १०) २० (णौ।९७३)

(५१४।२) ॥ अग्नेर्वैश्वानरस्य साम। अग्निर्बृहती सोमः॥

प्रसोमदेववी। तयोऽ२३४हाइ॥ सिन्धुर्नपिप्येअ। णसोऽ२३४हाइ॥ आ२श्शाओऽ२३४वा।

पायाओऽ२३४वा॥ सामदिरोनजा। गृऽ२३४। वीऽ६हाइ॥ आच्छाओऽ२३४वा।

कोशाओऽ२३४वा॥ मधूऽ५श्चुताम्। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १४। मा. १०) २१ (झौ।९७४)

(५१४।३) ॥ द्विहिङ्कारं वामदेव्यम्। वामदेवो बृहती सोमः॥

प्रसोमाऽ२३देववीतयाइ॥ साइन्धुर्नपिप्येअर्णसा२श्शोःपयसामदिरोनजौहोऽ३। हिम्माऽ२।

गृऽ२३वीः॥ अच्छाकोशा०मधौहोऽ३। हिम्माऽ२॥ श्रुताम्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १०। मा. ६) १२२ (ङू।९७५)

(५१४।४)

प्रसोमदेववीतये। सिन्धुः। नपाऽ३४औहोवा॥ प्येअर्णसाऽ२। हाऽ३१उवाऽ२३। ऊऽ३४पा॥

अ२श्शोऽ३ःपया। औहोवाहाइ॥ सामदिरो। नजागृविः। हाऽ३१उवाऽ२३। ऊऽ३४पा॥

अच्छाऽ३कोशम्। औहोवाहाइ॥ मधूऽ३श्चूऽ५ताऽ६५६म्॥ ऊऽ२३४५॥

(दी. ११। प. १६। मा. १०) २३ (र्कौ।९७६)

(५१४।५) ॥ निषेधः। अंगिरसो बृहती सोमः॥

प्रसोमदाइवाऽ६वीतयाइ॥ सिन्धूर्नपाइ। प्येअर्णसाऽ२। इहाऽ३॥ आ२श्शोऽ३ःपाया।

हाहोऽ२३४हा। सामदिरो। नजागृऽ२३वीः। इहाऽ३॥ आच्छाऽ३कोशाम्। हाहोऽ२३४हा॥

मधूऽ३श्चूऽ५ताऽ६५६म्॥ हेऽ२३४५॥

(दी. ५। प. १३। मा. ७) २४ (बे।९७७)

(५१५।१) ॥ सोम सामानि षट्। षण्णां सोमो बृहती सोमाश्चो॥

हाउसोमाः॥ उष्वाणऽ३ःसोतृऽ१भीऽ२ः। आधिष्णुभिरवीऽ२नाम्। आश्वौऽ३हो॥

येवहरितायाताइधाऽ१रायाऽ२॥ मन्द्रायाऽ३याऽ३४। हाओवा॥ तिधारयाऽ२३४५॥

(दी. ८। प. ८। मा. ६) १५ (डू।९७८)

(५१५।२)

सोमऊ॒ऽ३ष्वाणःसोतृभाइः॥ आधिष्णुभिरवीनाम्। आश्वयेऽ२३४वा।

हरितायातिधाऽ१राऽ३या॥ मन्द्रायाऽ२३४या॥ ताऽ२३४इधा। रया। औऽ३होवा। होऽ५इ॥

डा॥

(दी. ७। प. १०। मा. ६) २६ (ञू।९७९)

(५१५।३)

सोमउष्वाणःसोतृभिः। एऽ५। अधी॥ ष्णुभिराऽ३१उवाऽ२३। वीऽ२३४नाम्॥ आऽ२३श्वा॥

येवहरितायातिधाऽ३१उवाऽ२३। राऽ२३४या॥ माऽ२३०द्रा॥ पायातिधाऽ३१ऊवाऽ२३॥

राऽ२३४या॥

(दी. ७। प. ११। मा. ६) २७ (चू।९८०)

(५१५।४)

सोमउष्वाणःसोतृभिः। एऽ५। अधी॥ ष्णुभिरवीऽ२। नाम्। आश्वयेव। हारितायाऽ२।

ताइधारया॥ मान्द्रयायौवा॥ तीऽ२३४धा। रया। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. १४। मा. ५) २८ (झु।९८१)

(५१५।५)

सोमउष्वाणःसोतृ। भाइ। अधिष्णुभिरवी। नाम्॥ आधिष्णुभिरवीऽ२। नाम्। अश्वयेवा।

हरितायाता२३इधा। रयाऽ३१उवाऽ२३॥ माऽ२३४०द्रा॥ यायातीऽ२३४धा॥ रयाऔहोवा।

होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. १४। मा. ८) २९ (धै।९८२)

(५१५।६)

सोमउष्वाणःसोतृभिः। औऽ३होऽ३इ। आ२३४। धिष्णुभिरवीनाम्॥ आश्वयेवहरिताया।

तिधारायौ। वाओऽ२३४वा॥ मन्द्रयायातीऽ३धा॥ हिम्ऽ३स्थिहिम्ऽ३४३।

राऽ२३४योऽ६हाइ॥

(दी. ८। प. १०। मा. ८) ३० (णै।९८३)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने चतुर्दशः प्रपाठकः॥१४॥

(५१६।१)   ॥ वैष्णवे द्वे। द्वयोर्विष्णुर्बृहती सोमः॥

तवाह३सो॥ मराऽ२रणा। रण। सख्यइन्दोदिवाऽ२इदिवाइ। दिवे।

पुरूणिबभ्रोनिचरन्तिमाऽ२मवा। अव॥ परिधी३रतिताऽ२३इहाऽ२३इ। आऽ२इ। हाऽ२३४।

औहोव॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ८। प. १२। मा. ६) १ (ठू।९८४)

(५१६।२)

तवा। तवा॥ अह३सोमरारण। सख्याईऽ३०दो। दिवाऔऽ३हो। दाइवेऽ२।

पुरूणिबभ्रोनिचरन्तिमाऽ१माऽ३वा॥ पराऔऽ३हो॥ धाइ३रतितोऽ२३४वा।

आऽ५इहोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. १०। मा. ७) २ (मे।९८५)

(५१६।३)   ॥ आंगिरसानि त्रीणि। त्रयाणामंगिरसो बृहती सोमः॥

तवाह३सोमाऽ६रारणा। साख्याईऽ२३४०दो। दिवेदाऽ२३४इवे। पुरूणिबभ्रोनिचरन्तेमाम्।

आवाऽ२३४हाइ॥ पारीधाइ३रा॥ तितोऽ२३४वा। आऽ५इहोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ८। मा. ७) ३ (गे।९८६)

(५१६।४)

तवाह३सोमरौ। होऽ५रणा॥ साख्यइन्दोऽ२। दिवाऽ३४५इ। दीऽ२३४वे।

पूरूऽ२णाइवाऽ२। भ्रोनिचराऽ२। तिमाऽ३४५म्। आऽ२३४वा॥ पारीऽ२धाइ३राऽ२॥

तिता३ऽ३४५॥ ईऽ२३४ही॥

(दी. ४। प. १२। मा. ५) ४ (थु।९८७)

(५१६।५)

तवाह२सोमरारण। सख्यइन्द्रोदिवेदिवाइ॥ सख्यइन्दोदिवेदाऽ२३इवे।

पुरूणिबभ्रोनिचरन्तिमामाऽ२३वा॥ पराइधाऽ२३इ२रा॥ तिता२२३इहाऽ३४३इ।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. ८। मा. ९) ५ (बो।९८८)

(५१७।१)॥ औक्ष्णोरंध्राणि त्रीणि (स्वारम्)। त्रयाणामुक्ष्णोरन्ध्रो बृहती सोमः॥

मृज्यमानाः॥ सुहस्तियाऽ३। सामूऽ३द्राइवा। चमिन्वसाऽ३इ। रायीऽ३०पाइशा।

गंबहुलाऽ३म्। पूरूऽ२स्पृऽ२३४हाम्॥ पवमा। ना। औऽ३हो॥ भियोऽ२३४वा।

षाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. १२। मा. ७) ६ (छे।९८९)

(५१७।२)

मृज्यमानाः॥ सुहस्तायाऽ२। समुद्रेवा। चामिन्वासाऽ२३४इ। रयाऽ३४इंपिशा।

गंबहुलंपूरुस्पृहाऽ२म्॥ पवाऽ२३॥ माऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ भियाऽ२र्षसीऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ९। मा. ५) ७ (घु।९९०)

(५१७।३)

मृज्यमानाः॥ सुह। स्तिया। साऽ१मूऽ२द्राऽवाऽ२। चमि। न्वसाइ। राऽ१थीऽ२०पाइशाऽ२।

गंबहुलंपुरु। स्पृहाम्॥ पाऽ१वाऽ२मानाऽ२३॥ भाऽ२याऽ२३४औहोवा॥ षाऽ२३४सी॥

(दी. ३। प. १२। मा. ६) ८ (ठू।९९१)

(५१७।४) ॥ आग्नेयानि त्रीणि। त्रयाणामग्निर्बृहती सोमः॥

मृज्याऽ६ए॥ मानःसुहस्तियाऔऽ३हो। समुद्रेवाचमिन्वसाऔऽ३हो।

रयिंपिषंगंबहुलंपुरुस्पृहाऔऽ३हो॥ पवमाऽ२३नाऽ३॥ भियोऽ२३४वा। षाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ७। मा. ५) ९ (ठु।९९२)

(५१७।५)

मृज्यमानःसुहस्त्यो। वाहाइ॥ समुद्राइवा। चमीऽ२न्वाऽ२३४सी। रयोऽ३४इम्पिशा।

गंबहुलम्। पूरुस्पृहाऽ२३४म्॥ पवाऽ३४मानाऽ३॥ भियोऽ२३४वा। षाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. १०। मा. ६) १० (ञू।९९३)

(५१७।६)

मृज्यमानाऽ५ःसुहस्तिया॥ समूऽ२द्राइवाऽ२। चमाऽ२इन्वासीऽ२।

रयिंपिशंगंबहुलंपुरुस्पृहाऔऽ३हो॥ पवमाऽ२३नाऽ३॥ भियोऽ२३४वा। षाऽ५सोऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ७। मा. ४) ११ (खी।९९४)

(५१७।७) ॥ ऐडमौक्ष्णोरन्ध्रम्। उक्ष्णोरन्ध्रो बृहती सोमः॥

मृज्यमानःसुहस्त्या। समुद्रेवोवा। चामिन्वसि। रायिंपिशाऽ३। हाऽ३हा। गंबहुलंपुरुस्पृहम्॥

पवमानाऽ३। हाऽ३हा॥ भियर्षाऽ२३साऽ३४३इ॥ ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ३) १२ (टि।९९४)

(५१७।८) ॥ वाजजित्। प्रजापतिर्बृहती सोमः॥

मृज्यमानःसुहा॥ स्तियाऽ२। समूऽ२हो। द्रेवाऽ२हो। चामिन्वसाइ। रयाऽ२इ३होइ।

पिशाऽ२हो। गम्बहुलाम्। पूरुस्पृहाम्॥ पवाऽ२हो। मानाऽ२हो॥ भीयर्षसाऽ३१उवाऽ२३॥

वाजीजिगीऽ३वा३ऽ१॥

(दी. ८। प. १३। मा. ६) १३ (डू।११६)

(५१८।१) ॥ वैश्वदेवे द्वे। द्वयोर्विश्वेदेवा बृहती सोमः॥

हाऽ३हाइ। अभिसोमासऽ३आयाऽ१वाऽ२३ः॥ हाऽ३हाइ। पवन्तेमदिऽ३याम्माऽ१दाऽ२३म्॥

हाऽ३हाइ। समुद्रस्याधिविष्टपेमऽ३नाइषाऽ१इणाऽ२३ः॥ हाऽ३हाइ।

मत्सरासोमऽ३दाच्यूऽ१ताऽ२३ः। हाऽ३हाऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ११। मा. १३) १४ (चि।११७)

(५१८।२)

आभीसोमा॥ सआऽ३१उवाऽ२३। याऽ२३४वाः॥ पावन्ताइमा॥ दियाऽ३१उवाऽ२३।

माऽ२३४दाम्॥ सामुद्रस्या॥ धिविष्टापेमनाऽ३१उवायेऽ३। षीऽ२३४णाः॥ मात्सारासाः॥

मदाऽ३१उवाऽ२३॥ च्यूऽ२३४ताः॥

(दी. १। प. १२। मा. ११) १५ (खा।११८)

(५१८।३) ॥ इन्द्रसामनी द्वे। द्वयोरिन्द्रो बृहती सोमः॥

अभिसोऽ३मासआयवाः॥ पवन्तेमदियम्म। दा। औऽ३हो। आऔऽ३हो॥

समुद्रस्याधिविष्टपेमनीषि। णाऽ। औऽ३हो। आऔऽ३हो। मत्सरासोमदच्यु। ताऽ।

औऽ३हो। आऔऽ३होऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. १५। मा. ६) १६ (णू।९९९)

(५१८।४)

अभिसोमासआ। होऽ५यवाः॥ पवन्तेमद्यम्मदम्पवन्तेम। दियाꣳहोइ। माऽ२३दाम्॥

समुद्रस्याधिविष्टपेमनीषिणाः। मनाहोइ। षाऽ२३इणाः॥ मत्सरासोमदच्यूताः। मदाहोइ।

च्यूऽ२३ताऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १३। मा. १२) १७ (बा।१०००)

(५१८।५) ॥ स्वःपृष्ठमांगिरसम्। अंगिरसो बृहती सोमः॥

अभाऽ२इसोमाऽ३४। औहोऽ५सआयवाः॥ पवाऽ२०तेमाऽ३४। औहोऽ५दियम्मदाम्।

समूऽ२द्रस्याऽ३४। औहोऽ५धिविष्टपाइ। ओयेऽ३। माऽ२नाऽ२३४औहोवा। षीऽ२३४णाः।

ऊऽ२३४पा। ऊऽ२३४पा॥ मत्सरासोऽ२३॥ माऽ२दाऽ२३४औहोवा॥ च्यूऽ२३४ताः॥

(दी. ११। प. १४। मा. ९) १८ (घो।१००१)

(५१८।६) ॥ इन्द्रसामानि त्रीणि। त्रयाणामिन्द्रो बृहती सोमः॥

औहोवा। अभिसामासआयवः॥ औहोवा। पवाऽ२। तेमाऽ३ओऽ५वाऽ६५६। दियम्मदम्।

समूऽ२। द्रस्याऽ३ओऽ५वाऽ६५६। धिविष्टपेऽ२मनीषिणाऽ२ः। औऽ३होऽ३१इ॥ मत्साऽ२।

रासाऽ३ओऽ५वाऽ६५६॥ मदच्युताऽ२३४५ः॥

(दी. १२। प. १३। मा. ९) १९ (जो।१००२)

(४१८।७)

अभिसोमासआयाऽ६वाः॥ पवाऽ२। तेमाऽ३ओऽ५वाऽ६५६। दियंमदम्। समूऽ२।
द्रस्याऽ३ओऽ५वाऽ६५६। धिविष्टपेऽ२मनीषिणाऽ२ः॥ मत्साऽ२॥ रासाऽ३ओऽ५वाऽ६५६॥
मदच्युताऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. १०। मा. ८) २० (णे।१००३)

(४१८।८)

अभिसोमसआयाऽ६वाः॥ पवन्ताइमा। दियाऽ२०माऽ२३४दाम्। समुद्रस्या। धिविष्टपाइ।
मनाऽ३इषाइणाः॥ मात्सरासोऽ२३॥ माऽ२दाऽ२३४औहोवा॥ च्यूऽ२३४ताः॥

(दी. ६। प. ९। मा. १०) २१ (घौ।१००४)

(५१९।१) ॥ सोमसाम। सोमो बृहती सोमः॥

पुनानःसोमजागृविरव्याः॥ वारेःपारिप्रियाऽ२ः। त्वंविप्रोअभवोङ्गाइराऽ२३४। स्तमाऽ३॥
माध्वायज्ञाऽ२३म्॥ माऽ२इमाऽ२३४औहोवा॥ क्षाऽ२३४णाः॥

(दी. १०। प. ७। मा. ८) २२ (फे।१००५)

(५२०।१) ॥ सोमसाम। सोमो बृहतीन्द्रो मरुत्वान्॥

इन्द्रायपा॥ वताऽ२इमादाऽ२ः। सोमोमरुत्वताऽ२इसूताऽ२ः। स। हास्रधारः।
अतिअव्यमाऽ२र्षातीऽ२॥ तमाऽ२इमार्जाऽ२॥ तिआयाऽ२३वाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. १०) २३ (मौ।१००६)

(५२०।२) ॥ स्वः पृष्ठमांगिरसम्। अंगिरसो बृहतीन्द्रो मर्त्वान्॥

इन्द्रायपा॥ वतेमदाः। सोमोमारूऽ२। त्वतेहोऽ२इ। सूताऽ२ः। स। हास्रधारः। अतिअव्यमा।

षाताओऽ२३४वा। ऊऽ२३४पा॥ तमीहोऽ२इ। मार्जाऽ२॥ तिआयाऽ२३वाऽ३४३ः।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १५। मा. १०) २४ (ङौ।१००७)

(५२०।३) ॥ सोमसाम। सोमो बृहतीन्द्रो मारुत्वान्॥

इन्द्रायाऽ३पावताइमदाः॥ सोमोमर्ध्वताऽ१इसूऽ३ताः। स। सहस्रधारः। अतिअव्यमाऽ३।

षाती॥ तमाऔऽ३होऽ३इ। मार्जा॥ ताऽ२याऽ२३४औहोवा॥ याऽ२३४वाः॥

(दी. ६। प. १०। मा. १०) २५ (ङौ।१००८)

(५२१।१) ॥ सोमसाम। देवाः देवताः सोमश्च॥

पवस्ववाजसा। इहा॥ ताऽ२३४माः। अभिविश्वानिवारिया। त्वꣳसाऽ२मूऽ२३४औहोवा।

द्रःप्रथमेविधर्मन्॥ दाइवायेऽ३॥ भ्याऽ२ःसोऽ२३४औहोवा॥ ममत्सराऽ१ः॥

(दी. १०। प. ९। मा. ६) २६ (भू।१००९)

(५२२।१) ॥ पवित्रम्। आदित्योबृहतीमरुत्वान्त्सोमः॥

पवमानाअसृक्षतपवाइ॥ त्रामतिधारयामरुत्वन्तोमत्सराइन्द्रीऽ३याः॥ हयाः॥ माऽ२३इधाम्॥

अभायेऽ३। प्राऽ२याऽ२३४औहोवा॥ सीऽ२३४चा॥

(दी. ८। प. ७। मा. ८) २७ (ठै।१०१०)

॥ त्रिसप्तति पञ्चमः, पञ्चमः खण्डः॥५॥ दशतिः॥३॥

॥ इति बार्हत्म्॥

(५२३।१)   ॥ औशनानि पञ्च। उशनास्त्रिष्टुबश्वः अग्निर्वा॥

ओइप्रतु। इहाऽ३१। द्रवा। परिकोऽ३। शन्निषीदा॥ ओइनृभिः। इहाऽ३१। पुना।
नोऽ३अभि। वाजमर्षा॥ ओअश्वम्। इहाऽ३१। नत्वा। वाऽ३जिनम्। मर्जयन्ताः॥
ओअच्छ। इहाऽ३१। बर्हाइः। रशना। भाऽ३४३इः। नाऽ३याऽ५०ताऽ६५६॥

(दी. १। प. २१। मा. १४) २८ (की।१०११)

(५२३।२)

प्रतु। एप्रतू। द्रवा। द्रवा। परिकोऽ३। शन्निषीदा॥ नृभिः। एनृभीः। पुना। पुना। नोऽ३अभि।
वाजमर्षा॥ अश्वम्। एअश्वाम्। नत्वा। नत्वा। वाऽ३जिनम्। मर्जयन्ताः॥ अच्छ। एअच्छा।
बर्हाइ। बर्हाइः। रशनाभिः। नयेऽ३४। हियाऽ६हाउवा॥ ताऽ२३४५इ॥

(दी. १। प. २६। मा. १५) २९ (कु।१०१२)

(५२३।३)   ॥ जानस्याभीवर्तौ द्वौ॥

प्रतुद्रा॥ वापरिकोशाम्। निषीऽ३दा। साइदा। औहोइ। औहोऽ३वा। नृभिःपुनानोअभिवा।
जमाऽ२३र्षा। आर्षा। औहोइ। औहोऽ३वा। अश्वन्नत्वावाजिनम्मा। जयाऽ२३०ताः। यान्ता।
औहोइ। औहोऽ३वा॥ अच्छाबर्हाइः॥ रशनाभिः। नयेऽ३४। हियाऽ६हाउवा॥
ताऽ२३४५इ॥

(दी. १३। प. २१। मा. १२) ३० (टा।१०१३)

(५२३।४)

हाओऽ६हा। उहुवाऽ३४। ओऽ६हा। प्रतुद्रवा। परिकोऽ३। शन्निषीदा॥ नृभाःपुना।

नोऽ३अभि। वाजमर्षा॥ अश्वन्नत्वा। वाऽ३जिनम्। मर्जयन्ताः॥ हाओऽ६हा। उहुवाऽ३४।

ओऽ६हा। अच्छाबर्हाइः। रशना। भाऽ३४३इः। नाऽ३याऽ५०ताऽ६५६इ॥

(दी. ४। प. ११। मा. ११) ३१ (धा।१०१४)

(५२३।५) ॥ त्रिष्टुवौशनम्॥

प्रातू॥ द्रवापरिकोशाम्। निषीऽ३दा। नृभाइःपुना। नोऽ६अभि। वाजमर्षा॥

अश्वन्नत्वावाजिनम्मा। जयाऽ२३०ताः। अच्छाबर्हाइः। रशना। भाऽ३४३इः।

नाऽ३याऽ५०ताऽ६५६इ॥

(दी. ५। प. १२। मा. ९) ३२ (फो।१०१५)

(५२४।१)॥ वाराहाणि चत्वारि (वाजसनी द्वे)। चतुर्णां वराहस्त्रिष्टुब्देववराहो॥

प्राऽ॥ कावियाऽ२म्। उशनेवाऽ२। ब्रुवाऽ२३णाः। देवादवाऽ२। नाञ्जनिमाऽ२। विवाऽ२३क्ती॥

महिव्राताऽ२ः। शुचिबन्धूऽ२ः। पवाऽ२३काः॥ पदावाराऽ२। होअभियाऽ२इ।

तिराऽ३४औहोवा॥ भाऽ२३४५न्॥

(दी. ८। प. १४। मा. ९) ३३ (ढो।१०१६)

(५२४।२)

प्रकावियाऽ२म्। उशनेवाऽ२। ब्रुवाणाऽ२ः। देवोदेवाऽ२। नाञ्जनिमाऽ२। विवाक्तीऽ२॥

महिव्राताऽ२ः। शुचिबन्धूऽ२ः। पवाकाऽ२ः॥ पदावाराऽ२। होऽ२। भियाऽ२३४औहोवा॥

तिरेभाऽ२३४५न्॥

(दी. ८। प. १३। मा. ७) ३४ (डे।१०१७)

(५२४।३)

प्रकाव्यमुशनेवब्रूऽ३वाणो। देऽ२३४वाः॥ देवानाञ्जनिमाविऽ३वाक्ती। माऽ२३४ही॥

व्रतःशुचिबन्धुःपऽ३वाकः। पाऽ२३४दा॥ वराहोअभ्येतिराऽ२३। हाउवाऽ३॥ भाऽ२३४५न्॥

(दी. ९। प. ९। मा. ५) ३५ (धु।१०१८)

(५२४।४)

हाउहाउ। हुप्। प्रकावियाम्। उशने। वब्रुवाणाः॥ देवोदेवा। नाऽ३०जनि। माविवक्ती॥

महिव्रताः। शुचिबाऽ३। धुःपवाकाः॥ हाउहाउ। हुप्। पदावरा। होऽ३अभि। आऽ३४३इ।

तीऽ३राऽ५इभाऽ६५६न्॥

(दी. १०। प. १७। मा. १४) ३६ (फी।१०१९)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने पञ्चदशस्यार्धः प्रपाठकः॥

(५२५।१) ॥ संक्रोशास्त्रयः। त्रयाणामंगिरसस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा॥

होइ। होऽ। होऽ३होइ। तिस्रोवाचाः। ईऽ३रय। तिप्रवह्नीः॥१॥ होइयाऽ२३होइ।

तिस्रोवाचाः। ईऽ३रय। तिप्रवह्नीः॥२॥ आ। होइयाऽ२३होइ। तिस्रोवाचाः। ईऽ३रय।

तिप्रवह्नीः॥३॥

॥ सामसुरसी द्वे। द्वयोः समसुरस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा॥

होइहा। इहोइहा। औऽ३होऽ३१इ। इहा। तिस्रोवाचाः। ईऽ३रय। तिप्रवह्नीः॥४॥ होइया।

इयोइया। औऽ३होऽ३१इ। इया। तिस्रोवाचाः। ईऽ३रय। तिप्रवह्नीः॥५॥

(दी. ११। प. २१। मा. २२) १ (घा।१०२०)

(५२५।२) ॥ वेणोर्विशाले द्वे। वेणुस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा॥

इहोइह। इहोहाऽ३हो। वाहोइह। तिस्रोवाचाः। ईऽ३रय। तिप्रवह्नीः॥६॥ इहोवाऽ५।

इहोवाऽ२३। ईऽ३४हहाइ। ईऽ५। इहा। तिस्रोवाचाः। ईऽ३रय। तिप्रवह्नीः॥७॥

॥ तन्त्रातन्त्रे द्वे। गोतमस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा॥

इहोवाऽ२३। ईऽ३४इहाइ। इहा। तिस्रोवाचाः। ईऽ३रय। तिप्रवह्नीः॥८॥ आऔऽ३हो।

आऔऽ३होऽ३४। औहोवा। हाऽ३होइ। तिस्रोवाचाः। ईऽ३रय। तिप्रवह्नीः॥९॥

॥ अगस्त्यस्य यमिके द्वे। द्वयोरगस्त्यस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा॥

आ। औऽ३होवाहाऽ३४। औहोवा। तिस्रोवाचाः। ईऽ३रय। तिप्रवह्नीः॥१०॥

(दी. १९। प. ३३। मा. १८) २ (दै।१०२१)

ओहाऽ३। ओहाओहा। ऋतस्यधाइ। तीऽ३०ब्रह्म। णोमनीषाम्॥११॥

॥ वारवंतीये द्वे। द्वयोरिन्द्रस्त्रिष्टुप्सोमः सूर्यो वा॥

हहहोइ। हहहाहहोइ। गावोयन्ताइ। गोऽ३पतिम्। पृच्छमानाः॥१२॥ इहहोइ।

इहहाहहोइ। सोमंयन्ताइ। मतयः। वाऽ३४३। वाऽ३श्राऽ५नाऽ६५६ः॥१३॥

(दी. ६। प. १६। मा. १३) ३ (कि।१०२२)

(५२६।१)॥ अगस्त्यस्य यमिके द्वे, अष्टौ वासिष्ठानि। उत्तरयोर्विश्वेदेवाः षण्णां

वसिष्ठस्त्रिष्टुब्देवाः॥

अस्याऽ३४औहोवा। प्रेषा। हेऽ३मना। पूयमानाः॥१॥ उहुवाइ। अस्याऽ३४औहोवा। प्रेषा।

हेऽ३मना। पूयमानाः॥२॥ हाइ। उहुवा। देवाऽ३४औहोवा। देवाइ। भीऽ३ःसम।

पृक्तरसाम्॥३॥ हाउ। होइ। सुताऽ३४औहोवा। पवाइ। त्राऽ३०परि। एतिरेभान्॥४॥ हा।

हाऔहोइ। मिताऽ३४औहोवा। वसा। ह्माऽ३पशु। मन्तिहोता। पशु। माऽ३४३।

तीऽ३होऽ५ताऽ६५६॥५॥

(दी. १७। प. ३०। मा. १७) ४ (ञे।१०२३)

(५२६।२)

ओहोवाहाऽ३होइ। इहा। अस्यप्रेषा। हेऽ३मना। पूयमाऽनाः॥ देवोदेवाइ। भीऽ३ःसम।

पृक्तरसाम॥ सुतःपवाइ। त्राऽ३०परि। एतिरेभान्॥ औहोवाहाऽ३होइ। इहा। मितेवसा।

ह्माऽ३पशु। माऽ३४३। तीऽ३होऽ५ताऽ६५६॥६॥

(दी. १२। प. १७। मा. ७) ५ (छे।१०२४)

(५२७।१) ॥ कालकाक्रन्दौ द्वौ॥

सोमःपवतेजनितामऽ३ताइनाऽ२म्॥ जनितादिवोजनितापृऽ३थाइव्याऽ२ः॥ जनिताग्रेर्जनितासू।

रियाऽ२३स्या॥ जनितेन्द्रा। स्याऽ३जनि। तोऽ३४३। ताऽ३वाऽ५इष्णोऽ६५६ः॥७॥

(दी. १०। प. ८। मा. ६) ६ (बू।१०२५)

(५२७।२)

सोमःपवतेजनिता। एऽ३। औऽ३होऽ५वा॥ पाताऽ२३४५इनाऽ६५६म्।

जनितादिवोजनितापृथिव्याः॥ जनाऽ२इताऽ२३४ग्नेः॥ जनिता। सूऽ३४३।

रीऽ३याऽ५स्याऽ६५६॥ जनितेन्द्रस्यजनितोतविष्णोऽ२३४५ः॥८॥ (इत्यष्टौ वासिष्ठानि)

(दी. १०। प. १०। मा. ६) ७ (मू।१०२६)

(५२७।३) ॥ जनित्रे द्वे। द्वयोर्वसिष्ठस्त्रिष्टुब्विश्वेदेवाः॥

हाउजनत्। [त्रिः]। जनद्धाउ। [त्रिः]। होइ। जनत्। [द्वे द्विः]। होइ। जनात्। सोमःपवा।

तेऽ३जनि। तामतीनाम्॥ जनितादाइ। वोऽ३जनि। तापृथिव्याः॥ जनिताग्नाइः। जनिता।

सूरियस्या॥ हाउजनत्। [त्रिः]। जनद्धाउ। [त्रिः]। होइ। जनत्। [द्वे द्विः]। होइ। जनात्।

जनितेन्द्रा। स्याऽ३जनि। तोऽ३४३। ताऽ३वाऽ५इष्णोऽ६५६ः॥

(दी. ११। प. ३७। मा. ३७) ८ (खे।१०२७)

(५२७।४)

जनद्धाउ। [त्रिः]। जनदाउ। [त्रिः]। जनत्। होइ। [द्वे त्रिः]। सोमःपवा। तेऽ३जनि।

तामतीनाम्। जनितादाइ। वोऽ३जनि। तापृथिव्याः॥ जनिताग्नाइः। जनिता। सूरियस्या॥

जनद्धाउ। [त्रिः]। जनदाउ। [त्रिः]। जनत्। होइ। [द्वे त्रिः]। जनित्रेन्द्रा। स्याऽ३जनि।

तोऽ३४३। ताऽ३वाऽ५इष्णोऽ६५६ः॥

(दी. ५। प. ३७। मा. ३१) ९ (फा।१०२८)

(५२८।१) ॥ अंगिरसां व्रतोपोहः, (सम्पा)। वसिष्ठस्त्रिष्टुब्वरुणः॥

ओऽ३हाइ। ओऽ३हा। ओहा। इयाऽ२। ओऽ३हाऽ३ए। अभित्रिपा। ष्ठाऽ३०वृष।

णंवयोधाम्॥ अंगोषिणाम्। अवाव। श्नन्तवाणीः॥ वनावसा। नोऽ३वरु। णोनसिन्धूः॥

ओऽ३हाइ। ओऽ३हा। ओहा। इयाऽ२। ओऽ३हाऽ३ए। विरत्नधाः। दयते। वाऽ३४३।

रीऽ३याऽ५णाऽ६५६इ॥

(दी. ६। प. २३। मा. १०) १० (गौ।१०२९)

(५२९।१) ॥ सम्पा वैयश्वम्। व्यश्वस्त्रिष्टुप्सूर्यः॥

हो। होइ। अक्रान्त्समुद्रःप्रथमेविध। मान्॥ हो। होइ। जनयन्प्रजाभुवनस्यगो। पाः॥ हो।

होइ। वृषापवित्रेअधिसानोऽ२अ। व्याइ॥ हो। हो। बृहत्सोमोऽ२वावृधेस्वानोअ। द्रा।

औऽ३होवाहाउवाऽ३॥ एऽ३। स्वानोअ। द्रीऽ२३४५॥

(दी. १८। प. २०। मा. १२) ११ (णा।१०३०)

(५३०।१) ॥ सोम सामनी द्वे। द्वयोः सोमः त्रिष्टुप्सोमः॥

कानी। क्रा०तीऽ२क्रा०तीऽ२। हरिरासृज्यमाऽ२३नाऽ३ः॥ साइदान्। वानाऽ२वानाऽ२।

स्यजठरेपुनाऽ२३नाऽ३ः॥ नृभीः। याताऽ२याताऽ२ः। कृणुतेनिर्णिजाऽ२३०गाइम्॥ आताः।

मातीऽ२म्मातीऽ२म्। जनयताऽ२३। स्वाऽ२धाऽ२३४औहोवा॥ भीऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. १४। मा. ११) १२ (भा।१०३१)

(५३०।२)

कनिक्रन्तिहा। होइ। हरिरासृज्य। माऽ२३४नाः॥ हाहोइ। सीदन्वनस्यजठरेपुनाऽ२३नाः॥

हाहोइ। नृभिर्यतःकृणुतेनिर्णिजाऽ२३०गाम्॥ हाहोइ। अतोमताइम्। जनयताऽ२३॥

स्वाऽ२धाऽ२३४औहोवा। भीऽ२३४५ः॥

(दी. ११। प. १३। मा. ११) १३ (ग।१०३२)

(५३१।१) ॥ ऐषम्। इषस्त्रिष्टुबिन्द्रसोमौ॥

एषाएषाः॥ स्यताऽ३१२३४इ। मधुमाꣳइन्द्रसोमः। वृषावृषाऽ६ए। वृष्णाऽ३१२३४ः।

परिपवित्रेअक्षाः॥ सहसहाऽ६ए। स्रदाऽ३१२३४ः। शतदाभूरिदावा॥ शश्वच्छश्वाऽ६दे।

तमाऽ३१२३४म्। बर्हिरावाजियेऽ५। हियाऽ६हाउवा॥ स्थाऽ२३४५त्॥

(दी. ११। प. १४। मा. १४) १४ (घी।१०३३)

(४३२।१) ॥ माधुच्छन्दसम्। मधुच्छन्दास्त्रिष्टुप्सोमः॥

हाओऽ२३४हाइ। इहाऽ३१। पवस्वसो। माऽ३मधु। माꣳऋतावा॥ अपोवसा। नोऽ३अधि।

सानोअव्याइ॥ अवद्रोणा। नीऽ३घृत। वन्तिरोहा॥ हाओऽ२३४हाइ। इहाऽ३१। मदिन्तमो।

मत्सरः। आऽ३४३इ। द्राऽ३पाऽ५नाऽ६५६ः॥

(दी. ३। प. १७। मा. ११) १५ (ठ।१०३४)

चतुर्विंशतिह् षष्ठः, षष्ठः खण्डः॥६॥ दशतिः॥४॥

(५३३।१) ॥ कुत्सस्याधिरथीयानि त्रीणि। त्रयाणां कुत्सस्त्रिष्टुप्सोमः॥

होऽ४वा। उहुवाऽ३। होवा। प्रसेनानाइः। शूरोआऽ३। ग्राइरथानाम्॥ गव्यन्नेताइ।

हर्षताऽ३इ। अस्यसेना॥ भद्रान्कृण्वान्। इन्द्रहाऽ३। वान्त्सखिभ्याः॥ आसोमोवा।

स्त्राऽ३रभ। सानिदत्ताइ। होऽ४वा। उहुवाऽ३। होवाऽ६। हाउवा॥

(दी. ९। प. १९। मा. ११) १६ (धा।१०३५)

(५३३।२)

औहोऽ३वाऽ२३४५। प्रसेनानाइः। शूरोआऽ३। ग्राइरथानाम्॥ गव्यन्नेताइ। हर्षताऽ३इ।

अस्यसेना॥ भद्रान्कृण्वान्। इन्द्रहाऽ३। वान्त्सखिभ्याः॥ औहोऽ३वाऽ२३४५। आसोमोवा।

स्त्राऽ३रभ। साऽ३४३। नीऽ३दाऽ५त्ताऽ६५६इ॥

(दी. ११। प. १५। मा. १०) १७ (ङौ।१०३६)

(५३३।६)

ओहोऽ३वाऽ३४५। प्रसेनानाइः। शूरोआऽ३। ग्राइरथानाम्॥ गव्यन्नेताइ। हर्षताऽ३इ।

अस्यसेना॥ भद्रान्कृन्वान्। इन्द्रहाऽ३। वान्त्सखिभ्याः॥ ओहोऽ३वाऽ३४५। आसोमोवा।

स्त्राऽ३रभ। साऽ३४३। नीऽ३दाऽ५॥ ताऽ२३४५इ॥

(दी. ११। प. १६। मा. १०) १८ (कौ।१०३७)

(५३४।१) ॥ वैश्वज्योतिषानि त्रीणि। त्रयाणां विश्वज्योतिस्त्रिष्टुप्सूर्यः॥

हाउहोवाऽ३हाइ। प्रतेधारामधुमऽ३ताइरसृगाऽ२३४५न्॥ हाउहोवाऽ३होइ।

वारंयत्पूतोअतीऽ३याइषिआव्याऽ२३४५म्॥ हाउहोवाऽ३हाइ।

पवमानपवसेऽ३धामगोनाऽ२३४५म्॥ हाउहोवाऽ३हाइ।

जनयन्त्सूर्यमऽ३पाइन्वोअर्काऽ२३४५इः। हाउहोवाऽ३हाउ॥ वाऽ२३४५॥

(दी. २०। प. १०। मा. २१) १९ (म।१०३८)

(५३५।१) ॥ अस्य देवा देवता॥

प्रगायता। अभिय। चामदेवान्॥ सोमꣳहिनो। ताऽ३मह। तेधनाया॥ स्वादुःपवा। ताऽ३मति।

वारमव्याम्॥ आसीदतू। कलशम्। दाऽ३४३इ। वाऽ३आऽ५इन्दूऽ६५६ः॥

(दी. ५। प. १३। मा. ७) २० (बे।१०३९)

(५३६।१) ॥ इन्द्रोऽस्य देवता॥

हाउहोवाऽ३हाइ। प्रहिन्वानोजनितारोऽ३४३दसीयोः॥ हाउहोवाऽ३हाइ।

रथोनवाजꣳसनिषाऽ३४३नयासीत्॥ हाउहोवाऽ३हाइ। इन्द्रङ्गच्छन्नायुधासाऽ३४३ꣳशिशानः॥

हाउहोवाऽ३हाइ। विश्वावसुहस्तयोराऽ३४३दधानः। दधाऽ५नाउ॥ वा॥

(दी. २३। प. १०। मा. १३) २१ (णि।१०४०)

(५३७।१) ॥ वाचस्सामनी द्वे। द्वयोः वाक्त्रिष्टुप्वाक्सोमौ॥

तक्षद्यदी। होऽ२३४५इ॥ मनसोवेनतः। वाऽ२३४५क्॥ ज्येष्ठस्यधा। होऽ२३४५॥

मन्द्युक्षोरनी। काऽ२३४५इ॥ आदीमायन्। होऽ२३४५इ॥ वरमावावशा। नाऽ२३४५ः॥

जुष्टम्पतिम्। होऽ२३४५इ॥ कलशेगाऽ५वः। इ। दाउ॥ वा॥

(दी. १३। प. १८। मा. ११) २२ (ङ।१०४१)

(५३७।२)

२ १ २ ^ ३ ४ र ३र ४ ५ ३ १ १ १ ३र १ २ ^ ४ ३र ४ ५र
तक्षद्यदाऽ३१२३४इ। मनसोवेनतः। वाऽ२३४५क्॥ ज्येष्ठस्यधाऽ३१२३४। मन्द्युक्षोरनी।
३ १ १ १ ३र १ र २ ३ ४ ३र ४र ५ र ३ १ १ १
काऽ२३४५इ॥ आदाइमायाऽ३१२३४न्। वरमावावशा। नाऽ२३४५ः॥
२ १ २ ^ ४ र ऽ
जुष्टम्पताऽ३१२३४इम्। कलशेगाऽ५वः। इ। दाउ॥ वा॥

(दी. ११। प. १४। मा. ११) २३ (घा।१०४२)

(५३८।१) ॥ दाशस्पत्ये द्वे। द्वयोर्दशस्पतिस्त्रिष्टुप्सूर्यः॥

४ ५ १ र २ १ २ १ १र र र २ १ २ १
साकाम्॥ उक्षोमर्जयन्तस्वसाऽ२३राः। दाशाऽ२। धीरस्यधीतयोधनूऽ२३त्रीः॥ हारीऽ२ः।
१ र अ २ १ १ र र २ ^ ३ १ १ १
पर्यद्रवञ्जाःसूरियाऽ२३स्या॥ द्रोणाऽ२म्। ननक्षेअत्योनवाऽ२३। हाउवाऽ३॥ जीऽ२३४५॥

(दी. ७। प. १०। मा. ७) २४ (ञे।१०४३)

(५३८।२)

५र ५ २ ^ ५ ४ ५र र ५ २ ^
साकमुक्षाऽ६ए॥ एऽ३१२३४। मर्जयन्तस्वसारः। दशधीराऽ६ए। एऽ३१२३४।
५ र ४ ५र ४ ५ र ५ २ ^ ५ ४र र ५ ५र ५ २ ^
स्यधीतयोधनुत्रीः॥ हरिःपर्याऽ६ए। एऽ३१२३४। द्रवज्ञाःसूर्यस्य॥ द्रोणन्ननाऽ६ए। एऽ३१२३४।
र ५र ४ ५ ५ ३ १ १ १
क्षेअत्योनवाऽ६ए। हाउवा॥ जीऽ२३४५॥

(दी. ११। प. १४। मा. ८) २५ (चे।१०४४)

(५३९।१) ॥ कश्यपस्य शोभनम्। कश्यपस्त्रिष्टुप्सूर्यः॥

४ ५ ४ १ ब्रि १ ब्रि १ २ र १ र २^ ३ ४ ५
अधियदा॥ स्माइन्वाऽ२जिनीऽ२वशु। भाः। स्पर्द्धन्तेधियःसू। राइनविशाः॥
२ १र र अ २ १ २ १ २ ^
अपोवृणानःपवताइ। कवीऽ२३यान्॥ व्रजन्न। पाऽ। शुर्वद्ध। नाऽ३४३।
२ ^ ४ ॥
याऽ३माऽ५न्माऽ६५६॥

(दी. ६। प. १२। मा. ६) २६ (खू।१०४५)

(५४०।१)॥ दाशस्पत्यानि चत्वारि। चतुर्णां दशस्पतिस्त्रिष्टुप्सूर्यसोमेन्द्राः। सोमेन्द्रौ वा॥

इन्दुऽ३र्वाजीऽ२। पवतेगोनियोघाः॥ इन्द्राइसोऽ२३४माः। साहइन्वन्मदाया॥

हन्ताइराऽ२३४क्षाः। बाधतेपर्यरातिम्॥ वराइवाऽ२३४स्कृ। ण्वन्वृजानाऽ२३। स्याऽ।

राऽ३जौवाओऽ२३४वा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १२। मा. १०) २७ (थौ।१०४६)

(५४०।२)

इन्दुर्वाजीपवतौ। हौहोवाहाइ॥ गोनियोघौ। वाओऽ२३४वा। इन्द्रेऽ२सोमाऽ२ःसहइ।

न्वान्मदायौ। वाओऽ२३४वा॥ हन्तिरक्षोबाधते। पार्यरातौ। वाओऽ२३४वा॥

वरिवस्कृण्वन्वृजनाऽ३। स्याऽ। राऽ३जौवाओऽ२३४वा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १५। मा. ७) २८ (मे।१०४७)

(५४०।३)

इन्दुरौहोवाहाईया॥ वाजाउ। वाऽ३। हाउवा। पवतेगोनियोघाउ। वाऽ३। हाउवा।

इन्द्राइसोमः। सहइन्वाउ। वाऽ३। हाउवाऽ३। माऽ२दाऽ२३४औहोवा। याऽ२३४५॥

हन्ताइरक्षो। बाधाताइपाउ। वाऽ३। हाउवाऽ३॥ र्याऽ२राऽ२३४औहोवा। तीऽ२३४५म्॥

वराइवस्कृ। ण्वन्वृजनाउ। वाऽ३। हाउवाऽ३॥ स्याऽ२राऽ२३४औहोवा॥ जाऽ२३४५॥

(दी. १४। प. २५। मा. २१) २९ (ना।१०४८)

(५४०।४)

५ र र र र ४ ५ र र ४ ५ र र र ४ ५
इन्दुर्वाजीपवतेगोनियोधाः॥ इन्द्रेसोमःसहइन्वन्मदाया॥ हन्तिरक्षोबाधतेपर्यरातीम्॥

४ ५ ३र २ ५र र २^ २ १र ३ १ १ १
वरिवस्कृण्वन्वृजनस्यराजा। राजाऽ३४औहोवा॥ एऽ३। स्यराजाऽ२३४५॥

(दी. १३। प. ७। मा. ४) ३० (ठी।१०४९)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने पञ्चदशः प्रपाठकः॥१५॥

(५४१।१) ॥ श्नौष्टानि त्रीणि। त्रयाणां श्नुष्टिस्त्रिष्टुप्सोमः॥

औहोहाइ। अयोहाइ॥ पवापवस्वैनावसूऽ२३नी। औऽ३होइ। इहा। ईऽ३या।

माश्वश्वत्वइन्दोस्रासिप्रधाऽ२३न्वा। औऽ३होइ। इहा। ईऽ३स्या॥

ब्रध्नश्चिद्यस्यवातोनजूऽ२३तीम्। औऽ३होइ। इहा। ईऽ३या॥

पुरुमेधाश्चित्तकवेनराऽ२३०धात्। औऽ३होइ। इहा। ईऽ२। याऽ२३४। औहोवा॥ एऽ३।

दीदिहीऽ१॥

(दी. १४। प. २२। मा. ९) १ (थो।१०५०)

(५४१।२)

अयोहाइ। पवोहाइ॥ पवस्वैनावसूऽ२३नी। इहोइयाऽ३। ईऽ३या।

माश्वश्वत्वइन्दोसरसिप्रधाऽ२३न्वा। इहोइयाऽ३। ईऽ३या॥ ब्रध्नश्चिद्यस्यवातोनजूऽ२३तीम्।

इहोइयाऽ३। ईऽ३या॥ पुरुमेधाश्चित्तकवेनराऽ२३०धात्। इहोइयाऽ३। इऽ२। याऽ२३४।

औहोवा॥ एऽ३। दीदयाऽ२३४५त्॥

(दी. १६। प. १८। मा. १०) २ (गौ।१०५१)

(५४१।३)

हाओऽ२३४वा। हाओऽ२३४वा। हाऽ३ओऽ२३४वा। हाउवा। अयापवापवस्वैनावसूनि।

इहइ। हियाऽ२। इहा। इहा॥ माश्वश्वत्वइन्दोसरसिप्रधन्व। इहइ। हियाऽ२। इहा। इहा॥

ब्रध्नश्चिद्यस्यवातोनजतिम्। इहइ। हियाऽ२। इहा। इहाऽ३॥ हाओऽ२३४वा।

हाओऽ२३४वा। हाऽ३ओऽ२३४वा। हाउवा। पुरुमेधाश्चित्तकवेनरन्धात्। इहइ। हियाऽ२।

इहा॥ इहाऽ२३४५॥

(दी. १४। प. २८। मा. १५) ३ (दु।१०५२)

(४५२।१) ॥ आत्रम्। अत्रिस्त्रिष्टुप्सूर्यो विश्वे देवा वा॥

महत्तत्सोमोमहिषश्चऽ३काराऽ२॥ अपांयद्गर्भोवृणीतऽ३दाइवाऽ२न्॥

अदधादिन्द्रेपवमानऽ३ओजाऽ२ः॥ अजनयत्सूर्येऽ३ज्योऽ२३। तिरिन्दाउवाऽ३॥ एऽ३।

अजनयत्सूर्येज्योतिरि। न्दूऽ२३४५ः॥

(दी. १३। प. ८। मा. ६) ४ (डू।१०५३)

(४५३।१) ॥ वासिष्ठम्। वसिष्ठस्त्रिष्टुप्सोमः॥

असाऔऽ३हो। जिवाक्काऽ२। रथ्याइयाऽ३४। था। जाऽ२३४५उ॥ धियाऔऽ३हो।

मनोताऽ२। प्रथमामाऽ३४। नी। षाऽ२३४५॥ दशाऔऽ३हो। स्वसाराऽ२ः। अधिसानोऽ३४।

अ। व्याऽ२३४५इ॥ मृजाऔऽ३हो। तिवान्हीऽ२म्। सदनाइषूऽ३४। अच्छऽ२उ।

वाऽ२३४५।

(दी. २। प. २०। मा. ११) ५ (जा।१०५४)

(५४४।१) ॥ अपां सोम। आपस्त्रिष्टुप्सोमः॥

अपामिवेदूर्मयस्तौ। होवाहाइ। तुराणाऽ२३४ः। हाहोइ। प्रमनी। षाः। ईरतेऽ३। सोमम।

छाऽ३४। हाहोइ॥ नमस्य। ताइः। उपचाऽ३। यन्तिसम्। चाऽ३४। हाहोइ॥ आचवि। शा।

तियुश। तीरुश। ताऽ३४म्। हाहाऽ३४। औहोवा॥ वाऽ३हाऽ२३४५ः॥

(दी. १२। प. २४। मा. ११) ६ (झ।१०५५)

॥ सप्तमः खण्डः॥७॥ दशतिः॥५॥ इति त्रैष्टुभम्॥

(५४५।१) ॥ प्रेंकौ द्वौ। नकुलोऽनुष्टुप्सोमः॥

पुरोजिती॥ वोऽअन्धाऽ२३४साः। सुतायामाऽ२दयाऽ३१उवायेऽ३। त्वाऽ२३४वे॥

अपश्वानाऽ२श्नथाऽ३१उवायेऽ३। ष्टाऽ२३४ना॥ सखायोदीऽ२र्घजाऽ३१उवायेऽ३॥

ह्वीऽ२३४याम्॥

(दी. ३। प. ८। मा. ६) ७ (डू।१०५६)

(५४५।२) वामदेवोऽनुष्टुप्सोमः॥

पुरोजिती॥ वोऽ३ओ०धाऽ३साः। सूतायमाऽ२। ऊऽ२। हाऽ२इ। ऊऽ२।

दाऽ३याइत्वाऽ३वे। आपश्वानाऽ२म्। ऊऽ२। हाऽ२इ। ऊऽ२। श्नाऽ३थाइष्टाऽ३ना॥

साखायोदाऽ२इ। ऊऽ२इ। हाऽ२इ। ऊऽ२३॥ घाऽ२जाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३।

ह्वियाऽ२३४५म्॥

(दी. ७। प. ११। मा. ११) ८ (झ।१०५७)

(५४५।३)

पुरोहाहाउ॥ जाऽ२३४इती। वोआऔऽ३होऽ३। धासाः। सुताऔऽ३होऽ३। यामाऽ६।

हाउवा। दयित्वावेऽ२। उपा॥ अपश्वानश्नथाऽ१इष्टाऽ३ना॥ सखाऔऽ३होऽ३। योदाऽ६।

हाउवा। घजिह्वियम्॥ उपाऽ२३४५॥

(दी. ५। प. २५। मा. ११) ९ (म।१०५८)

(५४५।४) ॥ और्ध्वसद्मनम्। ऊर्ध्वसद्मादेवानुष्टुप्सोमः॥

पुरोजितीवोअन्धसः। उवाहाइ॥ सुतायमादयित्नवउवाऽ२३होइ।

अपश्वानꣳश्नथिष्टनउवाऽ२३होइ॥ साखायोदाइ॥ घाजिह्वाऽ२३४५याऽ६५६म्॥

सुवृक्तिभिर्नृमादनम्भरेऽ२षुवाऽ१॥

(दी. १०। प. ७। मा. ९) १० (फो।१०५९)

(५४५।५) ॥ श्यावाश्वम्। श्यावाश्वोऽनुष्टुप्सोमः॥

पुरोऽ३१। जीऽ३ती। वोअ। धाऽ३सः। एहिया। सूऽ। तायमादा। यि। त्नवाऽ२इ।

एहियाऽ२। अपश्वानाꣳश्नाऽ३थीऽ३॥ ष्टाऽ२३४ना॥ ऐहाऽ२इ। एहियाऽ२।

सखायोदाइर्घाऽ३जीऽ३। ह्वाऽ३४५योऽ६हाइ॥

(दी. ९। प. १६। मा. ६) ११ (तू।१०६०)

(५४५।६) ॥ आन्धीगवम्। अन्धीगुरनुष्टुप्सोमः॥

पुरोजितीवोऽ४०धासाः॥ सुताय। मादाऽ२३या। हिम्माऽ२१२। त्नवेअपश्वानꣳश्नथिष्टन॥

साखाऽ३२उवा॥ योऽ२दी। घाऽ२३जी। ह्वियाम्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. ५) १२ (खु।१०६१)

(५४६।१) ॥ क्रौञ्चानि त्रीणि। त्रयाणां क्रुङ्ङुष्टुपूषाभगोद्यावापृथिवी॥

अयंपूषौहो। रायिर्भगाः॥ सोमःपुनाऽ३। नोआऽ३र्षाऽ५ताऽ६५६इ॥ पतिर्विश्वौहो।

स्याभूमनाः॥ विख्यद्रोऽ३। दासीऽ३ऊऽ५भाऽ६५६इ।

(दी. ७। प. ८। मा. ६) १३ (जू।१०६२)

(५४६।२)

अयंपूषा। अयंपूषा॥ रयिर्भगाः। सोमःपूनाऽ२। नोअर्षताइ। पतिर्वाइश्वाऽ२।

ओस्याभूऽ१मानाऽ२ः॥ ओइवियख्याऽ२३द्रो॥ दासीउभ। इडाऽ२३भाऽ३४३।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १२। मा. ८) १४ (फै।१०६३)

(५४६।३)

अयंपूषा। हो। रयिर्भगाऽ६ए॥ सोमाऽ२ःपुनाऽ२। नआऽ३४५। षाऽ२३४ती।

पतिर्विश्वस्यभूभमनः। वियख्याऽ२३द्रो॥ दसीऊऽ२३भाऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. ११। मा. ६) १५ (तू।१०६४)

(५४७।१) ॥ त्वाष्ट्री सामनी द्वे। द्वयोस्त्वाष्ट्रोऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ॥

सुतासोमा॥ धुमाऽ३त्तमाः। सोमाइन्द्राऽ३यमाऽ३। एऽ३। दिनआ। पवाइत्रवाऽ३०तोऽ३।

एऽ३। क्षरन्ना। दाइवान्गच्छाऽ३०तुवाऽ३ः। एऽ३॥ मदाआ॥

(दी. ४। प. ११। मा. ७) १६ (ते।१०६५)

(५४७।२) ॥ ऊर्ध्वेडंत्वाष्ट्री साम॥

सुतासोमधुमत्तमाः॥ सोमाऽ२इन्द्राऽ२। यमाऽ३४५। दीऽ२३४नाः। पवित्रवन्ताअक्षरन्॥

देवान्गच्छा॥ तुवोमाऽ२३दाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ७) १७ (घे।१०६६)

(५४७।३) ॥ वासिष्ठम्। वसिष्ठोऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ॥

सुतासोमधुमत्तमाः। सोमाइन्द्रा॥ यमन्दिनः। पावित्रावाऽ२। तोअक्षरन्॥ दाइवान्गच्छौवा॥

तूऽ२३४वाः। मदा। औऽ३हावा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ११। मा. ८) १८ (कै।१०६७)

(५४७।४) ॥ आष्कारनिधनं त्वाष्ट्री साम। त्वाष्ट्रोऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ॥

सुतासोमधुमत्तमाः। सोमाहाउ॥ इन्द्राऽ३यामन्दिनाऽ२ः। इन्द्राऽ३हो।

यमाऽ२०दाऽ२३४इनाः। पवित्रव३०तोअक्षाराऽ२न्। त्रवाऽ३हो। तोऽ२क्षाऽ२३४रान्।

देवान्गच्छऽ३०तूवोऽ१मादाऽ२ः॥ देवाऽ३न्होइ। गच्छोऽ२३४हा॥ तूऽ२वाऽ२३४औहोवा॥

मदाऽ३आऽ२३४५॥

(दी. १०। प. १३। मा. १२) १९ (बा।१०६८)

(५४७।५) ॥ वासिष्ठम्। वसिष्टोऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ॥

सुतासोमधुमत्तमाऽ६ए॥ सोमइन्द्राऽ३यामन्दिनाऽ२ः। दाइनाऽ२ः।

पवित्रवऽ३०तोअक्षाराऽ२न्। क्षाराऽ२न्। देवान्गच्छऽ३०तूवोऽ१मादाऽ२ः। मादाऽ२ः॥

देवाऽ३न्होइ। गच्छोऽ२३४हा॥ तूऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ मदाऽ३ईऽ२३४५॥

(दी. १०। प. ११। मा. १३) २० (पि।१०६९)

(५४७।६) ॥ त्वाष्ट्री सामनी द्वे (स्वारत्वाष्ट्रो साम)। द्वयोस्त्वाष्ट्रुप्सोमेन्द्रौ॥

सुतासोमाऽ३हा। धुमत्तामाऽ२ः॥ सोमाइन्द्राऽ३हा। यमन्दाइनाऽ२ः। पवित्रवाऽ३हा।

तोअक्षाराऽ२न्॥ देवान्गच्छाऽ३हा। तुवाऽ३हो२३४। वा। माऽ५दोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. १०। मा. ७) २१ (त्रे।१०७०)

(५४७।७) ॥ द्विरभ्यस्तं त्वाष्ट्री साम॥

सुता। सोमाऽ३। हाऽ३हा। धुमत्तामाऽ२३४ः॥ सोमाः। इन्द्राऽ३। हाऽ३हा।

यमन्दाइनाऽ२३४ः॥ पवि। त्रवाऽ३। हाऽ३हा। तोअक्षाराऽ२३४न्॥ देवान्। गच्छाऽ३।

हाऽ३हा। तुवोऽ३हाऽ२३४। वा। माऽ५दोऽ६हाइ॥

(दी. ७। प. १८। मा. ८) २२ (जै।१०७१)

(५४७।८) ॥ वासिष्ठम्। वसिष्ठोऽनुष्टुप्सोमेन्द्रौ॥

सुतासोऽ३माधुमत्तमाः॥ सोमाइन्द्रा। यमन्दिनः। पावाओऽ२३४वा। त्रवन्तोअक्षरन्॥

देवान्गच्छा॥ तुवोभाऽ२३दाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ९। मा. ८) २३ (झै।१०७२)

(५४८।१) ॥ क्रौञ्चे द्वे। द्वयोः क्रुङनुष्टुप्सोमः॥

हाउसोमाः॥ पवाऽ३०ताइन्दावाउ। वाऽ३। हाउवा। अस्मभ्यंगातूवित्तामाउ। वाऽ३। हाउवा।

मित्राःस्वानाआरेऽ१पासाउ। वाऽ३। हाउवाऽ३४॥ सुवा। धियाऽ३ः॥ सूऽ२३वाऽ३ः।

वाऽ३४५इदोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. १४। मा. १४) १४ (भी।१०७३)

(५४८।२)

सोमाःपवन्तइन्दवाः॥ अस्माभ्यंगा। तुवित्तमाः। माइत्राओऽ२३४वा। स्वानाअरेपसः॥

सुवाधियाः॥ सुवर्वाऽ२३इदाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. ९। मा. ११) २५ (घा।१०७४)

(५४१।१)	॥ सोम सामानि त्रीणि। त्रयाणां सोमोऽनुष्टुप्सोमः॥

अभीनोवा॥ जाऽ२साऽ२३४औहोवा। ताऽ२३४माम्। रयिमर्षश्शतस्पृहम्॥

इन्दोसहस्रभाऽ२३हो। णसाऽ२म्॥ तुविद्युम्नंविभाऽ२३होयेऽ३॥ सहमोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ५) २६ (भु।१०७५)

(५४१।२)

अभीनोवा॥ जासातमम्। रयिम्। षाउवाऽ२३। होवाऽ३हाइ। शतस्पृहम्। इन्द्रोऽ२स।

हाउवाऽ२३। होवाऽ३हा। स्रभर्णसम्॥ तुवायेऽ३॥ द्यूऽ२म्नाऽ२३४औहोवा॥

विभासहाऽ२३४५म्॥

(दी. ७। प. १३। मा. ८) २७ (जै।१०७६)

(५४१।३)

अभीऽ२होइ। नोवाजाऽ३साऽ३। हाताऽ२३४माम्॥ रयीऽ२होइ। अर्षशाऽ३ताऽ३।

हास्पृऽ२३४हाम्॥ इन्दोऽ२होइ। सहस्राऽ३भाऽ३। हार्णाऽ२३४साम्। तुवाऽ२होइ।

द्युम्नंवीऽ३भाऽ३। हाऽ३साऽ५हाऽ६५६म्॥

(दी. २। प. १२। मा. ८) २८ (छै।१०७७)

(५४१।४)	॥ क्रौञ्चम्। ऋङनुष्टुप्सोमः॥

अभीनोवाऽ३१२३४। जसा। तमाऽ३म्॥ रयिमर्षाऽ३१२३४। शत। स्पृहाऽ३म्॥

इन्दोसाहाऽ३१२३४। स्रभ। णसाऽ३म्॥ तुवाइद्यूम्नाऽ३१२३म्। विभाऽ५सहाउ॥ वा॥

(दी. १। प. १२। मा. ६) २९ (खू।१०७८)

(५४९।५) ॥ सोमसाम। सोमोऽनुष्टुप्सोमः॥

अभीनोवाहोऽ५जसातमाम्॥ रयिमर्षौहोऽ५शतस्पृहाम्॥ इन्दोसहौहोऽ५स्रभर्णसाम्॥

तुविद्युम्नौहोऽ५विभासहाम्। सहम्। तुविद्युम्नंविभाऽ६। हाउवा॥ सहऽ३मेऽ२३४५॥

(दी. ९। प. ८। मा. ६) ३० (दू।१०७९)

(५५०।१) ॥ आङ्गिरसानि त्रीणि। त्रयाणामंगिरसोऽनुष्टुबिन्द्रः॥

आऽ२३४भी॥ ओइनवन्तआद्रूऽ१हाऽ२ः। ओइप्रियमिन्द्रस्यकामाऽ१याऽ२म्॥

ओइवत्सन्नपूर्वआयूऽ१नीऽ२॥ ओइ। जातश्रिहन्तिमोऽ१२३४। वा। ताऽ५रोऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ८। मा. ९) ३१ (जो।१०८०)

(५५०।२)

अभी। नवाऽ३२। तआऽ५द्रुहाः॥ प्रियामिन्द्राऽ३। स्याकामाऽ२३४याम्। वत्सन्नपूऽ३।

र्वाआयूऽ२३४नी॥ जाताऽ३श्होइ। रिहाऽ३हो। तिमाताऽ२३राऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥

डा॥

(दी. ३। प. १२। मा. ७) ३२ (ठे।१०८१)

(५५०।३)

अभीनवन्तेअद्रुहः। ओहाइ॥ प्रियमिन्द्रस्यकामियम्। ओहाइ॥ वत्सन्नपूर्वआयुनि।

औहोवाहाइ॥ जातश्रिहौवा। तीऽ२३४मा। तरा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. ८) ३३ (खे।१०८२)

(५५१।१) ॥ गृत्समदस्य सूक्तानि चत्वारि। चतुर्णां गृत्समदो बृहती सोमः॥

आहाऽ३। ओऽ२३४वा॥ र्यतायधृष्णवेऽ२। धनूऽ३ः। ओऽ२३४वा॥ तन्वन्तिपौ३सियम्।

शुक्राऽ३ः। ओऽ२३४वा॥ विन्यत्यसुरायनिर्णिजऽ२। विपाऽ३। ओऽ२३४वा॥

अग्रेऽ२महीयुवाऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. १२। मा. ४) ३४ (ठी।१०८३)

(५५१।२)

हाऽ३हाइ। आहर्यता। याऽ२३४धृ। हाऽ३हाऽ३४। औहोवा। ष्णाऽ२३४वे॥ हाऽ३हाइ।

धनूष्टान्वा। तीऽ२३४पौ। हाऽ३हाऽ३४। औहोवा। सीऽ२३४याम्॥ हाऽ३हाइ। शुक्राविय।

ताअसुरा। याऽ२३४नी। हाऽ३हाऽ३४। औहोवा। णीऽ२३४जे॥ हाऽ३हाइ। विपामाग्नाइ।

माऽ२३४ही। हाऽ३हाऽ३४। ओहोवा॥ यूऽ२३४वाः॥

(दी. ९। प. २५। मा. ८) ३५ (नै।१०८४)

(५५१।३)

आहर्यतायधृष्णवआ॥ धनूष्टाऽ१न्वाऽ२। तिपौ३साऽ१याऽ२म्। शुक्राविय। ताअसुराऽ३।

यानीऽ२र्णाऽ२३४इजाइ॥ विपामाऽ१ग्राऽ२इ॥ ओइ। माऽ२३हीऽ३। यूऽ३४५वोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. १०। मा. ८) ३६ (णै।१०८५)

(५५१।४)

आऽ४हर्य। ताऽ४यधृ। ष्णाऽ३वे। धनुष्टन्वा॥ तिपौ३सियाम्। शुक्राविय। ताअसुरा।

यनाउवाऽ३। णीऽ२३४जे॥ वाइपाऽ३३हाइ। आग्रेऽहाइ॥ महीयूऽ२३वाऽ३४३ः।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १४। मा. ८) ३७ (झै।१०८६)

(५५२।१) ॥ द्विरभ्यस्तमाकूपारम्। अकूपारोऽनुष्टुब्देवाः॥

३ ४ ३ ४ ३ ४ ५ १ र ४ ४ ३ ४ ३र४र ५ १
परित्यꣳहर्यतꣳहरिम्। पाऽ२३४। रित्यꣳहौहोऽ५र्यतꣳहराइम्॥ बभ्रुम्पुनन्तिवारेण। बाऽ२३४।

र र४ ३र४र ३र ४र ३ ४ ५ १ र र र र ४
भ्रुम्पुनौहोऽ५०तिवारेणा॥ योदेवान्विश्वाꣳइत्परि। योऽ२३४। देवान्वौहोऽ५श्वाꣳइत्पराइ॥

३४र ३ ४ ५ १ र र ऽ ४ ॥ ५
मदेनसहगच्छति। माऽ२३४। देनसौहोऽ५हग। छाऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. १७। प. १३। मा. ७) ३८ (जे।१०८७)

(५५३।१) ॥ वैरूपम्। विरूपोऽनुष्टुप्सोमः॥

२ १ ४र ५ १ २ १ ^ ३ २ ३ ५ २ र ३ २^ ३ ५
प्रसुन्वाऽ२३नायअन्धसाः॥ मर्त्तः। नवाऽ२। ष्टतद्वाऽ२४चाः। अपश्वानमरा। धाऽ२३४साम्।

२ १र २ ^ ३ २ ४ ॥
हतामाऽ२३खम्॥ नभृऽ३गाऽ५वाऽ६५६ः॥

(दी. ३। प. ८। मा. ७) ३९ (डे।१०८८)

॥ इति ग्रामे गेय-गाने षोडशस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

॥ त्रयस्त्रिंशदष्टमः, अष्टमः खण्डः॥८॥ दशतिः॥६॥ इत्यानुष्टुभम्॥

(५५४।१) ॥ कावम्। (कुत्सो) कविः जगती सोमसूर्यौ॥

२^ ३ ५ २ ^ ३ ५ ३र र २ ^ ३ ५
आभिप्रीऽ२३४या॥ णीपावाऽ२३४ताइ। चानोहिताऽ२३ः॥ नामानीऽ२३४या।

१ ^ ३ ५ ३र १ २ २ ^ ३ ५ २ ^ ३ ५ ३र १ २ ^
ह्वोअधीऽ२३४ये। षूवर्द्धतायेऽ३॥ आसूरीऽ२३४या। स्याबृहाऽ२३४ताः। वृहन्नधायेऽ३॥

२ ^ ३ ५ २ ^ ३ ५ २ ^ ३ ५
राथवाऽ२३४इष्वा। चामारूऽ२३४हात्। विचाऽ३१उवाऽ२३॥ क्षाऽ२३४णाः॥

(दी. ४। प. १३। मा. ८) १ (दै।१०८९)

(५५४।२) ॥ ऐदंकावम्। कविर्जगती सोमसूर्यौ॥

एऽ५। अभिप्रियाऽ२। णिपवताइ। एऽ५। चनोहिताः॥ एऽ५। नामानियाऽ२। ह्वोअधियाइ।
एऽ५। षुवर्द्धताइ॥ एऽ५। आसूरियाऽ२। स्यबृहताः। एऽ५। बृहन्नधी॥ एऽ५। रथंविष्वाऽ२।
चमरुहात्। एऽ५। विचक्षणाः। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ६। प. २२। मा. ९) २ (खो।१०९०)

(५५४।३) ॥ वाजसनि। वाजनिर्जगती सोमसूर्यौ॥

अभ्यौहोवाहाइप्रियाणी॥ पवताइचाऽ२३४नो। हिताः। नामानियह्वोअधियेषुवर्द्धताइ॥
आसूर्यस्यबृहतोबृहन्नधाइ॥ रथम्। वाइष्वञ्चमरुहत्। विचाऽ३१उवाऽ२३॥ क्षाऽ३णाऽ२३४५ः॥

(दी. ९। प. ९। मा. ११) ३ (ध।१०९१)

(५५४।४) ॥ वजजिती। द्वयोर्वाजजिज्जगती सोमसूर्यौ॥

अभिप्रिया। णीपवताइ। होइहोवाऽ३होयेऽ३४। चनोहिताः। हाहो। वाहाइ॥ नामानिया।
ह्वोअधियाइ। होइहोवाऽ३हायेऽ३४। षुवर्द्धताइ। हाहो। वाहाइ॥ आसूरिया। स्याबृहताः।
होइहोवाऽ३होयेऽ३४। बृहन्नधी। हाहो। वाहाइ॥ रथंविष्वा। चामरुहात्।
होइहोवाऽ३होयेऽ३४। विचक्षणाः। हाहो। वाऽ६हाउ। वा॥ वाजीजिगीऽ३वा२ऽ१॥

(दी. १५। प. २६। मा. १६) ४ (पू।१०९२)

(५५४।५)

अभिप्रिया। णीपवताइ। चानोहिताः। होवाऽ३होइ॥ नामानिया। ह्वोअधियाइ। षूवर्द्धताइ।
होवाऽ३होइ॥ आसूरिया। स्याबृहताः। बृहन्नधाइ। होवाऽ३हो॥ रथंविष्वा। चामरुहात्।
वीचक्षणाः। होवाऽ३होऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥ वाजीजिगीवाविश्वाधनाऽ२नीऽ२३४५।

(दी. २१। प. १८। मा. १२) ५ (गा।१०९३)

(५५४।६) ॥ स्वारकावम्। कविः प्रजापतिर्जगती सोमसूर्यौ॥

अभ्योवा॥ प्रियाणिपवताइ। चनोहाइताऽ२ः। नामानियह्वोअधियाइ। षुवर्द्धाताऽ२इ॥

आसूर्यस्यबृहतो। बृहन्नाधीऽ२३। राथाऽ३०वाइष्वा। चमरूहाऽ२३त्।

वाइचाऽ३क्षाऽ५णाऽ६५६ः॥

(दी. ७। प. १०। मा. १०) ६ (जौ।१०९४)

(५५५।१)॥ उद्वद्भार्गवम् आङ्गिरसानि त्रीणि वा। त्रयाणां भृगुर्जगती सोमो देवाः॥

अचोदासोऽ२३। नोधनूवाऽ२३। तूइन्दवाः॥ प्रस्वानासोऽ२३। बृहद्वाइवेऽ२३। षूहरयाः॥

विचिदाश्नाऽ२३। नाइषायाऽ२३ः। आरातयाः॥ अर्योनाःसाऽ२३। तूसनाइषाऽ२३।

तूनोधियाऽ३१उवाऽ२३४५॥

(दी. १२। प. १२। मा. ९) ७ (छो।१०९५)

(५५५।२) ॥ आंगिरसे द्वे। द्वयोरंगिरसो जगती सोमो देवाश्च॥

आचोदसो। नोधनुवन्तु। इन्दवाः॥ प्रास्वानासो। बृहद्देवेषु। हरयाः॥ वाइचिदश्ना।

नाइषयोअ। रातयाः॥ आर्योनःसा। तुसनिष। तुनोऽ५धियाउ॥ वा॥

(दी. १०। प. १३। मा. ७) ८ (बे।१०९६)

(५५५।३)

हाउहोवाऽ३हाइ। अचोदसोनोऽ३धा। नुवाऽ३०तूऽ३। इन्दवाऽ२३४५ः॥ हाउहोवाऽ३हाइ।

प्रस्वानासोबृऽ३हात्। देवेऽ३षूऽ३। हरयाऽ२३४५ः॥ हाउहोवाऽ३हाइ। विचिदश्नानाऽ३आइ।

षयोऽ३आऽ३। रातयाऽ२३४५ः॥ हाउहोवाऽ३हाइ। अर्योनःसन्तुऽ३सा। निषाऽ३०तूऽ३।

नोधियाऽ३२उवाऽ२३४५॥

(दी. २०। प. १६। मा. १६) ९ (पू।१०९७)

(५५५।४)॥ सामराजे द्वे (महा सामराजं)। द्वयोः सामराजो जगती सोमो देवाश्च॥

अचोहाइ॥ दासोनोधनुवा। तुइन्दावाऽ२ः। प्रस्वानासोबृहद्देवाइ। षुहरायाऽ२ः।

विचोऽ२३४हाइ। अश्नोऽ२३४हाइ। नाइषयः। अरोऽ२३४हाइ। तायाः॥ अर्योऽ२३४हाइ।

नःसोऽ२३४हा॥ तूसानीऽ२३४षा। तूनाऽ२३उवाऽ३॥ धीऽ२३४याः॥

(दी. ७। प. १५। मा. १४) १० (त्री।१०९८)

(५५५।५) ॥ स्वार सामराजम्॥

अचोहोवा॥ दासोनोधनुवा। तुइन्दावाऽ२ः। प्रस्वानासोबृहद्देवाइ। षुहरायाऽ२३ः।

वाइचीऽ३दाश्ना। नाइषाऽ२३४याः। होइ। अराताऽ२३४याः॥ होऽ३इ। आर्योऽ३नाःसा॥

तूसानीऽ२३४षा। हो। तुनोऽ३धाऽ५याऽ६५६ः॥

(दी. ७। प. १४। मा. ११) ११ (झ।१०९९)

(५५५।६) ॥ सिमानान्निषेधः॥

अचो। वाहाइ॥ दासोनोधनुवा। तुइन्दावाऽ२ः। प्रास्वानासोबृहद्देवाइ। षुहरायाऽ२३ः।

वाऽ२३इचीत्। आऽ२३श्नाऽ३४। नाइषयोअरा। ताऽ३याः॥ आऽ२३र्यो॥ नाऽ२३ःसाऽ३४।

तुसनिष। तुनोऽ३धाऽ५याऽ६५६ः॥

(दी. ९। प. १४। मा. ११) १२ (ध।११००)

(५५६।१)   ॥ वैधृत वासिष्ठम्। वसिष्ठो जगतीन्द्रः॥

एषप्रकोशेऽ२। म। धुमा२ऽ२। अचाइक्राऽ२३४दात्॥ इन्द्रास्यवाज्राऽ२ः। व। पुषोऽ२।
वपुष्टाऽ२३४माः॥ अभाऋतास्याऽ२। सु। दुधाऽ२ः। घृताश्चूऽ२३४ताः॥ वाश्राअर्षा०तीऽ२।
प। यसाऽ२३। चधाऽ३इनाऽ५वाऽ६५६ः॥

(दी. ३। प. १६। मा. १०) १३ (टौ।११०१)

(५५७।१)   ॥ लौशे द्वे। द्वयोर्लुशो जगतीन्द्रसोमौ॥

प्रोयाऽ२३४सीत्। इन्दुरिन्द्राऽ२३। स्याऽ३निष्कृतम्॥ सखासख्युः। नप्रमिनाऽ२३।
तीऽ३संगिरम्॥ मर्यइवा। युवतिभाऽ२३इः। साऽ३मर्षति॥ सोमःकला। शेशतयाऽ२३।
मनाऽ३पाऽ५थाऽ६५६।

(दी. ३। प. १२। मा. ७) १४ (ठे।११०२)

(५५७।२)

प्रोयासीदिन्दुरिन्द्रस्यनिः। कृताम्। कृताऽ२३४५म्॥ सखाऽ३१२३४। सख्युर्नप्रमिनातिसम्।
गिराङ्गिराम्॥ मर्याऽ३१२३४ः॥ इवयुवतिभिःसम। षताइषताइ॥ सोमाऽ३१२३४ः।
कलशेशतया। मनाऽ३पाऽ५थाऽ६५६॥

(दी. ७। प. १२। मा. ९) १५ (छो।११०३)

(५५७।३)   ॥ प्रवद्भार्गवम्। भृगुजगतीन्द्रसोमौ॥

प्रोअयासाइत्। इन्दुरिन्द्रा। स्याऽ२निष्कृताम्॥ सखासख्यूः। नप्रमिना। ताऽ२इसङ्गिराम्॥

मर्यइवा। युवतिभाइः। साऽ२मर्षताइ॥ सोमःकला। शेश्वतया। माऽ२नापथाऽ३१उ॥

वाऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १३। मा. १२) १६ (गा।११०४)

(५५७।४)

प्रोअयासाइत्। इन्दुरिन्द्रा। स्यानिष्कृताऽ२३म्॥ सखासख्युः। नप्रामिना।

तिसंगाऽ२३४इराम्॥ मर्यइवा। युवतिभाइः। सामर्षतायेऽ३॥ सोमःकला। शेश्वतया।

मनाऽ३पाऽ५थाऽ६५६॥

(दी. ९। प. १२। मा. १०) १७ (थो।११०५)

(५५७।५) ॥ यामम्।यमो जगतीन्द्रसोमौ॥

आऽ२इ। इया। प्रोअयासाइदिन्दुरिन्द्राऽ२३। स्याऽ३निष्कृतम्॥ सखायसख्यूर्नप्रमिनाऽ२३।

तीऽ३संगिरम्॥ मर्यइवायुवतिभाऽ२३इः। साऽ३मर्षति॥ आऽ२इ। इया।

सोमःकलाशेऽ१श्वतयाऽ२३। मनाऽ३पाऽ५थाऽ६५६॥

(दी. ४। प. १२। मा. ९) १८ (थो।११०६)

(५५८।१) ॥ दास (वात्स) शिरसी द्वे। द्वयोर्दसशिरा जगतीसोमः॥

धर्तादाइवाऽ३। ओवाऽ५ए॥ पवतेकृत्वीऽ३योरासाऽ३। ओवाऽ५ए। दक्षोदाइवाऽ३।

ओवाऽ५ए॥ नामनुमादीऽ३योनृभाऽ३। ओवाऽ५ए॥ हराइःसार्जाऽ३। ओवाऽ५ए॥

नोअतियोनऽ३साब्राभाऽ३। ओवाऽ५ए॥ वृथापाजाऽ३। ओवाऽ५ए॥

सिकृणुषाइनदाइषूवाऽ३। ओवाऽ५ए। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. १३। प. १८। मा. १५) १९ (ड्डु।११०७)

(५५८।२)

धर्त्ताऔहोहाऽइ॥ दिवः। पवतेका। औहोऽ३हाऽ३। हा। ब्रियोरसो। दक्षोदेवा।

औहोऽ३हाऽ३। हा। नामनुमा। दियोनृभाइः। हराइःसार्जा। औहोऽ३होऽ३। हा।

नोअतीयो। नसब्रभाइः॥ वृथापाजा। औहोऽ३हाऽ३। हा॥ सिकृणूषा। औहोऽ३हाऽ३।

हाइ। नदीषुवा। औहोऽ३हाऽ३। हाऽ३४। औहोवा॥ एऽ३। नदीषुवाऽ१॥

(दी. १८। प. २८। मा. १०) २० (डौ।११०८)

(५५९।१) ॥ यामानि त्रीणि, (ऐडयामम्)। त्रयाणां यमो जगती सोमेन्द्रौ॥

वृषामातीऽ२३। नाम्पवाताऽ२३इ। एऽ३। विचक्षणएऽ३॥ सोमोआह्वाऽ२३म्।

प्रतराइताऽ२३। एऽ३। उषसान्दिवएऽ३॥ प्राणासाइन्धूऽ२३। नाकलाशाऽ२३। एऽ३।

अचिक्रददेऽ३॥ इन्द्रस्याहाऽ२३। दियावाइशाऽ२३न्। एऽ३। मनीषिभिरेऽ३४३।

ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. १०। प. १८। मा. १०) २१ (बौ।११०९)

(५५९।२)

वृषामतीनांपव। ताइवाऽ१इचाऽ२३४। क्ष। णाऽ२३४५ः॥ सोमोअह्वाम्प्रतरी।

तोषाऽ१साऽ२३४म्। दि। वाऽ२३४५ः॥ प्राणासिन्धूनांकल। शाऽ२आऽ१चाऽ२३४इ। क्र।

दाऽ२३४५त्॥ आइन्द्रस्यहार्दियावि। शान्माऽ१नाऽ२३४इ। षिभाऽ२उ। वाऽ२३४५॥

(दी. १३। प. १६। मा. १२) २२ (टा।१११०)

(५५९।३)

वृषाऽ२मताऽ२इ। नाम्पवतेविचक्षाऽ२३णाः॥ सोमोऽ२अह्वाऽ२म्। प्रतरीतोषसान्दाऽ२३इवाः॥

प्राणाऽ२सिन्धूऽ२। नांकलशाऽ२अचिक्राऽ२३दात्॥ इन्द्राऽ२स्यहाऽ२।

दियाविशन्मनीषाऽ२३इभाऽ३४३इः॥ ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १०। मा. १२) २३ (डा।११११)

(५६०।१) ॥ मरूतान्धेनु। मरुतो जगती सोमः॥

त्राऽ२३४इः। अस्मैसप्तधेनवोदुदौ। होह्वाइराइ॥ सत्यामाशिरम्परमाइ। वियोमानीऽ२।

चत्वार्यन्याभुवना। निनिर्णाजाऽ२३इ॥ चारूणाऽ२३४इचा॥ क्रेयदृतैः।

आवाऽ३र्द्धाऽ५ताऽ६५६॥

(दी. ११। प. १०। मा. ९)२४ (डो।१११२)

(५६१।१) ॥ इन्द्रस्यापामीवम्। इन्द्रो जगतीन्द्रसोमौ॥

इन्द्रा। यसोमसुषुताऽ३ःपाऽ३रिस्रव॥ अपा। मीवाभेवतुराऽ३क्षाऽ३सासह॥ माताइ।

रसस्यमत्सताऽ३द्वाऽ३याविनः॥ द्रवाइ। णस्वन्तइहस। तुवाऽ३इन्दाऽ५वाऽ६५६ः॥

(दी. ६। प. ९। मा. ६) २५ (घू।१११३)

(५६१।२)   ॥ वायोरभिक्रन्दम् (वायोरभिदः)॥ वायुर्जगतीन्द्रसोमौ॥

इन्द्रायसोमसुषुतःपर्यौ। होइस्रावा॥ अपामीवाभवतुरक्षसाऽ१साऽ३हा।

मातेरसस्यमत्सतद्वयाऽ१वीऽ३नो। द्राऽ२३४वी। णाऽ२३४स्वा॥ ताइहसाऽ३। हाऽ२३।

तुवाऽ३इन्दाऽ५वाऽ६५६ः॥

(दी. ८। प. ९। मा. ४) २६ (ढी।१११४)

(४६२।१)   ॥ यामानि त्रीणि। त्रयाणां यमो जगती सोमश्येनौ॥

असाविसो। मोअरुषोऽ२३४। वृषाहराइः॥ राजेवदा। स्मोअभिगाऽ२३४ः। अचिक्रदात्॥

पुनानोवा। रामतियाऽ२३४इ। पिअव्ययाम्॥ श्येनोनयो। निंघृतवाऽ२३। तमाऽ५सदात्।

होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. १४। मा. ११) २७ (घा।१११५)

(५६२।२)

आसावीऽ२३४सो। मोअरूऽ२३४षाः। वार्षाहरायेऽ३ः॥ राजेवाऽ२३४दा।

स्मोअभीऽ२३४गाः। आचिक्रदाऽ२३त्॥ पुनानोऽ२३४वा। रामातीऽ२३४ये।

षीअव्ययाऽ२३म्॥ श्येनोनाऽ२३४यो। निंघार्त्ताऽ२३४वा। तमाऽ३। साऽ२दाऽ२३४औहोवा॥

देऽ३। दिवीऽ२३४५॥

(दी. ६। प. १५। मा. ९) २८ (डो।१११६)

(५६२।३)

असाविसोमोअरुषोवृषाह। राइः॥ राजेवदस्मोअभिगाअचिक्र। दात्॥ पुनानोवारमत्येष्यव्य।

याम्॥ श्येनोनयोनिंघृत। वा। तमाऽ३। साऽ२दाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३। दिवीऽ२३४५॥

(दी. १८। प. १२। मा. ८) २९ (ठै।१११७)

(५६३।१) ॥ मरुतांधेनु। मरुतो जगतीसोमः॥

प्रादे॥ वमच्छामधुम। तआऽ२इन्दवाः। आसिष्याऽ२३४दा। तगावआ। नधाऽ२इनवाः।

बर्हिषाऽ२३४दाः। वचनावाऽ२। तऊऽ२धभाइः। परिस्रूऽ२३४ताम्॥

उस्रियानिर्णिजंधाइरायेऽ३॥ धोऽ२इराऽ२३४औहोवा॥ धाऽ३इराऽ२३४५इ॥

(दी. ८। प. १३। मा. १६) ३० (डू।१११८)

(५६४।१) ॥ काक्षीवतानि (शार्ङ्गाणि) त्रीणि। अञ्जतः कक्षीवाञ्जगती सोमः॥

अञ्जताइ। वियञ्जताइ। समञ्जाताऽ२इ॥ ऋतुꣳरिहा। तीमधुवा। भियञ्जाताऽ२इ॥ सिन्धोरुच्छ्वा।

सेपतया। तमुक्षाणाऽ२म्॥ हिरण्यपा। वाःपशुमा। प्सूगृभ्णताऽ३१उवाऽ२३४५॥

(दी. ५। प. १२। मा. ६) ३२ (फू।१११९)

(५६४।२) ॥ व्यञ्जतः कक्षीवान्॥

अञ्जाऽ३हो। तेऽ३होइ। वियञ्जतेऽ३साऽ३मञ्जताइ॥ ऋतूꣳऽ३होइ। रिहाऽ३हो।

तिमधुवाऽ३भीऽ३अञ्जताइ॥ सिन्धोऽ३र्होइ। उच्छ्वाऽ३हो। सेपतयाऽ३०ताऽ३मुक्षणम्॥

हिराऽ३हो। ण्यपाऽ३हो। वाःपशुम। प्सुगाऽ३भ्र्णाऽ५ताऽ६५६इ॥

(दी. २। प. १३। मा. ८) ३२ (जे।११२०)

(५६४।३) ॥ समञ्जतः कक्षीवान्॥

हावा०जा। ताऽ२३४इ। वियञ्जतेसमञ्जते। एहिया। एहियाऽ३४॥ हाउक्रातूम्। राऽ२३४इ।

हन्तिमधुवाभियञ्जते। एहिया। एहियाऽ३४॥ हाउसाइन्धोः। ऊऽ२३४त्।

श्वासेपतयंतमुक्षणम्। एहिया। एहियाऽ३४॥ हाउहाइरा। ण्याऽ२३४।

पावाःपशुमप्सुगृभ्णते। एहिया। एहियाऽ३४। हाउ। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. २३। मा. १३) ३३ (दि।११२१)

(५६५।१) ॥ अर्कपुष्पे द्वे। द्वयोरादित्यो जगती ब्रह्मणस्पतिः॥

पवित्रन्तेविततंब्रह्मणस्पतेऽ३। हुवेऽ२३। हुवेऽ२३। होवाऽ३होऽ३। हाइ॥

प्रभुर्गात्राणिपरियेषिविश्वताऽ२३ः। हुवेऽ२३। हुवेऽ२३। होवाऽ३हाऽ३। हाइ॥

अतप्ततनूर्न्नतदाऽ२मोअश्नुतेऽ३। हुवेऽ२३। हुवेऽ२३। होवाऽ३हाऽ३। हाइ॥

श्रृतासइद्वहन्तःसन्तदाऽ२शत। हुवेऽ२३। हुवेऽ२३। होवाऽ३हाऽ३। हाऽ३४। औहोवा॥

अर्कोदेवानाऽ२०परमेवियोऽ२माऽ२३४५न्॥

(दी. १७। प. २२। मा. ७) ३४ (छे।११२२)

(५६५।२)

पवित्रन्तेविततंब्रह्मणस्पतेऽ३। हुवाइ। औहोवाऽ२॥ प्रभुर्गात्राणिपरियेषिविश्वताऽ२३ः। हुवाइ।

औहोवाऽ२॥ अतप्ततनूर्नतदाऽ२मोअश्नुतेऽ३। हुवाइ। औहोवाऽ२॥

श्रृतासइद्वहन्तःसन्तदाऽ२शत। हुवाइ। औ। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा॥

अर्कस्यदेवाःपरमेवियोऽ२माऽ२२३४५न्॥

(दी. १९। प. १६। मा. ८) ३५ (ते।११२३)

पञ्चत्रिंशन्नवमः, नवमः खण्डः॥९॥ दशतिः॥७॥ इति जागतम्॥

॥ इति ग्रामे गेयगाने षोडशः प्रपाठकः॥१६॥

(५६६।१) ॥ पदे द्वे। द्वयोर्वसिष्ठ उष्णिगिन्द्रः॥

५ २ १ २^ ३र ५ १ २ १अ २^ ३र ५ २ १ २र १
इन्द्रमच्छा॥ सुताइमा। औहोऽ२३४वा। वृषणंय। तूहरया। औहोऽ२३४वा॥ श्रुष्टाइजाता।

२ ३ २ १ २ १ २ १
सइन्दवाः॥ सुवर्वाऽ२३इदाऽ३४३ः। ओऽ२३४६इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ७) १ (टे।११२४)

(५६६।२)

५ २ १ २ ^ २^ २ १ २ १अ _ १ २^ २
इन्द्रमच्छा॥ सुताइमाऽ३इ। ताईऽ३माइ। वृषणंय। तूहरयाऽ२ः। हाराऽ३याः।

र र विर १अ _ १ २ ^ २ ^ १ २^ ५र र
श्रुष्टेजाताऽ३साइन्दवाऽ२ः॥ आइन्दाऽ३वाऽ३ः॥ सुवराऽ३४। औहोवा॥

२ र ^ १ १ १ १
विदोविऽ३दाऽ२३४५ः॥

(दी. ६। प. ११। मा. ११) २ (का।११२५)

(५६६।३) ॥ अनुपदे द्वे। द्वयोर्वसिष्ठ उष्णिगिन्द्रः॥

४ ५ ४ २ ^ १ २ _ १ _ १ २ १अ _ १ _
इन्द्रम्। इन्द्राम्॥ अच्छऽ३सूताऽ१इमेऽ२। आइमेऽ२॥ वृषणंय। तूहरयाऽ२ः। रायाऽ२ः।

र र र १अ _ १ १ २^ ५र र २ ^ १ १ १ १
श्रुष्टेजाताऽ३साइन्दवाऽ२ः॥ दावाऽ२३ः॥ सुवराऽ३४। औहोवा॥ विदोऽ३विदाऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. १२। मा. १०) ३ (फौ।११२६)

(५६६।४)

३ ४ ३ ४ ३र ४ ३र ४ ५ २^ २ ३ २ १ २ १ २
इन्द्रमच्छसुताइमेवृषणंयन्तुहा। होऽ३४३। रयआ॥ श्रूष्टाउवा। जाताउवाऽ३४।

३ ४ ५ २ ३ २^
सइन्दवःसुवा। हो॥ विदओऽ३४५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. ९। मा. ७) ४ (झे।११२७)

(५६६।५) ॥ पौष्कलम्। प्रजापतिरुष्णिगिन्द्रः॥

इन्द्रमाऽ३च्छसु। ताईऽ२३४माइ॥ वृषाणंया। तूहाराऽ२३४याः॥ श्रुष्टाइजाता।

सईऽ२०दाऽ२३४५वाऽ६५६ः॥ सुवर्विदाऽ२३४५ः॥

(दी. १। प. ७। मा. ७) ५ (खे।११२८)

(५६७।१) ॥ ऐषिराणि पञ्च। ऐषिरोष्णिगिन्द्रः॥

प्रधन्वासौहोइ। औऽ३होऽ२३४वा। मजागृविः॥ इन्द्रायेन्दौहोइ। औऽ३होऽ२३४वा।

परिस्रव॥ द्युमन्त॰श्चौहोइ। औऽ३होऽ२३४वा। ष्ममाभर॥ सुवर्विदौहोइ।

औऽ३होऽ२३४५वाऽ६५६॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ९। प. १२। मा. ५) ६ (थ्वु।११२९)

(५६७।२)

प्रधन्वासौहो। वाऽ३हो। मजागृवीऽ२ः॥ इन्द्रायेन्दौहो। वाऽ३होइ। परिस्रावाऽ२॥

द्युमन्त॰श्चौहो। वाऽ३हो। ष्ममाभाराऽ२॥ सुवर्विदौहो। वाऽ३होऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥

ऊऽ२३४पा॥

(दी. ११। प. १३। मा. ३) ७ (ग्वि।११३०)

(५६७।३)

औहौहोइ। प्रधन्वासोऽ२। औहौहो। मजागृवीऽ२ः॥ औहौहोइ। इन्द्रायाइन्दोऽ२।

औहौहोइ। परिस्रावाऽ२॥ औहौहोइ। द्युमन्ता॰शूऽ२। औहौहो। ष्ममाभाराऽ२॥ औहौहोइ।

सुवः। वाऽ२इ। दाऽ२३४। औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. १९। प. १८। मा. ९) ८ (द्वो।११३१)

(५६७।४)

हुवाऽ२इ। हुवाऽ२इ। हुवाऽ२३होइ। प्रधन्वासोऽ२। मजागृवीऽ२ः॥ इन्द्रायाइन्दोऽ२।
परिस्रावाऽ२॥ द्युमन्ताꣳशूऽ२। ष्ममाभाराऽ२॥ सुवर्वाइदाऽ२म्। हुवाऽ२इ। हुवाऽ२इ।
हुवाऽ२३होऽ२। वाऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ५। प. १५। मा. १०) ९ (म्वौ।११३२)

(५६७।५)

प्रधन्वाऽ२३सोमजागृवीः॥ इन्द्राऽ२याऽ२३४इन्दो। ओइ। पाऽ३राइस्राऽ३वा॥
द्युमाऽ२०ताऽ२३४ꣳशू॥ ओ। ष्ममाऽ२भाऽ२३४५राऽ६५६॥ सुवर्विदाऽ२३४५म्॥

(दी. २। प. ८। मा. ५) १० (जु।११३३)

(५६८।१) ॥ शौक्तानि पञ्च। शुक्तिरुष्णिक्सोमः॥

सखाऽ३याआऽ२। निषीदता। पुनानाऽ२३या। प्रगायता॥ शिशुन्नाऽ२३या॥ ज्ञैःपराइभूऽ२।
पताश्राऽ२३याऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ४) ११ (भी।११३४)

(५६८।२)

सखायाआ॥ निषीदाऽ२३४ता। पुनाऽ२नाऽ२३४या। प्राऽ२गाऽ२३४औहोवा। याऽ२३४ता॥
शिशून्नया। ज्ञैःपरिभूऽ२३॥ पाऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ श्रियेऽ१॥

(दी. ५। प. ९। मा. ३) १२ (भि।११३५)

(५६८।३)

सखायआनि। पीदाऽ६ता॥ पुनानायप्रगायाता॥ शिशुन्नयज्ञैःपराऽ२इ॥ भूषाऽ२३ताऽ३।

श्राऽ२३याऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ८। मा. ४) १३ (डी।११३६)

(५६८।४)

औहोइ। सखायआनि। पीदाऽ६ता॥ पुनानौहोइ। पुनानौहोयेऽ३। याप्रायाप्रा॥ गायतौहोइ।

गायतौहोयेऽ३। शाइशूःशाइशूम्॥ नयज्ञौहोइ। नयज्ञौहोयेऽ३। पारी। पाराऽ३४औहोवा॥

एऽ३। भूषतश्रियेऽ१॥

(दी. १८। प. १५। मा. ९) १४ (णो।११३७)

(५६८।५)

सखा। यआओऽ२३४वा॥ निषाइ। दाताओऽ२३४वा। पुनानायप्रगाऽ२यत॥

शाइशाओऽ२३४वा॥ नयज्ञैःपरिभूऽ३। पाताओऽ२३४वा॥ श्रियेऽ१॥

(दी. ५। प. ९। मा. ७) १५ (भे।११३८)

(५६९।१) ॥ कार्णश्रवसानि त्रीणि। त्रयाणां कर्णश्रवा उष्णिक्सोमः॥

ताऽ२३४०वः। साऽ२३४खा॥ योमदाऽ२३या। पूनानम। भिगायाऽ२३ता॥ शाइशुन्नह।

व्यैःस्वदयाऽ२३॥ तगूर्तिभाऽ३४३इः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ५) १६ (मु।११३९)

(५६९।२)

ओइतंवःसखा॥ योम। दायाओऽ२३४वा। पुनानमभिगाऽ३। आ। ओऽ२३४वा।

यताओऽ२३४वा॥ शिशुन्नहव्यैःस्वदयाऽ३। आ। ओऽ२३४वा॥ तगाओऽ२३४वा॥

तीऽ२३४भीः॥

(दी. ३। प. १२। मा. ५) १७ (ठु।११४०)

(५६९।३)

तवःसखायोमदाऽ६या॥ पुनानमभिगाऽ२यत। शाइशुन्नहाऽ३। व्यैःस्व। दयाऽ३॥

ताऽ२३गूऽ३॥ ताऽ३४५इभोऽ६हाइ॥

(दी. ५। प. ७। मा. ३) १८ (फि।११४१)

(५७०।१) वाचस्सामनी द्वे। द्वयोर्वागुष्णिक्सोमः॥

प्राणा॥ शाऽ२३४इशूः। महाऽ२३४इनाम्। हिन्वाऽ२नाऽ२३४र्त्ता। स्याऽ३दाइधीऽ३तीम्॥

वाइश्वापरि। प्रियाभुवाऽ२३त्॥ अधद्विताऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. २। प. १०। मा. ९) १९ (ञो।११४२)

(५७०।२)

प्राणाप्राणा॥ शाइशूऽ२ःशाइशूऽ२ः। महाऽ३१उवायेऽ३। नाऽ२३४५म्।

हिन्वन्नार्त्तस्यदाऽ३१उवायेऽ३। धीऽ२३४तीम्। विश्वापारिप्रियाऽ३१उवाऽ२३। भूऽ२३४वात्॥

अधोऽ२। हौऽ२। हुवायेऽ३॥ द्वाऽ२इताऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ३। प. १३। मा. ११) २० (ड्ड।११४३)

(५७०।३) ॥ इन्द्रसामनी द्वे। द्वयोरिन्द्रोष्णिक्सोमः॥

प्राणाशिशूः॥ महाऽ२इनाम्। औहोऽ३वा। हिन्वन्नृतस्यदीधितिम्॥ वाइश्वाउवा। पाराउवा॥
प्रियाऽ२भुवत्। अधाउवाऽ३॥ एऽ३। द्विताऽ१॥

(दी. ५। प. १०। मा. ९) २१ (मो।११४४)

(५७०।४)

प्राणा॥ होऽ३इ। इयाहाइ॥ शाइशुर्महाइ। नाऽ२३म्। आउहाउ। होऽ३वा।
हिन्वन्नृतस्यदीधिताइम्। आउहाउ। होऽ३वा॥ विश्वापा। याउहाउ। होऽ३वा॥ प्रियाऽ२३।
भूऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ अधद्विताऽ१॥

(दी. १२। प. १६। मा. १४) २२ (ची।११४५)

(५७०।५) ॥ मरुतां प्रेङ्खम्। मरुत उष्णिक्सोमः॥

प्राणा॥ इहोइ। शाऽ२३४इशूः। इहोऽ३इ। महीनाऽ२३म्। होवाऽ३होयेऽ३४॥ हिन्वन्।
इहोइ। आऽ२३४र्त्ता। हहोऽ३। स्यदीधिताऽ२३इम्। होवाऽ३होयेऽ३४॥ विश्वा। हहोइ।
पाऽ२३४री। हहोऽ३इ। प्रियाभुवाऽ२३त्। होवाऽ३होयेऽ३॥ आऽ२३धाऽ३।
द्वाऽ३४५इतोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. २०। मा. १४) २३ (डी।११४६)

(५७१।१) ॥ प्राजापत्ये द्वे। द्वयोः प्रजापतिरुष्णिगिन्द्रसोमौ॥

पवस्वदाऽ२इ। ववीताऽ२३४याइ॥ आइन्दोधाराऽ२। भिरोजाऽ२३४सा। आकालशाम्।
माधूमाऽ२३४न्त्सो॥ मनएभानाऽ२३ः॥ सदाऽ५ए। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ४। प. १०। मा. ८) २४ (नै।११४७)

(५७१।२)

पवस्वदा॥ ववीतयाइ। इन्दोधाऽ२३राऽ३४। भिरोजसाऽ६ए। आकाऽ३हा। लाशाऽ२म्॥

माधूऽ३हाइ। मान्त्सोऽ२३॥ मनोऽ२३४वा। साऽ५दोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. १०। मा. ५) २५ (णु।११४८)

(५७२।१) ॥ सुज्ञाने द्वे। द्वयोरिन्द्र उष्णिक्सोमः॥

सोमःपुना॥ नऊर्मिणा। अव्यंवाराऽ२म्। विधावताइ॥ अग्रेवाचाऽ२ः॥ पव।

माऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ कनिक्रददेउपाऽ२३४५॥

(दी. ७। प. ८। मा. ६) २६ (जू।११४९)

(५७२।२)

सोमःपुना॥ नऊर्मिणोवाऽ३। ओऽ२। वाऽ२३४। औहोवा। अव्यंवारंविधावति॥ अग्रेऽ३।

होवाऽ३। होऽ२। वाऽ२३४। औहोवा। वाचःपवमानः॥ कनाऽ३। होवाऽ३। होऽ२।

वाऽ२३४। औहोवा॥ क्राऽ२३४दात्॥

(दी. १२। प. १८। मा. ३) २७ (जि।११५०)

(५७२।३) ॥ द्यौते द्वे। द्युतोष्णिक्सोमः॥

सोमःपुनानऊ। मिणा। अव्यंवारंविधावाऽ२३ती॥ अग्रेवाचाः॥ ववमानाः। काऽ३निक्र॥

दाऽ२३४५त्॥

(दी. ७। प. ७। मा. ४) २८ (छी।११५१)

(५७२।४)

सोमःपुनानऊर्मिणाऽ२३४ऐही॥ अव्यंवारंविधावताऽ२३४ऐही॥ अग्रेवाचःपवमानाऽ२३४ऐही॥

कानी। ऋददेऽ३४। हियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ११। प. ८। मा. ५) २९ (गु।११५२)

(५७२।५) ॥ आतीषादीये द्वे। द्वयोः प्रजापतिरुष्णिक्सोमः॥

सोमःपुना। नऊऽ३२मीऽ२३४णा॥ अव्यंवारम्। विधावति॥ अग्राऽ३२इ। वाऽ२३४चाः॥

पवाऽ३२। माऽ२३४नाः॥ कनाऽ३इक्राऽ५दाऽ६५६त्॥

(दी. ३। प. ९। मा. ७) ३० (ढे।११५३)

(५७२।६)

सोमःपुना। हो। नऊर्मिणाऽ६ए॥ अव्यंवारंविधाऽ१वाऽ३ती। अग्रेवाऽ२३४५। चाऽ२३४५ः॥

पवमाऽ२३नाऽ३ः॥ काऽ२नाऽ२३४औहोवा॥ ऋददेऽ२३४५॥

(दी. ६। प. ९। मा. ५) ३१ (घु।११५४)

(५७३।१) ॥ सोमसामानि चत्वारि। चतुर्णां सोम उष्णिक्सोमः॥

प्रपुनाऽ२३नायवेधसाइ॥ होइ। होइ। सोमायवचाउच्याताऽ२इ॥ भृतिन्नभरामतिभाऽ२इः॥

जुजोषाऽ२३ताऽ३४३इ। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ८। मा. ९) ३२ (बो।११५५)

(५७३।२)

प्रपुनानौहोऽ५यवेधसाइ॥ सोमाऔऽ३होऽ३४। यवचउच्यताइ॥ भृताऔऽ३होऽ३४।

नभरामतिभाइः॥ जुजाऽ३१उवाऽ२३॥ षाऽ२३४ते॥

(दी. ५। प. ७। मा. ८) ३३ (फै।११५६)

(५७४।१)

गोऽ४मन्नः। होइ। इन्दोअश्ववाऽ६दे॥ सूतःसुदक्षधाऽ१नीऽ३वा। शुचिंचवाऽ२३४५॥

णमधिगोऽ२३४औहोवा॥ षूऽ२३४धा। रया। औऽ३होऽवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. ११। मा. ५) ३४ (टु।११५७)

(५७५।१)

हावास्मा॥ भ्याऽ२३४०ब्वा। वासूवीऽ२३४दाम्। अभाऽ२इवाऽ२३४णीः। अनाओऽ२३४वा।

षाऽ२३४ता॥ गोसिष्टेव। णमभिवाऽ२३॥ सयामसिहोऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ३। प. १०। मा. ५) ३५ (णु।११५८)

(५७६।१) ॥ यज्ञा३सि त्रीणि। त्रयाणां सोमोष्णिक् सोमः॥

पवतेहा॥ र्यतोहरिः। औऽ३होऽ१इ। औऽ२होऽ२३४वा। आतिह्वारा३सिर३हिया।

औहोऽ३१इ। औऽ२होऽ२३४वा॥ अभ्यर्षस्तोतृभ्योवा। औऽ३होऽ३१इ।

औऽ२होऽ२३४वा॥ राऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ यशोयशाऽ२३४५ः॥

(दी. १०। प. १२। मा. ६) ३६ (फू।११५९)

(५७६।२)

पवाऽ३। पवतेहा॥ र्यतोहरिः। औहोइ। औऽ३होइ। औहोइ। आतिह्वराऽ२३सिर३हिया।

औहोइ। औऽ३होइ। औहोइ॥ अभ्यर्षस्तोतृभ्योवा। औहोइ। औऽ३होइ। औहोऽ३।

राऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ यशोयशाऽ२३४५ः॥

(दी. १५। प. १६। मा. ११) ३७ (पा।११६०)

(५७६।३)

पर्वतेहर्यतः। हराऽ३ः। आऽ२३४। तिह्वराꣳसिर। हिया॥ अभ्यर्षाऽ२३४। स्तोतृ॥
भ्योवाऽ३इ॥ राऽ२वाऽ२३४औहोवा॥ याऽ२३४श्चाः॥

(दी. ६। प. १०। मा. ५) ३८ (ङु।११६१)

(५७७।१) ॥ भारद्वाजम्। भरद्वाज उष्णिक् सोमः॥

परिकोऽ३शंमधुश्चुताम्॥ सोमःपुनानोअर्पति। होयेऽ३॥ अभिवाऽ२३४५॥ र्णार्त्र्हषीणाꣳस।
प्तानाओऽ२३४वा॥ षाऽ२३४ता॥

(दी. ६। प. ७। मा. ३) ३९ (खि।११६२)

एकोनचत्वारिंशत्, दशमः खण्डः॥१०॥ दशतिः॥८॥

॥ इत्यौष्णिहम्॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने सप्तदशस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

(५७८।१) ॥ वासिष्ठम्। वसिष्ठः ककुप् सोमः॥

पावा॥ स्वमाधुमा। तामाओऽ२३४वा। ईऽ२३४०द्रा। यसोमक्रतुवित्तमोमदाऽ३ः॥ ओइ।
माहाओऽ२३४वा॥ द्युक्षतमोमदाऽ२३४५ः॥

(दी. ३। प. ८। मा. ५) १ (ङु।११६३)

(५७८।२) ॥ सफे द्वे। द्वयोर्देवाः ककुप् इन्द्रसोमौ॥

पाऽ३४। वस्वम्। धुमत्ताऽ६माः॥ आइन्द्राऽ२। यसोमाऽ२। क्रतुवाइत्ताऽ३मोऽ३।

माऽ३दाः॥ महिद्युक्षाताऽ३मोऽ३॥ माऽ३४५दोऽ६हाइ॥

(दी. नास्ति। प. ९। मा. ५) २ (लु।११६४)

(५७८।३)

पवस्वमधुमा। इहा॥ तमः। इन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमाऽ२३दाः। इहा॥ महाइद्यूऽ२३क्षा।

इहा॥ तमोमाऽ२३दाऽ३४३ः। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. १०। मा. ५) ३ (मु।११६५)

(५७८।४) ॥ वासिष्ठम्। वसिष्ठः ककुप् सोमेन्द्रौ॥

पवस्वमा। एऽ५। धुमा॥ तमाः। इन्द्रायसोऽ३। हाऽ। औऽ३हो। माक्रातूवीऽ२३दाऽ३।

हाऽ। औऽ३होऽ३४। तमोऽ३४मदाः॥ महायेऽ३॥ द्यूऽ२क्षाऽ२३४औहोवा॥

तमोमदाऽ२३४५ः॥

(दी. ५। प. १४। मा. ४) ४ (भी।११६६)

(५७८।५) ॥ सफम्। देवाः ककुप् सोमः॥

पवस्वाऽमधु। मत्ताऽ२३४माः॥ इन्द्रायसोमाऽ२। क्रतुवाइत्ताऽ३मोऽ३। माऽ३२३४दाः॥

महाइ॥ द्युक्षाताऽ३मोऽ३। माऽ३४५दोऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ८। मा. ५) ५ (गु।११६७)

(५७९।१) ॥ ऐषिराणि चत्वारि। चतुर्णामिषिरः ककुप् सोमः॥

अभाइ। द्युम्नाऽ३०बृऽ३हद्यशः॥ इषाः। पतेदिदीहिदेऽ३वाऽ३देवयुम्॥ विको। शम्म॥
ध्यमाऽ३०यूऽ५वाऽ६५६॥

(दी. ३। प. ७। मा. ४) ६ (ठी।११६८)

(५७९।२)

अ। भेद्यूम्नाम्॥ बृहाद्याऽ१शाऽ२ः। इषास्पताइ। दीदीहाऽ२३४इदे। वदाइवाऽ२३४यूम्॥
विकौवाओऽ२३४वा॥ शम्मध्यमाऽ३१उवाऽ२३॥ यूऽ२३४वा॥

(दी. नास्ति। प. ९। मा. ८) ७ (लै।११६९)

(५७९।३)

अभिद्युम्नम्बृहत्। इहा॥ यशः। इषस्पतेदिदीहिदेवदेवाऽ२३यूम्॥ विकौहोवाऽ३हाइ॥
शम्माऽ२ध्यमंयुव। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५इ॥ डा॥

(दी. ७। प. ९। मा. ५) ८ (झु।११७०)

(५७९।४)

अभिद्युम्नंवृऽ६हद्यशाः॥ इषस्पताइ। दिदीहिदाइ। वादेवयूम्॥ विकोशम्मध्यमाऽ२३४होइ॥
यूऽ२३४वा। एहियाऽ६हा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ५। प. ९। मा. ६) ९ (भू।११७१)

(५८०।१) ॥ कार्णश्रवसानि त्रीणि। त्रयाणां कर्णश्रवा ककुबश्वः॥
आसोतापा॥ राऽ२इषाऽ२३४औहोवा। चाऽ२३४ता। अश्वन्नस्तोममप्तुराऽ२३रजस्तुरम्॥
ओयेऽ३। वनाऽ३॥ ओयेऽ३। प्रक्षाऽ३४। औहोवा॥ उदप्रुताऽ२३४५म्॥

(दी. ९। प. १०। मा. ४) १० (नी।११७२)

(५८०।२)

आसोतापा॥ रिषि। चताऽ२। ऊऽ२। हाऽ२इ। ऊऽ२। अश्वन्नस्तोमम। प्तुराऽ२म्। ऊऽ२।
हाऽ२इ। ऊऽ२। रजा। स्तुराऽ२म्। ऊऽ२। हाऽ२इ। ऊऽ२॥ वन। प्रक्षाऽ२म्। ऊऽ२।
हाऽ२इ। ऊऽ२॥ उद। प्रूऽ२ताऽ२३४औहोवा॥ ऊऽ३२३४पा॥

(दी. ६। प. २४। मा. ८) ११ (ह्रै।११७३)

(५८०।३)

आसोतापा॥ रि। षाइ। चता। अश्वान्नस्तो। मामप्तूऽ२३४राम्। रजास्तूऽ२३४राम्॥
वनोहाइ॥ प्रक्षामूऽ३दा। हिम्मायेऽ३॥ प्रूऽ२३४ताम्॥

(दी. ३। प. ११। मा. ५) १२ (टु।११७४)

(५८०।४) ॥ वाचस्सामानि त्रीणि। त्रयाणां वक्कुकुबश्वः॥

आसोतापारीऽ६षिश्चता॥ आश्वाओऽ२३४वा। नस्तोममप्तुराऽ२१रजस्तुराऽ२३म्॥ होइ।
वानाओऽ२३४वा॥ प्रक्षमुदप्रुताऽ२३४५म्॥

(दी. ६। प. ६। मा. ५) १३ (कु।११७५)

(५८०।५)

आसोऽ३४औहोवा॥ तापराइषिश्चाताऽ२। आश्वन्नस्तो। मामप्तूराऽ२म्। रजास्तूऽ२३४राम्॥
वनोहाइ॥ प्राक्षमुदाऽ३१उवाऽ२३॥ प्रूऽ२३४ताम्।

(दी. ५। प. ८। मा. ७) १४ (बे।११७६)

(५८०।६)

आसोतापा। हो। रिषिश्वताऽ६ए॥ आश्वन्नस्तो। मामसूराऽ२म्। राजस्तुरम्॥

वानप्राक्षाऽ२३म्॥ ऊऽ२३दाऽ३। प्रूऽ३४५तोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ९। मा. ५) १५ (धु।११७७)

(५८१।१) ॥ कौल्मलबर्हिषे द्वे। द्वयोः कुल्मलबर्हिः ककुप् वृषभः॥

एताम्॥ ऊत्याम्। मदाऽ२च्यूऽ२३४ताम्। सहास्रधा। रांवृषभाऽ३म्। दिवोऽ२दूऽ२३४हाम्॥

विश्वाऽ२होऽ१इ। होइ॥ वाऽ२३सूऽ३। नाऽ२इबाऽ२३४औहोवा॥ भ्राऽ२३४ताम्॥

(दी. २। प. ११। मा. १०) १६ (चौ।११७८)

(५८१।२)

एतामूत्याम्॥ मदाऽ३१उवाऽ२३। च्यूऽ२३४ताम्। सहस्रधारंवृषभंदिवोदुहाऽ२३म्॥

वाइश्वावासू॥ निबाऽ३१उवायेऽ३॥ भ्राऽ२३४ताम्॥

(दी. २। प. ७। मा. ७) १७ (छे।११७९)

(५८१।३) ॥ सादन्तीयम् (शङ्कु)। प्रजापतिः ककुप् वृषभः॥

एतमुत्यम्। एऽ५। मदा॥ च्युताम्। सहस्रधारंवृषभंदिवोदूऽ२३हाम्॥ वाइश्वाऽ२वासूऽ२३॥

निबोऽ२३४वा। भ्राऽ५तोऽ६हाइ॥

(दी. ३। प. ८। मा. ५) १८ (ङु।११८०)

(५८१।४) ॥ कौल्मलबर्हिषाणि त्रीणि। त्रयाणां कुल्मलबर्हिः ककुप् वृषभः॥

एतमुत्यम्। ओहाइ। मदच्युतम्। ओहाइ॥ साहस्राऽ२३४धा। रंवार्षाऽ२३४भाम्।

दिवोदुहमोऽ२३४हाइ॥ विश्वाऽ२होऽ१इ॥ वाऽ२३सूऽ३। नाऽ२इबाऽ२३४औहोवा॥

भ्राऽ२३४ताम्॥

(दी. ४। प. ११। मा. १०) १९ (११८१)

(५८१।५)

एतामुत्यंमदाच्युताम्॥ साहस्रधा। रा०वृषभाऽ२म्। दिवोऽ२। दुहमोइ॥

विश्वावसूनिबाऽ२३होइ॥ भ्रातमाऽ३१उवाऽ२३॥ ऊऽ२३४पा॥

(दी. ३। प. ८। मा. ५) २० (ड्डु।११८२)

(५८१।६)

एताऽ३४म्। उत्यम्मदा। च्यूताम्॥ सहस्रधाराऽ२०वृ। षभम्। दिवोऽ२३१२३।

दूऽ२३४हाम्॥ विश्वावसूनिबाऽ३ओयेऽ३॥ भ्राऽ२३४ताम्। एहियाऽ६हा॥ होऽ५ए॥ डा॥

(दी. ६। प. १२। मा. ७) २१ (खे।११८३)

(५८२।१) ॥ लोमानी द्वे (दीर्घम्)। द्वयोर्भर्दवाजः ककुप् सोमः॥

सामू॥ न्वेयोवसूऽ२३नाम्। योराऽ२यामाऽ२। नेतायइडाऽ२३नाम्॥ सोऽ२३माः॥

यःसुक्षिताऽ२३४इनोऽ६हाइ॥

(दी. ४। प. ६। मा. ६) २२ (तू।११८४)

(५८२।२)

ससुहाउ॥ न्वेयोवसूनाऽ२३४हाउ। योराऽ२यामाऽ२॥ नेतायः॥ इडानाऽ२३४हाउ॥

सोमोयःसूऽ३हाउ॥ क्षितीनाम्। औऽ२३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ९। प. १०। मा. ७) २३ (ने।११८५)

(५८२।३) ॥ सोमसामानि त्रीणि। त्रयाणां सोमः ककुप् सोमः॥

सः। स्वेसासू॥ न्वेयोवसाऽ३१उवाऽ२३। नाऽ२३४५म्। योरायामाऽ२नेतायइडाऽ२नाऽ३म्॥

सोमौवाओऽ२३४वा॥ यःसुक्षिताऽ३१उवायेऽ३॥ नाऽ२३४५म्॥

(दी. ९। प. ८। मा. ८) २४ (दै।११८६)

(५८२।४)

ससुन्वेऽ२३योवसूनाम्॥ योरायाऽ१माऽ२३ने। तायइडाऽ२३४५नाऽ६५६म्॥

सोम्नोऽ२यःसुक्षितीनाम्। सोमाऽ२३४५ः॥

(दी. ८। प. ५। मा. ५) २५ (णु।११८७)

(५८२।५)

ससुन्वेयाः। एवासू॥ नायोराऽ१याऽ२३मा। नेतायइडाऽ२३नाऽ३४म्॥ सोमाऽ३ः॥ यःसुक्षि।

ताऽ२३४इ॥ नाऽ२३४५म्॥

(दी. ६। प. ८। मा. ६) २६ (गू।११८८)

(५८३।१) ॥ शैतोष्माणि चत्वारि। चतुर्णां शीतोष्मः ककुप् सोमः॥

त्वꣳहिया॥ गदाइवियपवमानजनिमानिऽ३द्यूमाऽ२। तामाऽ२ः॥ आमाऽ२र्त्तात्वाऽ२३॥

यघोऽ२३४वा। षाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ६। मा. ३) २७ (चि।११८९)

(५८३।२)

त्व३हिया॥ गदाइविय। पवमान। होवाऽ३हाइ। जनिमाऽ२३नीऽ३४। द्युम। ताऽ३माः॥

अमाऽ२३॥ ताऽ२त्त्वाऽ२३४औहोवा॥ यघोऽ३षयाऽ२३४५न्॥

(दी. ३। प. १०। मा. ५) २८ (णु।११९०)

(५८३।३)

त्व३ह्यंगदा॥ विय। पवमानजनिमानिद्युमत्ताऽ२३माः॥ अमार्त्ताऽ२३त्त्वाऽ३॥ यघोऽ२३४वा॥

षाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. २। प. ६। मा. २) २९ (चा।११९१)

(५८३।४)

त्व३होऽ३अंगदैविया॥ पवमाऽ२ना। जनिमाऽ२नायेऽ३४। द्युम। ताऽ३माः॥

अमार्त्ताऽ३त्त्वाऽ३॥ यघोऽ२३४वा। षाऽ५योऽ६हाइ॥

(दी. १। प. ८। मा. ३) ३० (गि।११९२)

(५८४।१) ॥ गायत्रपार्श्वम्। देवाः ककुप् सोमः॥

एषाः॥ स्याधारयाऽ३१उवाऽ२३। सूऽ२३४ताः। अव्याऽ२वारेभिःपवतेमदिन्तमः॥

क्रीडान्नूऽ१र्मीऽ२ः॥ अपाऽ३म्। हिम्ऽ२३स्थिबाऽ३॥ आइवाऽ२३४५॥

(दी. ३। प. ८। मा. ८) ३१ (गे।११९३)

(५८४५८५।२)॥ सन्तनि। देवाः ककुप्युस्त्रिया अभिव्रजन्तेति विष्टारपंक्ति सोमः॥

एषाहाउ॥ स्याधारयाऽ३१उवाऽ२३। सूऽ२३४ताः। अव्याऽ२वारेभिःपवतेमदिन्तमाऽ२३ः॥

क्रीडन्हाउ॥ ऊर्मिरपाऽ३१उवाऽ२३॥ ईऽ२३४वा॥ छू ॥१॥

यउस्रियाऽ२अपियाअन्तरश्मनीऽ२३॥ निर्गाहाउ॥ आकृन्तदाऽ३१उवाऽ२३। जाऽ२३४सा॥

झु ॥२॥

अभिव्रजन्तत्निषेगव्यमश्वियाऽ२३म्॥ वर्मीहाउ॥ वाधृष्णवाऽ३१उवाऽ२३॥ रूऽ२३४जा॥

घि॥३॥

(दी. १०। प. १५। मा. १४) ३२ (मी।११९४-११९५)

(५८४।३) ॥ सोम सामानि त्रीणि। सोमः ककुप् सोमः॥

एषस्यधा। रायाऽ१सूताऽ२ः॥ अव्यावाराइ। भाइःपवते। मदिन्तमाः॥ क्रीडन्नूऽ२३र्मीऽ३ः॥

आऽ२३पाऽ३म्। आऽ३४५इवोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ८। मा. ८) ३३ (गै।११९६)

(५८४।४)

एषस्याऽ३धारयासुताः॥ अव्याहोऽ२इ। वारेभिःपवतेमादिन्तामाऽ२ः॥ क्रीडाऽ२न्होऽ१इ।

ऊऽ२३र्मीः। अपामिवा। औऽ३होवा। होऽ५इ॥ डा॥

(दी. ८। प. ९। मा. ६) ३४ (द्वू।११९७)

(५८४।५)

एषस्यधाऽ५रयासुताः॥ अव्यावाराइ। भिःपवताऽ२३इ। मदिन्तमाः॥

क्रीडन्नूर्मिरपोवाऽ३ओऽ२३४वा॥ आऽ५इवोऽ६हाइ॥

(दी. ६। प. ६। मा. ७) ३५ (के।११९८)

पञ्चत्रिंशत्, एकादशः खण्डः॥११॥ दशतिः॥९॥ इति ग्रामे गेय-गाने सप्तदशः प्रपाठकः॥१७॥

॥ इति ककुबुष्णिहः॥ इति पवमानाख्यं चतुर्थं गानं समाप्तम्॥

॥ इति सौम्यं तृतीयं पर्वकाण्डं समाप्तम्॥ इति पवमानं काण्डम्॥

॥ इति षष्ठः प्रपाठकः॥६॥

॥ इति ग्रामगेयगानं समाप्तम्॥